ॐ

श्रीवीतरागाय नमः

कवि श्री कमलनयनजी विरचित—

श्री ढाईद्वीप पूजनविधान्

[भाषा]

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

मालिक, दिगम्बर जैन पुस्तकालय,

कापड़ियाभवन—सूरत ।

"जैनविजय" प्रिन्टिंग प्रेस, गांधीचौक—सूरतमें

मूलचन्द किसनदास कापड़ियाने मुद्रित किया ।

द्वितीयावृत्ति] वीर सं० २४८५ [प्रति १००

मूल्य रु० ४—०—०

प्रस्तावना ।

बड़े २ पूजन विधानोंमें संस्कृत विधान तो अभीतक कुछ छपे हैं लेकिन श्री लालजी कृत समोसरण विधान व तेरह द्वीप पूजन भाषा तथा सिद्धचक्रविधान भाषा छपकर प्रकट हो गये हैं जिससे इन तीनों पूजाएँ करनेमें बड़ा सुभीता हो गया है किन्तु ढाई द्वीप पूजन विधान, तीनलोक पूजन विधान, इन्द्रध्वज विधान आदि अभीतक नहीं छपे थे जिनकी मांग बारबार आया करती थी। अतः हमने इनमेंसे सबसे प्रथम श्री ढाईद्वीप पूजन विधान छपानेका संकल्प कर प्रयास किया तो मालूम हुआ कि यह पूजा संस्कृत व भाषा दोनोंमें है, इनमेंसे हमने भाषा पूजा प्रकट करनेका निश्चय किया, क्योंकि भाषा पूजाका भाव समझनेमें सर्वसाधारणके लिए भाषा पूजा बहुत उपयोगी होती है। यह हस्तलिखित ढाईद्वीप पूजन विधान (भाषा) इन्दौर दि० जैन मंदिरके शास्त्रभंडारसे श्रीमान् साहित्यरत्न पं० नाथूलाल जैन शास्त्री, न्यायतीर्थने परिश्रम करके लिखवाकर हमें भेजा तथा मिलान करनेको हस्तलिखित शास्त्र भी भिजवाया जिसके लिए हम आपके अतीव आभारी हैं।

कवि परिचय।

इस पूजन विधानके रचयिता कवि श्री कमलनयनजी हैं ऐसा इसकी अंतः प्रशस्तिसे मालूम होता है। इन कविश्रीने पंचकल्याणक विधान (भाषा) भी बनाया है जो प्रकट हो चुका है। लेकिन उसमें आपका कोई परिचय नहीं है तथा आपने और कौन २ से विधान बनाये थे यह भी हमारे जाननेमें नहीं आया तथा आपका वि-

य भी मालूम नहीं हो सका। तोभी इस पूजन विधानकी
में आपका संक्षिप्त परिचय मिल जाता है। उसमें लिखा है–

विक्रम सं० १७६४ कार्तिक सुदी ५ को इस पूजनविधानकी
रचनाका प्रारम्भ कर उसे चैत्र वदी १३को कविश्रीने पूर्ण किया
था। इसमें कुल श्लोक संख्या ३७७० हैं।

इटावा परगनेमें मनपुरी नामक नगरी है जिसमें चौहानवंशमें
महान विख्यात श्री दलेलसिंह नृप राज्य करते थे, जिनके राज्यमें
व प्रजा सुखी थी, उसमें बुन्देला वणिक जातिके श्री नंदलाल
आदि साधर्मी भाइयोंका निवास था, जिनमें एक हरिचंदराय वैद्यक
कलामें प्रवीण थे, उनके कूटेभरा, छत्रपति और मैं (कमलनयन)
इन तीन पुत्रोंमेंसे लघुपुत्र मैं, देश विहारकी इच्छासे एक समय प्रयाग
इलाहाबाद) गया तो इलाहाबादमें बहुतसे अग्रवाल दि० जैन भाई
, उनमें एक साधर्मी भाई बांधिचंद्रजीके सुत हिंगामल्लजीके पुत्र
श्री लालजी हमको मिले जिनके साथ हमें पूर्व योगसे बहुत प्रीति
थी (इन्होंने समवसरण विधान व तेरहपूजन विधान रचना की थी।)

अनेक प्रकारके वार्तालापमें श्री लालजीने मुझे कहा कि ढाई-
द्वीप पूजन विधान भाषामें अभी तक नहीं बना है अतः इसे आप
सुगम भाषामें अवश्य बनाइये। तब मैंने कहा कि भाई, यह कार्य तो
बहुत दुर्द्धर (कठिन) है कैसे होगा? तब आपने कहा कि जिन श्रुत-
आज्ञा लेकर आप यह कार्य करें। फिर मंदिरमें जाकर जिन भगवानके
आगे हां और नाकी चिट्ठी लिखकर रखी और जिन चरणोंमें नमस्कार
पंच णमोकार मंत्र पढ़कर एक चिट्ठी उठाई तो उसमें हां आई

इसलिये मैंने जिनभक्तिके प्रसादसे अल्पमतिसे यह विधान बनाया है, इसमें जो कुछ भी भूलचूक अक्षर मात्रा वरणमें हो गई हो तो उसके लिए विद्वज्जन मेरी हँसी न करें, लेकिन उसे शोधन करें।

निवेदन ।

इन कविश्रीका इससे अधिक परिचय कोई भाई हमें लिख भेजेंगे तो उसे तृतीयावृत्तिमें प्रकट कर सकेंगे। इस पूजन विधानमें भाषा, भाव, राग आदि अतीव सुंदर व भावपूर्ण हैं, लेकिन रचनामें कई जगह अशुद्धियां मालूम होती हैं, इसका कारण यह है कि प्रतिलिपि करनेवाले प्रायः भाषा और विषयके विशेषज्ञ नहीं होते, और वे प्रमादवश यद्वा तद्वा प्रतिलिपि करते रहते हैं। हमारे पास जो प्रति आई थी वह भी बहुत अशुद्ध थी, जिसका शुद्ध करवाना सहज नहीं था। इस पूजनकी रचनाशैली इतनी सुगम सुंदर और मनमोहक है कि इसे विना पूजन किये भी स्वाध्यायके रूपमें भी पढ़नेमें बड़ा आनंद आवेगा। विद्वान बंधु इस विधानमें जो कुछ अशुद्धियां रह गई हों वे नोट करके हमें लिख भेजेंगे तो उनके हम आभारी होंगे।

इसकी प्रथम आवृत्ति हमने १४ वर्ष हुए प्रकट की थी वह खतम हो जाने पर यह दूसरीवार प्रकट किया जाता है।

सूरत
विक्रम सं० २४८५
ता० १७-७-५९

निवेदक
मूलचन्द किसनदास कापड़िया,
—प्रकाशक

पूजन सूची।

नं०	पूजन	पृष्ठ
....	अष्टोत्तर शत नाम, आचार्य लक्षण, पंडित लक्षण व यजमान लक्षण	१
१	सुदर्शन मेरु पूजा	१०
२	मेरु संबन्धी चार दिशामें चार २ शिला जिन पूजा	१३
३	वन चतुष्टय स्थित चैत्यालय पूजा	१५
४	गजदंत पूजा	१८
५	कुरु वृक्ष पूजा	२१
६	शालमली वृक्ष पूजा	२५
६	निषिधाचल सम्बन्धी चैत्यालय पूजा ...	२८
७	हिमवन कुलाचल पूजा	३३
९	हिमवत पूजा	३७
१०	नील कुलाचल पूजा	४२
११	रुक्मगिरि पूजा	४७
१२	वसुकूट पूजा	४९
१३	शिखिर पर्वत पूजा	५१
१४	विजयार्द्ध पूजा	५७
१५	विजयार्द्ध दक्षिणश्रेणि पंचाशनगर जिनालय जिन पूजा	६०
१६	उत्तर दिश पूजा	६८
१७	उत्तर ऐरावत विजयार्द्ध पूजा	७५
१८	ऐरावत विजयार्धोपरि दक्षिग भरतक्षेत्र विजयार्द्धवत पंचाशनगर जिनसमुदाय पूजा	७८
१९	पूर्व विदेह पूजा	८१

नं०	पूजन	पृष्ठ
२०–	पूर्व विदेह वक्षारगिरि विजयार्द्ध सहित पूजा ...	८३
२१–	पश्चिम विदेह पूजा	९६
२२–	अयोध्यानगरी सम्बन्धी अतीत अनागत वर्तमान पूजा	१०७
२३–	भविष्यत् जिन पूजा	१२०
२४–	ऐरावत क्षेत्र जिन पूजा	१२५
२५–	वर्तमान पूजा	१३२
२६–	धातुकी खण्ड द्वितीय मेरु पूजा	१४४
२७–	धातुकी विजय मेरु सम्बन्धी अर्घ	१४६
२८–	उत्तर धातुकी खंड अर्घ	१५१
२९–	विदेह क्षेत्र पूजा	१५७
३०–	धातुकी द्वीप पूर्व पश्चिम विदेह पूजा ...	१६१
३१–	,, ,, पूर्वविदेहमेरु दक्षिण दिश अतीत अनागत वर्तमान पूजा ...	१६५
३२–	,, खंड पूर्वमेरु दक्षिण भरतक्षेत्र वर्तमान जिनपूजा	१७२
३३–	,, द्वीप पूरव भरतक्षेत्र भावी जिन पूजा	१७५
३४–	,, ,, उत्तर ऐरावत क्षेत्रातीत जिन पूजा	१८०
३५–	,, पूर्व मेरु ऐरावत वर्तमान जिन ,,	१८५
३६–	,, भावी जिन ,, ...	१८९
३७–	पश्चिम धातु अचलमेरु सम्बन्धी ,, ...	१९४
३८–	पश्चिम धातुकी खंड अचलमेरु संबन्धी पूर्वविदेह पूजा	२०७
३९–	पश्चिम धातुकी संबंधी अचलमेरु संबंधी पश्चिमविदेह पूजा	२१३
४०–	धातुकी पश्चिम मेरु भरतक्षेत्र पूजा ...	२१६
४१–	धातुकी द्वीप पश्चिम भरतक्षेत्र वर्तमान जिन पूजा	२२३

नं०	पूजन	पृष्ठ
४२	धातुकी द्वीप पश्चिम भरत भावी जिन पूजा ...	२२७
४३	उत्तर ऐरावत अतीत जिन पूजा	२३१
४४	उत्तर ऐरावत वर्तमान जिन पूजा	२३६
४५	उत्तर ऐरावत भावी जिन पूंजा	२४०
४६	इक्ष्वाकार पूजा	२४२
४७	पुष्करार्द्ध द्वीप पूजा	२४५
४८	पुष्करार्द्ध द्वीप पर्वतमेरु पूजा	२४८
४९	कुरु वृक्ष पूजा	२४९
५०	उत्तर दिशि पूजा	२५३
५१	पूर्व पश्चिम विदेह पूजा तत्र प्रथम पूर्व विदेह पूजा	२५८
५२	पश्चिम विदेह पूजा	२६२
५३	पुष्करार्द्ध चतुर्थ मेरु भरतक्षेत्र जिन पूजा ...	२६७
५४	वर्तमान जिन पूजा	२७३
५५	भावी जिन पूजा	२७६
५६	ऐरावत भावी भूत वर्तमान जिन पूजा ...	२८०
५७	वर्तमान जिन पूजा	२८६
५८	अनागत जिन पूजा	२८९
५९	पुष्कर द्वीप पश्चिम मेरु पूजा	२९३
६०	पूर्व विदेह पूजा	३०२
६१	पुष्करार्द्ध पश्चिममेरु पश्चिम विदेह पूजा ...	३०६
६२	षोडश क्षेत्र पूजा	३०८
३६	भरतक्षेत्र अतीत अनागत वर्तमान जिन पूजा	३१०
६४	वर्तमान जिन पूजा	३१६

नं०	पूजन	पृष्ठ
६५	भावी जिन पूजा	३१९
६६	ऐरावत क्षेत्र सम्बन्धी चौवीस जिन पूजा ...	३२३
६७	वर्तमान जिन पूजा	३२९
६८	भावी जिन पूजा	३३३
६९	मनुष्य क्षेत्र समान नरक सीमंतक रुजु विमान मुक्तिशिला सिद्धाचल पंच पैताल पूजा ...	३३७
७०	मानुषोत्तर पूजा	३४२
७१	पुष्करार्द्ध द्वीप स्थित इक्ष्वाकार पूजा ...	२४४
७२	कवि प्रशस्ति	३४८

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

कवि पं० कमलनयनजी रचित-

श्री अढाई-द्वीप पूजन विधान

[भाषा]

दोहा ।

पंच परमपदकौं नमौं, नमौं शारदा माय ।
गुरु गौतमके चरन युग, वंदौं मन वच काय ॥ १ ॥
सार्ध दीप द्वय पाठकी, भाषा सुगम उदार ।
करौं यथारथ संस्कृत, मति माफिक सुखकार ॥ २ ॥
वृषभनाथ जिन आदि दे, महावीर पर्यन्त ।
चौबीसौं जिनकौं नमौं, मंगल करत महंत ॥ ३ ॥
अष्टोतर शत नाम करि, थुति करिहौं जिन तोहि ।
दीन जांनि भव-समुदतैं, पार करौ प्रभु मोहि ॥ ४ ॥
नाम कहे जे संस्कृत, पाठ मांहि बिच जोय ।
तेई राखे हिय सही, भक्ति भाव युत होइ ॥ ५ ॥

अथ अष्टोत्तर शत नाम लिख्यते ।

छंद अडिल्ल ।

श्री सर्वज्ञ सर्व भाषामय जानिये,
सर्व देव देशाधि स्वयंभू प्रमानिये ।

है जु सर्व उपदेशक सर्व प्रभुस्तथा,

सर्व कृपाकर सर्व धर्ममय प्रभु यथा ॥ १ ॥

सर्व मुख्य फुनि सर्व विलोकन जग सुखी,

जगत कीर्त्ति जगन्नाथ जगत्नुत जगमुखी।

जगचक्षु जगव्यापि जिनेश्वर है सही,

निर्विषाद आतंक रहित मुनिवर कही ॥ २ ॥

निःप्रमाद निकलंक निरंजन धान है,

निरारम्भ निर्मोह विगत मय प्रान है।

अव्यय नाम अनन्त पराक्रमवन्त ये,

पंचेन्द्री वश कान सदा जयवन्ति ये ॥ ३ ॥

है अलक्ष वीरज अनन्त अचलो तथा,

अनघ अनन्त सरूप नाम सुमरो यथा।

सिद्धोनन्त सुखात्मक आतम मय सदा,

परब्रह्म पर तेज सुखाकर सर्वदा ॥ ४ ॥

मुक्ति श्री भरतार कर्म करि मुक्त हैं,

मुक्ति मार्ग उपदेशक ज्ञान विमुक्त हैं।

विश्वंभर जग जीवन हितू,

दयानिधान सुजान, आतमादम जितू ॥ ५ ॥

दाता धीश दमेंद्रिय परमेष्ठी कहैं,

पुन्यातम सुपवित्र कृपाधारी रहैं।

हैं पवित्र करतार पवित्रारथ सदा,
पुनि पवित्र वच सार महा ज्ञानी मुदा ॥ ६ ॥
ब्रह्मा ब्रह्मपती पुनि ब्रह्म सुदेशकौं,
ब्रह्मन प्रिय, पद्मासन जानि महेशको।
श्री पद्मेश महेश्वर ज्ञान महाव्रती,
महा शांत सुमहांत महा ध्यानी यती ॥ ७ ॥
सदानन्द सत्योदय नाम सुजानिये,
नित्य नित्य प्रजल्पक फुनि परमानिये।
धर्मराज धर्माधिप धर्मानंत कृत,
सुधर्म दातार धर्मव्रत तीर्थंकृत ॥ ८ ॥
धर्मशील धर्मोपदेश कारक महा,
काम रूप क्रिया व्यतीत सुख जिन लहा।
कलकांगो सुकलाढ्य कलानिधि सार है,
कलमपहा केवली जगत आधार है ॥ ९ ॥
स्याद्वाद वेदी जिन वेदज्ञ हैं,
निर्ग्रन्थो निर्ग्रन्थ नाथ धर्मज्ञ हैं।
एक अनेक सनातन यो निराहार है,
सदा योग कृतकृत्य सुलक्षण धार है ॥१०॥
प्रशांतादि निर्भय क्षेम कृत है सही,
पञ्चकल्याणक पूजा जोग सुगुरु कही।
शील समुद्र जग चूड़ामणिय नाम है,
भव्य बन्ध मोक्षज्ञ बन्ध [illegible] ठाम है ॥११॥

निधन अनादि सुवाई सु शङ्कर है सही,
चतुरानन इत्यादि नाम माला कही।
जो धारै भवि कण्ठ मांहि शिवपद लहैं,
जपै प्रात उठ सदा नैन कवि यों कहैं ॥१२॥

चौपाई।

इस विध नाम अनन्त संयुक्त, स्तुति करनेको समरथ्य।
रागदोषच्युत हो तुम ईश, भक्तिसहित स्तुति करो जगदीश ॥६॥
नमों प्रभु तुमको नमों, लोक शिखरस्थित भव विष वमो।
धर्मोदधि चन्द्रायन जानि, भव्य कमल परकाशन भान ॥७॥
जगत जीव सस्योघ अपार, नमों मेघ सम पोषन हार।
मुनिगन चन्द्र सरोवर हँस, नमों प्रकाशि बोध रवि अंश ॥८॥
कर्म काठ जारन चित्र थान, नमों त्रिविध करि श्रीभगवान।
पश्च ज्ञान सागर सुखदाय, नमों शुक्लध्यानग्र सुभाय ॥९॥
मिथ्यामोह ध्वांत कृत क्षीन, नमों नमों शुद्धातम लीन।
सकल दोष वन शमन समीर, गुण अनंत करि शोभित वीर ॥१०॥
तुमको नमो विनय धरि धीर, पाप पङ्क क्षालन जिमि नीर।
भव्य जीव मन भृंग सरोज, चरन तुम्ही नित करन सुमोज ॥११॥
विन कारन जगबन्धु विख्यात, नमो नमो तुम गुन अवदात।
अष्टोत्तर शत नाम विशाल, पावन पुन्य करन दर हाल ॥१२॥

इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अथ आचार्य लक्षणं

अडिल्ल

पंच महाव्रत धरण धुरंधर जानिये,
महा धैर्यधर धरनि समान बखानिये।
शुद्ध ध्यान जल क्षालित निज आतम सदा,
पायो सब सिद्धांत पार जनि करि मुदा॥
विभ्रम रहित विध्वस्त मिथ्यात महा तमो,
देत धम उपदेश क्लेश विन तिन नमों।
कलावान कुल भूत कला ज्ञानी तथा,
दयावान निरवांछक शांतमना यथा॥
क्षमावान क्षितिशार्चित प्राज्ञ सुबुद्ध है,
प्रश्न सहन भिक्षाशन योग निरुद्ध है।
अति प्रचण्ड विवन्दित चरन सरोज हैं,
दीपक शुभ उपदेश सुरसम आज हैं॥
ऐसे आचारज गुन गुरु ये जानिये,
तिनहीको उपदेश परम उर मानिये॥ १३॥

इति आचार्य लक्षणं।

अथ पंडित लक्षणं।

विना शूद्र नर सर्वे क्षुद्रता हीन ये।
गुण सम्पति कर मंडित परम प्रवीन ये॥
भाग्यवन्त नर त्यागी, सुमगनि चीत हैं।
अति वैरागी मत्सर भाव विनीत हैं॥

शीलवन्त तन निर्मल राजत हैं महा।
काय दोष वर्जित गुण अद्भुत जिन लहा॥
मान रहित मद वर्जित दरसन धार जे।
सम्पूरन विद्या गुण मन्डित सार जे॥
दुर्धरवादि घनाघन घटा बिदारते।
पवन समान विद्वान कला गुण धारते॥
सुस्वरज्ञानी राजसभाजित जानिये।
ऐसे पंडित पाठ पठन परमानिये॥ १४॥

इति पंडित लक्षणं सम्पूर्णम्।

अथ यजमान लक्षणं।

कवित्त सवैया—श्रद्धावान शीलगुण सात चितावाकू वर बहुश्रुत सुभाषी, पुनि धर्म उपकारी है। निरलोभ हिंसा करि रहित विचारवान जिनभक्त गुरुभक्त प्रतिष्ठा धारिकारी है। शास्त्र उपदेश करि प्रावित श्रावकाचार राजकाज करिवेकों अग्र पदधारी है॥ इत्यादि गुण करि सम्पूरण विराजमान तेई नर पूजा जोग जनम मरण हारी है॥ १५॥

अथ सामग्री लक्षणं—अति मनोज्ञ सुख करन दृगन मन हारिनी, तन पोषन अति शुद्ध बिमल गुन धारिनी। वसुविधि मंगल द्रव्य अग्र जाकै चलै, अष्ट प्रातिहारज विभूति युत करि भलै॥ उपमा रहित प्रशस्त सुजन कल्पित घनी, ऐसी सामग्री लै जिनवर पूजनी॥ १६॥

अथ परिचारक लक्षणं—जिनवर भक्त परायन हस्त क्रिया विषैं, अति पवित्र तन विबुध संग कृत श्रुत सिखैं। पंचेन्द्री वशकरन धरन गुन मौन जैं, अल्पाहारी आलस रहित सु कौन जे॥ पंडित मन अनुगामी ये सही, ऐसे सज्जननुको परिचारकता कही॥ १७॥

अथ श्रोता लक्षणं—षड़सादिक रहित निरालस ये सदा, दयावान अन्योन्य बात न करें कदा। पूजा लोकन तत्पर मान रहित भले, मायाचार विचार मार जिनवर चले॥ क्रोध लोभ मोह द्रोह करि रहित हैं, पूजा देखनजोग ते नर पंडित कहैं॥ १८॥

अथ मंडप लक्षणं—दीरघ मंडप रचा बहुविधि कीजिये, नाना शोभा सहित लखत हरषीजिये। घंटा तोरन पुष्पमाल शोभैं तहां, बीच मोतिन के गुच्छा लटकि रहे तहां। ताल कंसाल मृदंग भेरि पटहा घने, बाजत अधिक बजाय गायगुन निजतने॥ १९

अथ मंडन लक्षणं—पंच बरन रतननुको चूरन ल्यायकै, सार्द्धद्वीप द्वै मण्डन रचहु बनायकै, प्रथम सुदर्शन मेरु मध्य जाकै बसै, ऐसे जंबूद्वीप अधिक शोभा लसै।

जम्बूद्रुम शाल्मली वृक्षराज ही,
मेरु सुदर्शन ध्वजा दोय छवि छाज ही।
ताके पार्श्व कुलाचल सरविधि शोभतैं,
तिन ऊपर षट् द्रह जल मृत मल धोवतैं॥
तिन ही मैंसे निकसी चलि सरिता सही,
नाम चतुर्दश संख्या परमिति इम कही।

और विभंगा द्वादशन विचारिये,
इह विधिकी बहु रचना नैन निहारिये ॥
वक्षारगिर षोडश हेम मई जहां,
रूपाचल चौतीस विराजित हैं तहां।
रजधानी चौतीस वृषभ गिर जानिये,
इतने ही संख्या इनकूं ही मानिये ॥
अरसठि गुफा मनोहर सब विधि वरनई,
विजयारध गिरि नीचै राजति हैं सही।
चारु तीन पुनि सहस प्रमान सु भाषयै,
सात शतक चालीस नगर इम राखिये ॥
३७४० विद्याधर तिनमें बहु वास करै भलै,
चक्रवर्तिकी आज्ञा सिरपर ले चलै।
मेरु सुदर्शन दक्षिण भारत है सही,
षंड छहो करि मण्डित भूमि विराज ही ॥
उत्तरमें ऐरावत क्षेत्र बखानिये,
दोऊकी रचना इक सार प्रमानिये।
हेमवन्त हरिक्षेत्र विदेह सु लीजिये,
रम्यक हैरण्यावत और गनीजिये ॥
पाद मात्र ऐरावत उत्तरमें कह्या,
पुनि विदेह पर्यंत चतुर गुन बरनयो।
इस विधि रचना प्रथम दीपकी जानियो,
पाठ संस्कृत मांहि सोइ परमानियो ॥

द्वितीय धातकी खण्ड द्वीप वर्णन ठयौ,
सुनो चतुर दै कान यथाविधि वरनयौ।
मेरु दोय तहं विजय अचल शुभ राज ही,
पूरव अपर मंझार भूमिगत छाज ही॥
तिन अवगाह अन्तर्धनि सिद्ध समान हैं,
जोजन सहस प्रमान शून जिस थान हैं।
सप्त क्षेत्र भरतादिक षट् कुलाचल तथा,
दुगुन दुगुन विस्तार जासु थाप्या यथा॥
भोगभूमि अरु कर्मभूमिके थान ये,
हानि वृद्धि करि जम्बूद्वीप समान ते।
पुष्करार्द्धमें मेरु जुग मन मोहये,
मन्दर विद्युमता लीना मन सोहये॥
सप्त क्षेत्र कुल पर्वतादि जिम दूसरे,
द्विगुन द्विगुन विस्तार तथा मन तीसरे।
हानि वृद्धि करि कर्मभूमि सम जानिये,
दा द्वीप अढाईकी दश विध परमानिये॥
लवनोदधि कालोदधि द्वै सागर परै,
द्वीप अढाईके बिच खाई सम ढरैं।
मानुषोत्तर पर्वत जिम कोठ सुहावनो,
परयौ वेढ करि अर्धद्वीप मन भावनो॥
तासु प्रमान ऊँचाईकौं बरनन करयो,
सप्त सहस्र ऋषि शत इक विंशतिकौं परयो।

तहां लग भूमि प्रमान बखानों सार है,
जोजन लाख पैंतालिसको विस्तार है ॥
इस विधि रचना भाषी सार सुहावनी,
मूल संस्कृत पाठ देखि मन भावनी।
अब पूजाकी विधि संक्षेप बताइये,
सुनो भव्य दे कान सुमनमें लाइये ॥
द्वादश विधि आभूषण पहिर सुहावने,
धौत वस्त्र वर धारि अंग मन भावने।
देव शास्त्र गुरु प्रथम समचन कीजिये,
पुनि जिन सिद्ध महर्षिनु अर्घ सु दीजिये ॥
पीछै तैं पूजाको बहु विस्तार है,
मेरु सुदर्शन ते लै करि सुखकार है ॥२०॥

अथ सुदर्शन मेरु पूजा।

गीता छन्द।

शुभ लक्ष योजनका समुन्नत, स्वर्ण शैल सुहावनो।
सुर नाथ सेवित अमर वन्दित, खेचर नर मन भावनो ॥
तीर्थंकरोंके न्हवन नीर पवित्र, तीरथ जासुको।
हों करौं आह्वानन त्रिविध कर मन वचन युत तासकौं ॥२१॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन मेरु लक्ष जोजन उन्नत पांडुकादि शिला वन चतुष्टय जिनालयस्थ जिनबिंब शोभित अनेक शोभा विराजमान जन्माभिषेक क्षेत्र सुदर्शनमेरु अत्रावतरावतर संवौषट्, तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः वषट्, सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं।

गीता छन्द।

हिमवन्त पर्वततैं सु निर्गत, सुर सरित जल भर ल्याइये।
भरि हेम थारी धार त्रय, जिन चरन अग्र चढ़ाइये॥
शुभ श्री सुदरशन मेरुगिरि, घन बन चतुष्क विराज हीं।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुखदुख भाज ही ॥२२॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो जलं।

घनसार लाय मिलाय कुंकुम, अगर चन्दन गारिये।
जिन चरन पूजन करहु भविजन, दाह दुरित निवारिये॥
शुभ श्री सुदरशनमेरुगिरि, घन बन चतुष्क विराज हीं।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुखदुख भाज ही ॥२३॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो गन्धं।

लै सुरभि शालि अखण्ड तन्दुल, स्वच्छ जल प्रक्षालिये।
जिन चरन पूजन करहु भविजन, निज सुपन प्रतिपालिये॥
शुभ श्री सुदर्शनमेरुगिरि, घन बन चतुष्क विराजहीं।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुख दुख भाजहीं ॥२४॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो अक्षतान्।

केवरो कंज गुलाब मरुवौ, मालती चुन लीजिये।
जाई जुही मच कुन्द ले करि, प्रभु समर्चन कीजिये॥
शुभ श्री सुदर्शनमेरुगिरि, घन बन चतुष्क विराजहीं।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुख दुख भाजहीं ॥२५॥

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो पुष्पं।

भरि हेम थाल सुहाल फेनी, शर्करा सम ल्याइये।
करि क्षीर मिश्रित हेम थाली, भरि सु जिनहि चढ़ाइये॥
शुभ श्री सुदर्शनमेरुगिरि, घन वन चतुष्क बिराजहीं।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुख दुख भाजहीं॥२६॥
ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो नैवेद्यं।

दीपक रतनमय बाति चौमुख, थाल ले धरि करि सही।
जिन चरन आरत करत अघतम, नसे गुरु गौतम कही॥
शुभ श्री सुदर्शनमेरुगिरि, घन वन चतुष्क बिराजहीं।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुख दुख भाजहीं॥२७॥
ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो दीपं।

शुभ अगर चन्दन अरु कपूर, मिलाय धूप बनाईये।
अति गूंज करत सु मंजु धुआं, मिश्रित मनोग सुहाईये॥
शुभ श्री सुदर्शनमेरु गिरि, घन वन चतुष्क बिराजहीं।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुख दुख भाजहीं॥२८॥
ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो धूपम्।

बादाम श्रीफल अरु सदा, फल चोच मोच सु आनिये।
खजूर दाड़िम दाख पिस्ता, सुघर फल ये जानिये॥
शुभ श्री सुदर्शनमेरुगिरि, घन वन चतुष्क विराजहीं।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुख दुख भाजहीं॥२९॥
ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो फलम्।

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु, वर दीप धूप फलावली।
लै अर्घको जिनपद तनो, मति करो नेक उतावली॥
शुभ श्रीसुदर्शनमेरुगिरि, घन वन चतुष्क विराजहीं।
षोडश जिनालय करहु पूजा, होय सुखदुख भाजहीं॥ ३०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ मेरु सम्बन्धी चार दिशा चार चार शिला जिन पूजा।

सुन्दरी छन्द।

प्रथम पांडुक शिला बखानियौ, द्वितीय पांडुकंबला जानियो।
तृतीय रक्ता नाम सु जिन कही, रक्त कंबल चौथी नै लही॥
स्नान जिनका जन्म समै जहां, करत सुरपति मन हरषित महा।
करो आह्वानन तिनसारजू, जजों चरन महा सुखकारजू॥३१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु सम्बन्धी चतुष्कदिशि चारोंशिला स्थत जिन अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अडिल्ल।

भरतक्षेत्र जिन जन्म न्हवन सुरपति कियो,
दक्षिण दिश पांडुक शिल परसन हरषियो।
तिनके चरन जजों वसुद्रव्य सु ल्यायकै,
जल फलादि करि अघ सु मन वच कायकै॥ ३२॥

ॐ ह्रीं दक्षिणदिश पांडुकशिला सिंहासनस्थित जिनेभ्यो अर्घं।

पूर्व विदेह क्षेत्र जो तीर्थंकर भये,
पांडुकंबला शिला न्हवन तिनके ठये।
सुरपति कीनों जन्मोत्सव हरषायकै,
चरन जजे हम अर्घ बनायकै॥ ३३॥

ॐ ह्रीं पांडुकम्बला सिंहासनस्थित जिनेभ्यो अर्घं।

उत्तरदिश पांडुकवन शिला सु जानिये,
रक्ता नाम तीसरीको परमानिये।
तहां जिन ऐरावतको न्हवन भयो भलै,
पूजों अर्घ बनाय करम वसु दलमलैं॥ ३४॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिश पांडुकवन रक्ताशिलोपरिस्थित जिनेभ्यो अर्घं।

पश्चिम दिस वन शिलासम है कंबला,
तहं जिनवरको न्होन कियो सुरपति भला।
पर विदेह वर क्षेत्रविषैं जिन औतरो,
तिनके जन्म समैंकी हम पूजा करैं॥ ३५॥

ॐ ह्रीं पश्चिमदिशिवन रक्तकम्बलापरि सिंहासनस्थित जिनेभ्यो अर्घं।

अथ वनचतुष्टय स्थितचैत्यालय पूजा।

अडिल्ल छंद।

पांडुक वन सौमनस तथा नंदन मनौ,
परौ भूमि पर भद्रशाल चौथो गिनौ।
षोडश जिन चैत्याले तिनमें शुभ राज ही,
तिन आह्वानन करत दुरित दुःख भाज ही ॥३६॥

ॐ ह्रीं पांडुकवनस्थित षोडश चैत्यालयस्थित जिनसमूह अत्रावतरावतर अत्र संवौषट्, तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधकरणम्।

श्रीपांडुकवन पूजन चैत्यालय विषै,
अष्टोत्तर शत प्रतिमा जिन श्रुतमें लिखै।
पंच शतक धनुषोत्तर तन जिनको कह्यो,
तिनपद पूजन वसुविधि मन हरषित भयो ॥३७॥

ॐ ह्रीं पांडुकवन पूर्वदिक चैत्यालयस्थित जिनेभ्यो अर्घं।

श्रीपांडुकवन दक्षिण जिनमंदिर सही,
वसु शत प्रतिमा तामें गुरु गौतम कही।
तिनके चरन जजौं तन मन हरषायकै,
जल फलादि लै वसुविधि अर्घ बनायकै ॥३८॥

श्री पांडुकवन पश्चिम आशा जानियौं,
श्री जिनमंदिर सुन्दर परम प्रमानियौं।

ॐ ह्रीं दक्षिणदिश पांडुकवनस्थित जिनमन्दिर जिनेभ्यो अर्घं।

रतनमई द्युति धारी तनु जिनराज ही,
वसुविधि करि पद पूजत अघ हरि भाज ही ॥३९॥
ॐ ह्रीं पांडुकवन पश्चिमदिश जिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं।
श्री पांडुकवन उत्तर जिनमंदिर पर्यो,
प्रातिहार्य वसु मंगल द्रव्य जहां धर्यो।
जल फलादि करि वसुविधि जुगतसु पूजिये,
कर्म काटि करि शिव रमनीवर हूजिये ॥४०॥
ॐ ह्रीं पांडुकवन उत्तरदिश जिनचैत्यालयेभ्यो नमः अर्घं।

इति पांडुकवन जिनालय पूजा।

सोरठा।

वन सौमनस सुधार, पूरव दिशा सुहावनी।
जिनमन्दिर सुखकार, जिन प्रति सौं ॥४१॥
ॐ ह्रीं सौमनसवन पूरबदिश जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
वन सौमनस सुहाय, दक्षिण दिशमें जानिये।
जिनमन्दिर सुखदाय, प्रतिमा वसुविधि पूजिये ॥४२॥
ॐ ह्रीं दक्षिणदिश सौमनसवन स्थित जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
वन सौमनस मनोग, पश्चिम दिश जाके सही।
जिनमंदिर शुभ योग, प्रतिमा पूजों हर्ष लै ॥४३॥
ॐ ह्रीं पश्चिमदिश सौमनसवन स्थित जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
वन सौमनस सु जानि उत्तरदिश जामैं महा।
जिनमंदिर सुखखानि तिनप्रति वसुविधि पूजियै ॥४४॥
ॐ ह्रीं उत्तरदिश सौमनसवनस्थितजिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

इति सौमनस वन पूजन।

नन्दन वन विच सार, पूरव दिशा सुहावनो।
जिनमंदिर सुखकार, प्रतिमा वसुमत पूजिये ॥ ४५ ॥
ॐ ह्रीं नन्दनवन पूरव दिग्चत्यालय जिनेभ्यो अर्घं।
विच नन्दन वन जानि, दक्षिण दिश जिनगृह भलो।
पूजों वसुविधि आनि, जिनप्रति अघ संजोयके॥ ४६ ॥
ॐ ह्रीं नन्दनवन दक्षिणदिश जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
नन्दनवन विच जोय, पश्चिम दिशा सु गाइये।
जिनमंदिर शुभ होय, प्रतिमा वसुविधि पूजिये ॥ ४७ ॥
ॐ ह्रीं पश्चिमदिश नन्दनवनस्थित जिनालयेभ्यो अर्घं।
नन्दनवन हिम सार, उत्तरदिश जिन भवन है।
वसु शत प्रतिमा सार, पूजौं अर्घ संजोयकै ॥ ४८ ॥
ॐ ह्रीं नन्दनवन उत्तरदिश जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

इति नन्दनवन पूजा।

भद्रसाल जौन भूधर सरस सुहावनौ,
पूरवदिश जिन भौन, जिन प्रति पूजौं अघसौं ॥ ४९ ॥
ॐ ह्रीं भद्रशाल वन पूरवदिशि जिनेभ्यो अर्घं।
भद्रसाल वन सार, दक्षिण दिश जाके लसै।
जिनमन्दिर अघ सार, भाव सहित जिन पूजिये ॥ ५० ॥
ॐ ह्रीं दक्षिणदिश भद्रशालवनस्थित जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
भद्रसाल वन बीच, पश्चिमदिश जिन ग्रह भलौ।
पुण्य सरोवर सींच, जिन प्रतिमा भवि पूजिये ॥ ५१ ॥
ॐ ह्रीं पश्चिमदिश भद्रशालवनस्थित जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

भद्रसाल वन मांहि, उत्तर दिशा बताइये।
जिनमन्दिर सक मांहि, प्रतिमा वसु मत पूजियो ॥ ५२ ॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिश भद्रशालवनस्थित त्रैलोक्यतिलक जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

इतिश्री सुदर्शन मेरु पूजन विधानं।

अथ गजदन्त पूजा।

सोरठा।

मेरु सुदरशन केर, नागदन्त वहु जानिये।
विदिशा मांहि सु घेर, परे आनि सु वखानिये ॥ ५३ ॥

गीता छन्द।

सौमनस विद्युतप्रभ तथा, पुनि माल्यवान सु नाम हैं।
शुभ गन्धमादन मेरि गिरिके, चारि हू शुभ ठान हैं ॥
गजदन्त चारि वखानि इनपर, आनि जिनमन्दिर परे।
तिन करौ आह्वानन विविध हम, जिन चरण हिरदे धरे ॥५४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बन्धी चारि दिशा च्यार गजदन्त ऊपर च्यार जिनालय जिनः अत्रावतरावतर संवौषट् ठः ठः वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा।

मेरु अग्निदिश सौमनस, वानरदन्त सु सार।
जिनमंदिर तापर लसै, पूजौ जिन सुखकार ॥ ५५ ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बन्धी सौमनस गजदन्त जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

भद्रसालु वट तडित प्रभ, नागदन्त नैऋत्य।
दिशामांहि जिन ग्रह जजों, चरण जिनेश्वर सत्य ॥५६॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बन्धो विद्युत्प्रभ गजदन्त जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

मेरु सुदर्शन तै तथा, वायव दिशिमें जानि।
माल्यवान गजदन्त वर, जिन पूजों सुख खांनि ॥५७॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बन्धी माल्यवन्त गजदन्त जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

मेरु सुदर्शन गन्धवर, मादन नाम सु जानि।
नागदन्त जिनग्रह जजों, परो दिशा ईशानि ॥५८॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बन्धो गन्धमादन गजदन्त जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

गीता छन्द।

जल गन्ध अक्षत पुष्प चरु, वरु दीप धूप सु ल्याइये।
फल धारि अर्घ सम्हारि वसुविधि, मङ्गलादिक गाईये॥
श्री मेरु वन गजदन्त जिनग्रह, सकल प्रतिमा पूजिये।
सुन गाय हर्ष बढ़ाय तिस फल, स्वर्ग सुरपति हूजिये ॥५९॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बन्धो जिनालयजिनेभ्यो पूर्णार्घं।

अथ जयमाल।

गीता छन्द।

गीर्वाण सुरपति महित जिनपति, मुक्त रमणी पतक है।
निस्वेद निर्मल गुण विभूषित, ज्ञान गम्य करम दिहै॥

अघ तिमिर नाशन भान दृग, वट ज्ञान वीरय सहित ये।
सुख नन्त करि संजुक्त तुष्टय, चरण हम तिनके नये ॥६०॥

पद्धडी छन्द।

सुरपति फनपति पूज्य पाय, वसु करम रहित भव सिद्धदाय।
सुर मेरु विपन गजदन्त चारि, चैत्याले जिनपद नमन कारि॥
भवि सरोज प्रफुल्लन सु भानु, ये गणधर मुनिकरि ध्याय मानु।
सुरमेरु विपन गजदन्त चारु, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
दुकृत गज घन मर्दन मृगेश, जगजीव दया कर धांव वेश।
सिर छत्र तीन शोभे महान, क्षीरोपम चामर वीज्यमान॥
शिव शुद्ध रमापति शर्म दाय, जरा मरण विनाशन है सु भाय।
सुरमेरु विपन गजदन्त चारु, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
दाशन अनन्त पुन ज्ञानवन्त, चित सौख्य वीर्य करि हेमहन्त।
सुरमेरु विपन गजदन्त चारि, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
ये पंच वरन विपगत जिनेश, नर नायक नरपति नुत महेश।
सुरमेरु विपन गजदन्त चारि, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
सम्यक्त सुदर्शन है विशुद्ध, सूक्ष्म तत्त्व वीर्य संयुत सु बुद्ध।
सुरमेरु विपन गजदन्त चारि, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
अगुरुलघु अव्याबाध सार, इत्यादिक गुनके है भण्डार।
सुरमेरु विपन गजदन्त चारि, चैत्याले जिनपद नमन करि॥
सुख सिद्ध रूप फुनि सिद्धदाय, जिनके तिहु जगजन नमे पाय।
सुरमेरु विपन गजदन्त चारि, चैत्याले जिनपद नमन करि॥

घत्ता छन्द।

ये सकल गुण संयुक्त जिनवर, शुद्ध बुद्ध प्रभाव है।
ये त्रिदश पति नर इन्द्र वंदित, चरण भवोदधि नाव है॥
ये पाप परनति भनि स्वातम, जानि भूति सुखित भये।
शिवसुख दाता जगत माता, पद कमल हम तिन नये॥
ये सर्व अतिशय मोद, परमाल्हाद करि पूजन भरे।
ये त्रिजगति पति पाद पूजत, शिव महल मग पग धरे॥
ये द्रव्य गुन नूर अर्थ देश, करमा कीरतिवन्त ये।
ये जय प्रताप सु जनक जिनवर, केवल श्री कंत ये॥

दोहा।

ऐसे पुरुषोत्तमनुके, पूजौं पद जुग सार।
ते जिनवर वर्तो सदा, जयवन्ते सुखकार॥ ६१॥

इत्याशीर्वादः।

इतिश्री सुदर्शनमेरु गजदन्त पूजा सम्पूर्णम्।

अथ कुरुवृक्ष पूजा।

गाता छन्द।

श्री सुदर्शनमेरुते, ईशान दिशमें जानिये।
शुभ भोगभूमि सुहावनी, उत्कृष्ट नाम बखानिये॥६२॥
तह नील कुलगिरके निकट, सीता नदी तट राजही।
पूरवदिशा द्रुम नाम जम्बू, अतुल महिमा छाज ही॥
तह और मणिमय वृक्ष लघुतर, चहूं दिशि वेष्टित सही।
जिनराज पति नुत सभा शोभित, चक्रवर्ति उपमा लही॥६३॥

सो काय पृथ्वी रत्न वपुकी, दीप्त द्वितीयाश्रित भलौ।
तसु चारु भाषा विदित चहुदिश, तुंग शोभा चित चलौ॥
वैडूर्य्य मणिके पत्र फल, संयुक्त अद्भुत सो भई।
तसु नाम धारक द्वीप जह जिस, दास जल अघ धोवई॥
ताके सुनुत्तर दिशा भाषा, स्थित जिनालय राजही।
ताके विषैं वसु शत सु प्रतिमा, पद जज अघ भाजही॥६४॥

ॐ ह्रीं सुवर्णमय वेदीके ऊपर जम्बूवृक्ष वज्रस्कन्धक वैडूर्य्यमय पत्र फल सहित मध्यु समान्न कडविषैं विस्तार ऊँचा स्कन्ध योजन, दोय कामनि मय साख चार करि शोभित दोय कोश चौडा, दोय योजन लांबा तिसके उत्तर शाखा विषैं रत्नांगद नाम चैत्यालय तत्र जिन प्रतिमा अष्टोत्तर शत विराजमान जिनेन्द्रदेव अत्रावतरावतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथ ष्टक।

ढल-सोनागिर मुनि वंदिये इस चालमें।

प्राणी क्षीरोदधि जल ल्याइये, प्राणी मणिमय कलश भराइये।
प्राणी चरन जजो जिनरायके, प्राणी भव आताप मिटाय हो॥
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनौं, जाकै उत्तर शाखाके विषैं॥
प्राणी जिनमन्दिर इक सार हो॥

शत एक महा सुखकार हो, प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनौं॥

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखा विषैं श्री जिनमंदिरमें एकसौ आठ प्रतिमा विराजमान तिनके चरणकमलेभ्यो जलम्।

प्राणी चन्दन केसर गारके, घसी कनक रकेबी धार हो।

प्राणी चरन जजौं जिनराजके, या भव आताप निवार हो ॥
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥ ६४ ॥

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखा विषैं श्री जिनमंदिरमें १०८ प्रतिमा विराजमान तिनके चरणकमलेभ्यो चन्दनम्।

प्राणी सालि सुगन्ध सुहावनैं, तन्दुल जल विमल पखारि हो।
चरण जजौं जिनराजके, अक्षैपुर मग पग धारि हो।
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥ ६५ ॥

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखा विषैं श्री जिनमंदिरमें १०८ प्रतिमा विराजमान तिनके चरणकमलेभ्यो अक्षतम्

प्राणी कुन्द केतकी मालती, मचकुन्द कमल लै सार हो।
प्राणी चरण जजौं जिनराजके, जाते कामबाण निरवार हो ॥
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥ ६६ ॥

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखा विषैं श्री जिनमंदिरमें १०८ प्रतिमा विराजमान तिनके चरणकमलेभ्यो पुष्पम्।

प्राणी घेवर बावर श्रुति लड्डू, घृत पाय सु मधुर मिलाय हो।
प्राणी चरन जजौं जिनराजके, जाते रोग क्षुधा मिट जाय हो ॥
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥ ६७ ॥

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखा विषैं श्री जिनमंदिरमें १०८ प्रतिमा विराजमान तिनके चरणकमलेभ्यो नैवेद्यम्।

प्राणी वाती कर करपूरकी, मणिमय दीपक परजारि हो।
चरन जजौं जिनराजके, जाते मोह तिमिर निरवार हो ॥
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥ ६८ ॥

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखा विषैं श्री जिनमंदिरमें १०८ प्रतिमा विराजमान तिनके चरणकमलेभ्यो दीपम्।

प्राणी कृष्णागर सुरतरु तथा, मलयागिरि अरु घनसार हो।
चरण जजौं जिनराजके, वसु कर्म होहि जरि क्षार हो॥
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥ ६९ ॥

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखा विषैं श्री जिनमंदिरमें १०८ प्रतिमा विराजमान तिनके चरणकमलेभ्यो धूपम्।

प्राणी सेव सदा परि नारियर, बादाम छुहारे मगाय हो।
प्राणी चरण जजौं जिनराजके, यातै स्वर्ग मुकति फल पाय हो॥
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥ ७० ॥

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखाविषैं श्री जिन मंदिरमें १०८ प्रतिमा विराजमान तिनके चरणकमलेभ्यो फलं।

प्राणी जल फल वसुविधि अर्घ ले, प्राणी कनकथाल बिचधार हो।
चरण जजौं जिनराजके, जाके कमलनैन बलिहार हो॥
प्राणी जम्बूवृक्ष सुहावनो० ॥ ७१ ॥

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षकी उत्तर शाखा विषैं श्री जिनमंदिरमें १०८ प्रतिमा विराजमान तिनके चरणकमलेभ्यो अर्घं।

दोहा।

इम विधि जम्बूवृक्षकी, पूजा करी बनाय।
पूरव जो जयमाल शुभ, सो हिय पढ़े सुनाय॥ ७२ ॥

इति कुरुवृक्ष पूजा सम्पूर्णम्

अथ शाल्मली वृक्ष पूजा।

अडिल्ल छंद।

मेरु सुदर्शनतैं नौ रीति दिशि जानिये,
कोन विषैं शाल्मली वृक्ष परमानिये।
सीतोदा तटनी तट पश्चिम दिश मही,
भोगभूमि उत्कृष्ट जानि जिनवर कही॥
निषधाचलगिरि निकट आप दिशमें कहा,
जम्बूवत शाखा स्थित जिनमन्दिर जहां।
तहं जिन प्रतिमा अष्टोत्तर शत शास्वती,
तिनि आह्वानन करौं त्रिविध करी शुभमती॥७३ ७४ ७५॥

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरु सम्बन्धी शालमली वृक्ष पश्चिमदिश सीतोदा नदीतट उत्कृष्ट भोगभूमि स्थित निषधाचल जम्बूवृक्ष वत् शाखा स्थित जिनालय जिनप्रतिमा अष्टोत्तर शत पांचसै धनुष ऊँचा शरीर विराजमान अत्रावतरावतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः वषट् सन्निधिकरणं स्थापनम्।

सोरठा।

क्षीरोदधिको नीर, मणिमय झारीमैं भरौं।
पूजौं पद जुगवीर, जिनप्रतिमा शालमली विषैं॥७६॥

ॐ ह्रीं शालमली वृक्ष शाखास्थित जिनालय जिनेभ्यो जलं।

गो सीरप घन सार, गारि सुधर केसर मिलै।
चरण जजौं सुखकार, जिनप्रतिमा शालमलि विषै॥७७॥

ॐ ह्रीं शाल्मलीवृक्ष शाखास्थित जिनालय जिनेभ्यो चन्दनं।

मुक्ताफल उन हार, तन्दुल निर्मल धोयकै।
चरण पुञ्ज अवधारि, जिनप्रतिमा शालमलि विषै ॥७८॥

ॐ ह्रीं शालमलीवृक्ष शाखास्थित जिनालयजिनेभ्यो अक्षतान्।

प्रफुल्लित सुमन सुगन्ध, वरण वरणके लायकै।
पूजौं चरण जिनन्द, जिनप्रतिमा शालमलि विषै ॥७९॥

ॐ ह्रीं शालमलीवृक्ष शाखास्थित जिनालयजिनेभ्यो पुष्पं।

चरु वरु विविध प्रकार, कंचन थाल भरायकै।
पूजौं पद जुग सार, प्रतिमा शालमलि विषै ॥८०॥

ॐ ह्रीं शालमलीवृक्ष शाखास्थित जिनालयजिनेभ्यो नैवेद्यं।

दीप रतनमें वार, कंचन थालीमें धरौं।
पूजौं पद जुग सार, जिनप्रतिमा शालमलि विषै ॥८१॥

ॐ ह्रीं शालमलीवृक्ष शाखास्थित जिनालयजिनेभ्यो दीपं।

चन्दन अगर कपूर, धूप सुगन्धी खेइयै।
श्री जिन चरण हजूर, जिनप्रतिमा शालमलि विषै ॥८२॥

ॐ ह्रीं शालमलीवृक्ष शाखास्थित जिनालयजिनेभ्यो धूपम्।

फल प्रासुक उत्कृष्ट, दाख छुहारे ल्याइयै।
पूजौं पद जुग इष्ट, जिनप्रतिमा शालमलि विषै ॥८३॥

ॐ ह्रीं शालमलीवृक्ष शाखास्थित जिनालयजिनेभ्यो फलम्।

जल फल अर्घ संजोय, कञ्चन थाली धारिकै।
पूजत शिवसुख होय, जिनप्रतिमा शालमलि विषै ॥८४॥

ॐ ह्रीं शालमलीवृक्ष शाखास्थित जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाल।

दोहा।

गुण अनन्त संयुक्त प्रभु, राजत शिवसुखदाय।
भक्ति सहित तिन थुति करौं, कर्म अनन्त नसाय।८५॥

पद्धडी छन्द।

जिन प्रजरु अमरपद लह्यो सार, तिन अखिल कर्म रिपु दये टार।
द्रुम शाल्मलि शाखास्थित सुभाय, जिनमंदर प्रतिमा नमौं पाय॥
ये सगुन विगुन निर्मल विभाव, ये विहज विमय कृत शुद्ध भाव।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय॥
ये विमथ सुमथ हत दुर्विभूति, विफली कृत दुर्ज्जय कर्म सूती।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय॥
ये विरस सुरस फुनि विमत गात, ये विरत सुरत चित नित विवात।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय॥
मुनिगण चित नित थिनवास कीन, मिथ्यातम मति जिन करी क्षीन।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय॥
ये वितनु सुतनु भव रहित पीर, ये हैनिकार जिन मोह वीर।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय॥
नरदेव महेश्वर पूज्यपाद, परिहारित भ्रमपद विगत वाद।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय॥
अमितामित सौख्य सुधा अहार, विरजोम खेद विमुक्त सार।
द्रुम शाल्मली शाखास्थित समाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय॥
जग तीन सु मस्तक वास धार, वचनादि जोगत्रय हत विकार।

द्रुम शाल्मली शाखास्थित सुभाय, जिनमंदिर प्रतिमा नमौं पाय॥

।८६-९३॥

घत्ता-अडिल्ल।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण गुण सार जे,
वीरिय सूक्ष्म मत्वादि सकल अवधारिये।
लोकशिखर कृत वास भास गत ये सदा,
अघ दान करि जजौं हेत गुण सम्पदा॥ ९४॥

दोहा।

शिवसुख सागर मध्यगत, भव आताप निवार।
ते जिनवर भविजननको, होहु सुख्य दातार॥ ९५॥

इत्याशीर्वादः।

इति कुरुवृक्ष पूजा सम्पूर्णम्।

अथ निषिधाचल संबंधी चैत्यालय पूजा

सवैया।

षोड़श हजार अष्ट शतक अधिक और,
बियालीस जोजन है विस्तार सु जासको।
हेम वर्तन कूटक्षेत्रको विभाव जहां,
उपवन सहित जिनालय सु भासको॥
केशरी तिगंच द्रह नीर जहां है गम्भीर,
मध्य कञ्ज मंजु धृति देविके निवासको।
जिन गृह अष्टशत प्रतिमा विराजै जहां,
आह्वानन त्रिविध करि करै हम तापको॥ ९६॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल कुलाचल षोड़श हजार अष्टशत द्वचत्वारिंशति अधिक योजन विस्तार षन द्वय महित हेमवरण नव कूट-क्षेत्र विभाग श्री जिनालय मण्डल जिनात्र अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः संवौषट्, वषट्, सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं।

सोरठा।

क्षीर नीर भरि सार, मणिमय झारी ल्याइये।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भले॥ ९७॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालय जिनेभ्यो जलम्।

चन्दन केसरि गारि, अरु घन सार मिलायकै।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भले॥ ९८॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालय जिनेभ्यो चन्दनम्।

शालि सुगन्ध अपार, तन्दुल विमल पखारियै।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भलै॥ ९९॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालय जिनेभ्यो अक्षतम्।

पुष्प सुगन्धित चारु, पंचवरणके ल्याइकै।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भलै॥१००॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालय जिनेभ्यो पुष्पम्।

व्यंजन विविध प्रकार, अरु पकवान बनाइयै।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भलै॥१०१॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालय जिनेभ्यो नैवेद्यम्।

मणिमय दीप सम्हार, चौमुख बाती बारियै।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भलै ॥१०२॥
ॐ ह्रीं निषधाचल जिनालय जिनेभ्यो दीपम्।
खेवौ धूप अपार, अगर कपूर मिलायकै।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भलै ॥१०३॥
ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालय जिनेभ्यो धूपम्।
फल दृग मन सुखकारि, सरस मधुरवर लाइयै।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल जिनग्रह भलै ॥१०४॥
ॐ ह्रीं निषिधाचल जिनालय जिनेभ्यो फलम्।
जल फल अर्घ सुधार, मणिमय थारीमैं सही।
पूजों जिन सुखकार, निषधाचल पर्वत भलै ॥१०५॥
निषिधाचल पर जानि, सिद्धकूट वर नाम है।
कूटों बीच महान, जिनमन्दिर प्रतिमा जजों ॥१०६॥
ॐ ह्रीं निषिद्धोपरिसिद्धायतनकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
द्वितीय कूटवर सार, निषिध नाम निषिधाचलै।
पूजों जिन अघ हार, जिन मन्दिर प्रतिमा भलै ॥१०७॥
ॐ ह्रीं निषिद्धोपरि द्वितीय निषिधकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
सुधरकूटवर जोय हैं, हरि वर्ष सुहावनों।
निषिधाचलपर सोय, तहं जिनग्रह प्रतिमा जजौं ॥१०८॥
ॐ ह्रीं निषिद्धोपरि तृतीय हरिवर्षकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
तुरिय कूट शुभ ठाम, वर विदेह जसु नाम है।
पूजों जिन गुण धाम, निषिधाचल जिनग्रह भलौ ॥१०९॥
ॐ ह्रीं चतुर्थ विदेहकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

पंचमकूट बताय, चित्रय नाम सुहावनों।
निषिधाचलपर गाय, जिनमंदिर प्रतिमा जजौं ॥११०॥
ॐ ह्रीं पंचमकूट चित्रयनामनिषिधोपरि जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

प्रथित कूट धृति नाम, श्रीनिषिधाचलपर सही।
पूजौं जिन अभिराम, जिनमंदिर प्रतिमा सही ॥१११॥
ॐ ह्रीं निषिधोपरि छष्ठमघृतकूटनाम जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सप्तमकूट सु ठाम, हिमद नाम जसु गाइये।
पूजौं पूरण काम, जिन प्रतिमा भक्ति चढ़ाइये ॥११२॥
ॐ ह्रीं निषधोपरि सप्तम हिमवनामकूटजिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

श्रीविदेहवरकूट, निषिधाचल पर गावते।
शिवपुरके सुख लूट, जिनगृह अर्घ चढ़ावते ॥११३॥
ॐ ह्रीं निषधोपरि अष्टमविदेहकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

कूट रूचक जसु नाम, सुन्दर नवम विराजहीं।
पूजौं जिन गुण धाम, वसुविधि करि अघ भाजहीं ॥११४॥
ॐ ह्रीं निषिधोपरि रुचिककूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

दोहा।

सिद्धायतन आदि दै, कूट सु नव सुखदाय।
जिन मन्दिर प्रतिमा जजौं, नैन निरखि बलि जाय ॥११५॥
निषिध नील बीच जानिये, परम भोग भू सार।
तहां चारण मुनिपद जजौं, वसुविधि अर्घ सम्हारी ॥११६॥
ॐ ह्रीं निषिधनीलमध्यउत्कृष्टभोगभूमि तत्रचारणमुनिभ्यो अर्घं।

शून्य शून्य अर शून्य फुनि, सागर परमित जानि।
द्वय जोजन विस्तार भनि, कंज मंजु परमान ॥११७॥
तह धृति देवी भवन वर, जिनमंदिर तामांहि।
अष्टोत्तर प्रतिमा शतक, पूजत कर्म नसाहि ॥११८॥

ॐ ह्रीं निषधोपरि तिगंछद्रह चारहजार जोजन आयाम द्वय सहस जोजन व्यास ताके मध्य कमलोपरि धृतिदेवी मन्दिर जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

गीतिका छन्द।

सु तिगंछ द्रहतै निकसि सरिता, चली पश्चिम गामिनी।
छप्पन हजार विचार जसु, परिवार सार सुहावनी॥
तसु नाम हरिकांता कह्यौ, सागरि मिली चित जायकै।
सुर तत्र वासी जानि जिनग्रह, जजों अरघ बनायकै ॥११९॥

ॐ ह्रीं तिगंछ द्रहसे निकसि हरिकांतानदी पश्चिमसमुद्रगामिनी तत्र निवासी देव जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

सु तिछंग द्रहतै निकसि सीता, नदी पूरवको गई।
करि भूमि गजदन्त भेद, विदेह क्षेत्र विषै थई॥
परिवार जासु हजार चहु, वसु चारि सागरमैं मिली।
तहको निवासी देव जिनग्रह, जजों जिनप्रतिमा विली ॥१२०॥

ॐ ह्रीं तिगंछ द्रहतें निकसी कुरु भोगभूमिगत गजदंत भेदि-विदेहक्षेत्रगत पूर्वसमुद्रगामिनी सीतानदी चौरासीहजार परिवार सहित तत्रनिवासी देव जिनभक्तितत्पर जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

हिमवन कुलाचल पूजा।

सुन्दरी छन्द।

महा हिमवन कुलगिर दूसरौ, कूट वसु तसु जानि मनोहरौ।
चैत्यमंदिर जिन प्रतिमा तही, करो आह्वानन सु त्रिविध सही॥

ॐ ह्रीं चार हजार दोयसै दश योजन दशकला विस्तार सहित अर्जुनवरन महा हेमवत कुलाचल अष्टकूट संयुक्त जिनालय जिनप्रतिमा अत्रावतरावतर संवौषट् तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः सन्नि धिकरणम्।

अथाष्टकं।

सुन्दरी छन्द।

सुर सरित जल लै अति सीयरौ, कनक मणिमय झारीमें भरौं।
महा हिमवन जिनमन्दिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो जलं।

मलयगिर चन्दन घनसार लै, अति सुगन्धित केशर डारिकैं।
महा हिमवन जिनमन्दिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो चन्दनं।

विमल जल तन्दुल सु पखारिकै, कनक थारीमें बहु धारिकै।
महा हिमवन जिनमन्दिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान्।

ले गुलाब चमेली केवरौ, मालती मचकुंद रु मोगरौ।
महा हिमवन जिनमंदिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं।

तुरत गौ घृत पक्क बनायकै, सुघर घेवर बावर ल्यायकै।
महा हिमवन जिनमन्दिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं।

कनक थारी दीपक धारिये, जोति जगमग चउमुख बारिये।
महा हिमवन जिन मंदिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो दीपं।

अगर चन्दन घन कर्पूर ले, धूप दश विध करि मिश्रित भले।
महा हिमवन जिनमंदिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो धूपम्।

लौंग दाख बादाम सुपारी नारियर, ले छुहारे सुन्दर सेउ वर।
महा हिमवन जिनमंदिर जजौं, कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो फलम्।

जल सु सुन्दर चन्दन अक्षत पुष्प चरु,दीप धूप फलावलि अर्घ करुं।
महा हिमवन जिनमंदिर जजौं,कूट वसु युत जिनप्रतिमा भजौं॥२९

ॐ ह्रीं महाहिमवन सुकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

महा हिमवन पर्वत दुतीय गिनि, प्रथम जानहु कट सिद्धयतन।
तहां जिनालय जिनप्रतिमा जजौं, अर्घ जल फल लै वसुविधि सजौं॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि सिद्धायतन कूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

महा हिमवत पर्वत दूसरो, नाम धारक कूट सु वसु खरो। तहां०॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतपर्वतोपरि महाहिमवतकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

महा हिमवत ऊपर जानिये, कूट ह्री वृत नाम बखानिये ॥तहां०॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि ह्रीवृतकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

महा हिमवत पर्वत सार है, कूट हरिव नाम सुधार है ॥तहां०॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि हरिकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

महा हिमवत कूलभूधर शिखर, नाम है हरिकांत सु जासु वर ॥तहां०

ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि हरिकांत कूटविषैं जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

महा हिमवत पर्वत शिर विषैं, नाम हेमकूट सुश्रुत लिखैं ॥तहां०॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि हेमकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

महा हिमवन पर्वतके शिखर, कूट हरिवर्षादिक नाम वर ॥तहां०॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि हरिवर्षकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

नाम हिमवत कुलगिर सार है, कूट वैडूर्य सिरपरि धारि है ॥तहां०

ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि वैडूर्यकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

दोहा।

सिद्धायत तन आदिके, अष्ट कूट सु बखानि।
यजौं चरन जिन अघ लै, सदा भक्ति उर आनि ॥१३७॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि सर्वकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घं।

दोहा।

निषिध हेमवत दुहनके, मध्य भोग भू जानि।
चरनद्धि धारी सुमुनि, चरन जजौं सुख खानि ॥१३८॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन निषिध दोनोंके बीच हिमवतक्षेत्र मध्यम भोगभूमिवत्रवस्थ चारनमुनिभ्यो अर्घं।

अडिल्ल।

महापद्म द्रह सेती सरिता रोहिता,
निकसि चली पश्चिमको जन मन मोहिता।
वसु जुग सहस्र सु संख्या परियन जिस भजों,
वसुविधि तहां थिति देव जिनालय जिन जजौं ॥१३९॥

ॐ ह्रीं महापद्म द्रहसेती निकसी रोहिता नदी हेमवत क्षेत्र मध्यम भोगभूमिगत पश्चिम समुद्रगामिनी अष्टाविंशति सहस्र परिवार सहित नदी तत्र निवासी देव जिनभक्ति तत्पर जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ।

अडिल्ल।

महापद्म द्रह सेती हरित नदी वही,
दूजी कही बखानि पूवगामी सही।
छप्पन सहस विचार जासु परिवार है,
तहांवासी सुरजिन पूजौं जग सार है ॥१४०॥

ॐ ह्रीं महापद्म द्रहसेती दूजी नदी हरित नाम छप्पनहजार परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्ति तत्पर जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

महापद्म द्रह भीतर कमल सु जानियो,
जुगम सहस जोजनको परम प्रमानियो।

तहां ही देवीके ग्रह जिनमंदिर बनों,
यजौं चरन जिन वसुविधिकरि उत्सव घनों ॥१४१॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतोपरि महापद्मद्रह द्विसहस्र योजन विस्तार एक सहस्र योजन चौडो मध्य पद्म ह्रीं देवीग्रह जिनालय-जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

अथ हिमवत पूजा।

अडिल्ल छंद।

एक सहस्र अरु बावन जोजन जानियै,
द्वादशकला विचारि सार उर आनियै।
हेमवर्न हिमवन्त कुलाचल है वरौ,
तहां जिनमन्दिर प्रति मनु आह्वानन करौ ॥१४२॥

ॐ ह्रीं हेमवन्त कुलाचल एक हजार बावन जोजन कलाके विस्तार सहित हेमवरण एकादश कूट सहित तत्र जिनालय जिनाः अत्र गच्छागच्छ संवौषट्. तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः अत्र वकरणं वार त्रयं।

अथाष्टकं।

छंद पाहा योगीरासाकी चाल।

नीर क्षीर सम सुरगंगाकौं, कंचन झारीसे भरिये।
धार देत जिन चरन जुगमढिग, त्रिषा महा अब हरिये॥
एकादश वर कूट सहित गिर, हिमवत नाम वखानो।
जिनमंदिर जिनबिंब विराजत, पूजन तिनको ठानो ॥१४३॥

ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो जलम्।

मलयागिर कर्पूर मिले करि, केशरि तामें गारो।
जिन जुग चरनन अचरन कीजै, दाह दुरित निर्वारो ॥एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो चन्दनम्।

शालि अखंड प्रक्षालि सरस रस, शशिसम उज्वल ल्यावो।
पुंज धरों जिन चरनन आगे, तुरत अखयपद पावो ॥एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतम्।

सुर तरुके चुनि और कुसुम फुनि, वरन वरनके ल्यावो।
श्रीजिन चरन चढ़ाय भविकजन, कामबाण विनसावो।एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो पुष्पम्।

मोदक खाजे लै बहु ताजे, कंचन थार भरावो।
श्री जिन चरन चढ़ाय भविकजन, रोग क्षुधा जु नसावो ॥एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यम्।

दीप रतनमय कंचनके लय, जगमग जोति सुहाति।
आरति करते जिन चरननकी, मोह तिमिर मिट जाती।एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो दीपम्।

अगर कपूर सुगन्ध दशोविधि, धूप दहन बिच घालौ।
श्री जिन चरन समीप धूमिसे, कर्म काट परजालौ।एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो धूपम्।

फल अति सुन्दर पक्क मनोहर, मधुर २ बहु ल्यावौ।
श्री जिनचरन चढ़ाय भविकजन, मोक्ष महाफल पावौ।एका०॥
ॐ ह्रीं हिमवत जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो फलम्।

सलिल सुगन्ध सु तन्दुल उज्वल, पुष्प चरूवर धारो।
दीप धूप फल अर्घ सुमगकर, श्री जिनपद परवारो ॥एका०॥

ॐ ह्रीं हिमवतजिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

दोहा।

हिमवत पर्वतके ऊपर, सिद्धायत वर नाम।
कूट सु जिनग्रह जिन पूजौं, अर्घ बनाय सु ठाम ॥ १५२ ॥

ॐ ह्रीं हिमवतोपरि सिद्धायतनकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

हिमवत पर्वतके ऊपर, हिमवन कूट सु होय।
जिनमंदिर जिन प्रति जजौं, वसुविधि अ संजोय ॥ १५३ ॥

ॐ ह्रीं हिमवतोपरि हिमवन्तकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

हिमवत पर्वतके ऊपर, भरतकूट शुभ जानि।
तहां जिनमंदिर जिन जजौं, वसुविधि अर्घ सु जानि ॥१५४॥

ॐ ह्रीं हिमवतोपरि भरतकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

हिममवत पर्वतके उपरि, इला कूट निरधारि।
जिनमंदिर जिन प्रति जजौं, वसुविधि अर्घ सम्हारि ॥१५५॥

ॐ ह्रीं हिमवतपर्वतोपरि इलाकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

हिमवत पर्वतके उपरि, गंगाकूट है एक।
जिनमंदिर जिनवर जजौं, जिम गुण नाथ अनेक ॥१५६॥

ॐ ह्रीं हिमवतोपरि गंगकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

हिमवतपर्वतोपरि श्रीनामकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ॥१५७॥

हिमवत पर्वतके उपरि, रोहितकूट मनोग।
अर्चत जिनग्रह जिन चरण, कीजे वसुविधि जोग ॥१५८॥

ॐ ह्रीं हिमवतपर्वतोपरि रोहितकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

हिमवत पर्वतके उपरि, सुरादेवि वरकूट।
जिन अर्चा चर्चा करौं, बांधौ शुभकी मोठ ॥१५९॥

ॐ ह्रीं हिमवतोपरि सुरादेवीकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

गीता छन्द।

श्री पद्मद्रहसे निकसि, रोहित सरिता पूरबको चली।
अठवीस सहस सु नदी, परियन सहित जाय उदधि हि मिली॥
जल जन्तु वर्जित सुर मनोहित, कल्पद्रुम मण्डित सदा।
तहांको निवासी देव जिनग्रह, जजौं जिनवर सर्वदा ॥१६०॥

ॐ ह्रीं पद्मद्रहसे निकसि रोहितनदी जघन्य भोगभूमि मध्यगत पूरव समुद्रागामिनी अष्टविंशति नदी परिवार सहित तत्र निवासी देवजिनभक्ति तत्पर द्वारजिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाला।

पहिले सुदरशन मेरुकी, पूजाकी सोई हीया राखी।

गीता छन्द।

गीर्वान सुरपति सहित जिनपति, मुक्ति रमणी पति कहै।
निस्वेद निर्मल गुण विभूषित, ज्ञान नामि करम दहै॥
अघतिमिरनाशन भान दृगवर, ज्ञान वीरज सुख लहै।
इस विधि अनन्त चतुष्टयुत प्रभु, चरण हम तिनके नये॥

पद्धड़ी छन्द।

सुर नरपति फनपति पूज्य पाय, वसु कर्म रहित भव सिद्धदाय।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥
ये भवि सरोज प्रफुलन सुभानु, ये गनधर पुनि करि ध्याय मान।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित जिन हमको मुक्ति देह॥१६२॥
दुष्कृत गज घन मर्दन मृगेश, जग जीवदया कर बांधवेश।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥१६३
सिर छत्र तीन शोभे महान, क्षीरोपम चामर वीज्यमान।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥१६४
शिव शुद्ध रमापति शर्म दाय, जो मरण विनाशन है सु माय।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥१६५
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवन्त, चित्सौख्य वीर्य कर है महंत।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥१६६
ये पञ्च चरण निपगत जिनेश, नर नायक नरपति नुत महेश।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥१६७
सम्यक्त शुद्ध दर्शन विशुद्ध, सूक्ष्मत्व वीर्य संयुक्त सुबुद्ध।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥१६८
नो गुरु लघु अव्याबाध सार, इत्यादिक गुणके हैं भण्डार।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥१६९
ये सिद्धरूप फुनि सिद्धदाय, वारिज द्रग तिन हम नमैं पाय।
ये सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, स्थित ते जिन हमको मुक्ति देह॥१७०

इतिश्री हिमवन कुलाचल पूजा सम्पूर्णम्।

अथ नीलकुलाचल पूजा।

अडिल्ल छन्द।

मेरु उत्तर दिश नील कुलाचल जानिये।
षोडश सहस सु जोजन जासु प्रमानिये॥
आठ शतक ब्यालीस कला जुग ऊपरो।
तिस आह्वानन करो जिनलय जिनवरो॥१७१॥

ॐ ह्रीं मेरु उत्तरदिश नीलकुलाचल सोलह हजार आठसै ब्यालीस जोजन दोय कला विस्तार सहित वैडूर्य्य वर्ण नवकूट सहित जिनालय जिना अत्रागच्छागच्छ संवौषट् ठः ठः अत्रमम सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं।

त्रिभङ्गी छन्द।

क्षीरोदधि नीरं निर्मल सीरं, प्रासुक क्षीरं समलयके।
भृङ्गारमांहि भरि स्तवननि रत करि, हर्ष सुमन धर जै जै के।
नीलाचल कुलधर मेरु सु उत्तर, दिश मैं भूधर राजत है।
पूजो जिन मंदिर कूटसु नवशिर, पापविघन डरि भाजत है॥१७२

ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो जलम्।

गोसीरखचन्दन दाह निकन्दन, कदली नन्दन लेकरिकै।
केशर बहुडारो सरस सुगारो, रतन कटोरीमैं भरिकै॥नीला०॥

ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो चन्दनम्।

लै सुन्दरसाली नीर प्रछाली, कंचन थाली माहि भरो।
शशि किरन समानं करि बहु गानं, उत्सव ठानं हर्ष भरो॥नीला०

ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतं।

बहु कुसुम सुहाये अति विगसाये, जन मन माये ले सु धरें।
चम्पा जु चमेली बहुवन वेली, चहुंदिश फैली गंध धरें ॥निला०

ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं।

पकवान सुनींके गो घृत सीके, सुखकर जीके भरि थारी।
मोदक अरु खाजे पूजा साजे, लै बहु ताजे हितकारी ॥निला०॥

ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालय जनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं।

दीपक दुति मासिक जोति प्रकाशित, तिमिर विनाशिक रुपाय सही।
आरति करूं जिनवर मोह तिमिरहर, ग्यान प्रगट कर सुगुरु कही ॥

ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो दीपं।

मलियागिर चंदन कदली नंदन, अगर सुगंधन मेलि धरें।
लै धूप दशांगी पावक संगी, गुंजित भृङ्गी मोद भरें ॥नीला०॥

नीलाचल कुलधर मेरु सु उत्तर, दिशमें भूधर राजत है।
पूजो जिनमंदिर कूट सु नव सिर, पाप सकल डर भागत है।।नीला०

ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो धूपं।

बहु लौंग सुपारी दाख क्षुहारी, भरि थारी ले आवों।
तन मन दृगनासा सुखकर खासा, जिनपद वासा गुन गावो। नीला०

ॐ ह्रीं नीलाचलकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो फलम्।

जल चन्दन तंदुल पुष्प सु चरुमल, दीप धूप फल अर्घ धरों।
करि उत्सव भारी मिलि नरनारी, देदै तारी पुण्य भरौं ॥
नीलाचल कुलधर मेरु सु उत्तर, दिशमें भूधर राजत है।

पूजों जिनमंदिर कूट सु नव सिर, पाप विघन डर भाजत है ॥
ॐ ह्रीं नीलाचलनवकूटस्थ जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

प्रथम कूट सिद्धायतन, नीलाचल पर जानि।
जिनमंदिर जिन प्रति जजो, वसुविधि द्रव्य सु आनि ॥१८२
ॐ ह्रीं नीलाचलप्रथमकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

दोहा।

कूट विदेह सु नाम वानी, लालचके मांहि।
जिनमंदिर जिनराज, पद पूजत पातिक जाहि ॥१८३॥
ॐ ह्रीं नीलाचलविदेहकूटसुनाम जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

पूर्व विदेह सुकूटवर, नीलाचल गिर केर।
शीश सु जिन पद पूजते, होत पुण्यको ढेर ।१८४॥
ॐ ह्रीं नीलाचलपूर्वविदेहकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

सीता नाम सु कूटवर, नीलाचल पर सार।
जिन मंदिर जिनके चरण, पूज लहो भवपार ॥१८५॥
ॐ ह्रीं नीलाचल सीतानाम कूटजिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

कीर्ति कूट है नाम जिस, नीलाचल पर एक।
श्री जिनमंदिर जिन जजों, वसुविधि धार विवेक ॥१८६॥
ॐ ह्रीं नीलाचलकीर्तिकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

नाम कूट नरकांत वर, नीलाचलपर गाय।
जिन मंदिर प्रतिमा जजों, वसु विधि अर्घ बनाय ॥१८७॥
ॐ ह्रीं नीलाचल नरकांतकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घ।

अपर विदेह सु कूटवर, नीलाचलगिरि शीश।
जिन मंदिर जिन पूजिये, बहुविधि बिस्वावीस॥१८८॥
ॐ ह्रीं नीलाचल अपर विदेहकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

रम्य कूट सु गाइयो, नीलाचलपर जोय।
तहां जिनमंदिर जिन जजों, तन मन हरसित होय॥१८९॥
ॐ ह्रीं नीलाचल रम्यकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

अभि दरसन वरनाम जिस, नीलाचल पर कूट।
श्री जिनमंदिर जिन जजौं, जरा मरनतें छूट॥१९०॥
ॐ ह्रीं नीलाचल रम्यकूट जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

श्री सिद्धायतन आदि दे, अभि दरशन परिजन्त।
कूट सु नव पूजन करौ, जिनगुण गाय महन्त॥१९१॥
ॐ ह्रीं नीलाचल नवकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

सोरठा।

निषिद्ध नीलके बीच, भोगभूमि उत्तम कही।
पुण्य सरोवर सींच, तहं चरण पद पूजते॥१९२॥
ॐ ह्रीं निषिद्धनीलबीच उत्तमभोगभूमि चारणमुनिभ्यो अर्घं।

अडिल्ल छन्द।

नीलाचल द्रह नाम केशरी सार है,
जोजन चारि हजार जासु विस्तार है।
जुग आयामहै तासु जासु जिनवर मनौ,
पूजौं जिन प्रति कीरतिदेवी ग्रहतनौ॥१९३॥

ॐ ह्रीं नीलाचल केशरीद्रह आयाम विस्तार निषिद्धवति तत्र पद्ममध्य कीरतिदेवी मंदिर जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

गीता छन्द ।

श्री नीलगिर केशरी द्रहते, निकस सीतोदा नदी ।
सो अपर दिसगत मार्ग लेके, जाय समुद्र विषै फदी ॥
तिस कूलवासी देव जिनग्रह, जिनचरन पूजा करो ।
पुन गाय भक्ति बढ़ाय बहुविध, हर्ष तन मनमें धरो ॥१९४॥

ॐ ह्रीं केशरिद्रहसे निकसी सीतोदा नदी पश्चिमसमुद्रगामिनी चउरासी हजार परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्ति तत्पर सुमह जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

केशरी द्रहसे निकसी नारी, नदी पूरव गामिनी ।
छप्पन सहस परिवार क्रीड़ा, कराहि जहं सुरकामिनी ॥
तहं भोगभूमि सु मध्यगत, हैरन्यवत हि समायके ।
तस तट निवासी देव जिनग्रह, जजों भक्ति बढ़ायके ॥१९५॥

ॐ ह्रीं केशरीद्रहसे निकसी नारी नदी पूरव समुद्रगामिनी मध्य भोगभूमिगत हैरण्यवत क्षेत्र छप्पनहजार नदी परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्तितत्पर जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ।

अथ रुक्मगिर पूजा।

चारि सहस जुग शतदश जोजनको कह्यौ।
रुक्म नाम कुल गिरि दसकला सुवर्नयो॥
पुडरीक द्रह पुडरीक गत सोहए।
जिनग्रह जिनप्रतिमा आह्वानन तिन ठए॥ १९६॥

ॐ ह्रीं रुक्म पर्वतपर चारहजार दोसौ दश जोजन कला विस्तार सहित तत्र पुण्डरीक द्रह गति जिनालय जिनात्रागच्छा-गच्छ संवौषट् ठः ठः वषट् सन्निधीकरणम्।

अथाष्टकं।

झुलनियाकी ढाल।

सुरगंगाको नीरसु निर्मल ल्यावो,
नासो भव भव पीर जिन चरन चढ़ावो।
रुकुम शिखर वसु कूट जिनालय माही,
पूज करत जिनदेव सब दुख मिट जाही॥१९७॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो जलम्।

मलियागिर घनसार सु केसर गारो,
एला अगर लंवग लै तामें डारो॥१९८॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो चन्दनम्।

तन्दुल धवल अनूपम सरस सुहाए,
शशिकी किरन समान लै थार भराए॥१९९॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतम्।

वेल चमेली फूल गुलाब मंगावो,
जाइ जुही मचकुन्द सु चुनि चुनि ल्यावो ॥२००॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो पुष्पम्।

घेवर बावर लड्डू ल्यावो बहुविधि ताज,
फेनी सरस सुहास अरु खुरमा खाजे ॥२०१॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यम्।

दीपरतनमय ज्योति न दोति दसौं दिशि,
थार कनकमे धारि, तम जात महा नशि। रुक्म०॥२०२॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो दीपं।

धूप सुगन्धी खेय अगनीमें भारी।
पाप धूम उड़ि जाय, दशों दिश भारी। रुक्म०॥२०३॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो धूपम्।

एला और लवंग लै दाख छुहारे।
किसमिस संउ बदाम जिन चरणन धारे ॥रुक्म०॥२०४॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो फलम्।

जल चन्दन वर कुसुम, चरु दीप सम्हारो।
धूप फलादिक अर्घ, जिन चरन उतारो ॥ रुक्म० ॥
रुक्म शिखरवर कूट जिनालय माही।
पूज करत जिनदेव, सब दुख मिटि जाही ॥रुक्म०॥२०५॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वत जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

अथ वसु कूट पूजा।

सोरठा।

रुकमाचल पर जानि, प्रथम कूट सिद्धायतन।
पूजौं श्री भगवान, अकृत्रिम जिनमंदिर सदा ॥ २०६ ॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वतवर सिद्धायतनकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

रुकमाचल पर सार, कूट रुकमवर नाम है।
कीजे ज जैकार, जिनमंदिर जिनवर जजौं ॥ २०७ ॥

ॐ ह्रीं रुक्मकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

रम्यकूट पिछानि, रुकमाचल कुलगिर विषै।
पूजों वसुविध आनि, द्रव्य मनोरथ थार लै ॥ २०८ ॥

ॐ ह्रीं रम्यकूकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

नारीकूट विशाल, रुकमाचल गिर ऊपरे।
द्रव्य लाय भरि थाल, जिनमंदिर जिनप्रति जजौं ॥ २०९ ॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि नारीकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

रुकमाचलके मांहि, बुद्धिकूट जिन नाम है।
पूजत कर्म नसांहि, जिनमंदिर प्रतिमा सदा ॥ २१० ॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि बुद्धिकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

रौप्यकूट वरु नाम, रुकमाचल गिरिके विषै।
पूजौं जिन गुण धाम, वसुविध उत्सव ठानिकै ॥ २११ ॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि रूप्यकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

रुकमाचलगिरि शीश, हैरण्यावत कूट है।
पूजो जिन जगदीश, जिनमंदिर है शाश्वतो ॥ २१२ ॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलपरि हैरण्यवतकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

रुक्माचल गिरिकूट, मत कांचन वर नाम है।
चहुंगति दुखतें छूट, जिनमंदिर जिन पूजतैं ॥ २१३ ॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि मणिकांचनकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

दोहा।

सिद्धायतन आदिके, कूट सु वसु सुखकार।
रुक्माचल गिरिके ऊपरि, पूजौं जिन गुण धार ॥ २१४ ॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि वसुकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

रुक्मशिखिर बिच जानिये, भोगभूमि शुभ ठाम।
तह चारन मुनिजन जजो, है जघन्य जिस नाम ॥ २१५ ॥

ॐ ह्रीं रुक्मशिखिर बीच हिरण्यक्षेत्र जघन्य भोगभूमि तत्रस्थ चारणमुनिभ्यो अर्घं।

अडिल्ल छन्द।

रुक्माचल पर पुंडरीक द्रह सार है,
पुंडरीक बिच बुद्धि सुरी ग्रह चारु है।
तह जिनमंदिर जिनप्रतिमा पद पूजियै,
वसुविध अर्घ बनाय सु हर्षित हूजिये ॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि पुण्डरीकद्रहमध्ये पुण्डरीक बीच बुद्धि देवी ग्रह जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

पुण्डरीक द्रहसेती, निकस चली भली,
नरकान्ता सरिता सागर बिच जो मिली।
तहां तटवासी देव सेव जिनवर भजै,
तिस ग्रह जिनमंदिर जिनप्रतिमा हम जजै ॥ २१६ ॥

ॐ ह्रीं पुण्डरीक द्रहसे निकस, नरकान्ता नदी मध्यम भोगभूमि गत पश्चिम समुद्रगामिनी षट्पंचाशत् नदी परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्ति-तत्पर जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

पुण्डरीकसे निकसी सरिता दूसरी,
सुवर्ण कूला नाम जाय सागर मिली।
तट सु कूलवासी स्वर जिनमंदिर सही,
पूजौं जिन प्रतिमावर श्रीगुरु इम कही ॥२१७॥

ॐ ह्रीं पुण्डरीक द्रहसे निकसी दूसरी सुवर्णकूला नदी जघन्य भोगभूमि मध्यगत पूर्व समुद्रागामिनी अढाई हजार नदी परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्ति तत्पर जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

अथ शिखिर पर्वत पूजा।

सुन्दरी छन्द।

शिखिर पर्वत पर परमानिये, नाम कुरुगिरि षष्टम जानिये।
कूट एकादश जिनग्रह धरे, त्रिविध करि तिन आह्वानन करै ॥२१८

ॐ ह्रीं शिखिर पर्वत द्वापंचाशत् जोजन अधिक एक सहस्र द्वादश कला एकादश कूट जिनालय जिनात्रावतरावतर संवौषट् ठः ठः वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं।

चाल समोशरणके पाठकी "सुगुन हम ध्यावै" इस चालमें।

सोरठा।

सुर गंगाजल लै झारी, धार देत दुख त्रिषा निवारी।
सुपद इम ध्यावै शिखरी, गिरिपर कूट सुहाए ॥

एकादश वर सुगुरु बताए, जहां जिनग्रह जिनबिंब सु पूजौं।

जिन सम तिहु जगदेव न दूजो, सुपद हम ध्यावै।

जिन गुण मुनि भवि पार न पावै सुपद० ॥२१९॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो जलं।

मलयागिरि केसरि सम गारो।

पूजत जिन पद त्रिखा निवारो ॥ सुपद० ॥ २२० ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो चन्दनं।

तन्दुल धवल पखारि अखण्डित।

चन्द किरिनि सम बहु गुण मण्डित। सुपद० ॥ २२१ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो अक्षतम्।

कमल केतुकी कुन्द कुसुम वर।

पारजाति जम्पावति लै कर ॥ सुपद० ॥ २२२ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो पुष्पं।

मगद मुगदके मोदक ल्यावो।

फेनी घेवर सरस बनावौ ॥ सुपद० ॥ २२३ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो नैवेद्यम्।

मणिमय दीप रतनमय वाती।

जगमग जोति होत तम घाती ॥ सुपद० ॥ २२४ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो दीपं।

अगर कपूर गन्ध सब डारौ।

धूप दशांग खेई अब जारौ ॥ सुपद० ॥ २२५ ॥

ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो धूपम्।

सेउदा फल ल्याय अमृतफल।
दाख छुहारे मधुर मधुर भल ॥ सुपद० ॥ २२६ ॥
ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो फलम्।
जल फल अर्घ बनाय सुहाई।
जिन चरणाम्बुज पूज रचाई ॥ सुपद० ॥ २२७ ॥
ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

सुन्दरी छन्द।

शिखिरपर्वत ऊपर जानिये, कूट सिद्धायतन परमानिये।
जजौं तन मन करि उत्सव भलै, जल सुगन्धादिक वसु अर्घ लै॥
ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि सिद्धायतनकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
शिखिरि पर्वत कूट सुहावनो।
नाम धारक तसु मन भावनो ॥जजौं० ॥२२८॥
ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि शिखिरकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
शिखिर पर्वत कूट हिरन्यवत भलो।
जजो जिनप्रति जिनग्रह अघ दलो ॥ जजौं० ॥२२९॥
ॐ ह्रीं शिखिरपर्वतोपरि हिरण्यकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
शिखिर कूट सुरादेवी कहो।
जजो जिनगृह सो वसु रिपु दलो ॥ जजौं० ॥२३०॥
ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि सुरादेवीकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
रक्तकूट शिखर गिर पर बनौं।
जजौं जिन प्रति कर उत्सव घनौं ॥ जजौं० ॥२३१॥

ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि रक्तकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ।

कूट लक्ष्मी जिन मन्दिर जजौं ।

अर्घ थार विषै बहुविधि सजो ॥ जजौं० ॥२३२॥

ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि लक्ष्म कूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ।

कूट नाम सुवर्ण गिनीजिये ।

शिखिर पर सुसमर्चन कीजियै ॥ जजौं० ॥२३३॥

ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि सुवर्णकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ।

कूट रक्तावती सु सार है ।

शिखिर परि पूजौं अघ ना रहै ॥ जजौं० ॥२३४॥

ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि रक्तावर्त कूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ।

कूट गंधावती शुभ जानियै ।

शिखिर परि जिन पूजन ठानियै ॥ जजौं० ॥२३५॥

ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि गन्धावर्त कूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं ।

कूट ऐरावत जिस नाम है ।

शिखिर पर पूजौं जिन धाम है ॥ जजौं० ॥२३६॥

ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि ऐरावतकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

हेम मनिवर कूट सु गाइये ।

शिखिर परि जिन पूज रचाइये ॥ जजौं० ॥२३७॥

ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि हेममनिकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

सिद्धायतन आदि दे, मनिकांचन पर्यंत ।

कूट जिनालय जिन जजौं, करि कर्मनको अन्त ॥२३८॥

ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

सुंदरी छंद।

कूट सिद्धायतन कहे जिते, तिन हि पर जिनमंदिर शाश्वते।
अवर कूटनुवसती सुरसरी, तिनहु मैं जिन प्रतिमा शाश्वति खरी॥ ३९

अडिल्ल छन्द।

शिखिरगिरी मह पुण्डरीक द्रह सार है,
योजन सहस आयाम अरघ विस्तार है।
ता बिच कंज एक योजनको है मही,
पूजौं लक्ष्मी ग्रह जिनमंदिर जिन कही॥२४०॥

ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि महापुण्डरीक द्रह आयाम योजन एक हजार विस्तार योजन पांचसौ, तिस बीच कमल योजन एक, तत्र लक्ष्मीग्रह जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

गीता छन्द।

वा कंज द्रहसे निकसि सरिता, रूपकूला नाम है।
सो भोगभूमि जघन्य गत, जाकौं महासुख ठाम है॥
पश्चिम समुद्र गामिनी वसु, युग सहस परिपन गाइये।
तह कौन निवासी देव जिनग्रह, जजै शुभ गति पाइये॥२४१॥

ॐ ह्रीं शिखरिपर्वतोपरि महापुण्डरीक आयाम योजन १००० विस्तार योजन ५०० तहांसे निकसी रूपकूला नदी जघन्य भोगभूमि गत पश्चिम समुद्रगामिनी २०००० नदी परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्ति तत्पर तहां जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

चडकंज द्रहसों निकस रक्ता, पूर्वदिशकौं जो चली।
चौदह हजार सुधारि निज, परिवार सागर बीच मिली॥
तसु पुलिन वासी सुरनके, तन जिनजिनालय पूजिये।
जल गंध आदिक अघ ले, यातै अमरपद हूजिये॥२४२॥

ॐ ह्रीं महापुण्डरीक द्रहसे निकसी रक्तानदी विजयार्द्ध फोट-यित्वा ऐरावतक्षेत्र गामिनी चतुर्दशसहस्र नदी परिवार सहित तत्र निवासी देव जिनभक्त तत्पर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

चडकंज द्रहसे निकसि रक्तोदा, नदी पश्चिम गई।
चौदश सहस परिवार ले करि, जाय सागरमें थई॥
तस कूलवासी अमर ग्रह, जिनवर जिनालय अरचिये।
गुन गाई अर्घ बनाय बहुविधि, वचन तन मय परचिये।२४३॥

ॐ ह्रीं महापुण्डरीक द्रहसे निकसी रक्तोदा नदी चौदहहजार परिवार सहित ऐरावत क्षेत्रगत पश्चिमगामिनी तत्र निवासी देव जिनभक्त तत्पर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाला।

गीर्वाण सुरपति महित जिनपति इत्यादि।

इति षटकुलाचल पूजा।

अथ विजयार्ध पूजा

अडिल्ल छंद

भरतक्षेत्र गत विजयार्द्ध गिर सोहए।
नगर दशोत्तर सत जाकै ऊपर लसै,
तहां विद्याधर बसैं अमरगनको हसै।
है पचीस जोजन ऊपर तल वापतै,
त्रिशत विस्तीर्ण दीर्घ पंचापतै॥
नगरी बिच जिन मंदिर इक इक सार है,
आह्वानन तसु करो कूट नव धार है॥ २४४॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धगिर भरतक्षेत्र गत पचास जोजन लम्बा तीस जोजन चोड़ा, पचीस जोजन ऊंचा तत्रस्थ जिनात्र अवतरावतर संवौषट्, तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः वषट् अत्र सन्निधिकरणं धार त्रयं पठनयं।

अथाष्टकं।

चाल जिनजूकी इन्द्र पूजा करै।

एजी सलिल विमल सुरसरीको भरि, कंचन झारी सार हो।
जिनपद जुग परछालिये, जातैं रोग त्रिखा निरवार हो॥
विजयारधगिरि पूजिये, नगरी जिनमंदिर सार हो।
कूटनवर फुनि जानिये, जिन इह नव सुखकार हो॥ विज०॥

ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो जलम्

बावन चन्दन ल्यायकैं, केसरि घन सार मिलाय हो।
जिनपद पूजों भावसैं, जातै दाह दुरित मिट जाय हो। विज०॥

ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो चन्दनम्।

सालि अखण्डन बीन लै, फुनि कीन विमल जल धोय हो।
जिनपद आगै पुंज देयतै, तुरत अपै पद होय हो॥
विजयारध जिन पूजिये, नगरी जिनमन्दिर सार हो।
खगपति जहां पूजा करै, भव यामैं भविदधि पार हो॥विज०॥

ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो अक्षतम्।

एजी मोगरु मरुवो मालती, जाती एती बन्धु कहो।
जिनपद पंकज पूजतैं जातैं, नसै नसै सकल दुख शोक हो। विज०

ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो पुष्पम्।

एजी खाजे ताजे बनायके, फेनी श्रेणी अवधारि हो।
कंचन थारी भराइये, पूजैं जिनपद सुखकार हो॥
विजयारधगिरी पूजिये, नगरी जिनमन्दिर सार हो।
खगपति तहं पूजा करै, अर पावै भवोदधि पार हो॥विज०॥

ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो चरुं।

एजी दीप रतनमैं ल्यायकें, जिन जोति न होति अमन्द हो।
आरति कर जिन चरनकी, यातैं कटै कर्मको फन्द हो॥विज०॥

ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो दीपम्।

अगर कपूर सुगन्ध ले, विच धूप दहनमें खेय हो।
पाप धूम भव उड़ चलै, वसु कर्म जलै स्वयमेव हो॥विज०॥

ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो धूपम्।

एजी लौंग सुपारी लायची, बादाम छुहारे लाउ हो।
जिनपदपंकज पूजतै, भवि तुरत अपै पदसे हगै॥विज०॥२५२

ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालय जिनेभ्यो फलम्।

एजी जल चन्दन कुसुमावली, चरु दीप धूप फल सार हो।
अर्घ बनाय सुगाइये गुन, मनवांछित दातार हो॥विज०॥२५३॥
ॐ ह्रीं विजयारधपर्वतोपरि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

सोरठा।

प्रथा सिद्धायतन कूट विजयारध गिरपर कह्यौ।
वसुकर्मनतें छूट जिन मन्दिर जिनप्रति जजौं॥२५४॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि सिद्धायतनकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

दक्षिण दिश वरजानि, कूट जिनालय जिन जजौं।
विजयारध परिमाण, वसुविधि अर्घ बनायलैं॥२५५॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि दक्षिणार्धकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

कूट जु खण्ड प्रपात, विजयारध गिर पर सही।
नासै भव भव पाप, जिन मन्दिर जिन पूजतैं॥२५६॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि खण्डप्रपातकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

पूरन भद्र पिछानि, कूट जिनालय जिन जजौं।
विजयारध परमाण, जल फलादि वसु द्रव्यसैं॥२५७॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि पूर्णभद्रकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

मानभद्र शुभ कूट, विजयारध ऊपर लसै।
सुरपुरके सुख लूट, श्री जिन मन्दिर जिन जजौं॥२५८॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि मानभद्रकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

कूट तमिश्रा नाम, विजयारध पर जानियै।
पूजौं जिनगुण धाम, वसुविध द्रव्य सु आनियै॥२५९॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि ग्रामश्रवणकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

उत्तरार्द्ध वर शृङ्ग, विजयारध पर पौ लस।
जिनप्रतिमा सर्वांग, नमिकर पूजत अघ नसै ॥२६०॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि उत्तरार्द्धकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

कूट वैश्रवण सार, विजयारध गिरपर भलो।
पूजौ जयजयकार, जिन मन्दिर प्रतिमा सही ॥२६१॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि वैश्रवणकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

मान वैश्रवण जान, विजयारध परि सानु है
पूजौ श्री भगवान, जिनप्रतिमा जिनग्रह भले ॥२६२॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि मानश्रवणकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ विजयार्द्ध दक्षिणश्रेणि पचास नगर जिनालय जिनपूजा।

विजयारध पर सार, किन्नरपुर शुभ जानियै।
लै वसुद्रव्य अपार, जिनमन्दिर जिन पूजियै ॥२६३॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि किन्नरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, विनगरीत पुर नाम है।
पूजौं जिन गुण धार, जल फलादि वसु द्रव्य लै ॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि विनगरीतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर जानि, बहुधुज नाम नगर भलो।
पूजौं जल फल जानि, तहां जिनमन्दिर शाश्वतो ॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि बहुधवजपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर जोय, सिंहध्वजपुर नाम है।
वसुविधि अर्घ संजोय, श्रीजिनमंदिर जिन पूजयै ॥२६४॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि सिंहध्वजपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारधगिर ठाम, पुण्डरीकपुर नाम है।
पूजौं जिन गुण धाम, वसुविध द्रव्यसु ल्यायकै ॥२६५॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि पुण्डरीकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध परि सार, वीतसोकपुर पुर नाम है।
पूजौं जग जिन धार, वसुविध अर्घ बनायकै ॥२६६॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि वीतसोकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारधगिर मांहि, गुरुड़ध्वजपुर जो वसै।
पूजौं जिन गृह ताहि, जनम जनम पातिक नसै ॥२६७॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि गरुड़ध्वजपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

श्रीप्रभनगर विशाल, विजयारधपर जानियै।
अर्घ ल्याय दर हाल, जिनमंदिर जिन पूजियै ॥२६८॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि श्रीप्रभनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारधपर जानि, श्रीधरनगर मनोग है।
पूजो उर धरि ध्यान, वसुविध अर्घ बनायकै ॥२६९॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि श्रीधरनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर थाम, लोहार्गलपुर नगर है।
वसुविध अघ बनाय, जिनग्रह जिन प्रति पूजियै ॥२७०॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि लोहार्गलपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

नाम अरिंजय जासु, पुर विजयारध ऊपरै।
पूजों जिनगृह तासु, जिनप्रतिमा वसु द्रव्य लै ॥२७१॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि अरिंजयपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारधपर जोय, वज्रार्गलपुर नगर है।
पूजे अघ क्षय होय, जिनप्रतिमा वसु द्रव्य लै ॥२७२॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि वज्रार्गलपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

पुनि विजयारध और, नगर वज्रपुर सार है।
पूजों जिनपद जोर, अघ लाय गुन गायकै ॥२७३॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि वज्रपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध गिर सीस, नाम पुरञ्जय नगर है।
पूजों जिन जगदीस, जल फलादि वसु द्रव्य लै ॥२७४॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि पुरञ्जय जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारधपर जानि, नाम विमोचन नगर है।
पूजों वसुद्रव आनि, जिन मंदिर जिन चरण युग ॥२७५॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि विमोचनपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध गिरि जोय, नाम सकटपुर शुभ वसै।
तहं जिन मंदिर होय, पूजों जिनप्रतिमा भलै ॥२७६॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि सकटपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, नगर चतुरमुख वसत है।
जिन मन्दिर सुखकार, जिन प्रतिबिंब सु पूजियै ॥२७७॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि चतुर्मुखनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध गिर ठीक, नगर बहुमुख सुधर है।
लै वसु-द्रव्य सुनीक, जिनमन्दिर जिन पूजिये॥ २७८॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि चतुर्मुखनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध परसार, नाम अमरपुर नगर है।
पूजो जिन जगधार, है जिन मन्दिर तहां भलो॥२७९॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि अमरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर जानि, जयपुर नगर सुसार है।
पूजो जिन सुखकार, वसुविध अर्घ संजोयके॥२८०॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि जयपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध सुख धाम, महाश्वेत ध्वजपुर बसै।
पूजै वंछित काम, जिन मन्दिर प्रतिमा जजै॥२८१॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि श्वेतध्वजपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

रथनू पुरव सार, नगर जिययारध पर बसै।
जिनमन्दिर अघहार, जिन प्रतिमा वसुविधि जजौं॥२८२॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि रथनूपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

चक्रवालपुर सार, विजयारध पर जानिये।
चरन जजौं सुखकार, पूजँ जिन प्रतिमा भलै॥२८३॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि चक्रवालपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध वर जानि, अपराजित पुर नगर है।
पुजौं जिन गुण खानि, जल फलादि वसुविधि सही। २८४॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि अपराजितपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर गाय, श्रीमेखलाख्य नगर भलौ।
तहां जिनमंदिर पाय, जिन प्रतिमा वसुविधि जजौं॥२८५

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि श्रीमेखलाख्यपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, अपराजितपुर नाम है।
तहँ जिनगृह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये॥२८६॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि अपराजितपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, कामपुष्प पुर जो वसै।
तहां जिनगृह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये।।२८७॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि कामपुष्पपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, गगनचेनपुर नाम है।
तहां जिनगृह सुखकार, लै जलादि पूजा करौ॥२८८॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि गगनार्चन जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, विनय आदि पुर अंत है।
तहां जिनगृह सुखकार, लै जलादि जिन पूजियै॥२८९॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि विनयपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, विसुंश्रुक पुर वसत है।
जहां जिनगृह सुखकार, लै जलादि जिन पूजियै॥२९०॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि विसुंश्रुकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध गिर सार, संजयंत पुर जो वसै।
तहां जिनगृह सुखकार, लै जलादि जिन पूजियै॥२९१॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि संजयंतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारधपर सार है, जयन्तपुर दूसरो।

तहां जिनग्रह सुखकार, ले जलादि जिन पूजिये। २९३।

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि जयंतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि जयपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, वैजयन्तपुर नगर है।

तहां जिनग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये॥ २९४॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि वैजयंतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, क्षेमंकरपुर नगर है।

जहां जिनग्रह सुखकार, लै जलादि पूजा करो॥ २९५॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि क्षेमंकरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, चन्द्रप्रभपुर सार है।

तहां जिनग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये॥ २९६॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि चन्द्रप्रभपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, सूर्यप्रभपुर वसत है।

तहां जिनग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये॥ २९७॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि सूर्यप्रभपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, सुरतिचित्रपुर नाम है।

तहां जिनग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये॥ २९८॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि सुरतिचित्रपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, महाकूटपुर जानिये।

तहां जिनग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये॥ २९९॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि महाकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, हेमकूटपुर नगर है।

तहां जिनग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये ॥३००॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि हेमकूटपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, है त्रिकूटपुर नगर जहं।

तहां जिनग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये॥३०१॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि त्रिकूटपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, चित्रकूटपुर नगर है।

तहं जिनग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये ॥३०२॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि चित्रकूटपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, पुर वैश्रवण सु नाम है।

तहां जिनग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये ॥३०३॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि वश्रवणपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

मेघकूटपुर नाम, विजयारध पर जानिये।

पूजौं जिनवर ठाम, जिन प्रतिमा तहां शाश्वती ॥३०४॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि मेघकूटपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, सूर्यनगर वर नाम है।

तहां जिनग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये ॥३०५॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि सूर्यनगरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, चन्द्रनगर पुर जो लसैं।

तहां जिनग्रह सुखकार, लै जलादि जिन पूजिये ॥३०६॥

ॐ ह्रीं विजयारधोपरि चन्द्रनगरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, नित्योद्योतपुर बसत है।
तहां जिनग्रह सुखकार, ले जलादि जिन पूजिये ॥३०७॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि नित्योद्योतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, नगर विमुखपुर नाम है।
तहां जिनग्रह सुखकार, ले जलादि जिन पूजिये ॥३०८॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि विमुखपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, नित्यवाहपुर नगर है।
तहां जिनग्रह सुखकार, ले जलादि जिन पूजिये ॥३०९॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि नित्यवाहपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध पर सार, नगर सुमुखपुर नाम है।
तहां जिनग्रह सुखकार, ले जलादि जिन पूजिये ॥३१०॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि सुमुखपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

छन्द पाद्दा।

विजयारध दक्षिण दिश नगरी, है पचास प्रमाना।
जिनग्रह जिन प्रतिमाको दीजै, पूर्ण अर्घ निदाना॥
जल गन्धाक्षत पुष्प वस्तु चरु वरु, दीप धूप फल धारी।
वसुविधि अघ बनाय गाय गुण, अशुभ कर्म निवारौ॥३११॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि दक्षिण दिश पचास नगर जिनालय जिनेभ्यो पूर्णार्घं।

अथ उत्तर दिश पूजा।

दोहा।

विजयारध उत्तर दिशा, अर्जुन नगर बताय।
तहां जिन गृह जिनवर जजौं, वसुविध अर्घ बनाय॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि अर्जुननगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, पुर कैलास सुहाय॥ तहां०॥
ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि कैलाशपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, वारुन नगर बसाय॥ तहां०॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि वारुननगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, अरुण नगर सुखदाय॥ तहां०॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि अरुणनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, किल किल नगर सु पाय॥तहां०॥
ॐ ह्रीं विजयारधोपरि किलकिलनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, चूडामणि पुर जाय॥ तहां०॥
ॐ ह्रीं चूडामणिपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, चन्द्रप्रभ पुर गाय॥ तहां०॥
ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, पुर विशाल तसु नाम॥तहां०॥
ॐ ह्रीं पुर विशाल जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, पुष्पचूडापुर थाय॥ तहां०॥
ॐ ह्रीं पुष्पचूड पुर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, हंसगर्भपुर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं हंसगर्भपुर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, पुरवलाह सु बसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं पुरवलाह जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, नगर शिवंकर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं शिवंकरनगर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, हर्म्यापुर सुखदाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं हर्म्यापुर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, चमर नगर सु बसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं चमरपुर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, शिवमंदिरपुर नाम ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं शिवमन्दिरपुर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, पुर वसुमुक्त बसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं वस्तुमुक्तपुर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, पुरी वसुमती धाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं वसुमतीपुर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, सिद्धारथ सुर नाम ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं सिद्धारथपुर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, सेतुंजयपुर दाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं सेतुंजयनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
विजयारध उत्तरदिशा, केतुमाल सु बसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं केतुमालपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, भद्रिकांतपुर थाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं भद्रिकांतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, गगननगर सु सुहाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं गगननगरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, पुर अशोक सुखदाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं अशोकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, पुर विशोक सु बताय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं विशोक जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, वीतशोक सुखदाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं वीतशोकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, अलकापुर शुभ गाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं अलकापुर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, तिलकांतापुर गाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं तिलकांतापुरनगर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, गगननगर सु भमाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं गगननगर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, मंदिरनगर सुहाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं मंदिरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, कुन्दनगर शुभ ठाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं कुन्दनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, कामदनगर सुहाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं कामदनगर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, गगनवल्लभपुर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं गगनवल्लभपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।
विजयारध उत्तरदिशा, गगनतिलक सुखदाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं गगनतिलकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।
विजयारध उत्तरदिशा, भूमतिलकपुर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं भूमतिलक नाम पुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।
विजयारध उत्तरदिशा, पुर गन्धर्व सुहाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं गन्धर्वपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।
विजयारध उत्तरदिशा, नेमिखनगर बताय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं नेमिखनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।
विजयारध उत्तरदिशा, मुक्ताहारपुर ठाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं मुक्ताहारपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।
विजयारध उत्तरदिशा, अग्निज्वालपुर गाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं अग्निज्वालपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।
विजयारध उत्तरदिशा, श्रीनिकेतपुर थाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं श्रीनिकेतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।
विजयारध उत्तरदिशा, महानिकेत सु बसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं महानिकेतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।
विजयारध उत्तरदिशा, वामनगर सुखदाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं वामनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।
विजयारध उत्तरदिशा, रत्न वज्र सु बसाय ॥ तहां० ॥
ॐ ह्रीं रत्नवज्रपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

विजयारध उत्तरदिशा, श्रीभद्रपुर थाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीभद्रपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, गोक्षीरक सुखदाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं गोक्षीरकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, केरलनगर बसाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं केरलपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, पुर अक्षोभ सुहाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं अक्षोभपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, बाहु अंगपुर थाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं बहु अंगपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, महिक्षोभपुर गाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं महाक्षोभपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, सैलनगर सुखदाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीसैलनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, पृथवीपुर सुखदाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं श्रीपृथ्वीपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, भूधरपुर सु बसाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं भूधरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, दुर्गनगर सु बसाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं दुर्गनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, नगर सुदर्शन थाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तर दिशा, विजयारधपुर गाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं विजयारधपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, नगर सुगन्ध सुहाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं सुगन्धनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, वज्रनगर सु बसाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं वज्रनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, रत्नाकर पुर थाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं रत्नाकरपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध उत्तरदिशा, सदा रतनपुर गाय ॥ तहां० ॥

ॐ ह्रीं सदारतनपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं

अडिल्ल छन्द।

विजयारध उत्तरदिशि श्रेणी जानिये।
साठिनगर सु बसाय जिनेश बखानिये।
तिन बिच जिनमन्दिर जिनप्रतिमा राज ही।
पूजत अर्घ बनाय जजों अघ भाज ही ॥३१८॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि उत्तरदेश साठिनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाला।

विजयारध श्रेणी विषैं एक एक सार।
जिनमन्दिर जिन बिंब तहं, वन्दों शिवसुखदाय ॥३१९॥

पद्धडी छन्द ।

जहं रतनभूमि सोहे सु ठाग, तहं पुष्पवाटिका लसै सार ।
विजयारध गिर जिनराज ग्रेह, वन्दों सु दशोत्तर शतक राह ॥
तिनमें प्रतिबिंब विराजमान, सुर खेचर पूजन कर महान ।
सिंहासन स्थित जिनजगत भूप, वसु प्रातिहार्य शोभै अनूप ॥ वि० ॥
जहां छत्र तीन सोहैं उदार, शिर चमर झुलै जिम क्षीर धार ।
घंटा झालरि बाजै सुभाय, सुर सुरीनि रति करती सुहाय । वि० ॥
बाजत बाजे सब साज संग, विन मृदंग मुह चंग चंग ।
गावें सु तान बहु लहे मान, जिन वदन निरख हरषै महान् ॥ वि० ॥
ध्वज पंकति सोहति अति विशाल, दश चिह्न सहित युत मुक्तमाल ।
जै पवन दोलित गगन मांय, भवि जीवनको मानो बुलाय ॥ वि० ॥
जहां जयरकार करंत देव, खेचर खेचरी जिन करत सेव ।
सहु चारण मुनि करते विहार, उपदेश देत सिद्धांतसार । वि० ॥
भविजीव सुनैं मन हरष ल्याय, गुन गावत जन आनंद पाय ।
भवि पूजा थुति करते सुभाय, छवि नैन निरखि बलिर२ सुजाय ॥ वि०
विजयारधगिरि जिन राजग्रेह, वन्दौं मन वच तन कर सनेह ॥

घत्ता छन्द ।

विजयारध दक्षिणदिशा, पूजा भई विशाल ।
पढ़ै सुनै जो भाव धरि, शिव पावै दर हाल ॥ ३२१ ॥

इतिश्री दक्षिण भारतक्षेत्र विजयार्द्ध पूजा सम्पूर्णम् ।

उत्तर ऐरावत विजयार्ध पूजा।

अडिल्ल छंद।

उत्तर ऐरावत विजयारध जानियै,
है पच्चीस जोजन उतंग परमानियै।
फुनि पचास जोजन आयाम विशेखिये,
अरगापर भू मान दण्डवत् देखिये॥
त्रिशन्त जोजन चौडाई जाकी कही,
वैसे नव नव कूट जास ऊपर सही॥ ३२२॥

ॐ ह्रीं उत्तर ऐरावत विजयारधस्थित जिन चैत्यालय जिना-त्रावतरावतर संवौषट् ठः ठः वषट् सन्निधकरणम्।

ढाल-जोगीरासाकी।

गंगासागर क्षीर सु उज्वल, कंचन झारी भरावौ।
श्री जिन चरण प्रक्षालन भविजन, भवि आताप मिटावौ॥
ऐरावत विजयारध ऊपर, श्रेणी युग परमानौ।
नगर दशोत्तर शत जिनमन्दिर, तिन प्रति पूजन ठानौ॥३२३॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालयजिनेभ्यो जलम्।

बावन चन्दन दाह निकन्दन, अरु घनसार मिलावौ।
केसरि सरस सुगन्ध मिलै करि, श्रीजिनचरण चढ़ावौ॥ऐरा०

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालयजिनेभ्यो चन्दनम्।

शालि अखण्ड सुगन्ध सु मंडित, निरमल नीर पखारौ।
श्री जिनचरण चढ़ाय भविकजन, अक्षय मग पग धारौ॥ऐरा०

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयारधोपरि जिनालयजिनेभ्यो अक्षतम्।

कनक रजतमय असुरतरके, कुसुम मनोहर ल्यावो।
श्री जिनचरण चढ़ाय भविकजन, मदनबाण सु नसावो ॥ऐरा०॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालय जिनेभ्यो पुष्पम्।

घृत पूरित पकवान तुरतके, ताते सरस सुहाते।
विंजन पायस घी उखाडमिस, भरि थारी मन माते। ऐरा०॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालय जिनेभ्यो नैवेद्यम्।

कनक रतनमय दीप मनोहर, चउमुख वाती वालो।
आरति करूं जिनचरण कमलकी, मोह महातम टालो। ऐरा०॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालय जिनेभ्यो दीपम्।

अगर प्रमुख लै धूप दशांगी, जिनपर आगे खेवो।
घूघरवारी अल केकारी, धूम उढत इम वेवो ॥ऐरा०॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालय जिनेभ्यो धूपम्।

फल नारियर बादाम छुहारे, लोंग सुपारी लीजै।
पिस्ता किसमिस दाख सु लै करि, जिनपद अर्चन कीजै ॥ऐरा०
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालय जिनेभ्यो फलम्।

जल चन्दन अक्षत कुसुमावलि, चरु दीपक भरि थारी।
धूप सुफल वसु द्रव्य लेय करि, जिन पूजा सुखकारी ॥ऐरा०
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

दोहा।

रजताचल सिर शिखिरवर, सिद्धायतन नाम।
ऐरावत जिनग्रह जजै, लै जलादि अभिराम ॥ ३३२ ॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि सिद्धायतन कूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध मस्तक विषे, दक्षिणार्ध वर सानु।
ऐरावत जिनग्रह जजों, जल फलादि वसु आनु। ३३३॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि दक्षिणार्ध कूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

रजताचल सिर ऊपरै, कूट अखण्ड प्रताप।
जिनचैत्यालय जिन जजों, मिटे पाप संताप ॥३३४॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि अखण्ड प्रताप कूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

पूर्ण भद्रवरकूट है, रजताचलके सीस।
लै जलादि जिनपद यजों, जिनमन्दिर जगदीस ॥३३५॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि पूर्णभद्रकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

रजताचलके सीसपर, कूट कुमार सु नाम।
ले जलादि जिनपद जजों, जिनमंदिर सुखधाम ॥३३६॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि कुमारकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

मानभद्रवर कूट है, रजताचल पर जाय।
लै जलादि जिनपद जजों, वसुकर्मन क्षय होय ॥३३७॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि मानभद्रकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

कूट तमिश्रा नाम है, रजताचल पर सार।
ऐरावत जिनग्रह जजों, ले वसुद्रव्य अपार ॥३३८॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि तमिश्राकूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

रजताचलके सीस पर, उत्तरार्द्ध वर कूट।
ऐरावत जिनग्रह जजौं, शिवपुरके सुख लूट ॥३३९॥
ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि उत्तरार्द्धकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
रजताचल मस्तक विषैं, कूट वैश्रवण जानि।
जिन चैत्यालय जिन यजौं, द्रव्य सु वसुविधि आनि ॥३४०॥
ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि वैश्रवणकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
ये नव कूट सुहावते, रजताचल सिर मौर।
जिनग्रह जिनपद पूजिये, है शिवपुर मग ठौर ॥३४१॥
ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि नवकूट जिनालयजिनेभ्यो पूर्णार्घं।

अथ ऐरावत विजयार्द्धोपरि दक्षिण भरतक्षेत्र विजयारधवत्पंचासनगर जिनालय जिन-समुदाय पूजा।

कवित्त-सवैया।

विजयारध ऐरावतक्षेत्र जु बिराजत हैं,
जाके सिर श्रेणी युगपरी अनुसार जू।
दक्षिण दिश ताके बीच शाश्वते,
जिनालय है रत्नमयी प्रतिमा विराजैं सुखकार जू॥
पचास संख्या पुर परमित बखानी,
जिन पूज करे खगपति द्रव्य ल्याय भरि थार जू।
ध्यान धरैं मुनिवर जहं यामैं गुन,
सुर नर जिनके पद कमल नैन नमैं वारवार जू ॥३४२॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्र विजयार्द्धोपरि दक्षिण श्रेणी ऐरावतक्षेत्र विजयारधपचासपंचाशनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

कवित्त-सवैया।

ऐरावतक्षेत्र विजयारध में दूजी श्रेणी,
उत्तरदिशामें साठिनगर गाए हैं।
जिन मंदिर प्रतिमा विराज तिनमें,
महान जिनके पद पूजनको सुरनर खग धाए हैं॥
करे बहु नृत्य गान बने उत्सव महान,
महान जाप जपे धरे ध्यान तनमन हरषाए हैं।
तिनके चरणारविंद पूज वसु द्रव्य ल्याय,
वारवार शीश नाय परम सुख पाए हैं॥३४३॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयार्द्धोपरि उत्तर दिशि साठि नगर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

दोहा।

ऐरावत विजयार्द्ध, सत नगर दशोत्तर सार।
जिनमन्दिर जिन प्रतिमा यजों, पूर्ण अर्घ समारि॥३४४॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्धोपरि ऐरावतक्षेत्रस्थित तदुपरि दशोत्तर शत जिनालय जिनेभ्यो पूर्णार्घं।

अथ जयमाला।

दोहा।

विजयारध श्रेणी विषैं, पुरुष एक इक सार।
जिनमन्दिर जिन बिंब तहं, वन्दौं शिवसुखकार॥३४५॥

पद्धडी छन्द।

जहं रतन भूमि सोहे सुढार, तहां पुष्प वाटिका लस मार।
विजयारधगिरि जिन राजगेह, ऐरावत गत वन्दौं सु तेह॥
जिनमें प्रतिबिम्ब विराजमान, सुर खेचर यजन करते महान।
सिंहासनस्थित जिनजगत भूप, वसु प्रातिहार्य शोभै अनूप॥ विज०
सिर छत्र तीन शोभे उदार, सित चमर झलै जिम क्षीर धार।
घंटा झालरि बाजै सुभाय, सुर सुरी निरति करती सु आय॥ वि०
बाजन बाजै सब साज संग, बीना मृदंग मुहचंग चंग।
गावैं सु तान सुर लेहि मान, जिनवदन निरखो हरषै महान्॥ वि०॥
ध्वजपंकति सोहै तिह विशाल, दस चिह्न सहित युत युक्त माल।
ये पवनांदोलित गगन मांहि, भविजीवनको मानों बुलाहि॥ वि०॥
जह जयकार करंत देव, खेचर खेचरी जिन करत सेव।
जह चारण मुनि करते विहार, उपदेश देहि हितमित उदार॥ वि०
भविजीव सुनै मन हरष ल्याय, जिनपूजा थुति करते सु माय।
गुण गावैं मन आनंद पाय, छवि नैन निरखि बलि बलि सुजाय॥

घत्ता दोहा।

विजयारध उत्तरदिशा, पूजा भई विशाल।
पढ़ै सुनै जो भाव धरि, पावै शिव दर हाल॥ ३५२॥

अथ पूर्व विदेह पूजा।

गीता छन्द।

मेरु पूर्व विदेह, षोडश क्षेत्र शास्वत जानिये।
नगरी परी षोडश जहां, षट्खण्ड भूमि बखानियै॥
सीता नदीतट उभय दिशि, बक्षारगिरि षोडश परें।
तिन पर जिनालय शास्वते, जिनबिंब शोभित अति खरे॥
जहं जुगम तीर्थंकर बिराजै, समोसरण विषै तहीं।
सुरनर खेचर गनधर मुनीश्वर, त्रिजगपति पूजत सही॥
उपदेश देत सु भव्य जीवन, तरन तारन जिनवरो।
गुन गाय मन हरषाय तिनकौं, त्रिविध आह्वानन करो॥३५३

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहक्षेत्र षोडशनगरी षट्खण्डमंडित तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि शोभित सप्तवक्षारस्थ जिनालय जिन श्री मन्दिर युगमंदिर प्रवर्तमान तीर्थंकर पुष्पा अत्रागच्छागच्छ संवौषट् ठः ठः वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं।

चाल अडिल्ल छंद।

प्रासुक नीर सो क्षीरोदधिको ल्याइये।
कञ्चन झारी भराय सु जिनहि चढाइये॥
सीमन्दिर युगमन्दिर युग जिनवर यजो।
पूर्व विदेह निवास जासु निजपद भजो॥३५४॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमन्दर युगमन्दर जिनेभ्यो जलम्।

मलयागिर चन्दन घस सार सु गाइये।
केशर मिश्रित रतन कटोरी धारिये॥ श्री०॥३५५॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमन्धर युगमन्धर जिनेभ्यो चन्दनम्।

चन्द्र किरणसम तन्दुल विमल पखारिये।
प्रासुक जलकरि कञ्चनथारी धारिये॥ श्री०॥३५६॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमन्धर युगमन्धर जिनेभ्यो अक्षतम्।

सुर तरुवरके धार पुष्प मनोहर अति खरे।
पारिजाति मन्दार जातके लै भले॥ श्री०॥३५७॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमन्धर युगमन्धर जिनेभ्यो पुष्पम्।

मोदक फेनी सुहाली तुरत बनाइये।
तातैं ताजे खाजे बहुविधि ल्याइये॥ श्री०॥३५८॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमन्धर युगमन्धर जिनेभ्यो नैवेद्यम्।

दीप रतनमय कंचन थाल संजोइये।
आरति कर जिनचरण मोहतम खोइये॥ श्री०॥३५९॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमन्धर युगमन्धर जिनेभ्यो दीपम्।

अगर कपूर सु चन्दन चूरन ल्याइये।
धूप दहन बिच खेवत कर्म जलाइये॥ श्री०॥३६०॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमन्धर युगमन्धर जिनेभ्यो धूपम्।

फल नारियेर छुहारे दाख मगाइये।
श्री जिनचरण चढ़ाय मोक्षफल पाइये। श्री०॥३६१॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमन्धर युगमन्धर जिनेभ्यो फलम्।

जल चन्दन कुसुमाक्षित चरु दीप सु वारिये।
धूप फलादिक अर्घ सु चरण चढ़ाइयै॥
सीमंदिर युगमंदर जिनवर पद पूजौं।
पूर्वविदेह निवास जासु नित पद जजौं॥ ३६२॥

ॐ ह्रीं पूर्व विदेह श्री सीमन्दर युगमन्दर जिनेभ्यो अर्घं।

अथ पूर्वविदेह वक्षारगिर विजयारधसहित पूजा।

दोहा।

कक्षा देश विषै कही, क्षेत्रपुरी सुखकार।
तहां जिनवर मुनिराज पद, पूजौं वसुविधि सार॥ ३६३॥

ॐ ह्रीं कक्षादेश क्षेत्रपुरी नगरो तत्र मुनिराज जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

कक्षादेश विषै सही, विजयारधगिर जानि।
कूट सु नवपुर दश अधिक, शत जिन जजौं महान॥३६४॥

ॐ ह्रीं कक्षादेश विजयार्द्धगिर नवकूट दशोत्तर शतनगर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

देश सु कक्षाके विषै, महाक्षेत्र पुर ग्राम।
तहं जिनवर मुनिराज पद, पूजौं शिवसुख धाम॥ ३६५॥

ॐ ह्रीं सुकक्षादेश महाक्षेमपुर गत मुनिराज जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

चित्रकूट वक्षार गिर, कूट सु तव युत होय।
जिनमंदिर जिनवर यजौं, वसुविधि अर्घ संजोय॥ ३६६॥

ॐ ह्रीं सुकक्षाक्षेत्र चित्रकूट वक्षारगिर नवकूटसहित जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

देश सु कक्षाके विषैं, रजताचलपर जान।
दश विधि शतपुर कूट नव, पूजौं श्री भगवान्॥ ३६७॥

ॐ ह्रीं सुकक्षादेश विजयार्द्धनवकूट दशोत्तरशतनगर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

देश महा कक्षा विषैं, पुर अरिष्ट वर गाय।
तहं जिनवर मुनिराज पद, पूजौं अर्घ बनाय॥ ३६८॥

ॐ ह्रीं सुकक्षादेशमहवती विभङ्गानदी तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश महा कक्षा, विजयारध कूट नव जानि।
नगर दशोत्तर शतक तह, पूजौं श्री भगवान्॥ ३७०॥

ॐ ह्रीं महाकक्षा देश अरिष्टपुर सम्बन्धो विजयार्द्ध नवकूट दशोत्तरशतनगर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

सुन्दरी छन्द।

देश कक्षावति सु जानियै,
रिष्टपुर तह नगर प्रमानियै।
तहां जिनालय जिन मुनिपद जजौं,
अर्घ वसुविधि करि शिवसुख भजौ॥३७१॥

ॐ ह्रीं कक्षावती देश अरिष्टपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश कक्षावती विषैं कहा,
पद्मकूट वक्षार सु गिरि महा।
कूट नव युत परम पुनीत जो,
तहां जिनालय जिनप्रतिमा यजों॥३७२॥

ॐ ह्रीं कक्षावतीदेश पद्मकूटवक्षार जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश कक्षावती विषै भलो, मध्य विजयारध जना चलो ॥
पुरदशोत्तर शत नव कूट जहां, तहां जिनालय जिन पूजों महा ॥

ॐ ह्रीं कक्षावतीदेश अरिष्टपुर सम्बन्धी विजयारध नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र आवर्तक शुभ जानियै, पुरी खड्ग सु नाम वखानियै।
जिन महामुनिराज बिराजही, जजें जिनपद सब दुख भाजही॥

ॐ ह्रीं आवर्तकक्षेत्र खड्गपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र आवर्तक हरयावती, नदी पूरन निर्मल जल भृती।
तासु तट जिन मन्दिर जिन जजों, अर्घ वसुविधि थारविषै सजो॥

ॐ ह्रीं आवर्तक क्षेत्रगत हरयावती नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र आवर्तक बिच सोहए,
रौप्य गिरवर जन मन मोहए।
कूट नव सु दशोत्तर शत नगर जजौं,
जिनगृह जिन प्रतिमा खरी ॥ ३७६ ॥

ॐ ह्रीं आवर्तक क्षेत्र मध्य खड्गपुर सम्बन्धी विजयार्द्ध षट्खण्डवण्डित नवकूट दशोत्तरशतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र लांगल वर्त्तक नाम है,
पुरी मंजूषा शुभ तहं ठाम है।
जिन जिनालय जिनपद पूजिये,
मन सु वच तन है हरषित हूजियै ॥ ३७७॥

ॐ ह्रीं लांगलावर्त्तक क्षेत्र मंजूषापुरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश लांगल वर्त्तकके विषैं,
नलिन वक्षार गिरि श्रुति लिखैं।
कूट नव जिस ऊपर राज ही,
जजौं जिन प्रतिमा सब दुख भाज ही ॥३७८॥

ॐ ह्रीं नलिनवक्षार नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश लांगल बिच विजयार्द्धगिरि,
कूट नव सोहे ताके ऊपरि।
पुर दशोत्तर शत जिनगृह जजौं,
जिन जलादिक लै वसुविधि सजौं ॥३७९॥

ॐ ह्रीं लांगलावर्त्त क्षेत्रगत मंजूषापुरी सम्बन्धी विजयार्द्ध षट्खण्डमण्डित नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र पुष्कल नाम सु गाइये,
चोख धान पुरी जहं पाइये।
जहां जिनालय जिन मुनिरायकै,
पद जजौं वर अरघ बनायकै ॥ ३८० ॥

ॐ ह्रीं पुष्कलक्षेत्र औषधान्यपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र पुष्कल विच सरिता वही,
नाम पंकावति जिनवर कही।
है विभंगा सु तट बिच जही,
मुनि जिनालय जिन पूजै सही ॥ ३८१ ॥

ॐ ह्रीं पुष्कलाक्षेत्र मध्यगत विभङ्गा नदी पद्मावती तट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

देश पुष्कलक्षेत्र विषैं परो,
नाम विजयारधगिरि जिस खरो।
कूट नव सु दशोत्तर शतपुरी,
जिन जिनालय पूजत सुरसुरी ॥ ३८२ ॥

ॐ ह्रीं पुष्कलक्षेत्रगत औषवानपुर सम्बन्धी विजयार्द्धों नवकूट देशोत्तरनगर तत्र जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

पुष्कलावति देश विषैं कहीं,
पुंडरीकीनी नाम प्रगट सही।
पुरी तह जिनग्रह जिन मुनि यजौ,
अर्घ दो जिनचरण सदा भजौ ॥ ३८३ ॥

ॐ ह्रो पुष्कलावती देश पुण्डरीकिनी नगरी जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

पुष्कलावती क्षेत्र विषैं कह्यो,
एक गिरि वक्षार सुमग लह्यो।
कूट नव जिनग्रह जिन पूजतै,
ले जलादि छूटै वसु कर्मतै ॥ ३८४ ॥

ॐ ह्रीं एक शैल वक्षार नवकूट जिनालय जिनप्रतिमा अकृत्रिम जिनेभ्यो अर्घं।

पुष्कलावती देश विषैं भली,
कूट नवयुत है रजताचली।

पुर दशोत्तर शत जिनग्रह विषैं,

पूजिये जिन आकृति श्रुत लिखै ॥ ३८५ ॥

ॐ ह्रीं पुष्कलावतीदेश पुण्डरीकनो नगरी सम्बन्धी विजयार्द्ध मंडित नवकूट दशोत्तर नगर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

वत्स देश सुसीमा नगर है,

शिवपुरीको जो मानो डगर है।

तहां जिनालय जिन मुनिराजके,

चरण पूजौं वसु द्रव्य साजिकै ॥ ३८६ ॥

ॐ ह्रीं वत्सदेश सुसीमानगर जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

वत्स देश विषैं वक्षार गिरि,

नाम जासु त्रिकूटाचल शिखिरि।

तहं जिनालय जिन प्रतिमा जजों,

अघ कर वसुविध तिन पद जजों ॥ ३८७ ॥

ॐ ह्रीं वत्सदेश त्रिकूटाचल वक्षारगिरि नवकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

वत्सदेश विषै विजयार्द्ध जो,

है सुसीमापुर करि सार्द्ध जो।

कूट नव शत पुर दश अधिक है,

तह जिनालय जिन यजि अघ दहै ॥३८८॥

ॐ ह्रीं वत्सदेश सुसीमानगर सम्बन्धी विजयार्द्ध नवकूट दशोत्तरशत नगर षटखण्ड मंडित जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

पुण्य क्षेत्र सु वत्स बखानियो,
नगर कुण्डलपुर वर जानियो।
तहां जिनालय जिन मुनि चारणकी,
पूज करिये सब दुःख हरणकी ॥ ३८९ ॥

ॐ ह्रीं सुवत्स क्षेत्र कुण्डलपुरनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

पुनि सु वत्सक देश विषैं कहीं,
तप्त जलासु सरिता है सही।
तसु विभंगा तट जिनधाम वर,
जिन जलादिक लै पूजौं सुघर ॥ ३९० ॥

ॐ ह्रीं सुवत्सदेश गत तप्तजला विभङ्गानदी तटस्थ जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

वर सु वत्सक देश विषै परौं,
रौप्यगिरि वैताढ्यसे खरौ।
पुर दशोत्तर शत नवकूट युत,
यजौं जिनग्रह जिनं सुर असुर नुत ॥ ३९१ ॥

ॐ ह्रीं सुवत्सक्षेत्र कुण्डलपुर सम्बन्धी विजयार्द्ध षट्खण्ड-मण्डत नवकूट दशोत्तर शतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महावत्सक क्षेत्र विषै परी,
पुरी अपराजित बसै खरी।
तहां जिनालय जिन मुनिराजके,
चारण पूजौं वसु द्रव साजके ॥ ३९२ ॥

ॐ ह्रीं महावत्सक्षेत्र गत अपराजितपुरी तत्र जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

महावत्सक क्षेत्र विषें परो,
वैश्रवण वक्षार सु भूधरो।
कूट नव संयुक्त सु सारजू,
जजों तहां जिनवर हिय धारजू ॥ ३९३ ॥

ॐ ह्रीं महावत्सक क्षेत्रगत वैश्रवण वक्षारगिर नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महावत्सक देश विषैं कहा,
तारगिरि व भूधर शुभ महा।
कूट नव शतपुर दशधिक तथा,
तहां जिनालय जिन पूजौं यथा ॥ ३९४ ॥

ॐ ह्रीं महावत्स देशगत अपराजितपुर सम्बन्धी विजयार्द्ध षट्खण्डमंडित दशोत्तरशतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

वत्सकावति देश सु बनी,
पुरी प्रभंकराय न भावनी।
तहां जिनालय जिन मुनि चरण जुग,
पूजते जु कटे संसार रुग ॥ ३९५ ॥

ॐ ह्रीं वत्सकावती देशगत प्रभंकरापुरी तत्र जिनालय जिनमुनिभ्यो अर्घं

वत्सकावती देश सु मध्यगत,
मत जलाजु सरिताके सु तट।
तहं जिनालय जिन प्रति पूजिये,
वचन तन मन हरषित हूजिये ॥ ३९६ ॥

ॐ ह्रीं वत्सकावती देशगत मत अकादि नदी तीर जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

वत्सकावती देश विषैं परौ,
तारगिर वैताड लसै खरौ।
कूट नव शतपुर दश अधिक यहां,
तहां जिनालय जिन पूजौं सु महा ॥३९७॥

ॐ ह्रीं वत्साकावर्त क्षेत्रगत प्रभंकरापुरी सम्बन्धी विजयार्द्ध नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र रम्यक सम्यक जानिये,
तहां सु अंकापुरी प्रमानिये।
जिन जिनालय फुनि मुनि पूजिये,
जासु फलकरि सुरपति हूजिये ॥३९८॥

ॐ ह्रीं रम्यकक्षेत्र अंकापुरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र रम्यक गत वक्षार गिरि,
नाम अंजन हैं ताकैं।
ऊपर कूट नवपर जिनग्रह जह लसै,
पूज जिनपद सुर पुरमैं वसैं ॥३९९॥

ॐ ह्रीं रम्यकक्षेत्र अंजनवक्षारगिर नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश रम्यक गत वैताड पर,
कूट नवपुर शत दश अधिक वर।
तहां जिनालय जिनप्रतिमा अरचिये,
द्रवि वसु विधि करि धन खरचिये ॥४००॥

ॐ ह्रीं रम्यकदेश अङ्कापुरी सम्बन्धी विजयार्द्ध षट्खंडमंडित नवकूट दशोत्तर शतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सुर रम्यक वरक्षेत्र विषैं वसैं,
नाम पद्मावतीपुरी लसै।
तह जिनालय जिन मुनिराज पद,
यजो अर्घ सु वसुविधि करि सुमद ॥४०१॥

ॐ ह्रीं रम्यकदेश पद्मावतीपुरी तत्र जिनालय जिनमुनिभ्यो अर्घं।

सु रम्यकवर क्षेत्र विषैं वही,
नामकरि उन्मत्त जला कही।
नदी तसु तट जिनग्रह जानिये,
पूजि चैत्य परम सुख मानिये ॥४०२॥

ॐ ह्रीं सु रम्यक क्षेत्र गत उन्मत्त जलादि नदी तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सुरम्यकवर देशविषै कहा,
तारगिर नव कूट लसै जहां।
पुर दशोत्तर शत श्रुतमैं लिखे,
जिन जिनालय पूजौं तजि विषैं ॥४०३॥

ॐ ह्रीं सुरम्यादेश पद्मावतीपुरी सम्बन्धी विजयार्द्ध नवकूट दशोत्तरशत नगर षट्खण्ड मंदिर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश रमणीय कहक सार है,
पुरी सुभापुरी सुखकार है।
तहां जिनालय जिन मुनि पूजि करि,
अर्घ वसुविधि भवदुख हरि ॥४०४॥

ॐ ह्रीं रमणीयदेश शुभापुरीनगरी तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश रमणीयक वक्षार गिरि,

नाम आदरसन ताके शिखिरी।

नव कहै जिनमंदिर जिन जजौं,

अर्घ वसुविधि ल्याय सु पद भजौं ॥४०५॥

ॐ ह्रीं रमणीयदेश आदरसनवक्षारगिरिकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश रमणीयक बिच जानिये, चन्द्रहासकगिरि पहचानिये।
कूट नवशतपुरदश करि अधिक, तहं यजों जिन मनवचशुद्धत्रिक॥

ॐ ह्रीं रमणीय देश शुभापुरी सम्बन्धी विजयारध षट्खण्ड-मण्डित नवकूट दशोत्तरनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

मंगलावती देश सु देखिये, रत्नपुर संचय तह लेखिये।
तह जिनालय जिन पूजा करौ, अघ दे मुनि मुनिपद चित धरौ॥

ॐ ह्रीं मंगलावती देश रत्नसंचयपुरी तत्र जिनालय जिन-मुनीन्द्रेभ्यो अर्घं।

मंगलावती क्षेत्र विखे परो,

कूट नव युत विजयारध कहो।

पुर दशोत्तर शत जिनराजग्रह,

यजों जिन प्रतिबिंब मनोगतह ॥ ४०८ ॥

ॐ ह्रीं मंगलावती देश रत्नसंचयपुरी सम्बन्धी विजयार्द्ध षट्खण्ड मंडित दशोत्तर शतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

कवित्त छ०

पूरव विदेह विषैं कक्षादिक देश,

बरस षोडश परे हैं जह जिन गेह राज ही।

क्षेमादिकपुरी मांहि वसै राजधानी बीच,
जिन गेह जिन दर्श देखै दुख भाज ही ॥
चित्रकूट आदि वक्षार वसु कूट नव,
जुक्त जिनग्रेह जिन पूजैं जिन सरै काजही ॥४०९॥

ॐ ह्रीं विदेह पूर्वदिश कक्षादिक षोडशदेश षोडश विजयार्द्ध षोडश नगर अष्ट वक्षार गिर सर्व जिनालयजिनेभ्यो पूर्णार्घं।

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जे केवल दिनकर वर मोह तिमिरि हरं,
भव्य कमल परकासन भासण जग धरं।
चिन्मय सुन्दर विनत पुरंदर पद सदा,
जै जै जै कृत सुक्रतनमैं भवि सर्वदा ॥

पद्धडी छन्द।

जै महाघाती विधि विघनचक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट दह चैत्यगेह, जिन बिंब नमौं पद कमल तेह ॥
जय चिदानन्दमय सुधापान, कीय चरनन मोहोय धरौं ध्यान ॥गि०
सुरनर मुनि नति नित करत सेव, लक्षण वसु शततनु सहित एव।
जय निराबाध वज्रास्थि काय, निरभङ्ग अङ्ग शोभ सुभाय ॥गि०
जय सदा कोट रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत ॥गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नर गण भविजन मन करत याद ॥गि०

जय पुण्य क्षेत्र संचरन शील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील ॥गि०
जय सुरग मुकत पद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नासाग्र अक्ष ॥गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, मह शर्म वीर्य जिनको अनंत ॥गिरि०
वसु गुण रतननिके हैं भण्डार, जयवन्ते वरतौ जग मंझार ॥गिरि०
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिंब नमौ पद कमल तेह ॥गि०

घत्ता-दोहा।

जे जिनग्रह द्रह क्षेत्र गिरि, नदी तटादिक जानि।
तिन विच जिन प्रतिमा चरण, नमो जोरि जुग पानि ॥

अडिल्ल छन्द।

वसु द्रव्य करि जिनबिंब पूजौं, मन वचन तन चावसौं।
नर सुरगके सुख भोगि करि, फिरि मुकतिपुर घर जावसौं॥
जाके सुफल करि तीर्थंकर, हरि प्रमुख पदवी पाइयै।
ते होहु तुमको सदा जयवन्ते सु जिन गुण गाइयै ॥

इत्याशीर्वादः।

इतिश्री सिद्धकूट चैत्यालयकी जयमाल सम्पूर्णम्।

अथ पश्चिम विदेह पूजा।

अडिल्ल छन्द।

अपर विदेह मझार षोडश नगरी जहां,
फुनि विजयारध गिरि षोड़श सोहै तहां।
बाहु सुबाहु युगम जिनमन्दिर हैं तथा,
जिन आह्वानन करो त्रिविध करिकै यथा ॥४१८॥

ॐ ह्रीं ऊपर विदेह षोडश क्षेत्र षोडश नगरी षट्खण्ड मण्डित षोड़श विजयार्द्ध वसु वक्षारगिर नवकूट सहित जिनालय जिनप्रतिमा तत्र तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि शोभित युगम तीर्थंकर वरतमान बाहु सुबाहु स्वामि अत्रावतरावतर संवौषट् ठः ठः सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं।

गीता छन्द।

लै सुर सरियकौ सलिल शीतल, सरस झारीमें भरो।
जिनचरन युगपर क्षालि भविजन, जनम मरण विथा हरो ॥
श्रीबाहु और सुबाहु ऊपर, विदेह जिन जु विराजही।
तिनके चरण पूजौं सदा, नित होहि सुख दुख भाजही।॥४१९॥

ॐ ह्रीं बाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो जलं।

लै मलयागिर घनसार केशर, सलिल संग बहु गारियै।
सुकरो अलिल अमोद वश, जिस मणि कटोरी धारियै ॥
श्री बाहु औ सुबाहु, अपर विदेह जिन जु विराजही।
जिनके चरन पूजौं सदा, भवि होहि सुख दुख भाजही ॥४२०॥

नव सरस शालि अखण्ड तंदुल,
विमल जल परक्षालिये।
करि चन्द किरन समान निरमल,
स्वर्ण थाली धारिये ॥ श्रीबाहु०॥४२१॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो अक्षतं।

लै कनक कुसुम सुर जुत मय,
फुनि अमर तरुके ल्याइये।
जिन चरण अग्र चढ़ाय भविजन,
मदन बान नसाइये ॥श्रीबाहु०॥४२२॥

ॐ ह्रीं विदेहगत श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो पुष्पं।

पकवान घृत पूरित तुरतके,
विविध भांति बनाइये।
लै स्वर्ण थाली धार भविजन,
चरण अग्र चढ़ाइये ॥श्रीबाहु०॥४२३॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो नैवेद्यं।

लै रतन दीप समीप जिनपद,
आरती कर भावसो।
शुभ ज्ञान ज्योति प्रकाशि भविजन,
अमरपुर घर जावसो ॥श्रीबाहु०॥४२४॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो दीपं।

बहु शिलाजिती असित अगर,
करपुर चन्दन लै धरै।

विच धूप दहन सु खेइ धूमा,
मानिनीके मन हरै ॥ श्रीबाहु० ॥४२५॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो धूपं ।

लै फल मनोग सु भोग जो मन,
हरन नासा दग सही ।
बादाम पिस्ता, जायफल,
फासु सुफल फल जिन कही ॥श्रीबाहु०॥४२०

ॐ ह्रीं श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो फलं ।

लै नीर सीर गो खीर खादिक,
द्रव्य थारी विच धरौं ।
मनु हारि करि उतार जिनपद,
भक्तिवश ह्वै थुति करौ ॥श्रीबाहु०॥४२७॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहु सुबाहु स्वामि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

सोरठा ।

पद्मदेश बिच सार, पुरी स्वपुरी है सही ।
पूजौं जल फल धार, चरन सु जिन मुनिराजके ॥४२८॥

ॐ ह्रीं सीतोदा दक्षिण तट पद्मदेश स्वपुरी मध्यगत जिन मुनीन्द्रेभ्यो अर्घं ।

पद्मदेश वक्षार कूट, सु नव जुत जिन कह्यो ।
श्रद्धावान विचार नाम, जासु जिन प्रति यजौ ॥४२९॥

ॐ ह्रीं पद्मदेश श्री आह्वानन वक्षार नव कूटजिनेभ्यो अर्घं।

पद्मदेश वैताड़ कूट, सु नव सिर सोहियो।
पूजों जिम सुखकार, नगर दशोत्तर शत विषैं ॥ ४३० ॥

ॐ ह्रीं पद्मदेश विजयारधवरर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश सुपद्म पिछानि, सिवपुरी नगरी भली ॥
पूजों शिव सुखदानि, जिनमुनि वसुविध अर्घ ले ॥ ४३१ ॥

ॐ ह्रीं सुपद्मक्षेत्रगत सिद्धपुरी जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र सुपद्म मझार, सीतोदा सरिता वरौ।
तसु तट जिनग्रह सार, वसुविधिकरि जिनवर जजौं ४३२॥

ॐ ह्रीं सुपद्मक्षेत्रगत क्षीरोदा नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र सुपद्मक मांहि, विजयारध गिरि है भलो।
पुर दश शत तिहि ठाहि, तह जिनग्रह जिन पूजियै ॥४३३॥

ॐ ह्रीं शिवपुरी सम्बन्धो विजयारध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महापद्मवर देश, महापुरी राजै खरी।
पूजै अमर नरेश, चरन सु जिनमुनिराजके ॥ ४३४ ॥

ॐ ह्रीं महापद्मक्षेत्रगत महापुरीमुनि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महापद्म शुभ ठानि, विजयारध नाम वक्षार है।
पूजौ जिन सुखधाम, जिनग्रह जिन आकृति भलै ॥४३५॥

ॐ ह्रीं महापद्मक्षेत्र विजयनाम वक्षारगिर नवकूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

महापद्म शुभ सार, देश विषैं रजताचलौ।
जिन पूजौ सुखकार, पुर दश अरु शत कूट नव ॥ ४३६ ॥

ॐ ह्रीं महापद्मक्षेत्र महापुरी सम्बन्धी विजयारध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

पद्मकावती देश, विजयानगरी जानियै।
अघको रहे न लेश, पूजौं जिन मुनिराजके ॥ ४३७ ॥

ॐ ह्रीं पद्मकावतीदेश विजयानगरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

पद्मकावती देश, सीतोदा सरिता परै।
पूजौ चरन जिनेश, पुलिन जिनालयके विषैं ॥ ४३८ ॥

ॐ ह्रीं पद्मकावतीदेश मध्य सीतोदानदी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

दोहा।

पद्मकावती देश बिच, विजयारध गिर सार।
षष्ठि शतार्द्ध सुकूट नव, जिन पूजौ सुखकार ॥ ४३९ ॥

ॐ ह्रीं पद्मकावती देशविषैं विजयारध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

पुन्य देश संख्यावर, रजतापुरी बखान।
तहां जिनवर मुनिराज पद, यजौ अल्प वसु आनि ॥४४०॥

ॐ ह्रीं संख्याक्षेत्र रजतापुरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

आशीविष वक्षारगिर, संख्या क्षेत्र मझार।
कूट सु नव जिनग्रेह जिन, पूजौ मगन अधार ॥४४१॥

ॐ ह्रीं संख्याक्षेत्रगत आशीविषवक्षार जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

शंखदेश वैताडगिरि, कूट सु नव जिनग्रेह।
नगर दशोत्तर शतविषैं, पूजौ जिन धरि नेह ॥ ४४२ ॥

ॐ ह्रीं शंखादेश रजतापुरी सम्बन्धी विजयारध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

नलिन नाम सुन क्षेत्र बीच, विरजानगरी जाय।
तहं जिनवर मुनिराज पद, पूजों अर्घ चढ़ाय ॥ ४४३ ॥

ॐ ह्रीं नलिनाक्षेत्रगत विरजानगरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

नलिनादेश विष नदी, श्रोतो वहा सुभाय।
तासु सु पुलिन जिनराजगेह, पूजों जिन सुखदाय ॥ ४४४ ॥

ॐ ह्रीं नलिना देशगत श्रोतोवहानदी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

नलिन देश तेरा चलो, कूट सु नव जिनगेह।
नगर दशोत्तरके विषैं, पूजों जिन गुण नेह ॥ ४४५ ॥

ॐ ह्रीं नलिनादेश विरजानगरी सम्बन्धी विजयार्द्ध दशोत्तरशतनगरी नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

कुमुद क्षेत्र आशोकपुर, जहं लक्ष्मीको वास।
पूजों जिन मुनि चरण युग, मन धरि परम हुलास ॥ ४०६ ॥

ॐ ह्रीं कुमुदक्षेत्र अशोकपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

आनि परौं वक्षारगिरि, कुमुदक्षेत्र निवास।
जिनमन्दिर नवकूट पर, पूजों जिन अघ नास ॥ ४४७ ॥

ॐ ह्रीं कुमुदक्षेत्रगत वक्षारगिरि नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

कुमुदाक्षेत्र विषैं कह्यो, विजयारध जिन धाम।
कूट सु नवपुर दश अधिक, शत जिन जजों सु ठाम ॥ ४४८ ॥

ॐ ह्रीं कुमुदाक्षेत्र अशोकपुर सम्बन्धी विजयारध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सरिता क्षेत्र विषै सुगत, शोकपुरी बिच जानि।
जिनमन्दिर जिनराज पद, पूजों उर धरि ध्यान ॥ ४४९ ॥

ॐ ह्रीं सरित क्षेत्र वीतशोकपुरी जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

सरितादेश विषैं सही, विजयारध नव कूट।
नगर दशोत्तर शत यजो, जिनग्रह जिनसुख लूट ॥ ४५० ॥

ॐ ह्रीं सरितादेश विजयारधनगर दशोत्तरशत जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

वप्रा देश विषैं तथा, नाम विजयपुर ग्राम।
तहं जिनमन्दिर जिनचरण, पूजौं शिव सुख-धाम ॥ ४५१ ॥

ॐ ह्रीं वप्रादेश विजयपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

वप्रादेश विषैं परो, नाम तारगिर चारु।
जिनमन्दिर जिनवर यजो, कूट सु पुर बिच सार ॥ ४५२ ॥

ॐ ह्रीं वप्रादेश विजयपुर सम्बन्धी विजयारध जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

सुन्दरी छन्द।

शुभ सु वप्रादेश बखानिये, वैजयन्ती नगरी जानिये।
तहं जिनालय जिन पूजा करो, द्रव्य लै वसु थाल विषैं धरो ॥४५३

ॐ ह्रीं सुवप्रादेश वैजयंतपुर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

वप्रा सुवर देश विशाल है, जहं वक्षार सु गिर शशिमाल है।
तहां जिनालय जिन प्रतिमा इजो, कूट नवपर जिनवरपद जजौं ॥

ॐ ह्रीं सुवप्रादेश शशिमाल वक्षारगिरि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सुवप्राख्य सु देश लसै खरो, जहं सु भूधर विजयारध परो।
नवकूट सु दशोत्तर शतपुरी, यजौं जिनग्रह नावै सुरसुरी ॥४५५॥

ॐ ह्रीं सुवप्रादेश वैजयन्तीपुर सम्बन्धी विजयारध जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

महावप्रादेश विषैं लसै, जयन्तीनगरी सुरपुर हसै।
जहं जिनालय जिनमुनिराजके, यजौं पद अघ जाहि सु भाजिके ॥

ॐ ह्रीं महावप्रादेश जयन्तीनगरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महावप्रा देश विषैं कही, गन्धमादन नाम नदी वही।
तासु तट जिनमंदिर जानियै, पूजि पद जिनवर सुख मानियै ॥

ॐ ह्रीं महावप्रादेश गन्धमादन नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महावप्रादेश मझार है, नाम विजयारधगिरि सार है।
कूट नवशतपुर दश अधिक जहां, तहं जिनालय जिन पूजौं महा ॥

ॐ ह्रीं महावप्रादेश जयन्ती नगरी सम्बन्धी विजयार्द्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र गन्धल नाम वखानियै, पुरी चक्रायुध तासु प्रमानियै।
तहं जिनालय जिन मुनिवर यजौं, अर्घ वसुविधि थाल विषैं सजौं ॥

ॐ ह्रीं गंधिलक्षेत्र चक्रापुरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र गन्धा बिच वक्षारगिरि, कूट नव राजै जाकै शिखिरी।
तहां जिनालय जिन पूजौ सदा, अर्घ वसुविधि ल्याय सु करि मुदा ॥

ॐ ह्रीं गंधक्षेत्र चक्रापुरी सम्बन्धी सूर्यवक्षारगिरि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

देश गन्धा बिच रजता चलौ, कूट नवयुत राजतु है भलौ।
पुर दशोत्तर शत जह सोहए, यजो जिनग्रह प्रति मन मोहए ॥

ॐ ह्रीं गंधादेश चक्रापुरी सम्बन्धी विजयार्द्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सुगन्धावरक्षेत्र खड्गपुरी, तहां जिनालय जिन प्रतिमा खरी।
पूजपद भविजिन मुनिराजके, अर्घ लै वसुविधि द्रवि साजके॥

ॐ ह्रीं सुगंध क्षेत्रगत खड्गपुरी विजयार्द्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सुगन्धावरक्षेत्र विषैं कही, फेन मालिन सरिता है सही।
धुलिनगत जिनमंदिर जासुके, यजों जिनप्रतिमा पद तासुके॥४६३

ॐ ह्रीं सुगंधक्षेत्रगत खड्गपुरी विजयार्द्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

मध्य गन्धिल क्षेत्र सुहावनी, जहं अजोध्यापुरी सुहावनी।
तहं जिनालय जिन मुनिपद जजौं, अघकरि फुनि गुण ग्राम भजौं॥

ॐ ह्रीं गंधिलक्षेत्रगत अजोध्यापुरी तत्र जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

क्षेत्र गंधिल बिच भूपर परौ, नागभिव वक्षार सुगिर खरौ।
तहां जिनालय जिन नवकूटपर, यजों वसुविध अर्घ बनायकर॥

ॐ ह्रीं गंधिलक्षेत्र नागभिववक्षार जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

मध्य गन्धिल क्षेत्र विषैं परौ, कूट नवयुत विजयारध गिरौ।
तहं जिनालय जिनपजा करों, जिन सु पूरव दुकृतको हरो॥

ॐ ह्रीं गंधदेश अयोध्या सम्बन्धी विजयार्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महागन्धा देश विषैं परी, है अजुध्यापुरी सु दूसरी।
तहं जिनालय जिनपद पूजिये, जासु फल करि हूजिये॥४६७

ॐ ह्रीं महाक्षेत्र गन्धागत अजोध्यापुरी दूसरी जिनालयजिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महागन्धाक्षेत्र मझार है, उर्मिमालिनि नदी सु ठार है।
तहं पुलिनगत जिनमंदिर सही, पूजि वसुविध जिनप्रति सुखमही॥

ॐ ह्रीं महागन्धाक्षेत्रगत ऊर्मिमालिनि नदीतट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

महागंधाक्षेत्र विषैं परौं, तारमय विजयाध भू धरौं।
श्रेणिद्वय नवकूटनके ऊपरि, यजौं जिनपद वसुविध अर्घ धरि॥४६९

ॐ ह्रीं महागंधा क्षेत्रगत अयोध्या नगरेभ्यो विजयार्द्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

गन्धमालिनि क्षेत्र सु ठौर है, शुभपुरी नगरी तहं जोर है।
परम शोभित जिनमंदिर जहां, पूजि वसुविधि जिनप्रतिमा तहां॥

ॐ ह्रीं गंधमालिनि शुभपुरी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

गन्धमालिनि देशविषैं जु है, देवगिरि वक्षार सु नाम है।
कूट नव जहं जिनमंदिर लसैं, यजौं जिन आकृति वसुद्रव्यसैं॥

ॐ ह्रीं गंधमालिनि क्षेत्रगत देवगिरि नाम वक्षार तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं

गन्धमालिन देश मझार, मल रजतमय विजयारध है।
अचलकूट नवसु दशोत्तर शतपुरी, यजौं जिनप्रतिमा वसुविधि खरी

ॐ ह्रीं गन्धमालिन देशगत विजयार्ध जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

दोहा।

जम्बूद्वीप विदेह जुग भरतैरावत थान।
भाषै जिन उत्कृष्ट करि, चौतिस चहुंदिश जान॥४७३॥
पूरव ऊपर विदेह जुग, है जघन्य करि तेह।
वर्तमान प्रणमौ सदा, मन वचन क्रम करि येह॥४७४

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जय केवल दिनकर, वर मोह तिमिर हर।
जै भव्य कमल परकाशन, भासन जग धरन॥
जै चिन्मय सुन्दर विनत, पुरन्दर पद सदा।
सुन तिनकी जयमाल, कहूं धारि चित मुदा॥

पद्धडी छन्द।

जय महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकलपद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिन बिंब नमो पद कमल तेह॥
जय चिदानंदमय सुधापान, कीय चरण नमों हिय धरो ध्यान॥गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसुशत तनु सहित एव। गि०
जय निराबाध वज्रास्थि काय, निरभंग अङ्ग शोभै सु भाय॥ गि०
जय सदा कोटि सर्व द्युति धरंत, तसु प्रातिहार्य शोभा लसंत। गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद॥गि०
जय पुण्यक्षेत्र संवरनसील, जय प्रातिघात वर्जित सुशील॥गि०
जय सुरग मुकतिपद दान दक्ष, शुभध्यान लीन नाशाग्र अक्ष॥गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, यह शर्म्म वीर्य जिनकौं न अंत॥गि०
वसु गुण रतननुके है भण्डार, जैवंते वरतो जग मझार॥गि०
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिम्ब नमो पदकमल तेहर॥गि०

घत्ता-दोहा।

जै जिन ग्रह द्रह क्षेत्र गिरि, नदी तटादिक जानि।
तिन बिच जिनप्रतिमा चरण, नमो जोरि जुग पांन॥

अडिल्ल छन्द।

वसुद्रव्य करि जिनबिंब पूजो, मन वचन तन चावसौं।
नर सुरगके सुख भोगि करि, फिर मुकतिपुर घर जावसौं॥
जाके सुफल करि तीर्थकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये।
ते होय तुमकौं सदा जयवंते सु जिन गुन गाईये॥

इत्याशीर्वादः।

इति सिद्धकूट चैत्यालयकी जयमाल संपूर्ण।

अयोध्यानगरी सम्बन्धी अतीत अनागत वर्तमान पूजा।

गीता छन्द।

मेरु दक्षिण भाग, भरतक्षेत्र अधिक सुहावनौ।
षट्खण्ड मंडित पूज्य पंडित, सुरनरन मन भावनौं॥
हिमवंत अरु वैताडगिरि, युग नदी कर शोभित तदा।
जिनतीतनागत वर्तमान, करौं सु आह्वानन मुदा। ४८३॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्र सुकोशलदेशगत अयोध्यानगरी सम्बन्धी अतीतानागत वर्तमान अत्रावतरावतर संवौषट् इति आह्वाननं। ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं।

ढाल-जोगीरासाकी।

चाल द्यानतरायकृत अष्टकनुकी जिनपद ध्याय लै मेरे भीति इस चालमें।

गंगाजल भरि आनि छानि करी, झारि रतन जटाय।
जिनगुण गाय जाय ल्याय उर, बहु विधि भक्ति चढ़ाय सु

जिनपद पूजिये मेरे मीत ॥ मेरू सुदरशन भारत साथ।
आरजखण्ड बखानि, नगर विनीतातीतानागत वर्तमान जिन
जान सु जिनपद पूजिये।॥४८४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौबीसी अतीतानागत वर्तमान जिनेभ्यो जलं।

मलियागिर केसर चन्दन घिसी, रतन कटोरी धारी।
मन वच काय चढ़ाय चरण जिन, भव आताप निवारी ॥
सु जिनपद पूजिये मेरे मीत। मेरू०॥४८५॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौबीसी अतीतानागत वर्तमान जिनेभ्यो चन्दनं।

मुक्ताफलसम सालि अखण्डित, उज्ज्वल नीर प्रक्षालि,
मन वच काय चढ़ाय चरन जिन।
भव आपद सब टालि, सु जिन पद पूजिये ॥ मेरू० ॥४८६॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौबीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालय जिनेभ्यो अक्षतं।

कुसुम मनोहर सुरतरु केसर, रजतकनकमय लयाय।
मन वच काय चढ़ाय चरन जिन, मदन बाण नसि जाय ॥
सु जिन पद पूजिये मेरे मीत ॥ मेरु० ॥४८७॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्या-नगर सम्बन्धी तीन चौबीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालय जिनेभ्यो पुष्पं।

नासा दृगवश करन हरन मन पोषन इन्द्री पांच।
श्री जिन चरण चढ़ाय भविकजन, नसै क्षुधा दुख साच॥
सु जिन पद पूजिये मेरे मीत॥ मेरु०॥ ४८८॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौबीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालयजिनेभ्यो नैवेद्यम्।

मणिमय दीपक ल्याय अमोलिक, ज्योति रतनमय धारि।
आरति कर जिन चरणकमलकी, मोह तिमिर निरवारि॥
सु जिनपद पूजिये मेरे मीत॥ मेरु०॥ ४८९॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौबीसी अतीतागत वर्तमान जिनालयजिनेभ्यो दीपम्।

अगर कपूर सुगन्ध दशों धरि, धूप दहन विच खेव।
जिनके चरणकमलके आगे, करजोरों स्वयमेव॥
सु जिन पद पूजिये मेरे मीत॥ मेरु०॥ ४९०॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौबीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालयजिनेभ्यो धूपम्।

फल फासूखवर लै अति सुन्दर, लौंग लायची सेऊ।
श्री जिनचरण चढ़ाय भविकजन, तुरत मुकतफल लेहु॥
सु जिनपद पूजिये मेरे मीत॥ ४९१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौबीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालयजिनेभ्यो फलं।

जल फल अर्घ बनाय गाय गुण, मन वच काय लगाय।
श्री जिनचरण करों भवि पूजा, स्वर्ग मुकति फलदाय॥
सु जिनपद पूजिये मेरे मीत॥ ४९२॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु दक्षिणदिश भरतक्षेत्र आरजखण्ड अयोध्यानगर सम्बन्धी तीन चौबीसी अतीतानागत वर्तमान जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

मेरु सुदर्शन दक्षिण भारत आरजखण्ड बखानि।
नगर विनीतातीतानागत, वर्तमान जिन जानि॥
सु जिनपद पूजिये मेरे मीत॥ ४९३॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरु भारतक्षेत्र आरजखण्ड विनीतानगर सम्बन्धी अतीतानागत वर्तमान जिनेभ्यो अर्घं।

इति समुदाय पूजा।

अथ प्रत्येक पूजा।

सोरठा।

जम्बू भारत क्षेत्र, प्रथम तीर्थ निर्वाण है।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजों॥ ४९४॥

ॐ ह्रीं निर्वाणदेवाय अर्घं ॥ १ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, सागर नाम जिनेश है।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजों ॥४९५॥

ॐ ह्रीं सागर जिनेशाय अर्घं ॥ २ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, महासाधु जिनवर कहे।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥४९५-१॥

ॐ ह्रीं महासाधु जिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र नाम, विमलप्रभ है सही।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजों ॥४९६॥

ॐ ह्रीं विमलप्रभाय अर्घं ॥ ४ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, श्रीधर नाम सु जानिये।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥४९७॥

ॐ ह्रीं श्रीधराय अर्घं ॥ ५ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, दत्तदेव जिन नाम है।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥४९८॥

ॐ ह्रीं दत्तदेवाय अर्घं ॥ ६ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, अमल प्रभू जिनराज ही।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥४९९॥

ॐ ह्रीं अमलप्रभाय अर्घं ॥ ७ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, शुद्ध प्रभु जिनवर भले।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५००॥

ॐ ह्रीं शुद्धप्रभाय अर्घं ॥ ८ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, उद्धारक जिनराज है।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजौं ॥५०१॥
ॐ ह्रीं उद्धारकाय अर्घं ॥ ९ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, अग्निदेव जिनराज है।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५०२॥
ॐ ह्रीं अग्निदेवाय अर्घं ॥ १० ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, संयम तीर्थंकर भये।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५०३॥
ॐ ह्रीं संयम तीर्थंकराय अर्घं ॥ ११ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, शिव जिनवर परमानिये।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५०४॥
ॐ ह्रीं शिवजिनालय अर्घं ॥ १२ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, ज्ञान जिनेश्वरपद भजौं।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं॥५०४-१॥
ॐ ह्रीं ज्ञानजिनालय अर्घं ॥ १३ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, पुष्पांजलि जिनवर प्रभु।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५०५॥
ॐ ह्रीं अञ्जलिजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, श्री उत्साह जिनेश हैं।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५०६॥
ॐ ह्रीं उत्साह जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ॥ १५ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, परमेश्वर जिन नाम है।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५०७॥
ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः अर्घं ॥ १६ ॥
जम्बू भारतक्षेत्र, तीर्थंकर जितशत्रु है।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५०८॥
ॐ ह्रीं जितशत्रवे नमः अर्घं ॥ १७ ॥
जम्बू भारतक्षेत्र, नाम विमल जिनवर कह्यो।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजौं ॥५०९॥
ॐ ह्रीं विमलजिनाय नमः अर्घं ॥ १८ ॥
जम्बू भारतक्षेत्र, तीर्थं जशोधर संज्ञ है।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वर पद जजौं ॥५१०॥
ॐ ह्रीं यशोधराय नमः अर्घं ॥ १९ ॥
जम्बू भारतक्षेत्र, ज्ञानामृत जिन जानिये।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५११॥
ॐ ह्रीं ज्ञानामृताय नमः अर्घं ॥ २० ॥
जम्बू भारतक्षेत्र, तीर्थ विशुद्धमतिस्तथा।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५१२॥
ॐ ह्रीं विशुद्धमतये नमः अर्घं ॥ २१ ॥
जम्बू भारतक्षेत्र, शांतिदेव जिनराज है।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५१३॥
ॐ ह्रीं शांतिदेवाय नमः अर्घं ॥ २२ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, तीर्थ भद्र मति जहं भरा।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५१४॥
ॐ ह्रीं भद्रमतस्य नमः अर्घं ॥ २३ ॥

जम्बू भारतक्षेत्र, कृष्ण अन्त जिनवर भयो।
जल फल ल्याय पवित्र, तीत जिनेश्वरपद जजौं ॥५१५॥
ॐ ह्रीं कृष्णदेवाय नमः अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा।

सब तीर्थंकर तीत ये, निर्वृतिपद दातार।
भव्यनकौं तिन पद यजौं, पूरण अघ सम्हार ॥ ५१६ ॥

इति पूर्णार्घम्।

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

आदि श्री निर्वाण, कृष्ण पर्यंत ये।
जम्बू भारतक्षेत्र, तीत अरहन्त ये ॥
गुण गणलंकृत गणि मुनि, वन्दित पद सदा।
मति माफिक जैमाल, करों तिनकी मुदा ॥ १४ ॥

पद्धड़ी छन्द।

जय जय निर्वाण सुदेव देव, त्रिदशाधिप जिनपद करत सेव।
जय सागर गुण आगर महान, भवि जीवनको कीनो कल्याण ॥
जय महासाधु विधि वैराधि, भये शिवधव आराधन आराधि।
जय जय श्री विमलप्रभ जिनेश, जिनकी दुति लखि लाजत दिनेश ॥

जय शुद्ध भाक जिन शुद्ध वाक, गुण कथन करत गणधर सु थाक।
जय जय श्रीधर श्रीधर महान, भये शिवतिय प्रतिलहि तुरिय ज्ञान ॥
जय दत्तदेव जिन दत्तदेव, पशु आदिक नुतयुत करत सेव।
जय अमल प्रभ महिमा निधान, अमलान सु गुण जिनके महान ॥
जय उद्धारक तीर्थंकर सुभाय, उद्धारक भविद्धि तैं सु गाय।
जय अग्निनाथ सुर नमित माथ, जाले अघरिपु वसु कर्म साथ ॥
जय संयम संजम धरन धीर, भव्यनु संजम दायक सु वीर।
जय शिव जिन शिव कामिनीकंत, शिवपुर निवास कीनों महंत ॥
पुष्पांजलि निर्जित पुष्पबान, पुष्पांजलि करि पूजित महान।
उत्साह देव हत कर्म जाल, उत्साह भविनको देत हाल ॥
परमेश्वर जिनको नाम गाय, परमेश्वर पददायक सुभाय।
जय ज्ञान जिनेश्वर नाम धार, ज्ञानावर्णादिक कर्म हार ॥
जय जय जयारि जिन नाम सार, जय विमल अमल जसजग विथार।
जय जय ज्ञानामृत विगत गर्व, ज्ञानामृत करि पोषित सुभव्य ॥
जय जय विशुद्धमति नाम पाय, भवि जीवनको बहु सुमतिदाय।
जय शांति शांति करतार जांनि, जगजीवन जिन दिय अभयदान ॥
जय श्री भद्र भवि भद्रकार, जिनके गुणको नहिं पारवार।
जय कृष्ण कलंकोज्झित जिनेश, पद पूजत जिनके सुर सुरेश ॥

दोहा।

यह अतीत जिनकी कही, वर जयमाल बनाय।
तिन जिनवर पदकमल पर, नैन सदा बलि जाय ॥ १६ ॥

इति अतीत जिन पूजा।

अथ वर्तमान जिन पूजा।

सोरठा।

जम्बू भारत मांहि, आदि जिनेश्वर वृषभ है।
पूजत पातिक जाहि, वर्तमान वसु द्रव्य लै ॥५१७॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभदेवाय अर्घं ॥ १ ॥
जम्बू भारत मांहि, अजित जिनेश्वर दूसरे ॥ पूज० ॥५१८॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथाय अर्घं ॥ २ ॥
जम्बू भारत मांहि, सम्भवनाथ जिनेश हैं ॥ पूज० ॥५१९॥
ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथाय अर्घं ॥ ३ ॥
जम्बू भारत मांहि, अभिनन्दन जिनवर कहे ॥ पूज० ॥५२०॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दन जिनाय अर्घं ॥ ४ ॥
जम्बू भारत मांहि, सुमति जिनेश्वर नाम हैं ॥ पूज० ॥५२१॥
ॐ ह्रीं श्री सुमति जिनेभ्यो अर्घं ॥ ५ ॥
जम्बू भारत मांहि, पद्मप्रभु जिन है सही ॥ पूज० ॥५२२॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनाय अर्घं ॥ ६ ॥
जम्बू भारत मांहि, श्री सुपार्श्व जिनराज हैं ॥ पूज० ॥५२३॥
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथाय जिनाय अर्घं ॥ ७ ॥
जम्बू भारत मांहि, चन्द्रप्रभ जिनेश्वर सही ॥ पूज० ॥५२४॥
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घं ॥ ८ ॥
जम्बू भारत मांहि, पुष्पदन्त जिन हैं भली ॥ पूज० ॥५२५॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

जम्बू भारत मांहि, शीतल शीतलकार हैं ॥ पूजत० ।५२६॥
ॐ ह्रीं शीतलनाथाय अर्घं ॥ १० ॥

जम्बू भारत मांहि, श्री श्रेयांस महाराज हैं ॥ पूजत० ॥५२७॥
ॐ ह्रीं श्रेयांसनाथाय अर्घं ॥ ११ ॥

जम्बू भारत मांहि, वासुपूज्य जिन जानिये ॥ पूजत० ॥५२८॥
ॐ ह्रीं वासुपूज्य जिनाय अर्घ ॥ १२ ॥

जम्बू भारत मांहि, विमल विमल मतिकार हैं ॥पूजत०॥५२९॥
ॐ ह्रीं विमलनाथाय अर्घं ॥ १३ ॥

जम्बू भारत मांहि, तीर्थ अनंत सु नाम हैं ॥ पूजत० ॥५३०॥
ॐ ह्रीं अनन्तनाथाय अर्घं ॥ १४ ॥

जम्बू भारत मांहि, धर्म जिनेश्वर धर्मधर ॥ पूजत० ।५३१॥
ॐ ह्रीं धर्मनाथाय अर्घं ॥ १५ ॥

जम्बू भारत मांहि, शांतिनाथ जिननाथ हैं। पूजत० ।५३२॥
ॐ ह्रीं शांतिनाथाय अर्घं ॥ १६ ॥

जम्बू भारत मांहि, कुन्थुजिनेश्वर तीर्थकृत ॥ पूजत० ।५३३॥
ॐ ह्रीं कुन्थुनाथाय अर्घं ॥ १७ ॥

जम्बू भारत मांहि, अरहनाथ जिनवर महा ॥ पूजत० ।५३४॥
ॐ ह्रीं अरहनाथाय अर्घं ॥ १८ ॥

जम्बू भारत मांहि, मल्लिमदन गज दलन हैं ॥पूजत०॥५३५॥
ॐ ह्रीं मल्लिनाथाय अर्घं ॥ १९ ॥

जम्बू भारत मांहि, मुनिसुव्रत जिनराज हैं ॥ पूजत० ॥५३६॥
ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतनाथाय अर्घं ॥ २० ॥

जम्बू भारत मांहि, नमि जिनवर जगतार हैं ॥ पूजत० ।५३७॥

ॐ ह्रीं नमिजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

जम्बू भारत मांहि, नेमनाथ गुण धार हैं ॥ पूजत० ॥५३८॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथाय अर्घं ॥ २२ ॥

जम्बू भारत मांहि, पार्श्वनाथ जिनवर भले ॥ पूजत० ॥५३९॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं ॥ २३ ॥

जम्बू भारत मांहि, वर्द्धमान जिन अन्त हैं ॥ पूजत० ॥५४०॥

ॐ ह्रीं वर्द्धमान जिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा।

वर्तमान चउवीस जिन, जगमें सब सुखदाय।
जिन चरनन पूजौं सदा, पूरन अर्घ चढ़ाय ।.५४१॥

ॐ ह्रीं वर्तमान चउवीस जिनाय अर्घं।

जयमाला-चौपाई।

जै वृषभांक वृषभ जिननाथं, केवल सहित नमित सुर माथं।
जय अजितेश्वर सर्व निधानं, मोहतमोघ विनाशन भानं॥
जय सम्भव भव काटन फंदं, शिवसुख करन हरन दुख दंदं।
जै जै अभिनन्दन जिनदेवा, भूपत सुरपति कृत संसेवा॥
जय जय सुमति सुमति दातारं, कामनतं दलन सुखकारं।
जय जय पद्मप्रभु गत रागं, मोहमही रुह तोरन नागं॥
श्री सुपार्श्व निज पार्श्व सुदैनं, भवि जीवन सुखकारन ऐनं।
चन्द्रप्रभु जग करन अनंदं, तन द्युति धर जिन पूरन चंदं॥
पुष्पदंत जिन पुष्प सुवानं, जन्म जरा मरणादिक हानं।
जय सीतल जिन सीतलता कर, भवि जीवनको भव आताप हर॥

जय जिनं चउ घाति विमुक्तं, केवल नंतचतुष्टय युक्तं ।
जय वासुपूज्य अमरपति पूज्यं, जिन परताप जगतपति हूज्यं ॥
जय श्री विमल विमल तन धारक, जन्म जरा मरनादि निवारक ।
जय अनन्त जिन असितन सोहं, गुण अनन्त संयुत गत मोहं ॥
जय जिनधर्म धर्म दश भाख्यो, जिनकरि लोकालोक प्रकाश्यो ।
जय जिन शांतिकरण तिहू जगके, दरसावन भवि मोक्ष सुगमके ॥
जय जिन कुंथ दयानिधि स्वामी, कुंथ्वादिक पालक शिवगामी ।
जय श्री अरहनाथ जिनदेवं, अरि हरि करि लिय शिवपुर भेवं ॥
जय श्री मल्लि मदन गज दलनं, ईर्यापथ सोधन किय गमनं ।
जय मुनिसुव्रत सुव्रत धारनं, भव दुख हरन जगत जन शरनं ॥
जय नमिनाथ नरामर वन्द्यं, तीन लोक जिन जस अभिनन्द्यं ।
जय नेमीश्वर एक विहारी, कुमरपने दीक्षा जिन धारी ॥
जय जय पार्श्व कमठ मद मर्दन, सम्यग्ज्ञानादिक गुण वर्धन ।
जय महावीर सुवीर शिरोमणि, गणधर पार लहै न सुगुण भवि ॥

घत्ता-दोहा ।

वर्तमान चौवीसकी, वरनी यह जयमाल ।
पढ़ै सुनै जो भाव धरि, पावै शिव दर हाल ॥

इतिश्री वर्तमान चउवीसी पूजा सम्पूर्णम् ।

अथ भविष्यत् जिन पूजा।

जम्बू भारत भावि, पद्म महा जिनवर यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै॥
ॐ ह्रीं महापद्म जिनाय अर्घं॥ १॥

जम्बू भारत भावि, सूरसेन मुनिवर यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै॥
ॐ ह्रीं सूरसेन मुनीन्द्राय अर्घं॥ २॥

जम्बू भारत भावि, सु प्रभ जिनवर पद यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै॥५४२॥
ॐ ह्रीं सुप्रभाय अर्घं॥ ३॥

जम्बू भारत भावि, तीर्थ स्वयंप्रभ जिनवर यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै॥५४३॥
ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय अर्घं॥ ४॥

जम्बू भारत भावि, सर्वायुध जिनपद यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै॥५४४॥
ॐ ह्रीं सर्वायुधाय अर्घं॥ ५॥

जम्बू भारत भावि, जयदेवा जिन पूजिये।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै॥५४५॥
ॐ ह्रीं जयदेवाय अर्घं॥ ६॥

जम्बू भारत भावि, उदय देव जिनवर यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै॥५४६॥
ॐ ह्रीं उदयदेवाय अर्घं॥ ७॥

जम्बू भारत भावि, प्रभादेव जिनवर यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकैं ॥५४७॥
ॐ ह्रीं प्रभादेवाय अर्घं ॥ ८ ॥

जम्बू भारत भावि, श्री उदंक जिनपद यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकैं ॥५४८॥
ॐ ह्रीं उदंक जिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

जम्बू भारत भावि, पक्ष कीर्ति जिनपद यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकैं ॥५४९॥
ॐ ह्रीं पक्षकीर्ति जिनाय अर्घं ॥ १० ॥

जम्बू भारत भावि, जयकीर्ति जिनपद यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकैं ॥५५०॥
ॐ ह्रीं जयकीर्ति जिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

जम्बू भारत भावि, पूर्णबुद्धि जिनवर यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकैं ॥५५१॥
ॐ ह्रीं पूर्णबुद्धि जिनाय अर्घं ॥ १२ ॥

जम्बु भारत भावि, निष्कषाय जिन पूजिये।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकैं ॥५५२॥
ॐ ह्रीं निष्कषाय जिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

जम्बू भारत भावि, विमलप्रभ पद पूजिये।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकैं ॥५५३॥
ॐ ह्रीं विमलप्रभाय अर्घं ॥ १४ ॥

जम्बू भारत भावि, बहुल प्रभ जिनवर यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥५५४॥
ॐ ह्रीं बहुलप्रभ जिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

जम्बू भारत भावि, निरमल जिनवर पूजिये।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥५५५॥
ॐ ह्रीं निर्मलजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

जम्बू भारत भावि, चित्रगुप्त जिन पूजिये।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥५५६॥
ॐ ह्रीं चित्रगुप्त जिनेन्द्राय अर्घं ॥ १७ ॥

जम्बू भारत भावि, गुप्त समाधि सु जिन यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥
ॐ ह्रीं समाधिगुप्त जिनाय अर्घं । १८ ॥

जम्बू भारत भावि, नाम स्वयंप्रभु जिन यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥
ॐ ह्रीं स्वयंभूजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

जंबू भारत भावि, नाम कंदर्प जिनेश है।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥
ॐ ह्रीं कन्दर्पजिनाय अर्घं ॥ २० ॥

जम्बू भारत भावि, तीर्थंकर जय पद यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥
ॐ ह्रीं तीर्थंकर जयदेवाय अर्घं । २१ ।

जम्बू भारत भावि, श्री विमलेश्वर जिन यजों।
जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै ॥

ॐ ह्रीं विमलेश्वराय अर्घं॥ २२॥

जंबू भारत भावि, दिव्यवाद जिनवर यजों।

जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै॥

ॐ ह्रीं दिव्यवादजिनाय अर्घं॥ २३॥

जबू भारत भावि, श्री अनन्त वीरज यजों।

जल फलादि वसु द्रव्य, ल्याय सु मन वच कायकै॥

ॐ ह्रीं अनन्तवीरजाय अर्घं॥ २४॥

दोहा।

ये जिन भावी भरतके, तीर्थंकर महाराज।

भव्य संग मंगल करो, पूजों अर्घ सु साज॥

पूर्णार्घं।

अथ जयमाला।

भारत क्षेत्र सु भावि जिन, तुरिय वीस मिति जानि।

तिन सबकी जयमाल अब, वरनो सब सुख दानि॥

पद्धड़ी छन्द।

जय महापद्मवर नाम धार, जिन जीत्यो दुधर सुभट मार।

जय सूर सु सुर नर करत सेव, जिन भरत भावि देवाधिदेव॥

जय सुप्रभ सुप्रभ धरन अंग, लखि दुति लाजत कोटिक अनंग।

जय स्वयंप्रभू गत क्रोधभाव, जे विगत मोह भए थिर सु भाव॥

सर्वायुध आयुध रहित जान, जिन हस्यो कुसुम सर शुभ मान।

जगदेव दयाकर जगत मांहि, जिन वच लहि भव भव पार जाहि॥

जय उदय नाम जिन जग उधार, सम्पूरन गुणके हैं भण्डार।

जय प्रभादेव भास्वतस्वरूप, लखि लाजत रवि शशि द्युति अनूप॥

जयश्री उदंक किए कर्म चूर, जिनको जस तिहु जग रह्यो पूर।
जय कृष्णकीर्ति महिमा निधान, प्रश्नोत्तरदायक जग महान॥
जय जय जयकीर्ति नाम गाय, बहु तिरे जु भवि जिन वचन गाय।
जय पूरन मति पूरन सु ज्ञान, सर्वार्थसिद्ध पूरन महान्॥
जय निष्कषाय जिन निष्कषाय, विषयादिक रिपुगणहरन गाय।
जय विमल प्रभु गुन विमल धार, तन भामण्डल दुति लसत सार॥
जयजय जिन बहुल सुगुन गनेश, जिन तन द्युति लखि लाजतदिनेश॥
जय निर्मल निर्मल तन धरंत, राजैं निमल आचार बंध॥
जय चित्रगुप्त त्रय गुप्ति गुप्त, त्रय दश विधि चारित्र करि संयुक्त।
जय जय जिनवर सुसमाधि गुप्ति, जिनदिय बताय करजोग जुक्ति॥
जय स्वयम्भूत करुणा निधान, जिनके गुण हैं बहु अप्रमान।
जय जय कन्दर्प जिनेश सूर, जिन हरो मदन गज दर्प भूरि॥
जय जय जय नाथ मुनीश ईश, जिन मोह नशो भये केवलीश।
जय जय विमलेश जिनेशस्वामि, मलरहित सुतन तुम शरण जामि॥
जय दिव्यवाद जिन नाम सार, दिव्यध्वनि वर्षत अमृत धार।
जय जय अनंत वीरज महंत, जय नंत चतुष्टय गुण धरंत॥

घत्ता दोहा।

भवि भारत जिनराजको, बरनी यह जयमाल।
पढ़ै सुने जो उर धरै, छूटै जाय जगजाल।५६२॥

इति भरतक्षेत्र जिनपूजा।

अथ ऐरावत क्षेत्र जिन पूजा।

अडिल्ल छन्द।

मेरुत्तरदिशि ऐरावत जिन जानिये।
तीतागता अनागत जिन परमानिये॥
तीत चतुर्विंशति तीर्थंकर ए भये।
तिन आह्वानन करौं वास शिवपुर ठए।५६३॥

ॐ ह्रीं मेरुत्तर ऐरावत चतुर्विंशति जिनात्रावतरावतर संवौषट् तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं।

"सैंयाको लै आवोरे" इस चालमें।

भैया गुन गावोरे गावो॥

सुर गंगाको नीर क्षीर सम, प्रासुक निर्मल ल्यावो।
कंचन झार भराय भविकजन, श्री जिनचरण चढावो॥
परमपद पावो रे, चरण चितु ल्यावोरे॥ २॥

मेरुत्तर ऐरावत तीतागतानागत जिन ध्यावो।
नाचि नाचि गुन गाय गाय जिन तन मन हर्ष बढ़ावो॥
चरन चित ल्यावोरे, ल्यावोजी परमपद पावोजी॥५६४॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भाविभूतवर्तमान जिनेभ्यो जलम्।

चन्दन अगर कपूर सु कुमकुम, लै करि जल सम गारो।
श्री जिनचरण चढ़ाय भविकजन, दाह दुरित निरवारो॥पर०॥५६५॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भाविभूतवर्तमान जिनेभ्यो चन्दनम्।

तन्दुल धवल सु वासु अखण्डित, निर्मल नीर पखारो।
जिनपद पंकज अग्र पुञ्ज धरि, अक्षय मग पग धारो॥पर०॥५६६
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भाविभूतवर्तमान जिनेभ्यो अक्षतम्।
जाइ जुही अर वेल चमेली, विकसित पुष्प लै आवो।
शुद्ध होइ तरु अन्तरालचुन, सो लै जिनहि चढ़ावो।पर०॥५६७॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भाविभूतवर्तमान जिनेभ्यो पुष्पम्।
घेवर बावर मोदक खाजे, ताजे ताजे लीजे।
हेमथार भरि भरि करि भविजन्, श्री जिन अरचन कीजै०॥।पर
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भाविभूतवर्तमान जिनेभ्यो नैवेद्यम्।
दीपकनक मय मनिमय वाती, जगमग जोति सुहाती।
आरति करत चरण युग जिनवर, मोह तिमिर मिट जाती।पर०॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भाविभूतवर्तमान जिनेभ्यो दीपम्।
अगर कपूर लवंग लायची, दसविधि धूप सम्हारो।
श्री जिनचरण कमलके आगे, खेइ कर्म वसु जारो॥पर०चरन०॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भाविभूतवर्तमान जिनेभ्यो धूपम्।
दाख छुहारे लौंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावो।
पिस्ता किसमिस सेउ लाइची लै, करि जिनहि चढ़ावो॥पर०॥
ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भाविभूतवर्तमान जिनेभ्यो फलम्।
जलफल अर्घ बनाय गाय गुण, मन वच काय लगावो।
श्रीजिन चरणकमलकी पूजा, करि शिवपुर पद पावो॥पर०॥
चरणचित ल्यावोजी ल्यावोजी, परम पद पावोजी पावोजी।

मेरुत्तर ऐरावत तीता, गता नागत जिन ध्यावो।
नाचि नाचि गुण गायगाय करि, तन मन हर्ष बढ़ावो ॥५७३॥

ॐ ह्रीं ऐरावतक्षेत्रगत भाविभूतवर्त्तमान जिनेभ्यो अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

सुन्दरी छन्द।

पंचरूप जिनेश्वर नाम है, पंचकल्याणकके धाम है।
जम्बूद्वीप सु ऐरावत भलो, यजो तीत सु जिन वसु द्रव्य ले ॥७४

ॐ ह्रीं पंचरूपय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ॥ १ ॥

फुनि जिनन्धर तीर्थंकर महा, नाम गनधर गौतमने कहा ॥जंबू०

ॐ ह्रीं जिनधर जिनालयाय अर्घं ॥ २ ॥

सांप्रतिक जिन नाम समेत हैं, भविजनको शिव सांप्रति देत हैं॥जं०

ॐ ह्रीं सांप्रतिक जिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

ऊर्ध्वयन्त सुगुण जिनके महा, ऊर्ध्वयन्त सु नाम सु गुरु कहा।
जंबूद्वीप सु ऐरावत भलो, यजो तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥५७७॥

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वयन्तजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

अधिसुक्षायक नाम जिनेश्वर, क्षायकादि अनन्त सु गुनाकर।
जंबूदीप सु ऐरावत भलो, यजो तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥५७८

ॐ ह्रीं अधिसुक्षायक जिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

फुनि सु अभिनन्दन जिनवर कहै, लहै शिवसुख अष्ट करम दहै।
जंबूदीप सु ऐरावत भलो, यजो तीत सु जिन वसु द्रव्य लै ॥५७९

ॐ ह्रीं अभिनन्दन जिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

नाम जिन रत्नेश सु जानिये, रत्नत्रय संयुत परमानियै।
जंबूद्वीप सु ऐरावत भलो, यजों तीत सु जिन वसु द्रव्य लै॥५८०

ॐ ह्रीं रत्नेश जिनाय अर्घं॥ ७॥

शिवर मात्र रामेश्वर प्रभू, रमा धाम जिनेश्वर है स्वभू।
जम्बूद्वीप सु ऐरावत भलो, यजों तीत सु जिन वसु द्रव्य लै॥५८१

ॐ ह्रीं रामेश्वर जिनाय अर्घं॥ ८॥

नाम अंगेक्षित जिनार है, अष्टांग सुनिर आकार है।
जम्बूद्वीप सु ऐरावत भलो, यजों तीत सु जिन वसु द्रव्य लै॥५८२

ॐ ह्रीं अँगेक्षित जिनाय अर्घं॥ ९॥

नामवर विन्यास जिनेश है, शुद्ध धर्म प्रकाशन देश है।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलो, पूजों तीत सु जिन वसु द्रव्य लै॥५८३

ॐ ह्रीं विन्यासो जिनाकयाय अर्घं॥ १०॥

नाम जिन सु अरोष बताइयो, रोष सहित सुगुण जिन पाइयो।
जंबूदीप सु ऐरावत भलो, यजों तीत सु जिनवर वसु द्रव्य लै॥५८४

ॐ ह्रीं आरोषजिनाय अर्घं॥ ११॥

बहु विधान सुगुण जिनके विषैं, नाम जिन सुविधानक श्रुतलिखैं।
जंबूद्वीप सु ऐरावत भलो, पूजों तीत स जिन वसु द्रव्य लै॥५८५

ॐ ह्रीं सुविधानक जिनाय अर्घं॥ १२॥

वप्रदत्त जिनेश्वर नाम है, इन्द्रवंदित पूरण काम है।
जम्बूद्वीप सु ऐरावत भलो, पूजों तीत सु जिन वसु द्रव्य लै॥५८६

ॐ ह्रीं वप्रदत्त जिनेन्द्राय अर्घं॥ १३॥

श्रीकुमार सु नाम सही परो, जिन कुमारग मिथ्या मद हर्यो।
जम्बूदीप सु ऐरावत नाम है, पूजों तीत सु जिन वसु द्रव्य लै॥

ॐ ह्रीं श्रीकुमारजिनेशाय अर्घं॥ १४॥

नाम जिन श्री शैल वखानियो, महामिथ्या गिरवर जानियो।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलो, पूजों तीत सु जिन वसु द्रव्य लै॥

ॐ ह्रीं श्रीशैलजिनाय अर्घं॥ १५॥

प्रभंजन जिन भंजन करमगिर, भव्य कमल विकासन भान थिर।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलो, पूजों तीत सु जिन वसु द्रव्य लै॥

ॐ ह्रीं प्रभंजनजिनाय अर्घं॥ १६॥

नाम जिन सौभाग बखानिये, युतचतुस्त्रिंशतिमय जानिये।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलो, पूजों तीत सु जिन वसुद्रव्य लै॥

ॐ ह्रीं सौभाग्यजिनाय अर्घं॥ १७॥

मुनि मनांबुज परकाशन सु रवि, श्रीदिवाकर नाम सु रह्यो फवि।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलो, पूजों तीत सु जिन वसुद्रव्य लै॥

ॐ ह्रीं दिवाकरजिनाय अर्घं॥ १८॥

वृत्त निदेशक भव्यतु वृत्ताकरि, सुवृत्तबिंदु जिनेश्वर नाम धर।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलो, पूजों तीत सु जिन वसुद्रव्य लै॥

ॐ ह्रीं वृत्तबिंदुदेवाय अर्घं॥ १९॥

सिद्धि करि जिनको वर नाम है, सिद्धपुर जिनको निज ठाम है।
जम्बूदीप सु ऐरावत भलो, पूजों तीत सु जिन वसुद्रव्य लै॥

ॐ ह्रीं सिद्धिकरजिनाय अर्घं॥ २०॥

ज्ञानघन जिन नाम सु ज्ञान तन, ज्ञानकर सम्बोधित भविकजन।
जम्बूद्वीप सु ऐरावत भलो, पूजो तीत सु जिन वसुद्रव्य लै॥

ॐ ह्रीं ज्ञानघनजिनाय अर्घं॥ २१॥

विना कालात पूग्न काय जिन, कल्पद्रुम वर नाम सु कह्यो तिन।
जम्बूद्वीप सु ऐरावत भलो, पूजो तीत सु जिन वसुद्रव्य लै॥

ॐ ह्रीं कल्पद्रुमाय अर्घं। २२॥

तीर्थपद दायक भव्यनु सदा, तीर्थफल जिन नाम कहे मुदा।
जम्बूद्वीप सु ऐरावत भलो, पूजो तीत सु जिन वसुद्रव्य लै॥

ॐ ह्रीं धर्मफलजिनाय अर्घं।। २३॥

विगत काम विरमप्रभ नाम है, राग रहित सदा सुखधाम है।
जम्बूद्वीप सु ऐरावत भलो, पूजो तीत सु जिन वसुद्रव्य लै॥

ॐ ह्रीं विरमप्रभाय अर्घं॥ २४॥

दोहा।

दोष अठारह रहित ये, गुण छयालीस भण्डार।
पूर्णार्घ करि तिन यजो, स्वर्ग मुक्ति दातार॥

ॐ ह्रीं पूर्णार्घं।

अथ जयमाला।

गीता छन्द।

संसार सागर तरन तारन, नाम जिनको जानिये।
फुनि सकल कलुष विमुक्ति शोभित, गात्र जिन परमानिये॥
ये भविक कमल बन घन प्रकाशन, भान सम शोभित सही।
हो नमौं जिनके बीस तीस, जिनेश ऐरावत मही॥

पद्धड़ी छन्द।

जय पंच रूप तिहु जगत भूप, शुभ ध्यान धुरंधर गुनन कूप।
जय जय जय जिनवर देव देव, जिन सुर मुनिगण करत सेव॥
जय सांप्रति जिन शुचि ध्यान लीन, जिन करै सुभट वसु कर्मक्षीण।
जय उपयंत गुणधर मंहत, तिहु लोक प्रकाशन ग्यानवन्त॥
जे अधि क्षायक जिन नाम सार, उत्तम क्षायक सम्यक्त धार।
जय अभिनन्दन महिमा निधान, जगवन्दन नन्दन शुद्ध ज्ञान॥
जय रत्नेश्वर भय रतन ईप, जे जाय वसे तिहु जगत सीस।
जय रामेश्वर शिव रमा वास, किये कर्म चूर क्षय जग उदास॥
जय अंगेक्षित सब संग हीन, जिन अंग उपंग प्रकाश कीन।
विन्याम पंच मरु ज्ञान धार, तजि दोष सकल गुणके भण्डार॥
जय जय अरोष जिन रोष माप, मय लोभ मान माया विमोष।
जय जय अभिधानक गुण निधान, जिन शुद्धातमरस कियो पान॥
जय वप्रदत्त जय सुर गाय, जिन शिवमारग भवि दिय बताय।
जय जय कुमार वर नाम धार, ये कुमर काल जग बंधु सार॥
श्री मैल महाविधि मैल तोरि, सुख किय शिवत्रिय संगहेत जोरि।
जय देव प्रभंजन नाम गाय, जिनको जप जामें रह्यौ छाय॥
सौभाग्य देव सौभाग्य पात्र, लक्षण अष्टोत्तर सहस गात्र।
जय जय हि दिवाकर नाम जास, चर अचर पदारथकी प्रकाश॥
जय जय व्रतबिंदु अधीस स्वामि, तुव चरन कमल नित सरन जामि।
सिद्धंकर जिनको नाम गाय, ते सिद्ध रमापति है सु भाय॥

जय ज्ञान सु तन जिन नाम थाय, जिन ज्ञान तिहूजग रह्यो छाय।
जय कलपतरोत्तर नाम जानि, जय पावन कल्पद्रुम समान ॥
जय नाम तीर्थंकर है विशाल, सुर नर मुनि सेवत पद त्रिकाल।
शिवरमा रमन सुख नंत धाम, गुर गायो जिनको विरय नाम ॥

घत्ता त्रिभङ्गी छन्द।

श्री भूत जिनेश्वर जग परमेश्वर, सेवत सुर नर पद कमलं।
शिवसुखके कारन भविजनतारन, कलुष निवारन गुण अमलं ॥
जम्बू ऐरावत तीत सु जिन भूत, काम क्रोध रत सुख करनं।
हो जिनपद बन्दौं पाप निकन्दों, मन आनन्दों भव हरनं ॥

इतिश्री ऐरावत अतीत जिन पूजा संपूर्णम।

अथ वर्तमान पूजा।

सुन्दरी छन्द।

बालचन्द्र जिनेश्वर जानिये, लसत चंद्रानन परमानिये।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥१॥

ॐ ह्रीं बालचन्द्रजिनाय अर्घं ॥ १ ॥

मुनिसुव्रत जिनाय सु सार है, भवीजन भविघनु आधार है।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥२॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रतजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

अग्निसेन सु जिन परधान है, काम वन घन दहन कृपान है।
वर्तमानैरावत जिन भजौ, जल फलादिक लै वसुविधि यजौ ॥३॥

ॐ ह्रीं अग्निसेनाय जिनेभ्यो अर्घं ॥ ३ ॥

नंदि जिन गुण ज्ञान समेत है, भव्यजन आनन्द सु देत है।
वर्तमानैरावत जिन भजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों ॥
ॐ ह्रीं नंदिसेन जिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

त्रिजग श्रीसेवित जुग चरन जिन, दत्त श्रीजिन नाम कह्यो सु तिन।
वर्तमानैरावत जिन भजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों ॥
ॐ ह्रीं श्रीदत्त जिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

श्रीजिनेश्वर व्रत धर नाम वर, व्रतीजन शिवदायक सुखकर।
वर्तमानैरावत जिन भजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों ॥
ॐ ह्रीं व्रतधर जिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

सोमचन्द्र सु जिनको नाम है, चन्द्र सम शीतल सुखधाम है।
वर्तमानैरावत जिन भजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों ॥
ॐ ह्रीं सोमचन्द्र जिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

नाम जिनधृत दीर्घ बताइयो, धृतीजन धृति कारण पाइयो।
वर्तमानैरावत जिन भजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों ॥
ॐ ह्रीं धृतदीर्घ जिनाय अर्घं ॥ ८ ॥

तीर्थंकर शतपुष्प जिनेश है, पद शतेंद्र सु पूज्य महेश है।
वर्तमानैरावत जिन भजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों ॥
ॐ ह्रीं शतपुष्प जिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

विदित नाम सु शिवमत तीर्थंकर, शिव सुखाकर शिवदायक सु वर।
वर्तमानैरावत जिन भजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों ॥
ॐ ह्रीं शिवमत जिनाय अर्घं ॥ १० ॥

श्रीश्रेयांस जिनेश महेश हैं, श्रेय करता जगत जिनेश हैं।
वर्तमानैरावत जिन भजों, जल फलादिक ले वसुविधि यजों॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनाय अर्घं॥ ११॥

श्रीसुतोदक नाम सु येन है, श्रुत महोदधि पार सो देन है।
वर्तमानैरावत जिन भजों, जल फलादिक ले वसुविधि यजों॥

ॐ ह्रीं सुतोदकजिनाय अर्घं॥ १२॥

सिंहसेन जिनेश्वर जानिये, सिंहवत विक्रम विधि हानिये।
वर्तमानैरावत जिन भजों, जल फलादिक ले वसुविधि यजों॥

ॐ ह्रीं सिंहसेनजिनाय अर्घं॥ १३॥

शांति प्रद उपशांत सु जिन कहे, वनु कषाय सु वन घन जिन दहे।
वर्तमानैरावत जिन जजों, जल फलादिक ले वसुविधि यजों॥

ॐ ह्रीं उपशांतजिनाय अर्घं॥ १४॥

गुप्त आसन जिन गुण थान है, गुप्ति त्रिय गोपन धरि ध्यान है।
वर्तमानैरावत जिन जजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों॥

ॐ ह्रीं गुप्तासनजिनाय अर्घं॥ १५॥

जिन अनन्त सु वीरज नामवर, जग विख्यात अनन्त सु वीर्यधर।
वर्तमानैरावत जिन जजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों॥

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यजिनाय अर्घं॥ १६॥

पार्श्व नाम सु जिन सुखदाय है, पार्श्वदायक सहज सुभाय है।
वर्तमानैरावत जिन जजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय जिनाय अर्घं॥ १७॥

देव जिन जयवन्ते हो सदा, करत सेव सुर नर सुरपति मुदा।
वर्तमानैरावत जिन जजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों॥
ॐ ह्रीं देवजिनाय अर्घं॥ १८॥

नाम जिन मरुदेव सु गुरु धरन, मरुतदेवादिक पूजित चरन।
वर्तमानैरावत जिन जजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों॥
ॐ ह्रीं मरुतदेवजिनाय अर्घं॥ १९॥

सुधर जिनवर श्रीधर नाम है, ज्ञान श्री शोभित शिवधाम है।
वर्तमानैरावत जिन जजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों॥
ॐ ह्रीं श्रीधरजिनाय अर्घं॥ २०॥

नाम श्याम सु कण्ठ जिनेश है, मेघ छवि कण्ठो सुख देश है।
वर्तमानैरावत जिन जजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों॥
ॐ ह्रीं श्यामकंठजिनाय अर्घं॥ २१॥

कर्म वन घन जारन अग्नि सम, अग्रप्रभ जिन नाम कह्यो सु हम।
वर्तमानैरावत जिन जजों, जल फलादिक लै वसुविधि यजों॥
ॐ ह्रीं अग्रप्रभाय अर्घं॥ २२॥

पाप ईन्धन सब जिय जारिदिय, अग्निदत्त जिनेश्वर नाम लीय।
वर्तमानैरावत जिन जजों, जल फलादिक लै वसु विधि यजों॥
ॐ ह्रीं अग्निदत्तजिनाय अर्घं॥ २३॥

वीर वीर महा वर वीर है, वीरसेन सदा गुन धीर है।
वर्तमानैरावत जिन जजों, जल फलादिक लै वसु विधि यजों॥
ॐ ह्रीं वीरसेनजिनाय अर्घं॥ २४॥

जम्बूदीप ऐरावतक्षेत्र वखानियो, वर्तमानचोवीस जिनेश्वर जानियो।

पूरण अघ बनाय सु तुम पद पूजिये, दीजे निजपद ढाल दयाल
सु हू जये ॥ २५ पूर्णार्घं ।

अथ जयमाला ।

गीता छन्द ।

ये सकल नर अमरेन्द्र पूजित, चरन तारन तरन है ।
पद नमत भवि ये भक्ति युत, तिनको सदा सुखकरन है ॥
ये दीप जम्बु वर्तमान सु, क्षेत्र ऐरावत सदा ।
जिनकी कहों जयमाल नमि पद कमलमति माफिक मुदा ॥

चाल-त्रिभुवनस्वामीकी

चन्द्रानन स्वामीजी, शिवदायक नामीजी ।
फुनि बालचन्द्र शिवगामीको नमौंजी ॥
श्री सुव्रत जिनेश्वरजी, ये जग परमेश्वरजी ।
अकलंक सुरेश्वर, चरन नमौं भलेजी ॥
नमौं अग्निसेन पदजी, गत अष्ट महामदजी ।
हृदयाम्बुज मध्य चरन जिनके धरौंजी ॥
प्रभ नन्दसेनवरजी आनंद सुधाकरजी ।
श्रीदत्त जगत गुरुके चरन भजौंजी ॥
व्रतधारक नामीजी, ये शिव-सुखगामीजी ।
शिव वामापति सोमचन्द्र जिनको नमौंजी ॥
घृत दीरघ देवाजी, सुर करत सु सेवाजी ।
शत पुष्प कहे वा जिनपदको नमौंजी ॥
शिव मत शिवनायकजी, भविजन सुखदायकजी ।
मम होहु सहायक पाप, जिनेश्वरोजी ॥

श्रुतोदक वीराजी, जिनवज्र शरीराजी।
श्रुत समुद्र गमीरा, पार लह्यो जिनजी॥
श्रीसिद्धसेन जिनजी, गुण गावैं सुर तिनजी।
सिरनावैं उपशांत जिनेश चरनको हमजी॥
त्रय गुप्त नाम जसुजी, हम चरन नमे तसुजी।
वसु कर्म दहै जिन नाम जपे भलेजी॥
अनंत सु वीरजजी, जिन चरम शरीराजी।
हरन परपीरा भविजन सुखकारीजी॥
श्रीपारस नायकजी निज पार्श्वदायकजी।
ऐ अघ रिपुघायक देव जिनेश्वरोजी॥
श्रीपवनकुमाराजी, जिन जगत उवाराजी।
सुखकारा श्रीघरनाम जिनेश है जी॥
नमो श्यामकण्ठ जिनजी, वसु कर्म संठहणेजी।
वैकुण्ठ निवास करो जिनने सहीजी॥
अग्निप्रभ सूराजी करमगिरि चूराजी।
जिन शिवसुख पूरा सेवक जननकोजी॥
जयदत्त जिनेश्वरजी, हत मोह मतंगजजी।
जिनदत्त भवि जीवन निजपद सुखकारीजी॥
श्रीवीरस्वामि जिनजी, सुखधामि सदाशिवजी।
उर ध्यान धरै हम उनको सहीजी॥

घत्ता दोहा।

वर्तमान जिनराजकी, वरनी गुण जयमाला।
ऐरावत चौबीस जिन, सेवो चरन त्रिकाल॥

अथ प्रत्येक पूजा।

सुन्दरी छन्द।

तीर्थ सिद्धारथ जिन पूजिये, तुरत शिवरमनी पति हूजिये।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अरघ वसुविधि थार विषैं सजों॥
ॐ ह्रीं सिद्धारथजिनाय अर्घं॥ १॥

अमल गुन तन विमल जिनेश हैं, पूज्य पद नर सुर अमरेश हैं।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अरघ वसुविधि थार विषैं सजों॥
ॐ ह्रीं विमलजिनाय अर्घं॥ २॥

तीर्थंकर जयघोष सु गाइये, कर्म रिपु जय शिवपद पाइये।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अरघ वसुविधि थार विषैं सजों॥
ॐ ह्रीं जयघोषजिनेन्द्राय अर्घं॥ ३॥

नाम स्वमंगल जिन जानिये, स्वर्ग शिवपद दायक मानिये।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अरघ वसुविधि थार विषैं सजों॥
ॐ ह्रीं स्वमंगलजिनाय अर्घं॥ ४॥

नंदिघोष सु जिनवर नाम है, भव्यजन मन पूरन काम है।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अरघ वसुविधि थार विषैं सजों॥
ॐ ह्रीं नंदिघोष जिनाय अर्घ॥ ५॥

वज्रधर जिन चर्म शरीर है, कामगिरि तोरन वर वीर हैं।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अरघ वसुविधि थार विषैं सजों॥
ॐ ह्रीं वज्रधरजिनायअर्घं॥ ६॥

मोक्षमार्ग प्रकाशनकों सुरवि, नाम निर्वान सु जिन लहो फवि।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अरघ वसुविधि थार विषैं सजों॥

ॐ ह्रीं निर्वाणजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

धर्मध्वजजिननाम मनोग है, दया धर्म निरूपण जोग है।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥

ॐ ह्रीं धर्मध्वजजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥

सिद्धसेन सु जिन सुखकार है, सदा सिद्ध वधू भरतार है।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥

ॐ ह्रीं सिद्धसेनजिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

महासेन जिनेश्वर है सही, महाविधि रिपु सैना जिन दही।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥

ॐ ह्रीं महासेनजिनाय अर्घं ॥ १० ॥

भव्य कमल विकासन भान सम, नाम जिन मित्र सु ज्ञान गम।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥

ॐ ह्रीं रविमित्रजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

सत्यसेन जिनेश्वर जानियें, मुक्तिमारग सत्य वखानियै।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥

ॐ ह्रीं सत्यसेनजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥

चन्ददेव जिनेश्वर नाम है, चन्द्रमुख शोभित सुख धाम है।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

महाचन्द्र सु जिनको नाम है, ज्ञान सागर वर्द्धन काम है।
अनागत ऐरावत जिन यजों, अर्घ वसुविधि थार विषै सजों ॥

ॐ ह्रीं महाचन्द्राय अर्घं ॥ १४ ॥

श्री श्रुतांजन जिनवर गाइयो, भव्य मिथ्यतिमिर नसाइयो।
अनागत ऐरावत जिन यजो, अर्घ वसुविधि थार विषैं सजो॥
ॐ ह्रीं श्रुतांजनजिनाय अर्घं॥ १५॥

देवसेन सुसेना करमकी, घात कर लई बाट सु धर्मकी।
अनागत ऐरावत जिन यजो, अरघ वसुविधि थार विषैं सजो॥
ॐ ह्रीं देवसेनजिनाय अर्घं॥ १६॥

सुव्रतस्वामि जगत सुखधाम है, जपत नाम मिलति सब धाम है।
अनागत ऐरावत जिन यजो, अरघ वसुविधि थार विषैं सजो॥
ॐ ह्रीं सुव्रतजिनाय अर्घं॥ १७॥

श्री जिनेन्द्र जिनेश्वर देव है, करत सुरनर जिनपद सेव है।
अनागत ऐरावत जिन यजो, अरघ वसुविधि थार विषैं सजो॥
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवाय अर्घं॥ १८॥

नाम जिनको पारस सार है, पार्श्व सम भवि जन हितकार है।
अनागत ऐरावत जिन यजो, अरघ वसुविधि थार विषैं सजो॥
ॐ ह्रीं पार्श्वदेवाय अर्घं॥ १९॥

सकल विद्यागुनगन कोम है, सुकोशल:नाम निरोम है।
अनागत ऐरावत जिन यजो, अरघ वसुविधि थार विषैं सजो॥
ॐ ह्रीं सुकोशलजिनाय अर्घं॥ २०॥

जिन अनंत करन सख मोट है, भव्य शरन हरन जम चोट है।
अनागत ऐरावत जिन यजो, अरघ वसुविधि थार विषैं सजो॥
ॐ ह्रीं अनन्तजिनाय अर्घं॥ २१॥

विमलजन भविजन सुखदाय है, सार अगनित सुरगुन गाय है।
अनागत ऐरावत जिन यजो, अरघ वसुविधि थार विषैं सजो॥

ॐ ह्रीं विमलजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥

धर्म अमृत सिंचित भव्य वन, अमृतसेन जथारथ नाम मन।
अनागत ऐरावत जिन यजों, पूजों वसुविधि थार विषैं सजों ॥

ॐ ह्रीं अमृतसेनजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥

कर्म ईंधन सब जिन जारिदिय, अग्निदत्त सु जिनवर नाम लिय।
अनागत ऐरावत जिन यजों, पूजों वसुविधि थार विषैं सजों ॥

ॐ ह्रीं अग्निदत्तजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा।

ऐरावतके भावि जिन, मिति चउवीस बखानि।
पूजों पूरन अरघ करि, नमों जोर जुग पानि ॥

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

समवसरन लक्ष्मी लक्षित जिनराज ही,
शिवपद शुभ लक्ष्मी गत मध्य सुमाज ही।
विविध विविध लक्ष्मीवर श्री जिनवर भलै,
नमो तिनि चरन कर्म वसु जिन दलै ॥

चितयानी सेटीकी चाल।

जय २ प्रभु हो सिद्धारथ जिनराजजी।
ये राजत हो सकल संघ सिरताजजी,
जय विमल सु जिन नमौं चरन शिरनायके शिवमारगजी।
भविजन दियो है बतायकै, जय२ प्रभुजी सुघोमहा जिनवर भलै॥
जिन दुर्द्धर श्री मोह मतगज मत गले।
जय जय प्रभुजी सुरगल नाम बखानियो,

जिन तप करिजो कर्म महागिरि मानियो ॥

जय २ जिनजी नंदषेण जिन नाम है,

जिन केवलको रिद्धि लही सुख धाम है ॥

वज्रधरजो जिनवर नाम बताइयौ,

जिन गुणनको जो गणधर पार न पाइयो ।

जय प्रभजी श्री निर्शन जिनेशजी,

भविजन जिनजो दिय शिव मग उपदेशजी ॥

जय जय प्रभुजी नाम धर्मध्वज श्रुति लिखे,

वाधी जिनजी धर्मध्वज जगके विषै जिननाम जी ।

सिद्धसेन सुखकार है जयवंतेजो,

तिहु जग वर्तन हार है जय जय प्रभजी ॥

महासेन सुख देन है जग दर्पनजी,

अमृत सम जिन बैन है जय जय प्रभजो ।

नाम मित्र रविमार है जिन वचन सुचो,

मिथ्यातम क्षयकार है जय जय प्रभजी ॥

सत्यसेन जिन जानियो सुखकारनजी,

नाम जगत परमानियो ।

जय जय प्रभजो चन्द्रदेव जगचन्द्र है,

जिनके पदजी, पूजत इन्द्र धनेन्द्र है ॥

जय जय प्रभजी, महाचन्द्र जिन नाम है,

शुद्ध वर्द्धनजी, ज्ञानोदधि शिवधाम है ।

श्रुतांजनजी, नाम परम सुखधाम है,

जय भविजनजी, वांछित पूरन काम है ॥

जय जय प्रभजी, देवसेन जिनवर महा,
सुखकारनजी, जिनके नाम सुगुरु कहा।
सुव्रत जिनजी, नाम सुकोशल एन है,
जय जय प्रभजी, नाम अनंत बताइयो, जिन नाम सुजी ॥
सुर नर मुनिगण ध्याइयो विमलेश्वरजी,
नाम सु जिनवर ध्यामही सुरनर खगजी।
विमल विमल जसु नाम ही जय जय जिनजी,
अमृतसेन महाराज है जग तारनजी ॥
भविजन तारन काज है जिन नामसुजी,
अग्निदत्त हरि धारियो करमी घनजी
ध्यान अग्नि करि जारियो ॥

घत्ता दोहा।

जम्बू ऐरावत विषै, भावी जे जिनराय।
वंदत सुर नर पद कमल, नैन सदा बलि जाय।

गीता छन्द।

शुभ पंच कल्याणक विभूषत, इन्द्र पूजित वर नये।
प्रसफुरव पंचम बाचलोकित, लोकत्रय उद्धत नये ॥
पंचम मुकति गति करन स्वामी, पंचपद प्रापति भये।
ते होहु भव्यनको सदा, दुख हरन जिन चरनन नये ॥५४॥

इत्याशीर्वादः।

इतिश्री जम्बूद्वीप पूजा सम्पूर्णम्।

अथ धातुकी खण्ड द्वितीय मेरु पूजा

दोहा।

पंच परम पदको नमों, पंचमगति दातार।
पंचाचरन सुकरन नमौं, होहु मुक्ति करतार॥

अडिल्ल छन्द।

द्वितीय धातुकी खण्ड, मेरु जुग जह परे।
चतुरसीत योजन, उन्नत सोहत खरे॥
नागदन्त वसु कुलगिरि, द्वादश है सही।
वसु जुग सरिता औ, विभंगादिक जही॥
वर विदेह चतुःषष्ठि, रूपगिरि ए जहां।
चदु त्रिंसत द्विगुणी, संख्या जिन क्षाजही॥
तह जिन मंदिर जिन प्रतिमा, मुनिराज है।
तिन आह्वानन करत, सकल अघ भाजि है॥ ५६॥

ॐ ह्रीं द्वितीय धातुकी खण्ड द्वीप अनेक शोभा सहित श्री जिनालय जिन मुनिराज अत्रावतरावतर संवौषट्, अत्र ठः ठः वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक।

सुन्दरी छन्द।

सुर सरित जल शीतल लायके, हिम सु चन्दन सरस मिलायके।
द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं॥५७॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्व जिनेभ्यो जलम्।

मलय चन्दन केसर गारिके, नीर सम घनसार सुधारिके॥५८॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो चन्दनम्

श्याम जीर कमोद सुहावनो, लै अखण्ड सु अक्षत पावनो।
द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं।।५९।।

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो अक्षतम्।

वर गुलाब चमली लाइये, शुद्ध तन जिन चरण चढ़ाइये।
द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं।।६०।।

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो पुष्पम्।

शुद्ध घृत पकवान बनाइये, तुरत ताजे जिनहि चढ़ाइये।
द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं।।६१।।

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो नवेद्यम्।

दीप कँचनके मन मोहने, चतुरमुख प्रभु लख अति सोहने।
द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं।।६२।।

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो दीपम्

अगर चन्दन अरु कर्पूर लै, धूप दश विध खेवत अघ जलै।
द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं।।६३।।

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो धूपम्।

नारियल बादाम मंगाइये, सुवर श्रीफल जिन ढी चढ़ाइये।
द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं।।६४।।

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो फलम्।

जल फलादिक लै वसु विधि सही, यजों पद श्रीजिन गुनगुन मही।
द्वितीय धातुकी खण्ड जिनेश्वरं, पूजिये नुतपद अमरेश्वरं।।६५।।

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड विहरमान सर्वजिनेभ्यो अर्घं।

अथ धातुकी विजयमेरु सम्बन्धी अर्घ

विजयमेरुगिरि पूरब अपर विदेहके,
दक्षिण उत्तर भरतैरावत गेहके।
चारों दिशि चारों शिल न्हवन भयो जिनै,
जलफलादि वसुविधि करि हम पूजें तिनै ॥६६॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुगिरे चारिदिशि चारि सिंघासनोपरि जिन न्हवन संयुक्त पूरब अर दक्षिण उत्तरगत जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

अडिल्ल छन्द।

विजयमेरु पांडुकवन चारौं दिश विषै,
जिनमंदिर शोभे अति शाश्वत श्रुत लिखै।
तिनमें जिन प्रतिबिंब अकृत्रिम राजही,
तिन पद पूजो वसुविधि सब दुख भाजही ॥६७॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु पांडुकवनविषै चारिदिशि चारि चैत्यालय अकृत्रिम जिनेभ्यो अर्घं।

विजयमेरु गिरि वन सौमनस सु दूसरे,
चारौं दिशि चैत्यालय राजत है खरे।
तहां जिनप्रतिमा राजै तिनपद पूजिये,
अर्घ रचाय करि तन मन हर्षित हूजिये ॥६८॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु सौमनसवन चतुरदिशि स्थित जिनचैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो अर्घं।

विजयमेरु नन्दनवन चारों जानिये,
चारों दिशि चैत्यालय चारि प्रमानिये।
तिनमें राजे प्रतिमा वसु शत साजजू,
पूजो तिन पद होहि करम जरि छारजू। ६९॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु नन्दनवन चतुर्दिश चैत्यालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

विजयमेरु वन भद्रशाल चौथो भरो,
भूपर अधिक विराजे अति सुन्दर खरो।
चारों दिशि चैत्यालय चारि सुहावने,
पूजों चरण जु तुम्हे परम पद पावने॥ ७०॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु भद्रशालवन चतुर्दिश चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो अर्घं।

सोरठा।

विजयमेरु गजदन्त, चारों विदिशन सोहने।
तह जिन गृह सोमन्त, जिन पूजैं वसुविधि हने॥७१॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुके चारि विदिशा विषैं चारि गजदन्त तत्र जिनालय जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

विजयमेरु दुहु ओर दक्षिण उत्तर जानियै।
वृक्ष धातुकी जोर तिनपर जिनग्रह जिन पजौं॥ ७२॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु सम्बन्धी धातुकी वृक्ष युग जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

सुन्दरी छन्द।

दीप धातुकी पूरव विजयारुयगिरि,
जहं निकट निषधाचलके शिखर।
तहं जिनालय जिन प्रतिमा यजौ,
अर्घ वसुविधि थार विषैं सजौं॥ ७३॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु निकटवर्ती निषधाचल सिद्धायतन आदि कूट तत्र जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

निषिधि नील सु बीच परी भली,
भोग भू उत्कृष्ट सु सुख थली।
तहं जिनालय जिन मुनिराज पद,
पजते जु छूटे संसार गद॥ ७४॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु सम्बन्धी निषधनील मध्यगत उत्कृष्ट भोगभूमि तत्र जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

निषिद्धाचलगिरि पर ग्रह विषैं,
कंजदल वसु सहसको श्रुति लिखै।
धृति सुरी गृह तह जिन गृह परो,
पूजि जिनपद वसुविधि अघ हरो॥

ॐ ह्रीं निषिद्धोपरि तिगंछ द्रहविषैं कमलमध्य धृतिदेवी गृह जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

तिगिंछ द्रहसे निकसी है सही,
सरित युग मग सागर को लही।

कुत कांत सु सीता नाम जिन,

पुलिन गत जिनग्रह पूजौ सु तिन ॥ ७५ ॥

ॐ ह्रीं तिगिंछ द्रह निर्गता सु सेता कृष्णकांता तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महा हिमवन पर्वतके ऊपरि,

कूट राजै वसु जाके शिखिर।

तह जिनालय जिन प्रति पूजिये,

शुद्ध मन वच तन त्रिक हूजिये ॥ ७६ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवनोपर सिद्धकूटादि वसु कूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

महा हिमवन निषिध सु बीच ही,

मध्यमा भू भोग जहां कही।

तहां चरण सु सिद्ध मुनीशके,

पूजिये पद जुग जग शीसके ॥ ७७ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन निषिद्धबिच मध्यम भोगभूमि गत चारणर्द्धि मुनिभ्यो अर्घं।

महा हिम पद्म द्रहसे निकसि,

हरित रोहित सरित सु भूमि धसि।

युगम पुरमें मंदिर जैनके,

तहां जिनालय पूजि सु भायके ॥ ७८ ॥

ॐ ह्रीं महापद्म द्रहसे निकसी रोहित नदी हरित जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

महापद्म द्रह गत कंजवर ही,
सुगृह तहं जिन गेह पर।
अष्ट शत प्रतिमा तह शास्वती,
पूजिये वसुविधि करि जिन शुभमती ॥७९॥

ॐ ह्रीं महापद्मद्रह गत कमल मध्य ह्र ग्रह जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

महा हिमवत बीच सु जानिये,
भोगभूमि जघन्य बखानिये।
चारणार्द्धिक महा मुनिराज ही,
पूजि पद अघ छांडि सु भाजिके ॥ ८० ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवनहिमर्वो मध्ये जघन्य भोगभूमगत चारण-मुनिभ्यो अर्घं।

पद्म द्रहते त्रय सरिता वही,
सिंधु रोहित फुनि गंगा सही।
तासु तट जिन मंदिर राज ही,
यजो जिन प्रति दुख सब भाज ही ॥ ८१ ॥

ॐ ह्रीं हिमाचल निर्गत रोहित गंगा सिंधुतट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

अथ उत्तर धातुकी खण्ड अर्घ।

विजय मेरु उत्तर दिशिमें परो.
नील पर्वत कुलगिरि है खरो।
स्थूल उच्च द्विगुण ताका कहो,
यजो जिन प्रतिमा जिन सुख लहो॥ ८२ ॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु उत्तरदिशि नील कुलाचल नवकूट संयुक्त तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

नील निषिध सु बीचमें भोग सुत्र,
परी उत्तम आनि पवित्र सुत्र।
तह सु चारण मुनिपद पूजिये,
शुद्ध मन वच तन त्रय हूजिये॥

ॐ ह्रीं निषिध नील बीच उत्तम भोगभूमगत चारण-मुनिभ्यो अर्घं।

नीलगिरि ऊपर परमानिये,
द्रह तिगिंछ सु केसरि जानिये।
कीर्तिदेवीके गृह जिन सुवन,
पूजिये वसुविधि मन वचन तन॥ ८३ ॥

ॐ ह्रीं नीलगिरि तिगिंछ द्रहगत धृतदेवी ग्रह जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

केशरी द्रह निर्गत दो नदी,
नाम नारी सीतोदा वही।

तसु पुलिनगत जिनमन्दिर भलो,
यजो जिनन्द वसुविधि अघ दलो ॥ ८४ ॥

ॐ ह्रीं केशरी द्रह निर्गत नारी सरिता नदी, पूर्वापरसमुद्र-गामिनी तत्र जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

विजयमेरुत्तर दिशमें कह्यो,
रुक्मकुलगिरि नाम महा लह्यो।
कूट वसु जसु ऊपर सोहए,
यजो जिन प्रतिमा मन मोहए ॥ ८५ ॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुत्तर रुक्मगिरि अष्टकूट जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

नील रुक्मसु मध्य जहां परी,
भोगभूमि सु मध्यम है खरी।
चारणार्द्धि महामुनिराजके,
चरण पूजहु वसु द्रवि साजिकै ॥ ८६ ॥

ॐ ह्रीं नीलरुक्मयो मध्ये मध्यम भोगभूमि तत्र जिनालय-जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

रुक्म पर्वतपर द्रह जानिये,
पुंडरीक सु नाम बखानिये।
बुद्धिदेवी ग्रह बीच जिन भुवन,
पूजिये वसुविधि श्री जिन करि न्हवन। ८७॥

ॐ ह्रीं रुक्म पर्वत पुंडरीक द्रहगत बुद्धिदेवी ग्रह तत्र जिनालयजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं।

पुंडरीक द्रहसे निर्गत नदी,
सो जाय सागर बीच सुफदी।
सोरर्चन कूला नरकांता तथा,
तसु पुलिन गत जिन पूजौं यथा।८८॥

ॐ ह्रीं रुक्मिगिरि पुंडरीक द्रहसे निर्गत स्वर्णकूल नरकांता तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विजयमेरु सु उत्तर कुलाचल,
तीसरो कुल भूधर है।
सुभट कूट एकादश जिनग्रह यजौं,
जिन चरण वसु द्रव्य सुफल भजौं।८९॥

ॐ ह्रीं विजयमेरु शिखरि गिरि एकादश कूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

पुण्डरीक महा द्रह शिखर पर,
तहां लक्ष्मी देवीको सु घर।
श्री जिनालय कर मंडित भलौ,
पूजि वसुविधि भविजन अघ दलौ॥९०॥

ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि महापुण्डरीक द्रहगत लक्ष्मीदेवी गृह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अडिल्ल छन्द।

पुण्डरीक सैनिकमी त्रय सरिता भली,
भोगभूमि गत होय सु सागरको चली।
तासु पुलिन गत श्रीजिनमन्दिर पूजिये,
अष्ट द्रव्य लै तन मन हर्षित हूजिये॥९१॥

ॐ ह्रीं पुण्डरीक द्रह निगत रक्तकूला रक्ता रक्तोदातट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

रुक्म शिखिरविच भोगभूमि सु राजही,
नाम जघन्य आयुको सुनि दुख भाजही।
तह चारण मुनिके पद पूजन कीजिये,
वसुविधि अर्घ बनाय सु जसु जग लीजिये।९२॥

ॐ ह्रीं रुक्मशिखर मध्यगत जघन्य भोगभूम तत्र चारण-मुनिभ्यो अर्घं।

विजयमेरुते दक्षिण दिशमें जानिये,
भरतक्षेत्र विजयारध गिरपर मानिये।
नगर दशोत्तर शतश्रेणी द्वय जह लसै,
तह जिनभवन विषैं जिन पूजत अघ नसै।९३॥

ॐ ह्रीं धतुकी खण्ड विजयमेरु दक्षिण भरत विजयारध दशोत्तर शत नगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं

सोरठा।

विजयारध नवकूट, भरतक्षेत्र विच जो परे।
शिवपुरके सुख लूट, जिनमन्दिर जिन पूजिते॥ ९४ ॥

ॐ ह्रीं विजयार्द्ध नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अड़िल्ल छंद।

दीप धातुकी विजयमेरु उत्तर मही,
ऐरावत विजयारध राजत है सही।
नगर दशोत्तर शत जिनग्रह तह सुखकार है,
तह जिनमन्दिर पूजित जिन अघनार है॥९५॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड व अचलमेरु उत्तर ऐरावतक्षेत्र दश चत्वारिंशत जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

सोरठा।

विजयारध नवकूट, ऐरावतमें जानिये।
वसु कर्मनते छूट, पूजो जिनवर पद भले॥ ९६॥

ॐ ह्रीं ऐरावत विजयारध नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अडिल्ल छन्द।

दीप धातुकी पूर्व विजयगिर मेरु है।
दक्षिण उत्तर माह जिनालय जे रहै॥
शैल नदी द्रह क्षेत्र बीच जे जानिये।
पूरन अर्घ बनाय पूजि थुति ठानिये॥ ९७॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड द्वीप विजयमेरु दक्षिण उत्तर दिशा शैल द्रह क्षेत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जय केवल दिनकर जिन जगत प्रकाशियो।
भवि जीवनको मोह तिमिर सब नाशियो॥
चिदानन्द मय नमत पुरन्दर जिन मही।
तिन चरनन युग नमो विराजत सुख मही॥ ९८॥

पद्धड़ी छन्द।

जय जिन घाते घातिया चार, फुनि किय अघातियनको प्रहार।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, धातुकी विजयगिरि नमों तेह॥

जय चिदानन्दमय है सु छन्द, जगजीवनको आनन्द कन्द।
अष्टोत्तर शत लक्षण सु अंग, जिन तति लखि लाजत अनन्त ॥९९
ये कोटि सूर्य द्युति धरन धीर, सुर प्रातिहार्य वसु गुन गम्भीर।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह।८००
सुर नर धरणीधर पूज्य पाय, गणधर मुनिवर जिन नमन धाय।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह ॥१॥
विच पुनय क्षेत्र विहरत सदीव, भवि प्राणि घात गत जगत पीव।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह ॥२॥
सुर मोक्षादिक पद दान दक्ष, शुच ध्यान लीन शोभे अलक्ष।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह।३॥
ये अनन्त चतुष्टय करि संयुक्त, महाधीरय धर वसुकर्म मुक्त।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह ॥४॥
वसु गुणकरि मण्डित शोभमान, जयवन्तो वर्तो जग प्रधान।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यग्रेह, धातुकी विजयगिरि नमो तेह।५॥

घत्ता-अडिल्ल।

दीप धातुकी खण्ड जिनालय ये कहे,
　　विजयमेरुके उत्तर दक्षिणमें रहे।
तिन सबकी जयमाल सु भाषी गायके,
　　चरण कमल द्रग नमें सु मन हरषायके ॥ ६ ॥

इतिश्री विजयमेरु उत्तर दक्षिण भरत ऐरावत क्षेत्र कुलाचल पूजा संपूर्णम्।

अथ विदेहक्षेत्र पूजा।

दोहा।

पूर्व धातुकी मेरुते, पूर्व विदेह मझार।
षोड़श क्षेत्र जहां परे, सुरनर मुनि सुखकार॥ ७॥
स्वयं जात अर स्वयं प्रभु युग तीर्थंकर जानि।
आह्वानन तिनको करो, नमो जोर जुग पानी॥ ८॥

ॐ ह्रीं धातुकीखण्ड पूर्वविजयमेरु पूर्वविदेह षोडशक्षेत्र वर्तमान जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक।

चाल-सुगुण हम ध्यावे इनकी।

क्षीरोदधि प्रासुक य नीर लै, चरण प्रक्षालि करो भवि जय जय।
द्वीप धातुकी पूर्व विदेहा, विहरमान तीर्थंकर येहा॥
प्रथम सुजाति स्वयं प्रभु दूजो, मनवचतन करि जिनपद पूजो।
सुपद हम ध्यावे, जिन गुण गण मुनि पार न पावे॥

ॐ ह्रीं धातुकीखण्ड पूर्वविजयमेरु पूर्वविदेह संजात स्वयंप्रभ-जिनेभ्यो ~~अर्घ्यं~~ जन्म जरा मृत्यु वि० जलं नि० स्वाहा

चन्दन अगर कपूर मिलावो, केशर घसि जिन चरण चढ़ावो।
सुपद हम०॥ १०॥ ॐ ह्रीं चन्दनं॥
तन्दुल धवल अखण्ड पखारो, पुञ्ज चरण जिन आगे धारो।
सुपद हम०॥ ११॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥
प्रफुल्लित कुसुम सुवासित नीके, वरनवरन मन हरन सु जीके।
सुपद हम०॥ १२॥ ॐ ह्रीं पुष्पम्॥

घेवर बावर मोदन खाजे, कञ्चन थार भरो लै ताजे।
सुपद हम० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥
दीप रतन तमहरन अनूपम, आरति करत मिटो मिथ्यातम।
सुपद हम० ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥
अगर कपूर सु धूप दशंगी, खेर चरण ढिग पातक संगी।
सुपद हम० ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥
लौंग दाख बादाम सुपारी, चरण यजों जिन भरि भरि थारी।
सुपद हम० ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥
जल फल अर्घ बनाय थालमें, पूजहु पद धरि ध्यान सु मनमें।
दीप धातुकी पूर्व विदेहा, विरहमान तीर्थंकर येहा ॥
प्रथम सुजात स्वयंप्रभ दुजो, मन वच तन करि जिनपद पूजो।
सुपद हम ध्यावै, जिन गुण गण मुनि पार न पावै ॥ १७ ॥

प्रत्येक पूजा (विदेहकी)।

दोहा।

षोडश क्षेत्र सुहावने, सीतोदा तट सार।
दक्षिण उत्तरमें वहे, पूजो जिन सुखकार ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड पूर्वमेरु पूर्वविदेह पद्मादि षोडशक्षेत्र व षटखण्डमंडत तीर्थंकर चक्रवर्त्यादिकरिमण्डित तत्र विहरमान सुजात स्वयंप्रभ जिनेभ्यो अर्घं।

विजयारध षोडश तथा, परे क्षेत्र बिच जोय।
पुरीकूटपर जिनभवन, पूजें अघ क्षय होय ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं षोडशक्षेत्र सम्बन्धी षोडश विजयार्धगोपनेक चतुस्त्रिंशत् कूटैकपादस्त्र सप्तदशशतषष्ठाधिकनगर श्री जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

वक्षारा वसु जानियै, कूट सु नवयुत येह।
तिनपर जिनग्रह जिन यजो, उर धर परम सनेह ॥२१॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेह अष्टवक्षारगिर वनकूट तत्र जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

षोडश नदी सुहावनी, नाम विभंगा जासु।
तिन तट जिनग्रह जिन यजो, उर धर परम हुलासु ॥२२॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहक्षेत्र षोडश विभंगा नदीतट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाला।

अड़िल्ल छंद।

जै केवल दिनकर वर मोह तिमिर हर,
भव्य कमल परकाशन भासन जगधरं।
चिन्मय सुन्दर त्रिनत पुन्दर पद सदा,
जै जै जै कृत सुकृत नमें भवि सर्वदा ॥

पद्धड़ी छंद।

जे महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाशन सकल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, कीय चरण नमो हिय धरो ध्यान गिरि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसु सतवनु सहित एव। गि०

जय निराबाध स्त्रा स्तकाय, निरभंग अंग शोभे सुभाय ॥गिरि०
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत॥गिरि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद॥गिरि०
जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील॥गिरि०
जय सुरग मुक्तिपद दानदक्ष, शुभ ध्यानलीन नासाग्र अक्ष॥गिरि०
दर्शन अनंत फुनि ज्ञानवंत, सुख सर्म वीर्य जि को न अन्त॥गिरि०
वसुगुन रतननुके हैं भण्डार, जैवन्ते वर्तो जग मझार। गिरि०
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिंब नमो पदकमल तेह॥

घत्ता—दोहा।

जे जिनग्रह द्रव्य क्षेत्र गिरि, नदी तटादिक जानि।
तिन विच जिन प्रतिमा वरण, नमो जोरि जुगपानि॥

अडिल्ल छंद।

वसुद्रव्य करि जिनबिंब पूजा, मन वच तन चावसो।
नर सुरगके सुख भोगि करि फिरि, मुकति पुरघर जावसो॥
ताके सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये।
ते होहु तुमको सदा जयवन्ते, सु जिन गुण गाइये॥

इत्याशीर्वादः।

इतिश्री सिद्धकूट चैत्यालय ताकी जयमाल सम्पूर्णम्।

अथ धातुकी द्वीप पूर्वमेरु पश्चिम विदेह पूजा।

अड़िल्ल छंद।

पूर्व धातुकी मेरु अपूर्व सु जानियै,
षोडश क्षेत्र विदेह जहां परमानियै।
ऋषभानन्तमवीरज जिन युगराज ही,
आह्वानन तिन करौं दुरित दुख भाजही ॥३०॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड पूर्वमेरु पश्चिमविदेह षोडशक्षेत्र षट्खंड-मंडित वर्तमान जिनमात्र अत्र अवतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक।

चाल-होली धमारमें।

क्षीरपयोधि प्रमुख तीरथको, निरमल जल ले आवो।
कंचन कलश भराय गुन, श्री जिन चरण चढ़ावो॥
ऋषभानन्तम वीर्यके हो, पूजत सुरपति पाय।
भाव सहित तिन पूजयं तो, तुरत अखैपद पाय॥
हरष चित धारियै, करि पूजा वसुविधि सार।
सकल अघ टारियै ॥३१॥

ॐ ह्रीं धातुकी पूर्व मेरु पश्चिम विदेह ऋषभानन्तवीर्य्य-युगमतीर्थेभ्यो जलम्।

बावन चन्दन सरस वारि, घनसार मिलावौ।
दाह निकन्दन रतन कटोरीमें धरि ल्यावौ॥

ऋषभानन्तवीर्यके हो पूजन सुरपति पाय।
भाव सहित तिन पूजिये तो दाह दुरित मिट जाय॥
हरिष चित धारियै कर पूजा बहुविधि सार।
सकल अघ टारियै॥ ३२॥ ॐ ह्रीं चन्दनं॥०

श्याम जीर कामोद मोदयुत लै वासीकै।
सालि अखण्ड पखारि तुरत कूटे खासीके॥
ऋषभानन्तमवीर्यके हो पूजत सुरपति पाय।
भाव सहित तिन पूजिये तो पावै शिवसुख धाय॥
हरष चित धारिये॥ ३३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं० ॥

कनक रतनमय कुसुम कल्पतरुके लै खासी।
चम्पो अपन गुलाब केतकी सरस सुवासी॥
ऋषभानन्तमवीर्यके हो पूजत सुरपति पाय।
भाव सहित जिन पूजिये तो पावा शिव सुखदाय॥
हरष० ॥ ३४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं० ॥

विविध भांति पकवान तुरत गोघृत बनवावो।
कंचन थार भराय ल्याय जिनचरन चढावो। ऋषभा०॥ ३५॥
भाव सहित जिन पूजिये तो रोग क्षुधा न रहाय।
हरष० ॥ ३६॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं० ॥

कनक दीप मनि जडित रतनमय बाती धारो।
जगमग ज्योति उद्योत ल्याय जिनचरण उतारो॥
ऋषभा० ॥ ३७॥

भाव सहित जिन पूजिये तो मोह तिमिर मिट जाय ॥३८॥

॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥

कृष्णागर वर आदिक दश विध धूप सम्हारैं।
खेवत अगिनि सुगन्ध लुब्ध, अलिगन गुंजारैं ॥
ऋषभानंतम वीर्यके हो, पूजत सुरपति पाय।
भाव सहित जिन पूजियै, तों सकल करम जरि जाय ॥

हरष चित धारियै।

भवि नाचौ गाय बजाय, सकल अघ टारियै ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥

दाख छुहारे लौंग लायची, निंबू श्रीफल भारी।
पिस्ता किशमिश सेउ और, बादाम सुपारी ॥

ऋषभा० ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥

जल चंदन अक्षत प्रसुन, चरु दीप सम्हारो।
धूप फलादिक अर्घ टारि, फुनि फुनि उचारो ॥

ऋषभा० ॥ ४१॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥

सुन्दरी छन्द।

दीप धातुकी पूरब मेरुके भाग, पश्चिम जानि विदेह गे।
परे षोडश संख्या जिन कही, तह सु जिनवरपद पूजो सही ॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड पूरब विदेह परमाथि षोडश मंडत सदा तीर्थंकर चक्रवर्ती है विद्यमान जिनेभ्यो अर्घं।

रूपगिरि तह षोडश जानिये, कूट पुर युत सदा प्रमानिये।
तहां जिनालय जिनप्रतिमा यजो, अर्घ वसुविधि थार विषैं सजो ॥

ॐ ह्रीं षोडशक्षेत्र सम्बन्धी षोडश विजयारध शतकचतुः

रुचकगिरिशत्कूटके चहुं दिशा चतुष्पद नगर श्री जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

अष्ट वक्षार गिरि जहां परै, कूट नव संयुक्त लसै खरे।
तहं जिनालय जिनपद पूजिये, शुद्ध मनवचतन त्रय हूजिये॥
ॐ ह्रीं अष्टवक्षारगिरि द्विनव कूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

नदी द्वादश षोड़श क्षेत्र ही, है विभंगा नाम सु तिन सही।
तासु तट जिनमंदिर राजही, पजो जिनपद सब दुख भाजही।
ॐ ह्रीं द्वादश विभंगा नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जै केवल दिनकर वर मोह तिमिर हरं।
भव्य कमल परकाशन भाजन जगधरं॥
चिन्मय सुन्दर विनत पुरंदर पद सदा।
जै जै जै कृत सुकृतनमें भवि सर्वदा।

पद्धड़ी छंद।

जे महा घाति विध विघन चक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिन बीच नमौं पदकमल तेह॥
जय चिदानन्दमय सुधापान, कीय चरण नमो हिय धरो ध्यान। गि०
सुरनरमुनि गनि नित करत सेव, लक्षन वसु संत तनुमहित खेव॥ गि०
त्रिखंमर हलधर वंदि पाद, नृपगन भविजन मन करत याद। गि०
जय पुन्यक्षेत्र संतनशील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील॥ गि०

जय सुगम मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यानलीन नासाग्र अक्ष। गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, महा सुर्म वीर्य जिनका न अंत। गि०
वसुगुण रतननुके हैं भण्डार, जैवन्ते वातों जग मझार।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमों पदकमल तेह॥

घत्ता—दोहा।

जे जिनग्रह द्रह क्षेत्र, गिरि नदी तटादिक जानि।
तिन बिच जिन प्रतिमा चरण, नमो जोर जुग पान॥

गीता छन्द।

वसुद्रव्य करि जिनबिंब पूजो, मन वच तन चावसौं।
नर सुरनके सुख भोगि करि, फिरि मुकतपुर वर जावसौं॥
जाके सुफल करि तीर्थ कार, हरि प्रमुख पदवी पाईये।
ते होहु तुमको सदा, जयवन्ते सु जिनगुन गाईये॥

इत्याशीर्वादः।

इतिश्री विजयमेरु सम्बन्धी पश्चिमविदेह पूजा संपूर्णम।

धातुकी द्वीप पूर्वविदेह मेरु दक्षिणदिशऽ-तीत अनागत वर्तमान पूजा।

अडिल्ल छन्द

दीप धातुकी विजयमरु त जानिये,
दक्षिण भारत क्षेत्र सु प्रथम प्रमानिये।
तीतानागत वतमान जिनराज ये,
तिन आह्वानन करो सुधारण काज ये॥५३॥

ॐ ह्रीं धातुकी द्वीप पूर्वविदेहमेरु दक्षिणदिशि भरतक्षेत्र तीतानागत वर्तमान जिन अत्रावतरावतर संवौषट् ठः ठः वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं।

नन्दीश्वर श्रीजिनधाम इस चालमें।

कंचन मणिमय भृङ्गार, तीरथ नीर भरो।
करि प्रासुक निरमल सार, जिनपद अर्घ करो। ५४॥
धातुकी भरत पर मेरु, दक्षिण जिन पूजो।
तीतानागत जेर, सुर शिव सुख हजो॥ ५५॥

ॐ ह्रीं धातुकी पूरबमेरु दक्षिण भरत तीतानागत वर्तमान-जिनेभ्यो जलम्।

चन्दन मलियागिर लाय, केसरसम गारो।
जिनचरन यजो सुख पाय, भवदुख निरवारो॥

ॐ ह्रीं धातुकी पूरब मेरु दक्षिण भरत तीतानागत वर्तमान जिनेभ्यो चन्दनम्।

तन्दुल जल विमल पखारी, जिनपद पुंज धरो।
अक्षत मारग पग धार, पुण्य भण्डार भरो॥
धातुकी भरत पर मेर, दक्षिण जिन पूजो।
तीतानागत जेर, सुर शिवसुख हुजो॥ ५६॥

ॐ ह्रीं धातुकी पूरब मेरु दक्षिण भरत तीतानागत वर्तमान जिनेभ्यो अक्षतम्।

बहु प्रफुल्लित कुसुम, सु आनि वरण वरण कर।
नहि लगे कुसुम सर बान, पूजत जिन तेरे ॥ ५७ ॥

धातुकी० पू० ॥ ५७ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं० ॥

घृत पूरित बहु पकवान, तुरत बनाय करो।
जिन चरण पूजो जुग जानि, रोग क्षुधा जु हरो ॥

धातुकी भरत पर मेर, दक्षिण जिन पूजो।
तीतानागत जेर, सुर शिव सुख हूजो ॥ ५८ ॥

बहु दीप रतनमय ल्याय, थालो मांहि धरो।
करि आरत जिन गुण गाय, मिथ्या तिमिर हरो ॥

धातुकी० ॥ ५९ ॥ ॐ ह्रीं दीपं० ॥

लै अगर कपूर सुगन्ध, दशविध धूप करो।
सब कटैं कर्मको फन्द, खेवत जिन सु धरो ॥

धातुकी० ॥ ६० ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥

नारियल सदा फल खेव, श्री जिन चरण धरो।
तुम तुरत अखै पद लेहु, मन वच शुद्ध करो ॥

धातुकी० ॥ ६१ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥

जल फल लै वसु द्रव्य सार, जलसेती सयरो।
करि पूजा अष्ट प्रकार, नर भव सफल करो ॥
धातुकी भरत पर मेर, दक्षिण जिन पूजो।
तीतानागत जेर, सुर शिवसुख हूजो ॥ ६२ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥

अथ प्रत्येक पूजा

सोरठा।

जल फल अर्घ संयुक्त, करि रत्नप्रभ जिन धरो।
पूरव मेरु सु भूत, धातुकी भारत जिन यजों ॥ ६४ ॥
ॐ ह्रीं धातुकी पूरवमेरु भरतक्षेत्रगत रत्नप्रभाय अर्घं ॥ १ ॥

जल फल अरघ संयुक्त, करि जिन अमित सु नाथजी।
पूरव मेरु सु भूत, धातुकी भारत जिन यजों ॥ ६५ ॥
ॐ ह्रीं अमितनाथाय अर्घं ॥ २ ॥

जल फल अरघ संयुक्त, कर सम्भव जिनराजजी। पूरव० ॥
ॐ ह्रीं सम्भवजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

जल फल अरघ संयुक्त, कर अकलंक जिनेशजी। पूरव० ॥
ॐ ह्रीं अकलंकाय अर्घं ॥ ४ ॥

जल फल अरघ संयुक्त, करि सु चन्द्र जिनचन्द्रम। पूरव० ॥
ॐ ह्रीं सुचन्द्रजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

जल फल अरघ संयुक्त, करि सु शुभंकर नाम जिन। पूरव० ॥
ॐ ह्रीं शुभंकरजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

जल फल अरघ संयुक्त, करि सुतत्व ज्ञायक प्रभू पूरव० ॥
ॐ ह्रीं तत्वज्ञायकजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

जल फल अरघ संयुक्त, करि सुन्दर जिन नाम है। पूरव० ॥
ॐ ह्रीं सुन्दरजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥

जल फल अरघ संयुक्त, करि सुपुरन्दर नाम धर। पूरव० ॥
ह्रीं ॐ पुरंदरजिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि स्वामी प्रभवर प्रभू। पूरव० ॥

ॐ ह्रीं स्वामिप्रभाय अर्घं ॥ १० ॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि सु देवदत्त नामजी। पूरव० ॥

ॐ ह्रीं देवदत्तजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि जिन वासवदत्तजी। पूरव० ॥

ॐ ह्रीं वसुदत्तजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि श्रेयांस जिनवर भले। पूरव० ॥

ॐ ह्रीं श्रेयांसजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि विश्वरूप जिन शिव मही। पूरव० ॥

ॐ ह्रीं विश्वरूपजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि तप तेज जिनेशजी। पूरव० ॥

ॐ ह्रीं तपतेजजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि सिद्धारथ जिन भले। पूरव० ॥

ॐ ह्रीं सिद्धारथजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि प्रतिबोध सु नाम है। पूरव० ॥

ॐ ह्रीं प्रतिबोधजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि संजम जिनराजजी। पूरव० ॥

ॐ ह्रीं संजमजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥

जल फल अर्घ संयुक्त, करि देवेन्द्र सु नाम जिन। पूरव० ॥

ॐ ह्रीं देवेन्द्र जिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

जल फल अरघ संयुक्त, करिसु प्रवर जिनवर सही। पूरव० ॥
ॐ ह्रीं प्रवर जिनाय अर्घं ॥ २० ॥
जल फल अरघ संयुक्त, करि अमयप्रभ जिनवर यजो। पूरव० ॥
ॐ ह्रीं अमयप्रभ जिनाय अर्घं ॥ २१ ॥
जल फल अरघ संयुक्त, विश्वसेन जिनवर यजो। पूरव० ॥
ॐ ह्रीं विश्वसेन जिनाय अर्घं ॥ २२ ॥
जल फल अरघ संयुक्त, करि मेघनयन सुपद यजो। पूरव० ॥
ॐ ह्रीं मेघनयनाय अर्घं ॥ २३ ॥
जल फल अरघ संयुक्त, कार त्रिनेत्र जिनपद यजो। पूरव० ॥
ॐ ह्रीं त्रिनेत्रकाय अर्घं ॥ २४ ॥
जल फल अरघ संयुक्त, कर श्रीप्रभ जिनवर यजो। पूरव० ॥
ॐ ह्रीं श्रीप्रभजिनाय अर्घं ॥ २५ ॥

जीवन चंदन आदिदै लै वसुद्रव्य मनोग्य,
घातुकी भारत जिन यजो। पूरव० ॥
ॐ ह्रीं श्रीप्रभजिनाय अर्घं ॥ २६ ॥

जीवन चन्दन आदिदै लै वसुद्रव्य मनोग्य।
घातुकी भारत भूत जिन, यजो वरन शुभ योग्य ॥

अथ जयमाला।

गीता छन्द।

सुकर्म मुक्त विमुक्त भव थिति युक्त, पति पति ये सदा।
समवादि सरण विभूति मण्डित, गुन अखण्डित गत मुदा ॥
घातुकी पूरबमेरु भारत, भूत जिनवर राजही।
तिनकी कहो जयमाल भविजन, पढ़त सब दुख भाजही ॥८४॥

पद्धड़ी छन्द ।

जय जय तारन प्रभुजी महान, जय अमितनाथ जुत पूर्ण ज्ञान ।
सम्भव भव थिति मेटन सु भाव, अकलंक जिनेश्वर नमो पाय ॥
जिन है सुचन्द पुनि चन्द्र धार, शुभङ्कर जिनवर जग अधार ।
जय तत्त्व जाण नामा जिनेश, सुन्दर जिनवर काढो कलेश ॥
पुरन्दर स्वामी सु गतिदाय, जय स्वामिनाथ जिन नाम गाय ।
जय देवदत्त भवि मुक्त दूत, वासव जिन गुन युत अप्रमत्त ॥
अैथांप जिनेश्वर जग महेश, जय विश्वरूप थिति निज सुदेश ।
तप तेज जिनेश्वर नमो पाद, सिद्धारथ नाम सु करो पाद ॥
प्रतिबोध जिनेश्वर बोधदाय, संजम संजम व्रत धरन काय ।
अमल प्रभके गुण अमल जानि, देवेन्द्र नमो युग जोरि पानि ॥
जय प्रवरनाथ नुत अमरनाथ, विसुसेन नमो धरि शीश हाथ ।
जय मेघनंद नामा गणीश, सर्वज्ञ नाम ये जिन चौबीस ॥
तिन चरण कमल दृग दरस पाय, नमि २ करि पुनि बलि २ जाय ॥

घत्ता-दोहा ।

भारत भूत जिनेश जे, पूर्वधातुकी दीप ।
भावी तिन जयमालवर, राखो चरण समीप ॥ ८६ ॥

इति श्री धातुकी द्वीप पूर्व भरतभूत जिनपूजा सम्पूर्णम् ।

अथ वर्तमान पूजा ।

दोहा ।

जल फलादि करि पूजिये, श्री युगादि जिन पाय ।
पूरवमेरु सु धातुकी, भारत गत जिनराय ॥ ८७ ॥

ॐ ह्रीं पूरब धातुकी खण्ड भारतक्षेत्र गत श्री युगादि जिनाय अर्घं ॥ १ ॥

श्री सिद्धांत जिनेश पद, पूजौं वसुविध भाय ।
पूरवमेरु सु धातुकी, भारत गत जिनराय ॥ ८८ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धान्तजिनेशाय अर्घं ॥ २ ॥

महासेन जिन पूजिये, जल फल अर्घ बनाय । पूरव० ॥८९॥

ॐ ह्रीं महासेनजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

परमारथ जिन पुजिये, जल फल अर्घ सु लयाय । पुरव० ॥९०॥

ॐ ह्रीं परमारथजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

समुद्धरन जिनके चरन, पुजौं अर्घ बनाय । पुरव० ॥९१॥

ॐ ह्रीं समुद्धरनजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

भूदरनाथ जिनेशपद, यजौं अर्घ धरि भाय । पुरव० ॥९२॥

ॐ ह्रीं भूदरनाथजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

उद्योतक जिन चरण युग, पुजौं मन बच काय । पुरव० ॥९३॥

ॐ ह्रीं उद्योतजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

अजुन जिनपद पुजिये, जल गंधाक्षत लाय । पुरव० ॥९४॥

ॐ ह्रीं अर्जुनजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥

अभय जिनेश्वरपद यजौं, अर्घ द्रव्य वर पाय। पुरव० ॥
ॐ ह्रीं अभय जिनाय अर्घं ॥ ९ ॥
अप्रकम्प जिनराजपद, पूजौं जल फल ल्याय। पुरव० ॥
ॐ ह्रीं अप्रकम्प जिनाय अर्घं ॥ १० ॥
श्रीपद्मनाभ जिनेशपद, पूजौं द्रव्य सुभ भाय। पुरव० ॥
ॐ ह्रीं पद्मनाभि जिनाय अर्घं । ११ ॥
पद्मनन्दि जिनपद यजौं, अर्घ ल्याय गुण गाय। पुरव० ॥
ॐ ह्रीं पद्मनन्दि जिनाय अर्घं ॥ १२ ॥
नाम प्रियंकर जिन कह्यो, पूजौं वसुविधि ताहि। पुरव० ॥
ॐ ह्रीं प्रियंकर जिनाय अर्घं ॥ १३ ॥
श्री सुकृत जिनराजपद, पूजौं अर्घ बनाय। पुरव० ॥
ॐ ह्रीं सुकृत जिनाय अर्घं । १४ ॥
भद्रेश्वर जिनवर यजौं, अर्घ ल्याय गुण गाय। पुरव० ॥
ॐ ह्रीं भद्रेश्वर जिनाय अर्घं । १५ ॥
महाचन्द्र मुनिचन्द्र जिन, पूजौं शुद्ध सुभाय। पुरव० ॥
ॐ ह्रीं मुनिचन्द्र जिनाय अर्घं ॥ १६ ॥
पंचमुष्टि जिनराजपद, पूजौं हर्ष बढ़ाय। पुरव० ॥
ॐ ह्रीं पंचमुष्टि जिनाय अर्घं ॥ १७ ॥
जिन त्रिमुष्टके चरण युग, पूजौं अर्घ बनाय। पुरव० ॥
ॐ ह्रीं त्रिमुष्टि जिनाय अर्घं ॥ १८ ॥
गांगकनाथ जिनेशपद, यजौं द्रव्य वसु ल्याय। पुरव० ॥
ॐ ह्रीं गांगकजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

श्री गणनाथ नमों सदा, पुजों शुद्ध सुभाय। पुरव० ॥

ॐ ह्रीं गणनाथाय अर्घं ॥ २० ॥

श्रीसर्वांग सुदेवके, पूजों पद गुण गाय। पुरव० ॥

ॐ ह्रीं सर्वांगदेवाय अर्घं ॥ २१ ॥

इन्द्रदत्त जिन पुजिये, वसुविधि अरघ बनाय।
पुरवमेरु सु धातुकी, भारतगत जिनराय ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रदत्तजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥

ब्रह्मनाथ जिनवर भजों, पुजों जल फल ल्याय। पुरव० ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मनाथाय अर्घं ॥ २३ ॥

गणपति स्वामीके चरण, पुजों अरघ चढ़ाय। पुरव० ॥

ॐ ह्रीं गणपतिस्वामि जिनेभ्यो अर्घं ॥ २४ ॥

वर्तमान चौवीसके, चरण यजों सुखदाय।
धातुकी पुरव भरतके, पूरण अरघ बनाय ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं पूर्णार्घं ॥ २५ ॥

पुरव धातुकी भरतके, वर्तमान चउवीस।
तिन सबकी जयमाल शुभ, कहौं यानि धरि शीश ॥ ११

पद्धडी छन्द।

जय जय जुगादि जिनदेव सार, जय शुद्ध सुमतगत मद विकार।
महसेननाथ जगहित सुभाय, परमारथ जिन परमार्थ दाय ॥
जय समुद्धान जिनदेव देव, इन्द्रादिक सुरनर करत सेव।
जय जय जिन भूधर धर्म धरन, उद्योत जगत उद्यात करन ॥

जय अर्घत्र अर्घत्र धरमदाय, जिन अमय जिनेश्वर नमो पाय।
जय अप्रकम्प जिनराज सूर, पद्माभ चरनपद कांति भूर॥
जय पद्मनन्दि पद इन्द्र वंदि, असुरामर सेव करे अनंदि।
प्रिय करण प्रयंकर नाम जास, जय सुकृत जिन सुकृत निवास॥
भद्रेश्वर नाम जिनेश नाथ, भविजनको भद्र करण सुपाथ।
मुनिचन्द्र जगत गुरु है जिनेश, जय पंचमुष्टि जिन लुंचि केश॥
जय मुष्टि पुष्टि कृत धर्मवृक्ष, जय गांगिक जिन वशकरण अक्ष।
गणनाथ जिनेश्वर गुण गरीष, सर्वांग सर्वा भविजन सुप्रीय॥
जय इन्द्रदत्त पद नमैं इन्द्र, जय जय जिन नाम कह्यो व्रजेन्द्र।
गणपति फणपतिपद करत सेव, गणपति जिन नाम कह्यो सुएव॥

घत्ता। सोरठा।

यह जयमाल विशाल, वरनी मति माफिक सही।
नमो चरण सु त्रिकाल, धातुकी पूरब भरत जिन॥१३॥

इति धातुकी खण्ड पूर्वमेरु दक्षिण भरतक्षेत्र वर्तमान जिनपूजा सम्पूर्णम्।

अथ भावी जिन पूजा।

सुन्दरी छन्द।

सिद्धनाथ जिनेश्वर सिद्धकर, सिद्धरमनीपति भावै सुघर।
मेरु पूरब धातुकी भरत जिन, जल फलादिक लै पूजों सु तीन॥१४

ॐ ह्रीं धातुकी पूरब भरत भावी जिनसिद्धाय नमः अर्घं॥१॥

नाम जिनको है सम्यक्त धरं, भव्य सम्यकदायक पापहरं।
मेरु०॥१५॥ ॐ ह्रीं सम्यक्तजिनाय अर्घं॥२॥

नाम जिनको है सुजिनेन्द्रवर, जयनशील सदा वसु कर्महर।

मेरु० ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं जिनेन्द्रजिनाय अर्घं । ३ ।

सुमननाथ जिनेश्वर गाइयो, पूजि पद जिन शिवपद पाइयो।

मेरु० ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं सुमननाथाय अर्घं ॥ ४ ॥

सर्व स्वामी महासुख धाम है, भव्यजन मन पूरन काम है।

मेरु० ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं सर्वस्वामि जिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

नाथ मुनि जिन नाम कह्यो भलो, पूजि पद जुग मिलै सु शिव फलो।

मेरु० ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं मुनिनाथाय अर्घं ॥ ६ ॥

नाम जिन वसिष्ठ सु जानियो, सर्व सुखदायक परमानियो।

मेरु० ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं वशिष्ठनाथाय अर्घं ॥ ७ ॥

अमरनाथ जिनेश्वर नाम है, कर्महारी वरी शिव धाम है।

मेरु० ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अमरनाथाय अर्घं ॥ ८ ॥

ब्रह्म शांत जिनेश्वर जानिये, ब्रह्मवेत्ता जग परमानिये

मेरु० ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मशांतिजिनाय अर्घं । ९ ॥

पर्वनाथ जिनेश्वर जिन कहे, पर्व कर्त्ता जगमें उद्यमहे।

मेरु० ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घं ॥ १० ॥

अकामुक जिनको है नामवर, काम रहित लसै तन अति सुघर।

मेरु० ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं अकामुकजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

ध्याननाथ जिनेश्वर ध्यान धर, ध्यान करि जीते वसु कम अरि।

मेरु० ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं ध्यानजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥

कलपनाथ जिनेश्व नाम है, कल्पतरु सम पूरन काम है।

मेरु० ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं कल्पनाथाय नमः अर्घं ॥ १३ ॥

संवेश्वर नाम बताइयो, तिहुं जगमें जिन जग गाइयो।

मेरु० ॥ २७ ॥ ॐ ह्रो संवरजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

स्वस्थ नाम सु जिन जयकार है, भविजन तिहु जग आधार है।

मेरु० ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं स्वस्थजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

नाम आनन्द जिन परमानिये, दैन आनन्द जगत बखानिये।

मेरु० ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं आनन्दजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

तीर्थंकर रविप्रभ जिन नाम है, परम पुण्य सु गुणके धाम है।

मेरु० ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं रविप्रभजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

चन्द्रप्रभ जिनराज कहै भले, विगत करम सर्व अघ मल गले।

मेरु० ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥

नन्द नाम सु जिन सुखकार है, भव्यजन भव तारनहार है।

मेरु० ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं नन्दजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

है सु जिनको नाम सुकरम शुभ, लह्यो भव तजि अव्ययपद सु बुध।

मेरु० ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं सुकर्मजिनाय अर्घं ॥ २० ॥

नाम जासु सुकर्मक वीर है, पापनाशन गुण गम्भीर है।

मेरु० ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं सुकर्मकजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

अमम नाम सु जग गुण गाय है, करमनाश परम पद पाय है।

मेरु० ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अममजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥

नाम शाश्वत जिस सुखकार है, मुक्त रमणीके भरतार है।

मेरु० ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं शाश्वतजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥

पार्श्वनाथ स्वपारस दाय है, भव्यजनको शरण सहाय है।

मेरु० ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं ॥ २४ ॥

भवि भारत धातुकी, पूरव मेर जिनेश।
तिन पद पूरण करत भवि, अघको रहै न लेश ॥ ३८ ॥

पूर्णार्घं।

अथ जयमाला।

सोरठा।

धातुकी पूरव मेर, भरत भावि जिनराजये।
नमों चरन तिय बेर, जिन जयमाल बखानियै ॥ ३९ ॥

पद्धडी छन्द।

जय सिद्धनाथवर सिद्धदाय, असुरासुर खग नर नमत पाय।
सम्यक्त नाम जिन गुणनु धाम, जिनवर जिनेन्द्र पूरन सु काम।
जय ब्रह्म शांति जिन शांति करन, ध्यावत भविजन भवभीत हरन।
जिन शांति जिनेश्वर नाम पाय, तिन चरणनमें हम शीश नाय ॥
जग तारन है जिन सर्वं स्वामि, पद तिनके हम नित शरण जामि।
मुनिनाथ नाथ मुनिनाथ गाय, सुर असुर नाथ जिनमें न पाय ॥
वाशिष्ट नाम धारक जिनेश, जिन नमैं सुरासुर नर खगेश।
जिन अपरनाथ सुर नमत माथ, गणधर मुनिवर युग जोरि हाथ।
नाथनुके नाथ अनाथ नाथ, नमैं पर्वनाथको सर्वं माथ ॥
आकामुक नाम कह्यो जिनेश, जिनको अकामतन लसै वेश ॥
जय ध्याननाथ किय शिव सुवास, जिन शुक्लध्यान करि कर्म नाश।
जय कल्प जिनेश्वर गुण गम्भीर, कल्पद्रुम समदाता सुधीर ॥

जय संवर संवर किय सु भाय, सत्तावन संवर दिय बताय।
जय सुस्थ जिनेश्वर स्वस्थ जानि, जिन ज्ञान सुधीरस कियो पान॥
जय जय आनन्द सु नाम जासु, सुरनर मुनिगण धर नमैं तासु।
जय शुचिप्रभ नाम जिनेशदेव, ए कोटि भान द्युति धरन एव॥
जय चंद्र जिनेसुर नाम गाय, लखि द्युति जिन तन रवि शशि लजाय
जय जय श्रीनन्द जिनन्द वीर, आनन्द करण भव हरण पीर।
जिन नाम सु करन जिनेश जानि, ये तीन लोक धुनि सुनहि कान।
जिन नाम सु कर्म कह्यो विचारि, तीर्थंकर काम सु भोगकार॥
अमता मद गत जिन अमम नाम, शाश्वत जिन पूरन सर्व काम।
पारस प्रभ भनि निज पार्श्वराय, भावी चौबीस जिन नमो पाय॥४०

दोहा।

भावी जिन चौबीसकी, बरणी यह जयमाल।
पढ़ै सुनै जो कण्ठ धरि, पावै शिव दर हाल॥ ४१॥

गीता छन्द।

ये सर्व अतिशय युक्त पर, महालहाद कर पूरन खरे।
ये त्रिजगतपति पाद पूजित, शिव महल मग पग धरे॥
ये द्रव्य गुण नय अर्थ देषक, सुभग शिवत्रिय कन्त ते।
फुनि जय प्रताप सु जनक जिनवर, होहु जग जयवन्त ते॥४०॥

इत्याशीर्वादः।

इतिश्री धातुकी द्वीप पूरव भरतक्षेत्र पूजा संपूर्णम्।

अथ धातुकी द्वीप उत्तर ऐरावत क्षेत्र पूजा ।

अडिल्ल छन्द ।

धातुकी पूरव ऐरावत जानिये,
तीतानागत वर्तमान परमानिये ।
जिन चौवीस तीन भई जहां सार है,
आह्वानन तिन करो त्रिवार उचार है ॥

ॐ ह्रीं धातुकी द्वीप उत्तर ऐरावतक्षेत्र पूर्व विजयमेरु सम्बन्धी तत्र त्रिचतुर्विंशति जिन भूत भविष्यत वर्तमान अवतरावतर संवौषट् तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टकं ।

बसन्तधमालिरोकी–रागनी ।

सुरगंगाको नीर क्षीरसम, कञ्चन झारीमें भरो ।
प्रासुक परम पुनीत सरस लै, जिनवर पद पूजा करो ॥
प्रानी पूजो त्रय चौत्रय चौवीसकौं ॥
धातुकी पूरवमें ऐरावत, भूत भावि जिनपद यजो ।
मन वच काय लगाय गाय गुण, यातैं सुर शिवसुख भजो ॥
प्रानी पूजो त्रय चौत्रय चौवीसकौं । ४२॥

ॐ ह्रीं धातुको पूर्वमेरु उत्तर ऐरावत भीवीस्थित भूत-जिनेन्द्रेभ्यो जलम् ।

मलयागिरि चन्दन केसरिसम, करि कपूर मिश्रित वरो ।
शीतल जल सम सरस गारिके, रतन कटोरीमें धरो ॥

प्रानी० पूजो० ॥ ४३ ॥ धातुकी० ॥ ॐ ह्रीं चन्दनं ।

सालि सुगन्ध अखण्ड ल्याय करि, ताजे तन्दुल लै धरौं ।
थारी बीच प्रक्षालि सरल जल, जिनपद पंकज अनुसरौं ॥

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ।

जाय जु हीमच कुन्द केतुकी, कुसुम सुगन्ध मनोहरो ।
कनक रजत मय अर सुरतर कैं, ले कंचन थारी भरौं ॥

प्रानी० । धातुकी० ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ।

मोदक खाजे गूँझा ताजे, फेनी घेवर चरु धरो ।
विंजन नाना भांत ल्याय, पायस मिश्री सम घी खरौं ॥

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ।

जगमग ज्योति उद्योत दशों दिशि, दीप रतनमय ले धरौं ।
आरति करि जिन चरन कमल, गुण गाय गाय पायन परौं ॥

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ।

कृष्णागर कपूर लायची, लौंग सुगन्ध दशों धरौं
जिनपद आगै लेय अगन बिच, कर्म काट वसु विधि जरौं ॥

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ४८ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ।

चोचमोच नारंगी सदा फल, अफरसू तनमन हरौं ।
दाख छुहारे श्रीफारी, लौंग सुपारी लै खरौं ॥

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं फलं ।

जल फल अरघ बनाय गाय गुण, भक्तिभाव चित्तमें धरौं ।
जिनपद कमल नैन जु परसत, यातैं भवसागर तरौं ॥

प्रानी० ॥ धातुकी० ॥ ५० ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ।

अथ प्रत्येक पूजा।

सुन्दरी छन्द।

वज्र क्रांति जिनेश्वर जानियो, कर्म वसु भूधर जिन मानियो।
धातुकी पूर्व ऐरावत भजो भूत जल फल लै वसु विधि यजो॥५१॥

ह्रीं ॐ पूर्व धातुकी ऐरावत वज्रकांति जिनेश्वराय अर्घं॥१॥

उदयदत्त जिनेश्वर नाम है, उदयगिरि केवल रवि धाम है।

धातुकी०॥५२॥ ॐ ह्रीं उदयदत्ताय अर्घं॥२॥

सूर्यस्वामि जिनेश्वर नाम जिन, तीन लोक प्रकाशित ज्ञान तिह।

धातुकी०॥५३॥ ॐ ह्रीं सूर्यस्वामिने अर्घं॥३॥

नाम पुरुषोत्तम जिनको कह्यो, महापुरुषनु पूजित पद लह्यो।

धातुकी०॥५४॥ ॐ ह्रीं पुरुषोत्तमाय अर्घं॥४॥

शरन स्वामि जिनेश्वर नाम है, सरन आगत जन सुखधाम है।

धातुकी०॥५५॥ ॐ ह्रीं शरनस्वामिने अर्घं॥५॥

नाम अवबोधन जिनको परो, बहुत भव्यन सम्बोधन करो।

धातुकी०॥५६॥ ॐ ह्रीं अवबोधनजिनाय अर्घं॥६॥

विक्रमाख्य सु जिनवर जानिये, महाविक्रम धर परमानिये।

धातुकी०॥५७॥ ॐ ह्रीं विक्रमजिनाय अर्घं॥७॥

नाम निर्घंटक जिन सार है, विकट विधि वनजारन हार है।

धातुकी०॥५८॥ ॐ ह्रीं निर्घंटकजिनाय अर्घं॥८॥

हरिहरादिक करि सेवित चरण, नाम जासु हरिंद्र सु अघहरण।

धातुकी०॥५९॥ ॐ ह्रीं हरिंद्रजिनाय अर्घं॥९॥

प्रतीरित जिन नाम महासुधर, भव्य प्रतींद्र रित जिनधर्मवर।

धातुकी० ॥ ६० ॥ ॐ ह्रीं प्रतीन्द्रतजिनाय अर्घं ॥ १० ॥

नाम निर्वाग जिन भाइयो, भविनु शिवपुर मार्ग बताइयो।

धातुकी० । ६१ ॥ ॐ ह्रीं निर्वाणजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

चतुरमुख जिन नाम विशाल है, चार मुख चउदिश शोभा लहै।

धातुकी० ॥ ६२ ॥ ॐ ह्रीं चतुमुखजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥

धर्महेत जिनेश्वर देत शित, हरिहरादिक पद फुनि कल्पदिव।

धातुकी० ॥ ६३ ॥ ॐ ह्रीं धर्महेतजिनाय अर्घं । १३ ॥

शुक्रतेन्द्रशतेन्द्रनि करि सदा, नमित पद पंकज जिन सर्वदा।

धातुकी० । ६४ ॥ ॐ ह्रीं शुक्रतेन्द्रजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

श्रीश्रुताब्धि जिनेश्वर है सही, सुत समुद्र गुणागर सुम मही।

धातुकी० ॥ ६५ ॥ ॐ ह्रीं श्रुताब्दजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

विमलरवि जिनवर सुबखानिये, कोटि रवि द्युति धरन प्रमानिये।

धातुकी० ॥ ६६ ॥ ॐ ह्रीं विमलरवित्वाय अर्घं ॥ १६ ॥

धरन इन्द्र शतेन्द्र सु पूज्य पद, भव्यजननु हरो जिन जन्मगद।

धातुकी० । ६७ । ॐ ह्रीं धरणेन्द्राय अर्घं ॥ १७ ॥

भव्य पाथो निधिको तरनि सम, तीर्थनाथ सुपद पूजै सुहम।

धातुकी० ॥ ६८ ॥ ॐ ह्रीं तीर्थनाथाय अर्घं ॥ १८ ॥

देवप्रभ जिनराज बिराजही, देव सेव करत निज काज ही।

धातुकी० ॥ ६९ ॥ ॐ ह्रीं देवप्रभजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

तीर्थ सर्वार्थसिद्ध नाम जिन, धर्म तीर्थ प्रवर्त्तक नमो तिन।

धातुकी० ॥ ७० ॥ ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिजिनाय अर्घं ॥२०॥

जिन सु धार्मिक नाम बतायौ, धर्म धारण जग जसु गाइयौ।

धातुकी० ॥ ७१ ॥ ॐ ह्रीं धार्मिकाय अर्घं ॥ २१ ॥

क्षेत्र स्वामि जिनेश्वर नामवर, सिद्धक्षेत्र विषै जिन वासकर।

धातुकी० ॥ ७२ ॥ क्षेत्रस्वामिजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥

नाम जिन हरिचन्द्र सु गुरु कह्यो, चन्द्र सूरजकर पूजन लह्यो।

धातुकी० ॥ ७३ ॥ ॐ ह्रीं हरिचन्द्रजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥

दोहा।

ये जिनवर चौवीस, भनि धातुकी पूरव मेर।
ऐरावत वेतीस युग, पद वन्दौं तिन केर ॥ ७४ ॥

ॐ ह्रीं पूर्णार्घं।

अथ जयमाला।

भूत सु जिन चौवीसकी, वरनौं गुण जयमाल।
ऐरावत विच जानिये, वन्दौं चरण त्रिकाल ॥ ७५ ॥

पद्धड़ी छंद।

वज्र स्वामि तन वज्र धरत है, उदयदत्त जग उदय करन है।
सूर्य स्वामिवर बोध प्रकाशक, पुरुषोत्तम तत्वारथ भासक ॥
शरण जिनेश्वर अशरण शरणं, अवबोधन भवि बोध सु करणं।
विक्रमार्क महाविक्रम धारक, निर्घटक जग जीवनु तारक ॥
जिन हरिचंद्र विधि मृग सु हरिंद्र, नाम प्रतीरित कहत चिन्द्र।
निर्वाणक निर्वाण सु दायक, नाम चतुर्मुख तिहु जगनायक ॥
धर्म हेतु जिन धर्म धुरन्धर, दशविध धर्म कथन कर सुन्दर।
शुक्रतेन्द्र जिन सुकृत बढ़ावन, श्रुतांबुधि भवि पाप नसावन ॥

विमलादित्य नाम जिन गायो, धर निरन्धर निज सु छायो।
जिन सु तीर्थ तीर्थंकर स्वामी, सर्वाऽथसिद्ध तिहूँ जगनामी ॥
धार्मिक नाम धरम दश भाष्यो, क्षेत्र स्वामि आतमरस चाख्यो।
उदयदत्त जिन जगत उदय किय, श्रीहरिचन्द्र करम हरि शिवतिय ॥
नाम प्रतिरित जगत कीरति, धर्म हेत जिन दाय धर्म मति।
देव प्रभू देवनिके देवा, सुखद सकल करत जिन सेवा ॥

घत्ता-दोहा।

आरति तीन जिनेशकी, बरनी बुधि अनुसार।
तिनके युगपद कमलपद, कमल नैन बलिहार ॥ ७६ ॥

इति ऐरावत क्षेत्रातीत जिन पूजा सम्पूर्णम्।

सोरठा।

पूजों जल फल आनि, जासु अपश्चिम नाम है।
ऐरावत गत जानि, धातुकी पूरव मेरके ॥ ७७ ॥
ॐ ह्रीं अपश्चिमजिनाय अर्घं ॥ १ ॥

पूजों जल फल आनि, पुष्पदन्त जिनवर भले।
ऐरावत० ॥ ७८ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पदंतजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

पूजों जल फल आनि, नामरहंत जिनेशजी।
ऐरावत० ॥ ७९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंतजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

पूजों जल फल आनि, जिन सु चरित्र चरन युगे।
ऐरावत० ॥ ८० ॥ ॐ ह्रीं सुचारित्रजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

पूजों जल फल आनि, सिद्धनन्द जिनवर सही।
ऐरावत० ॥ ८१ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धनन्दिजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

पूजों जल फल आनि, नन्द नाम जिनेश्वर।
ऐरावत गत जानि, धातुकी पूरव मेरके ॥ ८२ ॥
ॐ ह्रीं नन्दननामजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

पूजों जल फल आनि, पद्म कूप जिन नाम है।
ऐरावत० ॥ ८३ ॥ ॐ ह्रीं पद्मकूपजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

पूजों जल फल आनि, उदयनंदि जिनवरनवर।
ऐरावत० ॥ ८४ ॥ ॐ ह्रीं उदयनंदिजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥

पूजों जल फल आनि, रुक्मदेव जिनवर भलौ।
ऐरावत० ॥ ८५ ॥ ॐ ह्रीं रुक्मदेवाय अर्घं ॥ ९ ॥

पूजों जल फल आनि, जिन कृपाल सुदयाल जग।
ऐरावत० ॥ ८६ ॥ ॐ ह्रीं कृपालजिनाय अर्घं ॥ १० ॥

पूजों जल फल आनि, प्रोष्ठिल जिनको नाम है।
ऐरावत० ॥ ८७ ॥ ॐ ह्रीं प्रोष्ठलजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

पूजों जल फल आनि, सिद्धेश्वर जिन जानिये।
ऐरावत० ॥ ८८ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धेश्वराय अर्घं ॥ १२ ॥

पूजों जल फल आनि, अमृतदेव जिनराजजी।
ऐरावत० ॥ ८९ ॥ ॐ ह्रीं अमृतदेवजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

पूजों जल फल आनि, स्वामि नाम जिनवर कह्यौ।
ऐरावत० ॥ ९० ॥ ॐ ह्रीं स्वामिजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

पूजों जल फल आनि, मोनिलिंगवर नाम जिन।
ऐरावत० ॥ ९१ ॥ ॐ ह्रीं मोनिलिंगस्वामिने अर्घं ॥ १५ ॥

पूजों जल फल आनि, सर्वारथ सिद्ध नाम है।
ऐरावत० ॥ ९२ ॥ ॐ ह्रीं सर्वारथसिद्धजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥
पूजों जल फल आनि, मेघनंदि जिनवर भले।
ऐरावत० ॥ ९३ ॥ ॐ ह्रीं मेघनंदिजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥
पूजों जल फल आनि, केशवनंदि जिनेशजी।
ऐरावत० ॥ ९४ ॥ ॐ ह्रीं केशवनंदिजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥
पूजों जल फल आनि, हरिहर नाम सु गाइये।
ऐरावत० ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं हरिहरजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥
पूजों जल फल आनि, शांति नाम जिनको भलो।
ऐरावत० ॥ ९६ ॥ ॐ ह्रीं शांतिनाथजिनाय अर्घं ॥ २० ॥
पूजों जल फल आनि, श्री आनन्द जिनन्द है।
ऐरावत० ॥ ९७ ॥ ॐ ह्रीं आनंदजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥
पूजों जल फल आनि, जिन अधिष्ठ नामा कहै।
ऐरावत० ॥ ९८ ॥ ॐ ह्रीं अधिष्ठिरजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥
पूजों जल फल आनि, कुण्ड पार्श्व जिनवर सही।
ऐरावत० ॥ ९९ ॥ ॐ ह्रीं कुण्डपार्श्वजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥
पूजों जल फल आनि, नाम विरोचन जिन पर्यो।
ऐरावत गत जानि, धातुकी पूरव मेरके ॥
ॐ ह्रीं विरोचनजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

वर्तमान चौबीस जिन, ऐरावत गत जानि।
धातुकी पूरव मेरके, पूजों जिन सुखकार ॥
वर्तमान चौबीस जिन, ऐरावत बिच सार।
धातुकी पूरव मेरके, पूजों जिन सुखकार ॥१०००॥

पूर्णार्घं।

अथ जयमाला।

पद्धड़ी छन्द।

जय जय सु अपश्चिम सुगुण धार, जय पुष्पदंत जिन दलित मार।
जय जय श्री जिन अरहंतदेव, सुर सेवित पद सु चरित्र एव॥
जय सिद्धि नंद जिनचरण वंदि, जय नंदन जिनपद वंदों अनंदि।
जय पद्म कूवर गुणन कूप, जय उदय नंदि शिव सिद्ध रूप॥
जय रुक्मदेव जिन नाम सार, जय नाम कृपाल सुदया धार।
जय प्रोष्टिल जिन जग नाम गाय, सिद्धेश्वर भविजन सुगतिदाय॥
जय अमृतदेव सुर करत सेव, स्वामी जिन जग स्वामी सु एव।
जय भवनि लिंग जीतो अनंग, सर्वांर्थ भाषित द्वादशांग॥
जय मेघनन्दि नामा जिनेश, जय जय श्री जिनवर नन्दि केश।
जय हरिहर हरिहर नमत पाय, जय शांति शांति करता बताय॥
आनंदि स्वामि पद शरणनामि, जय जय अधिष्ट पूरन सु कामि।
जय कुंडपार्श्व भविदिग सु पार्श्व, जिन नाम विरोचन नमो तासु॥१

घत्ता—दोहा।

जिन नाम सुमाला, सुगुण विशाला सो भवि निज कंठे धरई।
जो सुर धरि गावै, सुर पद पावै, वारिज द्रग शिवतिय वरई॥२॥

इतिश्री धातुकी पूर्वमेरु ऐरावत वर्तमान जिनपूजा सम्पूर्णम्।

अथ भावी जिन पूजा।

सुन्दरी छन्द।

वीर जिनवर महावीर है, विगत शोकहरन परपीर है।
धातुकी पूर्व ऐरावत यजों, जल फलादिक लै वसु विधि सजों ॥१॥
ॐ ह्रीं वीरजिनाय अर्घं ॥ १ ॥

विजय जिन विधि रिपु जय करन है,
ज्ञान धरन मिथ्यातम हरन है।
धातुकी० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं विजयजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

सत्य जिन सत्यारथ वानी जिन,
सत्य धरम प्रकाशक नमों तिन।
धातुकी० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं सत्यजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

महा मृगेन्द्र शतेन्द्र सु पूज्य पद,
पाइ कर नास्यौ जिन जन्म गद।
धातुकी० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं महामृगेन्द्रजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

नाम चिंतामणि जिनराजजी,
भवि अचिंत्य सुधारन काजजी।
धातुकी० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं चिन्तामणिजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

हैं अशोक विशोक महाप्रभू,
ध्यान रत स्वातम गत जिन स्वयंभू।
धातुकी० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अशोकजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

मृगेन्द्र जिनेन्द्र सु नाम है,
काम गज मर्दन निरकाम है।

धातुकी० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं मृगेन्द्रजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

नाम उपवासक जिन जानिये,
विधि उपासनकी सु वखानिये।

धातुकी० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं उपवासिकजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥

पद्म चन्द्र जिनेश्वर सार हैं,
चन्द्रमुख पद कुञ्ज द्युति धार है।

धातुकी० ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं पद्मचन्द्रजिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

जिन सुबोधक नाम बताइयौ,
व्याधि बंधन हरन सु गाइयौ।

धातुकी० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं बोधकजिनाय अर्घं ॥ १० ॥

नाम चिन्ता हिम जिनको कह्यौ,
करन काज अचित्य सु जग मह्यो।

धातुकी० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं चिताहिमजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

है जिनेश जु उत्साहक प्रभू,
भव्य मन उत्साहक करन विभू।

धातुकी० ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं उत्साहकजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥

जिन अपासिक नाम प्रमाण है,
दियौ भव्यन शिवपुर थान है।

धातुकी० ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं अपासिकजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

देव जल जिन नाम परयो भलौ,
काम मृगपति जिन करि दलमलौ।

धातुकी० ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं देवजलजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

अनारक सुखकर है सदा,
भव महोदधि तारक शिव प्रदा।

धातुकी० ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं अनारकजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

अनघ नाम जिनो उर ल्याइयौ,
अनघ पद तुरतै तिन पाइयो।

धातुकी० ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अनघजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

जानि जिन नागेन्द्र सु नामवर,
पन्नादिक सर्व विषाप हर।

धातुकी० ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं नागेन्द्राय अर्घं ॥ १७ ॥

नाम नीलोत्पल जिन चर मनो,
भव्य आनन्द करन सु है घनो।

धातुकी० ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं नीलोत्पलाय अर्घं ॥ १८ ॥

अप्रकम्प नाम सुधार है,
सर्व अमति विनाशन हार है।

धातुकी० ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अप्रकंपजिनाय नमः अर्घं ॥ १९ ॥

जिन पुरोहित नाम विचारियै,
तिन चरण पर तन मन वारियै।

धातुकी० ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं पुरोहितजिनाय अर्घं ॥ २० ॥

नाम जिन भिंदक गायौ सुगम,
करमगिरि भेदनकों वज्र सम।

धातुकी० ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं भिन्दभिन्दकजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

पार्श्व देव नमो पद तासु कै,
नमो सुरासुर पद जासके।

धातुकी० ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वदेवाय अर्घं ॥ २२ ॥

नाम निर्वाचक जिनको परो,
जिन सुपद तुम भवि हियरै धरो।

धातुकी० ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं निर्वाचकजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥

जिन विरोचिष नाम सुगुरु कही,
सदाशिव पुरराज करै सही।

धातुकी० ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं विरोचिषजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

ये जिनवर नागत, कहे ऐरावत परमान।

धातुकी० ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं जिनवरजिनाय अर्घं ॥ २५ ॥

अथ जयमाला।

सोरठा।

धातुकी पूरव मेरु, उत्तर ऐरावत विषैं।
वन्दौं पद तिनके, रनागत जिन चौबीसके ॥

चाल—इक बात सुनी है हो कि प्रभु तेरो अकथ कथाकी ढालमें।

जय वीर जिनेश्वर हो कि, वीर तु वीर महा।
श्री विजय स्वामि प्रभ हो कि, शिवपुर वास लहा ॥
जय सत्य जिनेश्वर हो कि, सत्य धरम भाखो
जय महा मृगेन्द्र सु हो कि, मदन गज हनि नाखो
चिंतामनि स्वामि हो कि, चिंता हरन सही
अशोक सोक कहत हो कि, जिनपद शरन लही ॥

द्वि मृगेन्द्र जिनेश्वर हो कि, करन मृग वस कीने।
उपासक स्वामी हो कि, शिव त्रिय रंग भीनैं॥
जय चन्द्रप्रभ हो कि, पद्म श्रिय धरन द्युति।
जय बोध केन्द्र प्रम हो कि, यजतपद सुरसुपति॥

चिंता हिम स्वामी हो कि, चिंता हरन खरे।
उत्साह जिनेश्वर हो कि, जगत उत्साह भरे॥
जिनको सु अपासित्र हो कि, नाम बताईयो।
जय देव देव जस हो कि, जगत जस गाईयो॥

अनारक स्वामी हो कि, जग सुख छांडि दियो।
स्वामी अनघ जिनेश्वर हो कि, शिवपुर वास कियो॥
नागेन्द्र जिनेश्वर हो कि, जगतपति पूज्य भए।
नील स्वल जिनवर हो कि, जगत जिनचरण नये॥

जय अप्रकंप जिन हो कि, नाम जगतारक है।
सु पुरोहित जिनवर हो कि, शिव-सुखकारक है॥
भिंदक जिन स्वामी हो कि, चरण उर धारिये।
जय पार्श्व जिनेश्वर हो कि, भवोदधि तारिये॥

निरवाच्य नाम जिन हो कि, परम सुखसागर है।
वीरोचित जिनवर हो कि, गुण रतनागर हो॥२०॥

घत्ता-दोहा

सकल गुनन संयुक्त ये, सुद्ध बुद्ध उर धार।
ऐरावत पर धातुकी, भावी जिन गुण गाय॥ २१॥

गीता छन्द।

वसु द्रव्य करि जिनबिंब पूजो, मन वचन तन चावसूं।
नर सुरनके सुख भोगि करि, फिरि मुक्तिपुर घर जा बसौ॥
जाके सुफल करि तीर्थङ्कर हरि, प्रमुख पदवी पाइयै।
से होहु तुमको सदा, जयवंते सु जिन गुण गाइयै॥

इत्याशीर्वादः।

अथ पश्चिम धातुकी अचलमेरु सम्बन्धी पूजा।

अडिल्ल छन्द।

द्वितीय धातुकी खंड, अचलगिरि है सही।
पश्चिम दिशमें जानि, जिनालय जिन कही॥
वन गजदंत ऐरावत, भरत विदेहको।
कुलगिरि भोगभूमि, आह्वानन करौ तिनको॥ ३२॥

ॐ ह्रीं धातुकीखंड अचलमेरु सम्बन्धी सर्व जिन मुनिराज अत्रावतरावतर संवौषट् तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं।

सागरमें प्रानी धातुकी द्वीप सुहावनो॥ टेक॥

रतन जटित कंचनकी झारी, सुरगंगा जल ल्याइयै।
आनि छानि प्रासुक करि या मन, श्रीचरण चढ़ाइयै॥

द्वितीय धातुकी खण्ड, सकल जिनमंदिर प्रतिमा पूजिये।
मेरु उत्तर दक्षिण, सुपरावरतन मन हरषित हूजियै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं द्वितीय धातुकी खण्ड सर्व जिनालयजिनेभ्यो जलम्।

गोसीरस घनसार, सु केसर एला लौंग मिलायकै।
गारि सरस धारि कटोरी, चरण यजो सुख भावकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं चन्दनं।

सालि सुगन्ध कमोद सुवासी, खांसी सरस कुटायकै।
ले अखण्ड जल विमल पखारो, जिनपद पूज चढ़ायकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं।

वरन वरनके कुसुम मनोहर, अन्तराल युत ल्यायकै।
अति सुगन्धवश अलिगण गुंजित, तन मन अति हरषायकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं।

ताजो गो घृत तुरत ल्यायकै, बहु पकवान बनायकै।
कंचन थार भराय भविक लै, श्री जिनमन्दिर जायकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं।

कंचन दीप थाल बिच धरिकै, चौमुख जोति जगायकै।
आरति करत मोह तम नासै, जिन चरणन ढिग आयकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीं दीपं।

अगर कपूर लवंग लायची, और सुगन्ध मिलायकै।
धूप दहन बिच खेउ भविक बहु, कर्मनु देह जलायकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं धूपं।

सुन्दर सुरस मधुर मन भावन, आम अमृत फल ल्यायकै।
द्रग मन हरन करन सुख नाना, अरु बहु थाल भरायकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं फलं।

जल चन्दन अक्षत कुसुमावलि, दीप धूप फल लायकै।
कंचन थाल बनाय अरघ भरि, अरचों मन हरषायकै॥
गुन० ॥ द्वितीय० ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं।

द्वितीय धातुकी खण्ड सकल, जिन प्रतिमा पूजिये।
मेरुत्तर दक्षिण सुपाय, रतन मन हरखत हूजिये॥
गुन गावों भक्ति बढ़ायकै, सुख पावों शिवपुर जायकै॥ ४२॥

ॐ ह्रीं द्वितीय धातुकी खण्ड जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

अड़िल्ल छंद।

तृतीय मेरु पांडुक वन शिला बखानिये,
पांडुक नाम चहु दिशि चारि प्रमानिये।
भरतैरावत और विदेहनके जहा,
न्हवन भयो जिनराज यजों तिन पद महा॥४१॥

ॐ ह्रीं तृतीयमेरु पांडुकवन चतुर्दिश चतुर्शिलोपरि जिनभवन-होत तत्र जिनेभ्यो अर्घं।

पांडुकवन चारौं दिश जिनमन्दिर परे,
पूरव दक्षिण उत्तर पश्चिममें खरे।
तिनमें अष्टोत्तर शत प्रतिमा सोहए,
पूजों चरन सरोज दर्श मन मोहए॥४२॥

ॐ ह्रीं अचलमेरु सम्बन्धी पांडुकवन चतुःचैत्यालयजिन-बिम्बेभ्यो अर्घं।

वन सौमनस दूसरो जन मन मोहनो,
चहुं दिशि चार जिनालय ताहू मैं गनो।
पूरववत अष्टोत्तर शत प्रतिमा भली,
पूजै पद सुरसुरी जहां करती रली ॥ ४३ ॥

ॐ ह्रीं तृतीय मेरु सौमनसवन चतुर्दिश चतुःचैत्यालय-जिनेभ्यो अर्घं।

तृतीय मेरु फुनि तृतीय विपनमैं राजही,
चारि जिनालय चहु दिशि सुन्दर छाजही।
तिनमैं बहु शत प्रतिमा चरन सु पूजियै,
जल फल अर्घ बनाय कृतारथ हूजियै ॥ ४४ ॥

ॐ ह्रीं तृतीय मेरु नंदनवन चतुःचैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं।

भद्रशाल बन चौथो भूपर जहां लसै,
चारि जिनालय चहुंदिशि जा मांही बसै।
अष्टोत्तर शत प्रतिमा इक इकमैं खरी,
पूजै सुरपति पाय सु नाचै सुरसुरी ॥ ४५ ॥

ॐ ह्रीं तृतीय मेरु भद्रशालवन चतुर्दिशि चतुःचैत्यालय जिनेभ्यो अर्घं।

धातुकी खण्ड अचलगिरि मेरु चहु दिशा,
यजौ चार जिनराज गेह भवि अहनिशा।

चारों गजदन्तनुपर चारि विराजही,
पूजौ पद खग सुरपति बाजन बाजही ॥४६॥

ॐ ह्रीं तृतीय मेरु चारि गजदंतऊपर चारि चैत्यालयजिन-बिम्बेभ्यो अर्घं।

जंबूवृक्ष धातुकी वृक्ष सुहावनौ,
अचलमेरु उत्तर दक्षिण मन भावनौ।
तह जिनमन्दिर शाखा अग्र दुइ विषैं,
पूजौं जिनवर प्रतिमा तिन (?) विषै ॥४७॥

ॐ ह्रीं जम्बू धातुकं वृक्षशाखाय जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ कुलाचल पूजा।

सुन्दरी छन्द।

कूट नव युत निषधाचल भलौ,
तह जिनालय जिन पूजन चलौ।
जल फलादिक लै भरि थारियै,
पूजि पद उर आनन्द धारियै ॥ ४८ ॥

ॐ ह्रीं निषिधाचल नवकूटसंयुक्त जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

निषिध नील सु बीच बखानियै,
भोगभूमि उत्कृष्ट सु जानियै।
तहां जिनालय जिन मुनि चरन युग,
पूजिये बहु विधि पावो सुगम ॥ ४९ ॥

ॐ ह्रीं निषिध नील बिच उत्कृष्ट भोगभूमि तत्र जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

निषिध ऊपर द्रह सुखधाम है,
जासु तिगंछ सु केशरि नाम है।
तहं जिनालय जिन पूजा करो,
द्रव्य वसु करि उर आनन्द भरो ॥ ५० ॥

ॐ ह्रीं निषद्धोपरि तिगंछ द्रह पद्म मध्य धृतिदेवी गृह-जिनालय जिनेभ्यो अर्घं

तिगंछ द्रह सेती सरिता युगम,
निकसि चली सागरको अगम।
कृष्ण कांता सीता नाम जिन,
पुलिन गत सुर ग्रह पूजों सु जिन ॥ ५१ ॥

ॐ ह्रीं तिगंछ द्रहसे निकसी कृष्णकांता सीता नदी तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महा हिमवन पर्वत दूसरो,
नाम कुलगिरि जाको शुभ परो।
कूट वसु युत जिनग्रह जिन यजो,
अर्घ वसु विधि थार विषैं सजौं ॥ ५२ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन अष्टकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महा हिमवन निषिद्ध सु मध्य थल।
भोगभूमि मध्यम शुभ जानि भल।
चारणर्द्धि सु मुनिपद पूजिये,
अर्घ करि सुर शिव-सुख भूजिये ॥ ५३ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवन निषिद्ध बीच मध्य भोगभमि गत चारणर्द्धि मुनिभ्यो अर्घं।

महाहिम महापद्म सु जानिये,
निकसी सरिता युग्म प्रमानिये।
नाम भाष्यो हरित सुरोहिता,
यजों जिनग्रह तट मन-मोहिता ॥ ५४ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवनतैं निकसी हरित रोहिता नदी पूरव पश्चिम समुद्रगामिनी तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

महाहिम महापद्म सु द्रह विषैं,
कमल मध्य हिरीग्रह सुत लिखे।
तहां जिनालय जिन पूजा करो,
जन्म जन्म सकल पातिक हरो ॥ ५५ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतपद्मद्रह गत ह्रीदेवी गृह तत्र जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

हिमाचल सु कुलाचल जिन कहा।
कूट नव युत जिनमन्दिर तहां।
यजों चरन जिनेश्वर सार जू,
जल फलादिक लै भरि थार जू ॥ ५६ ॥

ॐ ह्रीं हिमाचल कुलाचल नवकूट संयुक्ताय तत्र जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

हिमवतोपरि पद्म द्रह परो,
पद्म मध्य श्रीग्रह है खरो।
तह जिनालय जिन प्रतिमा भजों,
और भव कारज सब ही तजो ॥ ५७ ॥

ॐ ह्रीं हिमवत परि पद्म द्रह पद्ममध्य श्री मह जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

महा हैम हिमाचल मध्यवर,
भोगभूमि जघन्य वसै सुघर।
जह सु चारण मुनि जिनराज पद,
यजै छूटत है संसार गद। ५८ ॥

ॐ ह्रीं महाहिमवतो बीच जघन्य भोगभूमि तत्र जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

अडिल्ल छन्द।

पद्म द्रहसे निकसी सरिता त्रय सही,
गंगासिंधु सु रोहित श्री जिनवर कही।
तासु पुलिन गत सुर ग्रह जिन मंदिर परे,
पूजत पद जिनदेव सकल पातिक हरें ॥ ५९ ॥

ॐ ह्रीं हिमवत पद्मद्रहसे निकसी गंगासिन्धुरोहित नदी तट-वासो देव जिनपंक्त तरतर तिन मह जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

सुन्दरी छन्द।

मेरे उत्तर नील कुलाचलो, पूर्ववत रचना करि युत भलो।
तहां जिनालय कूट नव पूजतें, छूटते बहु कर्म सु मेटते ॥६०॥

ॐ ह्रीं मेरुत्तर नीलाचल पूर्ववत् रचना कर संयुक्त जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

निषिद्ध नील सु बीचमें जानिये, भोगभूमि उत्तम परमानिये।
चारणर्द्धि महामुनि पूजिये, चरण युग तन मन शुद्ध हूजिये। ६१

ॐ ह्रीं नील निषिद्ध बीच उत्तम भोगभूमि तत्र चारणर्द्धि-धारी मुनिजिनेभ्यो अर्घं।

नील पर्वत केशरी द्रह विषैं, पुण्डरीक सहस दल श्रुत लिखैं।
कीर्ति देवी ग्रह तहां राजही, तहां जिनालय जिन पूजो सही ॥६२

ॐ ह्रीं नीलाचलोपरि केशरी द्रह मध्य सहस्रदल कमल तत्र कीर्तिदेवी ग्रह जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

केशरी द्रहसे निकसी कदी, नाम सीता सीतोदा नदी।
पूर्व अपर समुद्र सुगामिनी, जिन यजो तिन तट सुरमामिनी ॥६३

ॐ ह्रीं केशरीद्रहस निकसी सीता सीतोदा नदी पूर्वापर समुद्रगामिनी तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

धातुकी सुअचल गिर मेरतैं, दिसि उदीची विच द्रग हेरते।
नाम रुक्म कुलाचल है खरो, कूट वसुयुत जिन पूजा करो। ६३

ॐ ह्रीं धातुकी द्वीप षटखण्डमण्डित पश्चिममेरु रुक्मीकुलाचलोपरि वसुकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अडिल्ल छन्द।

रुक्म नील विच भोगभूमि शुभ जानियै,
मध्यम जासु विचार हियेमें आनियै।
चारण मुनि जुग सार विहार करे जहां,
तिन चरणांबुज पूजि सरम लहिये महा ॥६५॥

ॐ ह्रीं नील रुक्म गिर बीच मध्य भोगभूमि तत्र चारण-मुनिभ्यो अर्घं।

रुक्माचल पर पुंडरीक द्रह सार है,
मध्य बुद्धिदेवी ग्रह बहु सुखकार है।
तह जिनमंदिर बीच चरण जिनवर भजो,
जल गन्धाक्षत लाय अरघ बहुविध सजो ॥६६॥

ॐ ह्रीं रुक्माचलोपरि पुण्डरीकद्रहगत बुद्धदेवीमह जिनालय-जिनेभ्यो अर्घ।

पुण्डरीकसे निकसि दोय सरिता चली,
पूरव पश्चिम जाय महासागर मिली।
नरकांता हिमकूला नाम सु जानियै,
तिनतट जिनग्रह यजो हरष उर आनियै।६७॥

ॐ ह्रीं पुण्डरीक द्रहसे निकसो नरकांता रूपकूला नदीतट-जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

अचलमेरतैं उत्तर शिखिरि कुलाचलो,
जानि तीसरो पर्वत राजत है भलो।
कूट सु एकादश चैत्यालै जानियै,
तह जिन पूजा करत कर्मगिरि मानियै ॥६८॥

ॐ ह्रीं शिखिरिपर्वतोपरि एकादशकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घ।

शिखिरि गिरी महा पुंडरीक द्रह और है,
तहां लक्ष्मीग्रह पुंडरीक बिच जोर है।
तहां जिनमंदिर प्रतिमा अर्चन कीजिये,
वसुविधि द्रव्य बनाय अरघ पुनि दीजिये।६९॥

ॐ ह्रीं महापुण्डरीक द्रह बीच पुण्डरीक मध्य लक्ष्मीमद्द तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

पुंडरीक द्रहसे निकसी सरिता चली,
आय मिली कालोदधि बीच महा भली।
रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा नाम हैं,
तिन तट सुर ग्रह यजो जहां जिनधाम हैं ॥७०॥

ॐ ह्रीं पुण्डरीक महाद्रहमे निकसी सुरूप्यकूला रक्ता रक्तोदा नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

रुक्म शिखिरपर भोगभूमि शुभ जानिये,
नाम जघन्य बखानि पूज तह ठानिये।
चारण मुनि महराज और जिनराजके,
चरण कमलकी जानि सुधर्म जिहाजके।७१॥

ॐ ह्रीं रुक्म शिखिर मध्य जघन्य भोगभूमि तत्र चारण-मुनि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

पश्चिम धातुकी मेरु अचल मन भावनो,
ताके दक्षिण दिश विजयारध पावनो।
भरतक्षेत्र गत जानिय जो जिनवर मही,
नवकूट नूपुर सार जिनालय जिन कही ॥७२॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड पश्चिम मेरु दक्षिण भरतक्षेत्र गत विजयारधोपरि नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

वैताड़ शिखिर विच युगम श्रेणि राजै खरी,
दक्षिण उत्तर जानि खगन करि जो भरी।

नगर दशोत्तर शत जिनमन्दिर जहं परे,

वसु विध अरघ बनाय तहां पूजा करे ॥७३॥

ॐ ह्रीं धातुकी दक्षिण विजयार्द्धोपरि दशोत्तरशत नगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

धातुकी मेरु अचलगिरतें उत्तर तथा,

नाम तारगिरि जान सार पूजो जथा।

नवकूटनपर जिनग्रह प्रतिमा जिन यजो,

अर्घ बनाय गाय गुण जिनचरणन भजो ॥७४॥

ॐ ह्रीं धातुकी अचलमेरु उत्तरऐरावतगत विजयार्धोपरि कूट नव जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

तार द्वारगिरि श्रेणीयुग परमानियै,

नगर दशोत्तर शत जिन पूजन ठानिये।

नाचो गाय बजाय हर्ष उर आनिये,

यातैं पूरव कर्म कुलाचल भानिये ॥७५॥

ॐ ह्रीं धातुकी उत्तर ऐरावत विजयारध दशोत्तरशत नगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।

दोहा।

धातुकी पश्चिम मेरुके, दक्षिण उत्तर जानि।

नदी शैल द्रहके विषैं, पूजो जिन गुण खानि ॥ ७६ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातुकीखण्ड अचलमेरु सम्बन्धी नदी शैल द्रह गत दक्षिण उत्तर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जै केवल दिनकर वर मोह तिमिर हरं,
भव्य कमल परकासन जग धरं।
चिन्मय सुन्दर विनत पुरन्दर पद सदा,
जै जै जै कृत सुकृत नमैं भवि सर्वदा॥

पद्धड़ी छंद।

जै महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सफल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पदकमल तेह॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चरण नमो हिय धरो ध्यान॥गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षन वसु मत तनु सहित एव॥गि०
जय निराबाध वज्रास्थिकाय, निरभंग अंग शोभे सुभाय॥गि०
जय मदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत। गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृगन भविजन मन करत पाद॥गि०
जय पुण्यक्षेत्र संचारशील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील॥गि०
जय सुरग मुकतपद दान दक्ष, शुभ ध्यानलीन नासाग्र अक्ष॥गि०
गिर दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, महाशर्म वीर्य जिनको न अंत॥गि०
वसुगुण रतननुके है भण्डार, जैवन्ते वरतो जग मझार।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पदकमल तेह॥

घत्ता—दोहा।

जे जिनग्रह द्रह क्षेत्र गिरि, नदी तटादिक जानि।
तिन बिच जिन प्रतिमाचरण, नमो जोरि युग पानि॥

दक्षिण उत्तर धातुकी, मेरु अचल गिरि केर।
जिनग्रह जिनवर पद जजो, होय पुण्यको ढेर ॥

गीता छन्द।

वसु द्रव्य करि जिन बिंब पूजो, मन वचन तन चावसो।
नर सुरगके सुख भोग करि, फिरि मुकतपुर घर जावसो ॥
जाके सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये।
ते होहु तुमको सदा जयवंते सु जिन गुण गाइयै ॥ ८४ ॥

इत्याशीर्वादः।

इति धातुकी अचलमेरु उत्तर दक्षिण कुलाचल विजयार्द्ध पूजा संपूर्णम।

अथ पश्चिम धातुकी खण्ड अचलमेरु सम्बन्धी पूर्व विदेह पूजा।

अडिल्ल छन्द।

धातुकी द्वीप अपर दिशि मेरु सुहावनो,
अचल नाम सुखधाम सुजन मन भावनो।
पूरव तासु विदेहक्षेत्र षोड़श परे,
तह जिनमंदिर जिन आह्वानन हम करे ॥८५॥

ॐ ह्रीं पश्चिम धातुकी खण्ड अचलमेरु सम्बन्धी पूरव विदेह जिन अत्रावतरावतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथाष्टकं।

कवित्त ।

कंचनकी झारी अति भारी रतन जड़ाय ।
क्षीरोदधि नीर ल्याय, तामें अति भरिये ॥
शीतल सुगन्ध डारि मिश्रित, करौ सम्हारी ।
जिन अग्र दीजे धार, त्रिषा रोग हरिये ॥
धातुकी ऊपर जानि, पूरव विदेह है थान ।
तहां भगवानके, चरन पूज करिये ॥
सुर प्रभ औ विशाल कीरति, सुनाम गाय ।
जुग जिनराय, अब मेरी आश भरिये ॥ ८६ ॥

ॐ ह्रीं धातुकी खण्ड पश्चिम मेरु पूरव विदेह विहरमान सूरप्रभ विशालकीरति जिनेभ्यो जलं ।

दाहको निकन्दन जा मलयागिर चन्दन ले ।
तामै केलि नन्दन मिलाय वारि धारिये ॥
केशरि सुगन्ध और कंचन कटोरी जोखी ।
सम घोर पद पूजै शिव वरिये ॥
धातुकी ऊपर जान पूरव, विदेह थान ।
तहं भगवानके, चरन पुजा करिये ॥
सुर औ प्रभु विशाल कीरति, सुनाम पाय ।
जुग जिनराय, अब मेरी आश भरिये ॥ ८७ ॥
धातुकी० ॥ ॐ ह्रीं चन्दनं ॥

कूटि ताजे तन्दुल अखण्ड सालि मंजुल ले भरि।
करि अंजुल सुथुति उचारिये ॥
पूजा जिनकी रचावे जब प्रभु गुन गावे।
जिन नाम ना विथारिये ॥
धातुकी० ॥ ८८ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥
केतुकी गुलाब और चमेली मौलसिरी ल्याय हिये।
धर चाव काहू सों ननैक हरिये ॥
शुद्ध होय न बजाय धौत वस्त्र पहिरि धाय।
अन्तरीक्ष च्युत ल्याय पूज काज सरिये ॥
धातुकी० ॥ ८९ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥
गुझा फेनी और घृत पूरन खुण्ड मिलैनो खण्ड।
सब सुख देनी श्रेणी कनक थार धरिये ॥
क्षुधाके हरनहारे गो घृतके सामौर।
द्रग सुख करन वारे ल्याय चरु धरिये ॥
धातुकी० ॥ ९० ॥ ॐ ह्रीं चरुं ॥
दीपक अमोल हेम रत्नके सु जोत बालि।
भाती चहुं ओर धालि धारि भारी तम हरिये ॥
मन्दिर ले जाय जिनजूके गुन गाय करि।
आरति सुभाय मिथ्या मोह तम टारिये ॥
धातुकी० ॥ ९१ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥
अगर कपूर और चन्दनको चूर जामे।
है सुगन्ध भूरि लोंग देवदारु दरिये ॥

खेवौ बीच धूपदान उठै धूप वान म्हान।
मानिनीको हरै मान कर्म काठ जरिये ॥
धातुकी० ॥ ९२ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥
श्रीफल बादाम लौंग पिस्ता जायफल भोग।
कारन सजोग औरहू सुवेलि फरिये ॥
किसमिस दाख केर नारंगी बिजौरे ढेर।
ल्याइये दगन हेरि आछे आछे धरिये ॥
धातुकी० ॥ ९३ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥
आदि लीन शुद्ध वारि गन्ध अक्षतैं सुधारि।
पुष्प चरु दीप जारि धूप फल धरिये ॥
अर्घ वसु विधि करि जिन गुणको उचारि।
नमि पद बार बार भवसिंधु तरिये ॥
धातुकी अपर जानि पूरव विदेह थान।
तहां भगवानूके चरन पूजा करिये ॥
स्वयंप्रभ औ विशाल कीरति सु नाम गाय।
जुग जिनराय अब मेरी आस भरिये ॥ ९४ ॥

इति अष्टकं

अथ प्रत्येक पूजा।

सुन्दरी छन्द।

धातुकी पश्चिमदिश जानियै, मेरु पूरव विदेह वखानियै।
पद्म आदिक षोडश क्षेत्र जहं, यजौ जिन मुनिराज चरण तहं ॥ ९५
ॐ ह्रीं धातुकीखण्ड पश्चिममेरु पूर्वविदेह पद्मादि षोडशक्षेत्र

षट्खंड मंडित तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि विहरमान श्रीजिनेभ्यो अर्घं।

तहं सु विजयारध षोडश परे, क्षेत्र षोडश बिच जानों खरे।
कूटपुर बिच जिनग्रह जिन यजो, अर्घ वसुविधि करि शिवसुख भजो॥

ॐ ह्रीं षोडशक्षेत्र मध्ये विजयारधगिर नतिक चत्वारिंश-त्रिकूटे ... पट.परिनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

है सुवक्षारगिरि वसु जहां, कूट नवयुत सोहत है महा।
तहां जिनालय जिनप्रति पूजिये, मन वचन तन शुद्ध सु हूजिये॥९७

ॐ ह्रीं वसु वक्षारगिरि द्वि३म तकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

विभंगा द्वादश सरिता जहां, क्षेत्र सीम विभाग करन महा।
अकृत्रिम जिनमंदिर राजही, यजों जिनपद सब दुख भाजही॥९८

ॐ ह्रीं द्वादश विभंगा नदी तत् तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जै केवल दिनकर वर, मोह तिमिर हरं।
भव्य कमल परकाशन, भासन जगधरं॥
चिन्मय सुन्दर विनत, पुंदर पद सदा।
जै जै जै कृत सुकृत, नमैं भवि सर्वदा॥

पद्धड़ी छंद।

जै महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिंब नमों पद कमल तेह॥
जय चिदानंदमय सुधापान, कीय चरन नमो हिय धरो ध्यान॥गि०
सुरनर मुनि नित हैं करत सेव, लक्षण वसु शत तनु सहित एव॥गि०

जय निराबाध वज्रास्थि काय, निरभंग अंग शोभे सुभाय ॥गि०॥
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत ॥गि०॥
विश्वम्भर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद। गि०
जय पुण्य क्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील ॥गि०
जय सुरग मुकति पद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नासाग्र अक्ष॥गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, मह सुर्ख्य वीर्य जिनको न अंत ॥गि०
वसु गुण रतननुके हैं भण्डार, जैवंते वरतो जग मझार।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह ॥

घत्ता-दोहा।

जे जिनग्रह द्रह क्षेत्र गिरि नदी तटादिक जानि।
तिन बिच जिन प्रतिमा चरण नमो जोरी जुग पानि ॥
यह जयमाल विशाल वर, वरनी बुद्धि अनुसार।
धातुकी अपर विदेहके, हूजे जिन सु दयाल ॥ ५ ॥

गीता छन्द।

वसु द्रव्य करि जिनबिंब पूजो, मन वचन तन चावसों।
नर सुरगके सुख भोगि कारे फिरि, मुकतिपुर घर जावसो ॥
जाके सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये।
ते होहु तुमको सदा जयवंते सुजिन गुण गाइये ॥

इत्याशीर्वादः।

इति धातुकी पश्चिममेरु पूरव विदेह जिनपूजा सम्पूर्ण।

अथ पश्चिम धातुकी अचलमेरु संबंधी पश्चिम विदेह पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

धातुकी पश्चिम मेरु अचलगिरि जानिये,
तिम पश्चिमदिश क्षेत्र विदेह प्रमानिये ।
षोडश मिति जिनमन्दिर जिनप्रतिमा जजौं,
आह्वानन तिन करो त्रिविध जिनपद जजौं । ६॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिमेरु सम्बन्धी पश्चिम विदेह षोडश क्षेत्र स्थित जिनालय अत्रावतरावतर अत्रागच्छागच्छ तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टकं ।

छन्द चाल ।

कंचनमय भृङ्गार सु लै करि, सुरी नीर महा प्रासुक भरि ।
अपर विदेह यजौं पद जिनवर, चन्द्राननश्री और वज्रधर ॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिमविदेह षोडशक्षेत्र सम्बन्धी चन्द्रानन वज्रधर जुग जिनेन्द्रेभ्यो जलं ।

चन्दन घिसि मलियागिरि ल्यावो, केसर सरस कपूर मिलावो ।
अपर० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं चन्दनं ॥

सालि प्रक्षालि सरस शशि कर सम, पुंज धरो जिनचरण सुतजि भ्रम ।
अपर० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥

कुसुम मनोहर सुरतरुकेरे, शुभ सुगन्धमय ल्याय घनेरे।
अपरा० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥
घेवर बावर मोदक खाजे, फेनी गुंजा लै बहु ताजे।
अपरा० ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥
दीपक जगमग ज्योति सुहाती, हेम थार बिच धरि तमघाती।
अपरा० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥
अगर कपूर सुगन्ध दसों धरि, खेवत ही वसु कर्म जाहि जरि।
अपरा० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥
लौंग लायची श्रीफल भारी, पिस्ता किसमिस लै भरि थारी।
अपरा० ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥
जल चन्दन अक्षत सु पुष्पवर, दीप धूप फल अर्घ सुभग कर।
अपर विदेह यजौ पद जिनवर, चन्द्रानन श्री अवर वज्र धर ॥
अपरा० ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

दोहा।

पद्मादिक षोडश परे, क्षेत्र विदेह सु सार।
सीतोदा तट उभय दिशि, पूजौ जिन सुखकार ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिममेरु पश्चिम विदेह षोडश क्षेत्र षट्खंड-मंडित तीर्थंकरचक्रवर्त्यादिसहित तत्र वर्तमानजिनेभ्यो अर्घं।

तारागिरि षोडश तहां, षोडश क्षेत्र जु मध्य।
कूटनगर जिनवर यजौ, द्रव्य ल्याय वसु सद्य ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं षोडशक्षेत्र षोडश विजयार्ध शतैक पर्दशादिकूटैक सहस्र सप्तशतषष्ठोपरनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

वसु बक्षार सुगिरि जहां, क्षेत्र भाग कृतं सानु।
नवनवयुत जिनग्रह यजों, अकृत्रितम जिन प्रतिमानु॥१९॥

ॐ ह्रीं वसुवक्षारगिर द्वि सप्ति कूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

द्वादश नदी विभाग कर, नाम विभंगा जानि।
तासु पुलिन जिनग्रह यजों, बहुविधि जिन सुखखानि॥२०॥

ॐ ह्रीं विभंगा नदी द्वादश जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जै केवल दिनकर वर मोह तिमिर हरं,
भव्य कमल परकाशन भासन जगधरं।
चिन्मय सुन्दर विनत पुंदर पद सदा,
जै जै जै कृत सुकृत नमैं भवि सर्वदा॥

पद्धड़ी छन्द।

जै महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पदकमल तेह॥
जय चिदानंदमय सुधापान, कीय चरन नमो हिय धरो ध्यान॥गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षन वसु शततनु सहित एव॥गि०
जय निराबाध वज्रास्थि काय, निरभंग अंग शोभे सुभाय॥गि०
जय सदा कोटि रवि धुति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत॥गि०
विश्वंभर हलधर वंदिपाद, नृगण भविजन मन करत याद॥गि०

जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील ॥गि०
जय सुरग मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नाशाग्र अक्ष ॥गि०
दरशन अनंत पुनि ज्ञानवंत, महसर्ब वीर्य जिनको न अंत ॥गि०
बहु गुण रतननुके है भण्डार, जैवन्ते वरतो जगमझार ॥गि०

घत्ता—दोहा।

जे जिन ग्रह द्रह क्षेत्र, गिरि नदी तटादिक जानि।
तिन बिच जिनप्रतिमा चरन, नमो जोरि युग पानि॥
वरनी श्री जिनगेहकी, यह जयमाल विशाल।
धातुकी अपर विदेहकी, नमो चरण तिहु काल॥

गीता छन्द।

वसु द्रव्य करि जिनबिंब पूजों, मन वचन तन भावसों।
नर सुरगके सुख भोगि करि फिरि, मुकति पुर वर जावसों॥
जाके सुफल कर तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये।
ते होहु तुमको सदा जयवन्ते, सु जिन गुण गाइये॥१॥

इत्याशीर्वादः।

इतिश्री धातुकी अपर मेरु अपर विदेह पूजा संपूर्णम्।

अथ धातुकी पश्चिममेरु भरतक्षेत्र पूजा।

अडिल्ल छन्द।

धातुकी भरत क्षेत्र अपर दिशि जानिये।
अचलमेरुके दक्षिण भाग वखानिये॥
तीतानागत वर्तमान जिनवर सही।
तिन आह्वानन करो त्रिविधि करि जिन कही॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिममेरु सम्बन्धी भरतक्षेत्रगत तीतानागत वर्तमान जिन अत्रावतरावतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक।

ढाल चांवलोकी-स्यामल सांभल रे,

जीव जिनवरके वचन सुहावने इह चालमें।

पूजैं जिनवर केर, चरण सु प्राशुक जल भरि ल्यायके जी।
धातुकी पश्चिममेर, भारत तीता नागत गत भले जी॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिममेरु भरतक्षेत्र गत तीता नागत जिनेभ्यो जलम्।

पूजो जिनवरके चरण, सु बावन चंदन ल्यायके जी।
धातुकी पश्चिम मेर, भारत तीता नागत भले जी॥

ॐ ह्रीं चन्दनं॥

पूजो जिनवरकेर चर्न, सु तंदुल विमल पखारिके जी।
धातुकी०॥ ३॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥

पूजो जिनवरकेर चर्न, कुसुम मनोहर ल्यायकेजी।
धातुकी० ॥ ४॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥

पूजो जिनवरकेर चर्न, सु चरुवर थार भरायके।
धातुकी० ॥ ५॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥

पूजो जिनवरकेर चर्न, सु दीपक रतन जरायके।
धातुकी० ॥ ६॥ ॐ ह्रीं दीपं॥

पूजो जिनवरकेर चर्न, सु गन्ध मगायके जी।
धातुकी० ॥ ७॥ ॐ ह्रीं धूपं॥

पूजों जिनवरकेर चर्न, सुफासू फल मल ल्यायकेजी।
धातुकी० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥

पूजों जिनवरकेर चर्न, सु जल अरघ बनायकेजी।
धातुकी० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्घं ॥

अथ प्रत्येक पूजा।

सोरठा।

जल फल ल्याय, वृषभ जिनेश्वर पद यजों।
पश्चिम धातुकी सार, भारत तीत जिनेशजी ॥
ॐ ह्रीं वृषभजिनाय अर्घं ॥ १ ॥

जल फल ल्याय अपार, प्रिय सुमित्र जिन नाम है।
पश्चिम० ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं प्रियमित्राय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, शांतिप्रभू जिनपद यजों।
पश्चिम० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं शांतिजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, सुमति जिनेश्वर पूजिये।
पश्चिम० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं सुमतिजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, आदिनाथ पद पूजिये।
पश्चिम० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं आदिनाथाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, अतिव्यक्तक जिन नाम है।
पश्चिम० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अतिव्यक्तिजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, कालसन जिनवर जजों।
पश्चिम० ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं कालसंनजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, कर्म जिनेश्वर नाम है।
पश्चिम० ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं कर्मजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, जिनप्रबुद्ध युगपद जजों।
पश्चिम० ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं प्रबुद्धजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, वप्र जिनेश्वर पूजिये।
पश्चिम० ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं वप्रजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, जिन सौधर्म सु गाइयो।
पश्चिम० ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं धर्मजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, तमोदीप जिन नाम है।
पश्चिम० ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं तमोदीपजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, वज्र स्वामि जिनवन यजों।
पश्चिम० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं वज्रस्वामिने अर्घं ॥

जल फल ल्याल अपार, जिन प्रबुद्ध जुगपद यजों।
पश्चिम० ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं प्रबुद्धजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, श्री प्रबंध जिनवर यजों।
पश्चिम० ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं प्रबन्धस्वामिने अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, जिन अतीत युगपद यजों।
पश्चिम० ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अतीतजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, सुमुख नाम जिनवर यजों।
पश्चिम० ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं सुमुखजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, जिन पल्योपम पूजिये।
पश्चिम० ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं पल्योपमजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, पद अकोप जिनके यजों।

पश्चिम० ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं अकोपजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, निरत नाम जिये पूजिये।

पश्चिम० ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं निरतजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, मृग द्रग पद पूजों सही।

पश्चिम० ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं मृगनयनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, श्री पदस्थ जिनवर यजों।

पश्चिम० ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं पदस्थजिनाय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, देव देवेन्द्र चरण यजों।

पश्चिम० ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं देवदेवेन्द्राय अर्घं ॥

जल फल ल्याय अपार, श्रीशिवनाथ सु पूजिये।

पश्चिम० ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं शिवनाथाय अर्घं ॥

दोहा।

पश्चिम धातुकी भरतके, भूत जिनेश्वर जान।
तिन चरणांबुज पूजते, होत परम कल्याण ॥

ॐ ह्रीं पूर्णार्घं।

इति भूत जिन पूजा सम्पूर्णम्

अथ जयमाला।

छंद त्रिभंगी।

ये भूत जिनेश्वर पूजत सुरनर, मन वच तन करि तिन पाऊं।
भारतगत स्वामी तिहु जगनामी, पश्चिम धातुकी गुण गाऊं ॥
अचलमहीधर दक्षिण दिशपर, है सु क्षेत्र वर तिस माहीं।
शिव-सुखके कारण भवदधि तारण, जिनसम देव अवर नाहीं ॥

ढाल—छंद राजुल पचीसीकी।

जय जय जिनजी, वृषभ जिनेश्वर, चरण सेव सुरपति करैं।
जय जय जिनजी, मित्र प्रिय वर नाम, तुमी हिये धरैं ॥
जय २ जिनजी शांतिकरन जग शांति करन,
जग शांतिचरन मन ध्याइये, जिन गुननुकोजी।
सुरनर मुनिगण गावत पार न पाइये ॥
जय जय जिनजी सुमति जिनेश्वर,
सुमति जिनेश्वर सुमति देव भव जन भले।
जयर जिनजी आदि प्रभंकर, काम नाशि शिवपुर चले ॥
जयर प्रभूजी सुवर व्यक्त अति नाम तुम्हारो गाइये।
जयर प्रभूजी कालसेनि जिन काल नाशि शिव पाइये ॥
जयर प्रभूजी करम जिनेश्वर करम काटि भवि थिति तजी।
जयर प्रभूजी प्रबुधक जग सुख तजि जिन शिवरमनी भजी ॥
जयर प्रभूजी सिरी वप्र जिनराज चरण सेवन करौ।
जयर जिनजी श्री सौधर्म जिनेश नाम हियरे धरौ ॥
जयर जिनजी तमोद्वीप जिनवर पद सुमतिन ध्याइये।
जयर जिनजी वज्रप्रभूके नित गुण भवि गाइये ॥
जयर प्रभूजी नाथ प्रबुद्ध, जिनेश्वर शरण लई हमी।
जयर जिनजी तीर्थ प्रबन्ध नव सुविधि तोरियो।
जयर जिनजी, नाथ अतीत सु शिवतिय संग हित जोरियो ॥
जयर जिनजी, सुमुख जिनेश्वर विमुख भये।
जग जालतैं जयर प्रभूजी, पल्योपम शरणागत जनप्रतिपालते ॥

जय२ प्रभजी तीर्थ अकोपक नाम, जगत सुखकार है।
जय२ प्रभूजी नाम जिनेश्वर, नृपित गुण अविकार है॥
जय२ जिनजी, नाम नाम, नाभिमृग दैन सर्व सुख जगतको।
जय२ जिनजी, नाथ पदस्थित थुति कयों मैं करि सकों॥
जय जय जिनजी, देव देव देवेन्द्र नाम धारक कहे।
जय जय प्रभूजी, जगतनाथ शिवनाथ भये विधि वसु दहे॥

घत्ता—दोहा।

यह जयमाल विशाल वर, उर पहिरो मन ल्याय।
धातुकी भारत भूत जिन, अपर दिशा सुखदाय॥

अथ धातुकी दीप पश्चिम भरतक्षेत्र वर्तमान जिन पूजा।

सोरठा।

जल फल अर्घ बनाय, विश्व चन्द जिन पूजिये।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी जानिये॥
ॐ ह्रीं विश्वचन्द्राय अर्घं॥ १॥
जल फल अर्घ बनाय, कपिल जिनेश्वर पद यजौ।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी दीपके॥ २६॥
ॐ ह्रीं कपिलजिनाय अर्घं॥ २॥
जल फल अर्घ बनाय, वृषभ जिनेश्वर पूजियै।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीपके॥ २७॥
ॐ ह्रीं वृषभजिनाय अर्घं॥ ३॥

जल फल अर्घ बनाय, प्रियतेज सु जिन पूजिये।
भारत गत जिनराय, अपार धातुकी द्वीप जे २८॥
ॐ ह्रीं प्रियतेजजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

जल फल अर्घ बनाय, प्रशमनाथ जिनवर यजौं।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥२९॥
ॐ ह्रीं प्रशमजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

जल फल अर्घ बनाय, विषम अंग जिनपद यजौं।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३०॥
ॐ ह्रीं विषमांगाय अर्घं ॥ ६ ॥

जल फल अर्घ बनाय, श्री चारित्र यजौं सही।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३१॥
ॐ ह्रीं चारित्रजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

जल फल अर्घ बनाय, प्रभादित्य जिनवर यजौं।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३२॥
ॐ ह्रीं प्रभादित्याय अर्घं ॥ ८ ॥

जल फल अर्घ बनाय, मुंजकेश पद पूजिये।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३३॥
ॐ ह्रीं मुंजकेशाय अर्घं ॥ ९ ॥

जल फल अर्घ बनाय, वीतराग जिनवर यजौं।
भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे ॥३४॥
ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घं ॥ १० ॥

जल फल अर्घ बनाय, चरण सुराधिपके यजौं।

भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे। ३५ ॥

ॐ ह्रीं सुराधिपाय अर्घं ॥ ११ ॥

जल फल अर्घ बनाय, दयानाथ पद पूजिये।

भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे॥ ३६ ॥

ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं ॥ १२ ॥

जल फल अर्घ बनाय, सहस्त्रभुज जिनवर यजो।

भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे॥ ३७ ॥

ॐ ह्रीं सहस्त्रभुजाय अर्घं ॥ १३ ॥

जल फल अर्घ बनाय, जिन सिंहप्रभ पद यजो।

भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं जिन सिंहाय अर्घं ॥ १४ ॥

जल फल अर्घ बनाय, ऐरावत जिन पूजिये।

भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे॥ ३८ ॥

ॐ ह्रीं ऐरावतजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

जल फल अर्घ बनाय, बाहु जिनेश्वर पूजिये।

भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे॥ ३९ ॥

ॐ ह्रीं बाहुजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

जल फल अर्घ बनाय, श्रीमाली जिन पूजिये।

भारत गत जिनराय, अपर धातुकी द्वीप जे॥ ४० ॥

ॐ ह्रीं श्रीमालीजिनाय अर्घं ॥ १७ ।

जल फल अर्घ बनाय, पद अजोग जिनके यजो।

भारत गत जिनाय, अपर धातुकी द्वीप जे॥ ४१ ॥

ॐ ह्रीं अजोगजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥

जल फल अर्घ बनाय, कामसतु जिन पूजिये ।
भारथ० ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीं कामसतुजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥
जल फल अर्घ बनाय, आरंभक जिनपद यजो ।
भारथ० ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीं आरंभकजिनाय अर्घं ॥ २० ॥
जल फल अर्घ बनाय, नेमिनाथ जिन पूजिये ।
भारथ० ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं नेमिनाथजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥
जल फल अर्घ बनाय, गर्भ ज्ञान जिन पूजिये ।
भारथ० ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं गर्भज्ञानजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥
जल फल अर्घ बनाय, एकार्जितपद युग यजो ।
भारथ० ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीं एकार्जितजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥
जल फल अर्घ बनाय, श्रीसुकेश जिनपद यजो ।
भारथ० ॥ ४८ ॥ ॐ ह्रीं सुकेशजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

अडिल्ल छन्द ।

धातुकी भारथक्षेत्र, अपर गत जानिये ।
ये चौवीस जिनेश्वर, परम प्रमानियै ॥
पूरण अर्घ बनाय, गाय गुण सार जू ।
पूजों चरणकमल, द्रग सब सुखकार जू ॥पूर्णार्घं॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

विश्वचन्द्रको आदि दे, एकार्पित पर्यन्त ।
भारथगत चौवीस जिन, अपर धातुकी अंत ॥४९॥

पद्धड़ी छंद।

जय विश्वाधिप नाथा जिनेश, जय कपिल जिनेश्वर नुत महेश।
जय वृषभदेव सुर करत सेव, प्रिय तेज जिनेश्वर नाम एक॥
जय प्रशमनाम जिन शांतिरूप, विन माग नमैं तिहुँ जगत भूप।
चारित्र धरन चारित्र नाथ, श्री प्रभादित्य नमौं जोरि हाथ॥
जय मंजुरूप जिन मंजु केश, जय वीत पाप दिय वृष निदेश।
जय जयहि सुराधिप नाम नाथ, जय दया अंगयुग नमैं पाय॥
जय सहस्रार जिन मार मार, जिन सिद्ध भवोदधि भए पार।
रैवत जिन नाम सु जगविख्यात, श्रीबाहुस्वामि जग करन शांत॥
जय श्रीमाली साली सुगन, जिन श्री अजोगपद करो नमन।
जय जय श्रीजिन सु अजोगनाथ, जय जयहि सकाम तु नमौं माथ॥
जय आरंभक जिन नाम गाय, जय नेमिनाथ सुखकरि सुभाय।
जय गर्भ ज्ञान शुभ चरनधान, नमौं एकजित जुग जोरि पान॥५०॥

घत्ता-त्रिभंगी छन्द।

चौवीस जिनेश्वर जग परमेश्वर अघ हरनं।
धातुकी गत भारथ अप अनारत भविजन तारत सुखकरणं॥
जे पूजैं ध्यावैं भक्ति बढ़ावैं, वांछित पावैं भौभौमें।
सुर नर मुनि वंदित पूजित पंडित, काम विहंडित पद नौमैं॥५१॥

इति धातुकी द्वीप पश्चिम भरत वर्तमान पूजा सम्पूर्णम्।

अथ धातुकी द्वीप पश्चिम भरत भावी पूजा।

जल फल ल्याय अपार, रक्त केश जिनवर भजो।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ५२ ॥
ॐ ह्रीं रक्तकेशजिनाय अर्घं ॥ १ ॥

जल जल ल्याय अपार, चक्र हस्त जिनराजजी।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ५३ ॥
ॐ ह्रीं चक्रहस्तजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्री कृतनाथ जिनेशजी।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ५४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीकृतनाथाय अर्घं ॥ ३ ॥

जल फल ल्याय अपार, परमेश्वर जिन नाम है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ५५ ॥
ॐ ह्रीं परमेश्वराय अर्घं ॥ ४ ॥

जल फल ल्याय अपार, सौ मूर्तिक जिनवर भजौं।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ५६ ॥
ॐ ह्रीं सौमूर्तिकजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

जल फल ल्याय अपार, सौहूर्तिक जिनवर भजो।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ५७ ॥
ॐ ह्रीं सौहूर्तिकजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्रीमिकेश जिनवर भजो।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ५८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमिकेशाय अर्घं ॥ ७ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्वेतांगद जिन नाम है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ५९ ॥

ॐ ह्रीं श्वेतांगदजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥

जल फल ल्याय अपार, अरुज चरण कुज जुग भजो।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ६० ॥

ॐ ह्रीं अरुजिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

जल फल ल्याय अपार, देवनाथ जिनवर भजो।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ६१ ॥

ॐ ह्रीं देवनाथाय अर्घं ॥ १० ॥

जल फल ल्याय अपार, नाम दयाधिक जिनवरो।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ६२ ॥

ॐ ह्रीं दयाधिकाय अर्घं ॥ ११ ॥

जल फल ल्याय अपार, पुष्पनाथ महाराज है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ६३ ॥

ॐ ह्रीं पुष्पनाथाय अर्घं ॥ १२ ॥

जल फल अर्घ सु ल्याय, श्रीप्रशांति जिन है सही।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजो ॥ ६४ ॥

ॐ ह्रीं प्रशान्तजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

जल फल ल्याय अपार, निराहार जिनराज है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजों ॥ ६५ ॥

ॐ ह्रीं निराहाराय अर्घं ॥ १४ ॥

जल फल ल्याय अपार, जिन अमूर्तिवर नाम है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजों ॥ ६६ ॥

ॐ ह्रीं अमूर्तिजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्रीद्विजनाथ सु नाम है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजों ॥ ६७ ॥

ॐ ह्रीं द्विजनाथाय अर्घं ॥ १६ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्री नरनाथ महेश है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजों ॥ ६८ ॥

ॐ ह्रीं नरनाथाय अर्घं ॥ १७ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्री प्रतिच्युत जिन नाम है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजों ॥ ६९ ॥

ॐ ह्रीं प्रतिच्युतजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥

जल फल ल्याय अपार, श्री नागेन्द्र जिनेश है।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजों ॥ ७० ॥

ॐ ह्रीं नागेन्द्रजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

जल फल ल्याय अपार, तीर्थ तपोधिक जिन कहे।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजों ॥ ७१ ॥

ॐ ह्रीं तपोधिकाय अर्घं ॥ २० ॥

जल फल ल्याय अपार, दशानिक जिन है भले।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजों ॥ ७२ ॥
ॐ ह्रीं दशानिकाय अर्घं ॥ २१ ॥

जल फल ल्याय अपार, आरण्यक जिन जानिये।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजों ॥ ७३ ॥
ॐ ह्रीं आरण्यकाय अर्घं ॥ २२ ॥

जल फल ल्याय अपार, नाम दशानिक जिन कहै।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजों ॥ ७४ ॥
ॐ ह्रीं दशानिकजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥

जल फल ल्याय अपार, सत्रिक तीर्थंकर भजों।
पश्चिम धातुकी सार, भारथ भावी जिन यजों ॥ ७५ ॥
ॐ ह्रीं सत्रिकजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा।

ये भावी चौबीस जिन, पश्चिम धातुकी द्वीप।
सुरनर करि पूजत सदा, राखो चरण समीप ॥ ७६ ॥

अथ जयमाला।

पद्धड़ी छन्द।

सुरपूजित रक्त सु केस पाय, फुनि चक्र हस्त वन्दो सु भाय।
कृत नाथ मुनीश्वर नमो चरन, संसार महार्णव तारन तरन ॥
परमेश्वर जिनको नाम गाय, तिनके पद प्रनमो सीस नाय।
जय जय सुमृति जिन परम देव, इन्द्रादिक सुरनर करत सेव ॥

जय मुक्तिकांत जगमें महंत, जिन श्री निकेशके गुन अनन्त।
जय जय प्रशस्त जिन नाम धार, जय जय श्री जिनवर निराहार॥
जय नाम अमूर्तिक चिरसरूप, द्विजनाथ सुगुन सोहै अनूप।
श्रेयोगत जिनके नमौ पाय, श्री अरुज जिनेश्वर मुक्तिदाय॥
जय देवनाथ देवाधिदेव, जय जगहि दयानिधि नमो एव।
प्रतिभूति नमौ जिनगुण अपार, नागेंद्र देव सब सुक्खकार॥
जय जय सु तपोनिधि सुतप कीन, जय नामदशानन जिन प्रवीन।
आरन्यक जिनको नाम गाय, प्रम दशानीक भवि सुक्खदाय॥
सात्विक जिनवर महिमा निधान, नमो धर्मज्ञान जुग जोरि पानि।
सोहूंति जिनेश्वर गुण विशाल, श्रासाँतिक जिनवर धरम धार॥
कृत नाथ नमो पद नाय सीस, जे जाय बसे शिवपुर महीस॥७७॥

घत्ता—सोरठा।

जहां जयमाल विशाल, बरणी भावि जिनेशकी।
नमौ चरन तिहुँकाल, धातुकी भारथ अपरकी॥ ७८॥

अथ उत्तर ऐरावत जिन पूजा।

सुन्दरी छन्द।

दीप धातुकी पश्चिम जानिये, क्षेत्र ऐरावत परमानियै।
भूतगत भावी जिनराज है, करौ आह्वानन दुख भाजि है॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिममेरु उत्तरऐरावतक्षेत्र तत्र भावीभूतवर्तमान-जिनेभ्यः अत्रावतरावतर संवौषट् इत्यादि पठनीयं वारत्रयं।

अथाष्टकं।

छन्द चाल।

सुर सुरीय नीर प्रासुक सीयरो, लै रतन जटित भृंगार भरो।
धातुकी अपर ऐरावतमें, गत तीत अनागत यजो तिनों ॥८०॥

ॐ ह्रीं धातुकी पश्चिम मेरु उत्तर ऐरावत क्षेत्र भूतभावी जिनेभ्यो अर्घं।

मलियागिर चन्दन लै गारो. सो रतन कटोरीमें धारो।
धातुकी ऊपर ऐरावतमें, गत तीत अनागत यजो तिनों ॥८१॥
ॐ ह्रीं चन्दनं ॥

तंदुल जल सरस पखारी भले, जिन पुंज देत वसु कम गले।
धातुकी० ॥८२॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥

लै कुसुम कनकमय सुर तरुके, दोनों कर अंजुल भर करके।
धातुकी० ॥८३॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥

घेवर बावर गूझा फेनी, जिनपद आगे धर कर श्रेनी।
धातुकी० ॥ ८४ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ॥

मनिमय दीपक थारी धरिये, जिन चरनकमल आरति करिये।
धातुकी० ॥ ८५ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥

कृष्णागर अर करपूर मिलै, खेवो जिनग्रह वसु कर्म जलै।
धातुकी० ॥ ८६ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥

फल भल फाम्र लै अति सुथरे, बादाम छुहारे नारियरे।
धातुकी० ॥ ८७ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥

जल चन्दन अक्षत कुसुम चरो, वर दीप धूप फल अर्घ करो।
धातुकी अपर ऐरावतमें, अतीत अनागत यजों जिनै ॥८८॥
ॐ ह्रीं अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

धातुकी पश्चिम ऐरावत अतीत जिन पूजा।

सुन्दरी छन्द।

नाम शुभ सुर मेरु सु है खरो, मेर गिरि जिन सुर न्हवन करो।
अपर धातुकी ऐरावत भले, तीत जिन पूजत वसुविधि भले॥
ॐ ह्रीं पश्चिम धातुकी ऐरावत अतीत जिन सुरमेरवे अर्घं ॥ १॥
श्री जिनेश्वर जिन कृत जानिये, कृत कृतारथ ह्व अरर आनिये।
अपर० ॥ ९० ॥ ॐ ह्रीं जिनकृताय अर्घं ॥ २ ॥
नाम जिनको कैटम मार है, भविनु भवदधि तारनहार है।
अपर० ॥ ९१ ॥ ॐ ह्रीं कैटभाय अर्घं ॥ ३ ॥
जिन प्रशस्त समस्त हरे करम, जाय शिवपुर वास किया परम।
अपर० ॥ ९२ ॥ ॐ ह्रीं प्रशस्तजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥
निर्दयांग सु नाम कह्यो तथा, कुमति रति वैषध्य करन यथा।
अपर० ॥ ९३ ॥ ॐ ह्रीं निर्दयांगाय अर्घं ॥ ५ ॥
कुलंकर जिन नाम सु पाइयो, कृपासिंधु जगत जसु गाइयो।
अपर० ॥ ९४ ॥ ॐ ह्रीं कुलंकरजिनाय अर्घं ॥६॥
वर्द्धमान जिनेश्वर जानिये, वचन जिन हिरदेमें आनिये।
अपर० ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीं वर्द्धमानजिनाय अर्घं ॥७॥

नाम जिन अमृतेन्द्र सुगुरु कही, धर्म अमृत वर्षत है सही।

अपर० ॥ ९६ ॥ ॐ ह्रीं अमृतेंद्रजिनाय अर्घं ॥८॥

नाम संख्यानंद जिनेश्वर, भव्य आनन्ददायक पापहर।

अपर० ॥ ९७ ॥ ॐ ह्रीं संख्यानंदाय अर्घं ॥ ९ ॥

तीर्थंकर कल्पाकृत नाम है, कल्पद्रुमसम पूरण काम है।

अपर० ॥ ९८ ॥ ॐ ह्रीं कल्पाकृताय अर्घं ॥१०॥

नाम जिनेश हरिनाथ किय, भव्यजन बहुतें शिवधाम लिय।

अपर० ॥ ९९ ॥ ॐ ह्रीं हरिनाथाय अर्घं ॥ ११ ॥

बाहु जिनवर जगविख्यात है, प्रगट गुण जिनके अवदात है।

अपर० ॥१००॥ ॐ ह्रीं बाहुजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥

नाम भार्गव जिन गुणगण भरे, विगत सोक भवोदधिको तरे।

अपर० ॥१०१॥ ॐ ह्रीं भार्गवाय अर्घं ॥ १३ ॥

भद्र करता भद्र जिनेश हैं, भद्र गुण प्रापित सु महेश हैं।

अपर० ॥१०२॥ ॐ ह्रीं भद्रस्वामिने अर्घं ॥ १४ ॥

नाम विपातन जिन जानिये, कर्म गिरि तोरन परमानिये।

अपर० ॥१०३॥ ॐ ह्रीं विपातनाय अर्घं ॥ १५ ॥

विपोषित जिन नाम कह्यो तदा, भव्यजन निसंखित किय सदा।

अपर० ॥१०४॥ ॐ ह्रीं विपोषिताय अर्घं ॥ १६ ॥

ब्रह्मचारी जिन गुण करि बडे, ब्रह्म शैल शिखिरि ऊपर चढे।

अपर० ॥१०५॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मचारिने अर्घं ॥ १७ ॥

असाक्षिक जिन नाम सु जानियै. असाक्षिक जिन वचन प्रमानियै।

अपर० ॥१०६॥ ॐ ह्रीं असाक्षिकाय अर्घं ॥ १८ ॥

नाम चारित्रेश जिनेश हैं, त्रिदश चारित्र धरन महेश हैं।
अपर० ॥ १०७ ॥ ॐ ह्रीं चारित्रेशाय अर्घं ॥ १९ ॥
पारनामक जिन जग सार है, पारिनामक भाव सु धार है।
अपर० ॥ १०८ ॥ ॐ ह्रीं पारनामकजिनाय अर्घं ॥ २० ॥
नाम शाश्वत जिन जग गाइयो, शाश्वतो सुख शिवपुर पाइयो।
अपर० ॥ १०९ ॥ ॐ ह्रीं शाश्वतजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥
सु निधिनाथ निधीश्वर है सही, भविनुको दीनी सुखनिधि मही।
अपर० ॥ ११० ॥ ॐ ह्रीं निधीनाथाय अर्घं ॥ २२ ॥
कौसिकाख्य जिनेश महान है, विष्णु सेवितपद श्रीमान है।
अपर० ॥ १११ ॥ ॐ ह्रीं कौसिकाय अर्घं ॥ २३ ॥
सु धर्मेश महेश जिनेश हैं, भविनु दिय वरवृषसुपदेश है।
अपर० ॥ ११२ ॥ ॐ ह्रीं स्वधर्मेशस्वात्मने अर्घं ॥ २४ ॥

अथ ऐरावत धातुकी, जिन अतीत ये गाय।
जिन चरणांबुज पूजिये, पूरण अर्घ बनाय। पूर्णार्घं ॥

अथ जयमाला।

पद्धडी छन्द।

जय सुर मेरु जिनेश्वर हैं, जिन कृतपद पूज्य सुरेसुर हैं।
धातुकी अपर ऐरावतकै, जिन तीत नमो पदमदहतकै ॥
कैटभ जिनवर पद नमत हमी, सु प्रशस्त नमो यन कर्ण दमी ॥धा०
निर्दय हत मोहमहा मटवर, सु कलंकर चरन नमें हरिहर ॥धा०
श्रीवर्द्धमान पद नमन करो, अमृतेन्द्र चरनयुग हिये धरो ॥धा०
संख्या नदी जिननाम कहा, कल्पाकृत पूरन काम सहा ॥धा०

हरितनाथ नाथ शिवनाथ मही, श्रीबाहु चरन सुर पूजि सही ॥धा०
भार्गव जिननाम कह्यो गुरुने, पद भद्र नमो शिवतिय परनो। धा०
पविया तन चरण नमों तुम्हारे, सु विपोषित जिनवर गुन अगरे॥ धा०
जय ब्रह्मचारि जिननाम कह्यो, जय साक्षिक जिन वसु कर्म दह्यो॥धा०
जय जय चारित्र जिन नाम महा, जय परिणाम शिव शर्म लहा। धा०
शाश्वत जिन नाम सुणाईयो, निधिनाथ पम पद पाईयो ॥धा०
जय कौसिक पद युग नमन करौ, धर्मेस सदा समे हो तुमरौ।
धातुकी अपर ऐरावतके, जिन तीत नमों पद मद इनके ॥१३॥

घत्ता—दोहा।

यह जयमाल विशाल गुन, वरनी सब सुखदाय।
धातुकी अपर अतीत ये, ऐरावत जिनराय ॥१४॥

अथ वर्तमान जिन पूजा।

सुन्दरी छन्द।

प्रथम साधित नाम सु जिन कहे, साधुनाखिल काज सु जगमहे।
अपर धातुकी ऐरावत भजों, वर्तमान सु जिन वसुविधि यजों॥

ॐ ह्रीं साधिताय अर्घं ॥ १ ॥

स्वामि जिनवर नाम वखानियै, त्रिजगस्वामी जिन परमानियै।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं स्वामीजिनाय॥ २ ॥

नाम स्तिमितेंद्रक जिनको कह्यो, नमत सुर सुरपति जिन गुन लह्यो।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं स्तमितेन्द्राय अर्घं ॥ ३ ॥

नाम जिन आनंद जिनेश्वरो, कनक आनंद जगजन दुख हरो।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं आनन्दजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

पुष्पकोत्फुल्लक जिन नाम है, सदा प्रफुल्लित मुख सुखधाम है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं प्रोत्फुल्लजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

मुंडिकाख्य सुजिन जगमंडनं, शल्यत्रिक मुंडित अघ खण्डनं।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं मुंडकाय अर्घं ॥ ६ ॥

प्रहत जिन जग नाम सु गाइयो, तह मदन गज दर्प सु ध्याइयो।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं प्रहतजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

मदनसिंह सुनाम जिनेश है, यथारथ गुण सहित सु देश है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं मदनसिंहाय अर्घं ॥ ८ ॥

नाम जिन दशइंद्रिय रोधरो, प्रहसितानन जिन जन मन हरो।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं दशन्द्रियाय अर्घं ॥ ९ ॥

चन्द्र पार्श्व जिनेश्वर सार है, पूर्ण चन्द्रवदन द्युति धार है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं चन्द्रपार्श्वाय अर्घं ॥ १० ॥

अब्जबोध सुजिन जयवन्त है, भव्य बोधकरन सु महन्त है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं अब्जबोधाय अर्घं ॥ ११ ॥

नाम जिनवल्लभ अघ हरन है, भव्य वल्लभ शिव-सुखकरन है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं जिनवल्लभाय अर्घं ॥ १२ ॥

जिन विभूतिक नाम सुहावनो, सदा जो हिरदेमें ध्यावनो।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं विभूतिजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

नाम हेमवरन जिन गाइयो, तन सुवर्ण समान सुहाइयो।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुवर्णजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

नाम जासुको कुसुम बखानियो, दसों दिश जश जग परमानियो।
अघर० ॥ ॐ ह्रीं कुसुमजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥
श्रीनिवास सु श्रीहरिवास है, त्रिजगपति जिनके सब दास है।
अघर० ॥ ॐ ह्रीं हरिवासाय अर्घं ॥ १६ ॥
नाम जिनप्रिय मित्र सु सार है, जगत जीवनु मैत्रीकार है।
अघर० ॥ ॐ ह्रीं प्रियमित्राय अर्घं ॥ १७ ॥
है स्वधर्म जिनेश्वर नाम जिन, सकल सुरनर पूजत चर्ण तिन।
अघर० ॥ ॐ ह्रीं सुधर्मजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥
नाम रत्नप्रिय जग प्रगट है, पद यजौ जिन जे भवि निकट है।
अघर० ॥ ॐ ह्रीं रत्नप्रियाय अर्घं ॥ १९ ॥
नंदिनाथ जिनेश्वर जानियो, सदा नंदित गुण परमानियो।
अघर० ॥ ॐ ह्रीं नन्दिनाथाय अर्घं ॥ २० ॥
नाम अश्वानीक सु ठीक है, लसत तन जिनको रमनीक है।
अघर० ॥ ॐ ह्रीं अश्वानीकजिनाय अर्घं ॥२१॥
पर्वनाथ जिनेश्वर जोर है, देववास भविनु दिवसोर है।
अघर० ॥ ॐ ह्रीं पर्वनाथाय अर्घं ॥ २२ ॥
पार्श्वनाथ सही जिन नाम है, जय लजन मन पूरन काम है।
अघर० ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं ॥ २३ ॥
चित्र हृदय विचित्र गुनाकर, पूज्यपद नर खगपति सुर असुर।
अघर० ॥ ॐ ह्रीं चित्रहृदयाय अर्घं ॥ २४ ॥

सोरठा।

धातुकी गत जिन जानि, अपर ऐरावतके विषैं।
पूजो जिन गुण खानि, पूरन अर्घ बनायकै ॥
पूर्णार्घ !

दोहा—अपर ऐरावत धातुकी, गत जिनवर चौवीस।
तिन पद वन्दौं भावसों, पाप हरन जगदीश ॥

अथ जयमाला।

पद्धड़ी छंद।

जय साधित भव भयहरण धीर, जिन स्वामि भवोदधि लह्यो तीर।
धातुकी अपर ऐरावत जानि, गत नमो चरन युग जोरि पानि ॥
स्वमितेंद्र खेंद्र सु पूज्य पाय जिन शिवमारग भवि दिय बताय ॥धा०
जय पुष्पोत्पुलक जिननाम पाय, आनंद नाम जिन स्वपद दाय॥धा०
जय मुंडित खंडित कामवीर, जय प्रहत जिनेश्वर धरन धीर। धा०
जय मदनाशक जिन नाम सार, दशदिद्र सुगुन सोहे उदार। धा०
जय चंद्र पार्श्व जिन नाम जानि, जय उज्वल बोध गिरि कर्म भानि ॥
जय जिनवल्लभ वल्लभ सु सर्व, विभूतिक जिनवर विगत गर्व ॥धा०
जयजय कुकुष्ण जिन नमो तोहि, सुवरन प्रभ भवदधि तारि मोहि ॥
हरिवास जिनेश्वर नाम धार, प्रियमित्र सु शिवपुर किय विहार ॥धा०
सौधर्म धर्म दशभेद भाषि, प्रियरत्न हमैं निज शरन राषि ॥धा०
जय नंदित नंदित गुन जिनेश, जय अस्वानिक सु जगमहेश ॥धा०
जय पर्व जिनेश्वर नमो पाउं, जिन चित्र हृदय बलि२ सुजाउं ॥धा०
जय पार्श्वनाथ जिन पार्श्व दैन, तिन नमें सदा पदकमल नैन।
धातुकी ऐरावत अपर जानि, गत नमो चरु जुग जोरि पानि ॥

घत्ता-सोरठा।

यह जयमाल विशाल, वरनी जिन चौवीसकी।
नमों चरन तिहुं काल, अपरैरावत धातुकी ॥

अथ भावी जिन पूजा।

श्री जिनेन्द्र रविंदु सु नाम है, भव्य तन मन पूरन काम है।
अपर धातुकी ऐरावत सदा, भावि जिन वसुविध पूजों मुदा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्रबिन्दु अर्घं॥ १॥

सोकुमालिक नाम वखानिये, सु कोमल तन धरन प्रमानिये।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सोकुमालिजिनाय अर्घं ॥ २॥

नाम पृथ्वीपत जिन सार है, क्षीरवर्ण रुधिर तन धार है।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं पृथ्वीपतजिनाय अर्घं॥ ३॥

नाम श्री कुलरत्न जिनेश है, समचतुरसंस्थान महेश है।

अपर० । ॐ ह्रीं कुलरत्नाय अर्घं ॥ ४॥

तीर्थ श्रीधर नाम सु जानिये, तीर्थंकर करतार प्रमानिये।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं श्रीधराय अर्घं ॥ ५॥

करुण नाम जिनेश्वर सोमही, विविधि लक्षण लक्षित तन सही।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं करुणजिनाय अर्घं ॥ ६॥

नाम अभिनंदन जग सार है, तन सुगंध महा सुखकार है॥

अपर० ॥ ॐ ह्रीं अभिनन्दनाय अर्घं ॥ ७॥

सर्वनाथ नमत जग माथ है, जिन वचन शिवमारग साथ है।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सर्वनाथाय अर्घं॥ ८॥

नाम सु दृष्टिक जिन जानिये, शुद्ध दृष्टि धरन परमानियें।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुदृष्टिजिनाय अर्घं ॥ ९॥

सिष्टि जिन जिन महाराज बताइयौ, सिष्टि करत जगत जसु गाइयौ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सृष्टिजिनाय अर्घं ॥ १०॥

सु धान्यक जिन नाम कह्यौ महा, परम आनंद कारन पद लहा।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुधान्यकजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

मरुत् सुरभि करी दश दिशि मलै, सोमचंद्र यजत पद अघ गलै।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सोमचन्द्राय अर्घं ॥ १२ ॥

धूलि कंटक विगतमई धरा, क्षेत्रनाथ सु नाम परो खरा।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं क्षेत्रनाथाय अर्घं ॥ १३ ॥

वृष्टि गंधोदक युत सुर करी, सुदंतिक जिन नाम कह्यौ हरी।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुदन्तिक जिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

हेमपद्म चरण तल सुर रचै, वज्र जगत जिनेश्वर गुन रचै।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं जगतिजिनेश्वराय अर्घं ॥ १५ ॥

सालि क्षेत्र फलित जिनगति समै, यजो जिनहि सुरासुर पद नमैं।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं नमो शिवेगाय अर्घं ॥ १६ ॥

गति समै जिन नभ निर्मल भयो, नाम निर्मल इन विधि हरि कह्यौ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं निर्मलजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

गुन अनेक सु अतिशय करि सदा, नाम कृत पारस सुरपति वदा।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं कृतपारसवराय अर्घं ॥ १८ ॥

अतुल बोध निदान सु जानियै, बोध लाभ सु जिन परमानियै।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं बोधलाभाय अर्घं ॥ १९ ॥

बाहुनन्द महा आनन्दकर, जगत जन सन्तोषित ज्ञानधर।

अपर० । ॐ ह्रीं बाहुनन्दीजिनाय अर्घं ॥ २० ॥

दिष्ट निष्ट सुभेदक जिनवरो, दृष्टि स्वामि सु नाम महा परो।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं दृष्टिस्वामिने अर्घं ॥ २१ ॥

कुंकुमाभ जिनेश्वर सार है, कुंकुमादिकके भरतार है।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं कुँकुमाभजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥

नाम जिन विवेश प्रमाण है, वंक्षिताखिल तत्त्व प्रधान है।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं विम्वेशाय अर्घं ॥ २३ ॥

दोहा।

ए भावी चउवीस जिन, धातुकी अपर बखानि।
अचल मेरु उत्तर दिशा, ऐरावत परमानि ॥ पूर्णार्घं ॥

अथ जयमाला।

पद्धड़ी छंद।

जय जिन रवीन्दु दुतिधर मुखेंदु, जय सुकुमालिक पूजत सुरेंदु।
धातुकी अपर भावी जिनेश, पद वन्दौं ऐरावत सु देश ॥
पृथ्वीपत जिनवर नाम धाय, कुलरत्न विभूषित सदा काय ॥घा०
जय २ श्रीधर श्रीधर महान, जय सोमचंद्र द्युति सोमवान ॥घा०
जय वरुण जिनेश्वर जगत सूर, जय अभिनंदन जिन सुगुनपूर। घा०
जय सर्वनाथ जिन सर्वनाथ, जय दक्ष सुजिन जग नमत माथ। घा०
जय सृष्टि जिनेश्वर गुण गंभीर, जिन शुद्धन्याय गुणगृह सुधीर ॥घा०
जय सोमचन्द्र करुणानिधान, क्षेत्राधिनाथ जगमें प्रधान ॥घा०
सुदंतिक जिनवर जगविख्यात, जय जगत जिनेश्वर जगततात ॥घा०
जय जपत मारि जग दयाकार, जय निर्मल जिनगुणकरि उदार ॥घा०
कृत पार्श्वचरन सेवत जगीश, जय बोध लाभ जिनवर महीश। घा०
जय बाहु नाम जग कृपासिंधु, जय दृष्टि सुकाटन कर्म कंदु ॥घा०

जय कुमकुमाभ तन कुमकुमाभ, वक्षेश नमत शिव होत लाभ।
धातुकी अपर भावी जिनेश, पद वंदौं ऐरावत महेश ॥

घत्ता—दोहा।

अपर धातुकी द्वीपके, ऐरावत जिन सार।
भावी पद वंदन करौं, नमि नमि वारंवार ॥

इति भावी जिन पूजा।
इति धातुकी द्वीप अचलमेरु पूजा सम्पूर्णम्।

अथ इक्ष्वाकार पूजा।

दोहा।

इक्ष्वाकार सु नामवर, भूधर भूपर सार।
धातुकी खंड विषै युगम, युगम खंड करतार ॥
दक्षिण उत्तर जानिये, जिन चैत्यालय दोय।
तिन प्रति आह्वानन करो, पूजों वसुविध सोय ॥

ॐ ह्रीं दक्षिण उत्तरदिशि इक्ष्वाकार जिनालय जिनेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् इत्यादि पठनीयं।

अथाष्टकं।

चालि-राजा भरथरीकी।

एजी नीर क्षीरोदधि ल्यायकें, भवि कँचन झारी भराय हो।
चरण युगल जिनराजके, प्रक्षालत त्रसा नसाय हो ॥
गिर इक्ष्वाकार सुहावनों, धातुकी खंड सुमेरके दक्षिणउत्तर जानिहो॥
गिर इक्ष्वाकार सुहावनों ॥ टेक ॥

युग जिनमंदिर जहं परे, जिन पूजौं सब सुखदानि हो ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं धातुकीखण्ड दक्षिण उत्तर जिनयुगालय जिनेभ्यो अर्घं।

बावन चन्दन पावना, तामें कदली नंदन गारि हो।
दाह निकंदन कारने, जिन पूजौं गुण निरधारि हो ॥गिरि०धातु०

ॐ ह्रीं चन्दनं॥

तंदुल धवल सुगंध ले, बहु उज्जल नीर पखारि हो।
चन्द किरण सम सोहनै, लय पूजहु जिन जयकार हो ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं अक्षतं॥

कनक रजतमय ल कुसुम, कर संपुट करि सार हो।
चरण निकट जिनराज भवि, भक्ति सहित अवधार हो। गिरि०॥

ॐ ह्रीं पुष्पं॥

पायस सयम बनायके, जाके देखत हिय हुलसाय हो।
घृत पूरित पकवान लै, जिन पूजत क्षुधा नसाय हो॥ ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं नैवेद्यं॥

दीप रतनमय ल्यायके, करि कंचन थाल भराय हो।
आरती जिनपदपंकजकी करि, मोह तिमिर नसाय हो ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं दीपं॥

अगर सुगन्ध इलायची, लै चन्दन चूरन चारु हो।
चरण निकट महाराजके, भवि खेवहु अगनि मझार हो ॥गिरि०॥

ॐ ह्रीं धूपं॥

आम निंबू नारिंग लै, बादाम सदा फल सेव हो।

चरण कमल जिन पूजतै, तुम तुरत मुकतफल लेत हो।
॥ गिरि० ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥
चारि आदि वसु द्रव्य ले, हिम थाल बीच अवधार हो।
चरु चरणन जिनराजके, भवि पूजे अघ क्षयकार हो॥
गिरि इक्ष्वाकार सुहावनो० ॥

अडिल्ल छन्द।

शुभ पंचकल्याणक विभूषित, इन्द्र पूजित चरण ये।
प्रस्फुरित पंचम बोध लौकि त्रय उद्धरन ये॥
पंच मुकति गति करन स्वामी, पंच पद प्रापति भये!
ते होहु भवि जीवन सदा, दुखहरन जिन चरणन नये॥

इत्याशीर्वादः।

इति धातुकी खण्ड द्वितीय मेरु पूजा।

अथ पुष्करद्वीप पूजा।

अडिल्ल छन्द।

पुष्करार्द्ध वर दीप मेरु युग जहं परे।
योजन सहस चौरासीके उन्नत खरे॥
नागदत्त वसु कुलगिरि द्वादश जानिये।
वसु युग सरिता पूर्व अपर परमानियै॥
तहं जिनचारण मुनिवर विहरत हैं सदा।
तिन आह्वानन करो त्रिविध करिके मुदा॥६२॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीप सर्व शोभा सहित तत्र जिनालय जिन-मुनिराज सर्वात्रागच्छागच्छ संवौषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टकं।

(चाल- शांतिनाथजूके पाय, सुकारण पूजत हो, इस चालिमें)

कंचन झारी सुरगंगाको, शीतल जल भरि धारी।
श्री जिन चरण प्रक्षालो प्रानी, रोग त्रिषा निरवारी॥
सुकारण पूजत हो॥

श्री पुष्करार्द्ध वर द्वीप सु तारण तरण यजौं।
जह मेरु युगम गत आदि सकल जिन चरण यजौं॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीपगत सर्व जिनालय जिनमुनिभ्यो जलम्॥ ६३॥

बावन चन्दन दाह निकन्दन, शीतल जल सम गारो।
सो लेके जिनपद युग पूजो, दाह दुरित सब टारो॥
सुकारण पूजत हो, श्री पुष्करार्द्ध०॥ ६४॥
ॐ ह्रीं चन्दनं॥

बहु गुण मंडित सालि अखण्डित, निरमल नीर पखारो।
सो लेके जिन चरण यजौं, भवि अक्षै मग पग धारो॥
सुकारण०॥ ६५॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥

कनक कुसुम सुरतरुके नीके, पंच बरन फुनि ल्यावो।
अलिगन गुँजित द्रग मन रंजित, लै जिन चरण चढ़ावो॥
सुकारण०॥ ६६॥ ॐ ह्रीं पुष्पं॥

गूजा फेनी पुरी सुहारी, घावर भारी नीको।
बहु विध अरु पकवान बनाओ, तुरत गऊके घीको॥
सुकारण पूजत हो० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं।

कनक थाल भरी दीप रतनमय, जगमग जोति उजारी।
आरति करू जिन चरण कमलकी, मोह महातम टारी॥
सुकारण पूजत हो, श्रीपुष्करार्द्ध० ॥६८॥ ॐ ह्रीं दीपं।

कृष्णागर वर धूप दशांगी, पावक संगी खेवो।
श्री जिनजीके चरणनु आगै, कर्म जरे स्वयमेवो॥
सुकारण पूजत हो, श्री पुष्करार्द्ध० ॥ ६९ ॥
ॐ ह्रीं धूपं।

फल फाम्र उत्कृष्ट सरस लै, जिनपद आगै धारो।
तोरि सकल संसार जालको, शिवपुर बाट निहारो॥
सुकारण पूजत हो, श्री पुष्करार्द्ध० ॥ ७० ॥
ॐ ह्रीं फलं।

जल चन्दन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल ल्यावो।
अर्घ बनाय श्री जिन पूजे, शिवपुरमें चिर जीवे॥
सुकारण पूजत हो, श्रीपुष्करार्द्ध वरदीप सुतारणतरण भजो।
जह मेरु जुगमगत आदि, सकल जिनचरण भजो॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीप जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ पुष्करार्द्ध द्वीप पर्वत मेरु पूजा ।

सुन्दरी छन्द ।

द्वय विदेह परापर जानियै, भरत ऐरावत परमानियै ।
तुरीय मेरु चतुरदिशि जिन भजो, त्रयनहुप पांडुकवन जिन यजो ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरव मेरु पांडुक चतुः शिलोपरि जितवन सहित पूरव अपरविदेह भरत ऐरावत जिनेभ्यो अर्घं ।

तुरी मेरु सु पांडुक वनविषैं, जिन जिनालय चहुदिशि श्रुत लिखैं ।
तिन चरण पूजो तन मन ल्यायकै, जल फलादिक अघ बनायकै ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध चतुर्थ मेरु पांडुक वन चतुर्दिशि चतुश्चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ७३ ॥

तुरीय मेरु सु वन सोमनस है, तहं जिनालय चहु शोभा लसै ।
पर अपर दक्षिण उत्तर भले, जजत जिनपद वसुविधि अघ दलै ॥

ॐ ह्रीं चतुर्थ मन्दर मेरु सोमनस वन चतुर्दिश चतुश्चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ७४ ॥

तुरीय मेरु विपन घर वर मही, नाम नन्दन वन जाको सही ।
तहां जिनालय चहुंदिश राजते, यजत जिनपद सब दुख भाजते ॥

ॐ ह्रीं नन्दनवन चतुश्चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ७५ ॥

भद्रसाल सु भूपर सार है, वन चतुरदिशि जिन ग्रह चार हैं ।
जल फलादि लई पूजा करो, जिन चरणयुग निज हियमें धरो ॥

ॐ ह्रीं भद्रशालवनचतुश्चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ७६ ॥

तुरिय मेरु मतंग रदन विषै, चारिचैत्यालै जिनश्रुत लिखे।
शुद्ध मन वचन त्रिय हूजियै, लै जलादिक वसुविध पूजियै॥
ॐ ह्रीं तुरीयमेरु गजदन्त चारि विदिशनविषैं तत्र जिनालय जिनेभ्यो अर्घं॥ ७७॥

अथ कुरुवृक्ष पूजा।

अडिल्ल छन्द।

जम्बू-धातुकीवत तरवर युग राजही,
दक्षिण उत्तर गत सो भात हु छाजही।
पुष्कर नाम जिनालय युग जह सोहए,
यजो चरण जिनराज दर्श मनमोहए॥
ॐ ह्रीं पुष्करद्वीप चतुर्थमेरु कुरुवृक्ष युग जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ७८॥

तुरीय मेरु मन्दिर निषधाचल जानिये,
कूट सुनव जिन ग्रेह तहां प्रमानिये।
पूजत जिनपद सुर विद्याधर आयकै,
हम हूं तिन पूजैं वसु द्रव्य चढ़ायकै॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध द्वीप मन्दरमेरु सम्बन्धी निषिधाचल नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ७९॥

निषध नील विच भोगभूमि उत्कृष्ट है,
भोग करत जहां आरज जनमन इच्छ है।

तह चारण मुनि क्रम जुग पूजन कीजिये,
जलफलादि करि वसुविध अर्घ सु दीजियै ॥

ॐ ह्रीं पुष्कर द्वीप मन्दिरमेरु सम्बन्धी निषध नील बंच उत्तम भोगभूमि तत्र चारण मुनिभ्यो अर्घं ॥ ८० ॥

तुरीय मेरु निषधाचल ऊपर सार है,
नाम तिगन्छ द्रह बिच कमल सु ठार है।
तह धृतिदेवी गृह जिनमन्दिर राजई,
पूजै चरण सु जिन प्रतिमा अर्घ भाजही ॥

ॐ ह्रीं निषिधाचलोपरि तिगंछ द्रह बीच कमल मध्य धृति-देवी गृह जिनेन्द्रेभ्यो अर्घं ॥ ८१ ॥

तासु तिगन्छ द्रह सैंयुग सरिता वही,
कृष्णकांता सीता नाम सु है सही।
तिनतटवासी देवसेव जिनकी करै,
तिन ग्रह जिन प्रतिमा बिंब पूज पद शिव वरे ॥

ॐ ह्रीं तिगंछ द्रह गत सु सीता कृष्णकांतातट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८२ ॥

तुरीय मेरु दक्षिण हिमवान महान हैं,
कुलगिरि जाको नामसु सब सुखयान है।
कूट सुरसु जिस ऊपर सुन्दर देखिये,
तह जिन भवन यजै जिन पुण्य विशेखिये ॥

ॐ ह्रीं तुरीयमेरु दक्षिण महाहिमवनोपरि अष्टकूट जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं ॥ ८३ ॥

निषध महाहिमवन विच मध्यम भोग भू,
तह चारण मुनि यजो चरन युग फुनिस्व भू।
जल फल अर्घ बनाय ल्याय द्रवि भार जू,
नाचौं गाय बजाय सु दै दै तार जू॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूरब मेरु दक्षिण दिशि निषिद्ध महाहिमवत बीच भोगभूमिगत चारण मुनिभ्यो अर्घं॥ ८४॥

महाहिमवान् शिखरि महापद्म द्रह भलौ,
तासौं युग सरिता निकसी जल निरमलौ।
नाम हरित रोहित सागर विच जे मिली,
तिन तट पूजौं जिनग्रह जिन प्रतिमा भली॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान शिखरगत महापद्मद्रहसो निकसीनदी दोय नाम हरितरोहित तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ८५॥

महाहिमवन महापद्म द्रह विच सार है,
वारिज मध्य ह्रीं ग्रह जह सुखकार है।
तहां जिन मंदिर जिन प्रतिमा पद पूजिये,
जल फल अर्घ बनाय सु हर्षित हूजिये॥

ॐ ह्रीं महाहिमवान महापद्मद्रह मध्यकमलव च ह्रीं देवी ग्रह तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ८६॥

हिमवत परवत कूट सु नव युत जानियै।
तह जिन मंदिर एक एक परमानियें॥
सुर ग्रह वसु कूटनु सिद्धायतन एक है।
तिनहूमें जिन पूजौ धरि सु विवेक है॥

ॐ ह्रीं हिमवतोपरि नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ८७ ॥

पर हिमवत पर्वत पद्म द्रह है सही।
मध्य पद्मश्री देवी गृह जानौं तही॥
तह जिन मंदिर जिन प्रतिमापद पूजते।
जल फल अर्घ बनाय सु सुरपति हूजते॥

ॐ ह्रीं हिमवतोपरवतपरि पद्मद्रहमध्य पद्म व च श्रीदेवीगृह-जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ८८ ॥

महाहिमवन हिमवत बिच क्षेत्र सु जानिये,
नाम जासु हरिवर्ष सदा परमानिये।
भोगभूमि सु जघन्य तहां चारण मुनि,
पूजों पद विहरत जिनवर बहुविध करि गुनी॥

ॐ ह्रीं महाहिमवत बीच हरिवर्षक्षेत्र जघन्य भोगभूमि तत्र विहरमान चारणमुनि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ८९ ॥

हिमवत पर्वत पद्म द्रहतैं जो चली।
गंगा सिंधु रोहित त्रय सरिता भली॥
तिन ग्रटवासी देव सेव जिनवर करैं।
तिन गृह जिन प्रति पूजत सब पातिक हरे॥

ॐ ह्रीं हिमवतपरवतोपरि पद्मद्रहसे निकसी गंगासिंधु रोहिततट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ९० ॥

दोहा।

पुष्कर मंदिर मेरुके, दक्षिणगत जिन ग्रेह।
तिन पद पूजों भावसौं, उर धर परम सनेह॥ पूर्णार्घं॥

अथ उत्तर दिशि पूजा।

सुन्दरी छन्द।

पुष्करारध पूरव मेरु जिम, नील पर्वत उत्तर है सु दिश।
धातुकी तैं दुगुन परो सही, थूरु उच्च सुयोजन जिन कहीं॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध चतुर्थमेरु नीलगिरी धातुकी नीलतैं द्विगुण-थूलेच्च व्यालवलयनकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ९२॥

निषिद्ध नील सु बिच जानो सही, भोगभूमि उत्कृष्ट सुगुरु कही।
निषिद्ध क्षेत्र सु मुनि चारण तहां, पूजिये पद करि उत्सव महा॥

ॐ ह्रीं निषध नील बीच उत्तम भोगभूमि क्षेत्र चारणमुनिभ्यो अर्घम्॥ ९३॥

नील पर्वत ऊपरि केसरि द्रह विषैं, कुंज बीच बसे सुरी।
नाम कीरतिदेवीके सु गृह, जिन जिनालय पूजौं चरण मह॥

ॐ ह्रीं नीलपर्वतोपरि केशरि द्रह कमल बीच कीरतदेवी ग्रह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ९४॥

केशरी द्रहसेती युग सरिता निकसी, आपुसमें करिके सु हित मिली।
सागर बिच दोउ सुहृद, तसु पुलिन गत जिन यजौं सुखद॥

ॐ ह्रीं नीलाचलकेशरीद्रह निर्गत नारी सीतोदा नदी पूर्वापर समुद्रगामिनी तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ९५॥

रुक्मगिरि वसु कूट सुहावनौं, मेरु मन्दिर उत्तर पावनौं।
तहां जिनालय जिनप्रतिमा यजौं, अघ वसुविधि थाल विषैं सजौं॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वतोपरि अष्टकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥९६॥

नील रुक्म सु बीच प्रमानिये, भोगभूमि सु मध्यम जानिये।
तहां सु चारण मुनिपद पूजिये, अर्घ कर सुर शिवसुख भूजिये॥

ॐ ह्रीं नीलरुक्म मध्यम भोगभूमि तत्र चारणमुनिभ्यो अर्घं॥ ९७॥

रुकम पर्वत ऊपर मध्य द्रह, पुंडरीक कमल बिच जानि ग्रह।
बुद्धिदेवीको तहं जिन भवन, पूजिये वसुविधि करि गुणस्तवन॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वतोपरि पुण्डरीकद्रहमध्य बुद्धिदेवीगृह जिनालय जिनेभ्यो अर्घं॥ ९८॥

पुंडरीक सुद्रह सरिता युगमनिकरि, चाली चल जिनको अगम।
स्वर्णकूला नरकांता तथा, तहां जिनालय जिन पूजौं जथा॥

ॐ ह्रीं रुक्मपर्वतोपरि पुण्डरीक द्रह निर्गत सुवर्णकूला नरकांता नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ९९॥

तुरीय मेरु उत्तर दिशमें परो, नाम शिखर कुलाचल भूवरो।
कूट एकादश युत सोलसै, तहां सु जिनप्रति पूजत अघ नसै॥

ॐ ह्रीं तुरीय मेरु उत्तर शिखर कुलाचल एकादश कूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ १००॥

शिखिर पर्वत ऊपर है सही, पुंडरीक महाद्रह जिन कही।
कमल बीच लक्ष्मीदेवी सु गृह, अर्घ लै जिनप्रति पूजौं सु तह॥

ॐ ह्रीं मन्दरमेरु उत्तर शिखर कुलाचलोपरि महापद्मद्रह मध्य कमलबीच लक्ष्मीदेवीगृह तत्र जिनालय जिनेभ्यो अर्घं॥ १॥

अडिल्ल छन्द।

पुंडरीक महद्रहसे निकसी त्रय नदी जाय मिली,

सागरमें न आई फिर कही, रुप्यकूल रक्तारक्तोदा नाम है।
तासु कूल जिन प्रति पूजौं सुखधाम है॥

ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि महापद्म द्रहसे निकसी रुप्यकूला रक्ता रक्तोदातट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

रक्ता शिखर बिच, भोगभूमि सु जघन्य है।
दान देय नर भोगत भोग, सु धन्य है॥
चारण मुनि तहं विहरत, जिनपद अरचिये।
अर्घ बनाय गाय गुण, तन मन परचिये॥

ॐ ह्रीं रुक्मशिखर मध्य जघन्य भोगभूमिगत चारणमुनिभ्यो अर्घं॥ ३॥

पुष्करार्ध पर मेरु दक्षिण दिश राजही,
भरतक्षेत्र सु नाम अधिक छवि छाजही॥
मध्य जम्बू विजयारध पव्वत सार है।
कूट सु नव जिन करम वसु नार है॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्वमेरु दक्षिण भारतगत विजयार्ध नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४ ॥

विजयार्ध युग श्रेणि दशोत्तर शतपुरी।
वस जहां विद्याधर क्रीडति सुरसुरी॥
तह जिनमंदिर सार, सु जिन पूजो सही।
अर्घ बनाय गाय गुण गुरु गौतम कही॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरवमेरु दक्षिण विजयार्द्ध युगश्रेणी दशोत्तर-शतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ५॥

पुष्करार्द्ध पूरब मंदिर मनमोहए।
दक्षिण ऐरावत विजयार्द्ध सोहए॥
कूट सु नव जिनगेह यजो सुख आकृति।
जिस फल पायो स्वर्ग मुकति सुख शाश्वती॥

ॐ ह्रीं तुरीयमेरु उत्तर ऐरावत विजयार्द्ध नवकूट जिनालय जिन दशोत्तरशतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ६ ॥

तुरीय मेरु ऐरावत विजयारध विषै।
नगर दशोत्तर शत जिनमंदिर सुन लिखै॥
तह जिनराज चरनयुग पूजों भावसौं।
वसुविध अघ घनाय शुद्ध मन चावसौं॥

ॐ ह्रीं तुरीयमेरु उत्तर ऐरावत विजयार्द्ध दशोत्तरशतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ७ ॥

घत्ता-दोहा।

पुष्करार्ध पर मेरुके, दक्षिण उत्तर सार।
नदी शैल द्रह जिन यजो, लै वसु द्रव्य अपार॥

ॐ ह्रीं पूर्णार्घं ॥ ८ ॥

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जै केवल दिनकर मोह तिमिर हरं,
भव्य कमल परकासन भासन जगधरं।
चिन्मय सुन्दर विनत पुरंदर पद सदा,
ज जै जै कृत सुकृतनमैं भवि सर्वदा॥

पद्धड़ी छन्द।

जै महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकलपद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिम्ब नमों पद कमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चरन नमो हिय धरो ध्यान ॥ गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसु शततनु सहित एव ॥ गि०
जय निराबाध वज्रास्तिकाय, निरमंब अंग शोभे सुहाय ॥गिरि०॥
जय सदा कोटि रविधुति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत। गि०
विश्वम्भर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद ॥गि०
जय पुण्य क्षेत्र संचारनशील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील। गि०
जय सुरग मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नाशाग्र अक्ष ॥ गि०॥
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, मह शर्म वीर्य जिनको न अन्त ॥गि०॥
वसु गुन रतनतुके हैं भण्डार, जैवन्ते वरतो जगमंझार।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिम्ब नमों पद कमल तेह ॥

घत्ता—दोहा।

वसु द्रव्य कर जिनबिम्ब पूजों, मन वचन तन चावसौं।
नर सुरगके सुख भोगिकरि, फिरि मुकतिपुर घर जा वसौं ॥
जाकै सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये।
ते होहु तुमको सदा जयवन्ते, सु जिन गुण गाइये ॥

इत्याशीर्वादः।

इति पुष्करार्द्ध मंदिरमेरु उत्तर दक्षिण संपूर्णम्।

अथ पूर्व पश्चिम विदेह पूजा, तत्र प्रथम पूर्व विदेह पजा।

सोरठा।

पुष्करार्द्ध पर मेरु, मंदर पूर्व विदेहके।
षोडश क्षेतरकेर, तिन जिन थापन हम करै ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूर्व मंदरमेरु पूर्वविदेह पद्मादि षोडशक्षेत्र खट्खण्ड मण्डल तीर्थंकर चक्रवर्त्यादिक विहरमान जिनात्रावतर-वतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं।

चाल-पूजौ चरण सु पारसनाथके।

सुर गंगाजल निर्मल ल्याय, रत्न जडित भृंगार भराय।
जोरि जुगपानि पूजौं चरण, जिनेश्वर जानि ॥
पुष्करार्द्ध पर मेरु विदेह, चन्द्रबाहु भुजंगम जेह।
जोरि जुगपानि चरण जिनेश्वर जानि ॥
चन्द्रबाहु भुजंगम येह, पुष्करार्द्ध पर मेरु विदेह।
चंद्रबाहु भुजंगम जेह ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरब मेरु चंद्रबाहु भुजंगम जुग तीर्थंकर विहरमान जिनेभ्यो जलं ॥ ११ ॥

चन्दन घिसि करपूर मिलाय, केशर अवर सुगन्ध धर ल्याय।
जोरि० जुग० ॥ पुष्करा० ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पूरब मेरु युग जिनेभ्यो सुगंधम् ॥ १२ ॥

अगर सुगंध कूट करि शालि, ले भवि निर्मल जल परछालि।
जोरि० पुष्करार्द्ध० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं।
केतुकि चंपक अर सुगंध, कूट करि साल।
लै भवि निमल जल परछाल ॥
जोरि० पुष्करार्द्ध० ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं।
मोदक गूझा सरस बनाय, अमृत पिंडसम थाल भराय।
जोरि० पुष्करार्द्ध० ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं।
कञ्चन दीप रतनमय सार, गौ घृत चौमुख बाती बारि।
जोरि० पुष्करार्द्ध० ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं दीपं।
कृश्नागर कर्पूर मिलाय, चंदन दशविधि धूप बनाय।
जोरि० पुष्करार्द्ध० ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं धपं।
दाख छुहारे और बादाम, लौंग सुपारी फल अभिराम।
जोरि० पुष्करार्द्ध० ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं फलं।
जल फल आदि दरवि वसु धारि, अर्घ अग्र जिनचरण उतारि।
जोरि जुगपानि, पूजो चरण जिनेश्वर जानि ॥
पुष्करार्द्ध पर मेरु विदेह, चन्द्रबाहु सुजंगम जेह ॥ १९ ॥
ॐ ह्रीं अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

सुन्दरी छन्द।

पुष्करार्द्ध पूरव जानियै, तुरीय मंदर बखानियै।
तासुपर निश्चि जानि विदेहवर, है सो षोडश जिन पूजौं सु घर॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरब मेरु पूरबविदेहके पद्मादि षोडशक्षेत्र षट्खण्डमण्डत तथ चक्रवर्तादिक विहरमान श्री जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं।

तहसु विजयारध षोडश लसै, कूट नगरी युत सुरपुर हसै।
तह जिनालय जिन पूजा करौ, अर्घ वसुविधि कर भवदुख हरौ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरब मेरु पूरबविदेह षोडश विजयारध कूट॥ ॥ २४४-१७६०॥ तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

तहसु वसु राजत वक्षारगिरि, लसत जिन ऊपर नव नव शिखर।
तहं जिनालय जिन प्रतिमा यजौं, अर्घ वसुविधि थाल विषैं सजौं॥

ॐ ह्रीं वसु वक्षारगिरि नव नव कूट द्वसप्तति जिनालय-जिनेभ्यो अर्घं॥ २२॥

तहं विभंगा नदी सु जानियै, षट् द्विगुण संख्या परमानियै।
तिन पुलिनगत जिनग्रह पूजियै, शुद्ध मनवचतन त्रय हूजियै॥

ॐ ह्रीं द्वादश विभंगा नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥२३॥

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जै केवल दिनकर वर मोह तिमिर हरं।
भव्य कमल परकाशन भासन जग घरं॥

चिन्मय सुंदर विनत पुरंधर पद सदा।
जै जै जै कृत सुकृत नमैं भवि सर्वदा॥

पद्धडी छन्द।

जय महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकलपर पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चारण नमौं हिय धारो ध्यान॥गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षणवसु शततनुमहित एव।गि०
जय निराबाध वज्रास्थिकाय, निरभंग अंग शोभे सुभाय।गि०
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत॥गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद।गि०
जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील॥गि०
जय सुरग मुकतिपद दानदक्ष, शुभ ध्यान लीन नासाग्र अक्ष॥गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, महशर्म वीर्य जिनको न अंत॥गि०
वसु गुण रतननुके हैं भण्डार, जैवन्ते वरतो जगमझार।
नगरि सिद्धकूट द्रह चैत्यगेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह॥

घत्ता-दोहा

जे जिनग्रह द्रह क्षेत्र गिरि, नदी तटादिक जानि।
तिन बिच जिन प्रतिमा चरन, नमो जोरि जुगपानि॥

अडिल्ल छन्द।

पुष्करार्द्ध पूरब विदेह पूरब विषैं,
षोडश क्षेत्र विदेह जैन शास्तर विषैं।
तहां जिनकी जयमाल सुभाषो गायके,
सुनै भव्य दे कान सु मन हरषायके॥

गीता छन्द।

वसु द्रव्य करि जिनबिंब पूजो, मन वचन तन चावसों
नर सुरगसे सुख भोगि करि, फिर मुकतिपुर घर जावसों॥
जाके सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइयै।
ते होहु तुमको सदा जयवंते, सु जिन गुन गाइयै॥

इत्याशीर्वादः।

इति पुष्करार्ध पूरव मेरु विदेह पूजा।

अथ पश्चिम विदेह पूजा।

अडिल्ल छन्द।

पुष्करार्द्ध पर मेरु अपर दिशिमें महा,
षोडश क्षेत्र विदेह जानि जिनवर तहां।
ईश्वर नेमीश्वर जिन नाम बखानियै,
तिन आह्वान करी पूज जिन ठानियै॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं।

चाल वीर जिनन्दकी।

क्षीरोदधि जल ल्यायकैजी, कञ्चन झारी भराय।
श्री जिनचरण प्रक्षालियेजी, रोग त्रषा न रहाय॥
भविकजन श्री जिनवर सुखदायक, पुष्करार्द्ध पर मेरकेजी।
अपर विदेह सु जानि, नेमी ईश्वर युग जिनचरनजी॥

सेवो परम सुजानि भविक जन, श्रीजिनवर गुणखानि ॥

भविकजन० ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध मेरु पश्चिमविदेह सुर नेमीश्वर जिनेभ्यो जलं ।

वामन चन्दन यामनो जी, अर घनसार मिलाय।
श्री जिनपद युग पूजतें जी, दाह दुरित मिट जाय ॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं चन्दनं ।

कुंद कुसुम शशि किरण सम जी, तंदुल विमल पखारि ।
जिन आगे वर पूजते जी, अक्षय मग पग धार ॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ।

कुसुम कल्पतरुके भले जी, हेम रजतमय ल्याय।
श्री जिन चरण चढ़ाइये जी, कामबाण सु नसाय ॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ।

मिश्री पायस घी मिले जी, कंचन थार भराय।
बहु पकवान बनायके जी, श्री जिन चरण चढ़ाय ॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ।

तिमिर हरण जगमग तजे जी, जिनकी जोति अमंद ।
दीप रतनमय ल्यायकै जी, पूजो चरण जिनंद ॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ।

अगर कपूर सुगंध दशो विधि, धूप दहन विच खेय ।
पाप धूम सब उड़ चलै जी, श्री जिन पूजा करेय ॥
भविक० ॥ पुष्कर० ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ।

श्रीफल भारी लायची, बादाम छुहारे लेउ।
पिस्ता किसमिस दाख ले जी, श्री जिन पूज करेउ॥
भविक०॥ पुष्कर०॥ ३४॥ ॐ ह्रीं फलं।

जल फल अर्घ बनायके जी, नाचो गाय बजाय।
मन वच काय लगायके जी, पूजो श्री जिनराय॥भविक०॥
पुष्करार्द्ध पर मेरुके जी, ऊपर विदेह सु जानि।
नेकीश्वर युग जिन चरण जी, सेवो परम सुजानि॥
भविकजन श्री जिनवर गुण खानि॥ ॐ ह्रीं अर्घं।

सीतोदा दक्षिण उत्तर तट जानिये,
पद्मादिक षोडश विदेह परमानिये।
तीर्थंकर चक्रादिक करि भोगत सदा,
जिन पद पूजो जिन लै जिन पूजौं मुदा॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरब मेरु पश्चिमविदेह पद्मादि षोडशक्षेत्र षट्खंड मंडित वर्तमान तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि भोग बिहरमान जिनेभ्यो अर्घं।

वसु वक्षार महीधर श्रीधर राजही।
जिनके ऊपर हैं नवकूट विराजही॥
द्वादश सप्तति जिनमंदिर जिन प्रति पूजिये।
जल फल अर्घ बनाय सु हरषत हूजिये॥३७॥

ॐ ह्रीं वसु वक्षारगिरि नवतिकूट जिनालय जिनेभ्यो अर्घं।

द्वादश तहां विभंगा नदी सु जिन कही।
तासु पुलिन गत चैत्यालय है सही॥

तह वासी सुर विचरें फुनि जानिये।
जल फल अर्घ बनाय सुपूजन ठानिये ॥ ३८॥
ॐ ह्रीं द्वादश विभंगानदी जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

षोडश विजयारधगिरि तिनहू पर परे।
कूट सु नव युत नगर दशोत्तर शत हरे।
तिन बिच जिन मंदिर जिन प्रतिमा पूजतें।
जल फल अर्घ बनाय सुभव दुख छूटते ॥३८॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध चतुर्थमेरु पश्चमविदेह षोडश विजयार्द्ध एकसैचवालीस कूट ॥ १४४ ॥ एकहजारसातसैसाठ ॥१७६०॥ जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जै केवल दिनकर वर मोहि तिमिर हरं।
भव्य कमल परकाशन भावन जगधरं ॥
चिन्मय सुंदर विनत पुरन्दर पद सदा।
जै जै जै कृत सुकृत नमैं भवि सर्वदा ॥

पद्धड़ी छंद।

जै महाघाति विधि विघनचक्र, कृत नाश सकल पद पूज्यशक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमौं पद कमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चरण नमौं हिय धरौं ध्यान ॥ गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसुशत तनु सहित एव। गि०

जय निराबाध वज्रास्थिकाय, निरभंग अंग शोभै सुभाय ॥गि०
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातहार्य शोभा लसंत॥गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद ॥गि०
जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सुशील ॥गि०
जय सुरग मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यान शील नाशाग्र अक्ष॥गि०
दरशन अनन्त पुन ज्ञानवंत, मह शर्म वीर्य जिनको न अन्त॥गि०
वसु गुण रतननुके है भण्डार, जयवन्ते वरतो जग मझार।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह ॥

दोहा।

पुष्कराद्धं पर मेरुके, अपर विदेह मझार।
जिनवर जिन प्रतिमा चरण, वंदौं सब सुखकार ॥

गीता छन्द।

वसु द्रव्य कर जिन बिंब पूजो, मन वचन तन चावसौं।
नर सुरगके सुख भोगकर, फिर मुकतिपुर घर जा वसौं ॥
जाके सुफल करि तीर्थंकर, हरि प्रमुख पदवी पाइयै।
ते होहु तुमको सदा, जयवन्ते सुजिन गुण गाइयै ॥

इत्याशीर्वादः।

इति पश्चिम विदेह पूजा।

अथ पुष्करार्द्ध चतुर्थ मेरु भरतक्षेत्र जिन पूजा।

दोहा।

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, दक्षिण भारथ तीत।
गत नागत जिनको करों, आह्वानन सुनि मीत॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध तुरीय मेरु भारतक्षेत्र तीत जिनालय अत्रावतरावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं।

ढाल—कातिकाकी।

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, भारथ दक्षिण जानि।
प्राणी तीत सु गत नागत, यजो होय पापकी हानि॥
प्रासुक जल ले सीयरो, सुर गंगाको सार।
श्री जिन चरण प्रक्षालिये, रोग त्रिषा निरवार।
प्राणी० पुष्करार्द्ध०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध तुरीयमेरु भारततीत जिनेभ्यो जलं।

दाहक नन्दन चन्दना, अर घनसार मिलाय।
प्राणी जिन पद अरचन कीजिये, भव आताप मिटाय॥
प्राणी० तीत०, पुष्करार्द्ध०॥ ॐ ह्रीं चन्दनं॥

तार हार, शशिकिरण सम, तंदुल विमल पखारि।
प्राणी जिनपद अग्र सु पुञ्ज देउ, तन मन करि निउ क्षारि॥
प्राणी० तीत०, पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं॥

जाती सेउती मालती, कुसुम मनोहर ल्याय।
प्रानी भरकर अंजुली लीजिये, श्री जिन चरन चढ़ाय॥
प्राणी० तीत० पुष्करार्द्ध० ॐ ह्रीं पुष्पं।

व्यंजन नाना भांतिके, बहु पकवान बनाय।
प्राणी श्री जिन चरण चढ़ावते, रोग क्षुधा मिटि जाय॥
प्राणी० तीत० पुष्करार्द्ध ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं।

रत्न जटित दीपक भले, गो घृत वाती वालि।
आरति करि जिन चरणकी, मोह तिमिर सब टालि॥
प्राणी० तीत०, पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं दीपं।

कृष्णागर करपूर ले, एला लौंग मिलाय।
प्राणी पूजि चरन युग जिन तनै, मोक्ष सु फल दातारि।
प्राणी० तीत०, पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं फलं।

जीवन चन्दन आदि दै, वसु विध अर्थ संजोय।
प्राणी जिनपद युग पूजा करो, नाश कर्म वसु होय॥
प्राणी० तीत० पुष्करार्द्ध० ॥

पुष्करार्द्धपर मेरुके, भारत दक्षिण जानि।
प्राणी तीत जिनेश्वर पूजियै, जन्म जरा मृत हानि ॥५०॥
ॐ ह्रीं अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

मदन इन्द्र सु जिनको नाम है, कोटिमदन सु सम दुति धाम है।
पुष्करार्ध भारत भूत जिन, तुरीयमेरु यजो पद कमल तिन ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरवमेरु भारतक्षेत्रगत मदनेन्द्रजिनाय अर्घं ॥१॥
सुभूरति जिन नाम महेश्वरं, कोटि सूरज समतन द्युति धरं।
पुष्करार्द्ध भारत भूत जिन, तुरिय मेरु यजो पद कमल तिन ॥
ॐ ह्रीं सुभूरति जिनाय अर्घं ॥ २ ॥
जिन निराग सु राग द्वेष क्षत, नाम सारथ धारक है मुकत।
पुष्क० ॐ ह्रीं निराग जिनाय अर्घं ॥ ३ ॥
प्रलंबित जिन नाम बखानियौ, प्रलंबित तिहु जग जश जानियौ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं प्रलम्बजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥
नाम पृथ्वीपत जिनको कह्यौ, त्रिजगपति करि जिन पूजन लह्यौ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं पृथ्वीपतये नमः अर्घं ॥ ५ ॥
चारु चारित पालित जिन कह्यौ, नाम चारितनिधि जिनको परयो।
पुष्करा० ॥ ॐ ह्रीं चारित्रनिधये अर्घं ॥ ६ ॥
नाम अपराजित जिनराज हैं, पुर अजीत सुधारण काज है।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं अपराजिताय अर्घं ॥ ७ ॥
बोध निजकरि बोधित भव्य जिन, सुबोधक जिन नाम कह्यौ सुतिन।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं सुबोध जिनाय अर्घं ॥ ८ ॥
नाम वैतालिक जग सार हैं, ताल दस उन्नतवर धार हैं।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं वैतालिकजिनाय अर्घं ॥ ९ ॥

बुद्धिसागर जिन बुद्धेश प्रभ, वीतराग निराकुल करन मन।
पुष्करार्द्ध भारतभूत जिन, तुरीय मेरु यजो पद कमल तिन॥
ॐ ह्रीं बुद्धिसागराय अर्घं॥ १०॥

त्रिमुष्टिक जिन नाम कह्यो सुगुरु, जिन चरण पूजत नर सुर असुर।
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं त्रिमुष्ठिजिनाय अर्घं॥ ११॥

नाम मुनिबोधक जिन जग प्रगट बोधककरन सुगन मुनि आदि घट
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं मुनिबोधकजिनाय अर्घं॥१२॥

महातीरथ स्वामि सु नाम है, तीर्थस्वामि महा गुण धाम है।
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं तीर्थस्वामिने अर्घं॥ १३॥

धर्म अधिपति धर्म अधीश जिन, धर्म धारक नर पूजत सु तिन।
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं धर्मधीशजिनाय॥ १४॥

क्षमा धारनको यो धरनि सम, नाम जिन धरनेश कह्यो सुगम।
पुष्क० ॐ ह्रीं धरनेशजिनाय अर्घं॥ १५॥

प्रभव जिनको नाम सु गाइयो, प्रभाधीश जगतपति धाइयो।
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं प्रभवजिनाय अर्घं॥ १६॥

नाराच—छन्द

अनादि देव देव सेव करत है सदा सही।
सु पाद पद्म चारु चित्त धारु तिन सुगुरु कही॥
सु पुष्करार्द्ध पूर्व मेरु भरतक्षेत्र जानिये।
तहां जिनन्द भूतपाद पूजहूं सु ठानिये॥
ॐ ह्रीं अनादि देवाय अर्घं॥ १७॥

अनादि प्रभु नाम पर्व धाम तीर्थंकर सदा।

वृषोपदेश देत भव्य हेत स्वर्ग संपदा ॥

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं अनादि प्रभु जिनाय अर्घं ॥ १८ ॥

सु सर्व तीर्थ नाम नाम अष्ट जाम कीजिये।

सु अष्टद्रव्य ल्याय पाद पद्म पूज्य कीजिये ॥

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं सर्व तीर्थाय अर्घं ॥ १९ ॥

निरूप मान तीर्थ नाथ नाम जासु सोहये।

निर्यमान रूप मान देख चित्त मोहये ॥

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं निरुपम जिनाय अर्घं ॥ २० ॥

नाम तीर्थ कर्ण हर्ण सर्व राग दोषके।

को कुमार काल मार मल्लजीत जो सके ॥

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं कामारिकाय अर्घं ॥ २१ ॥

विहार ग्रेह नामह उसे धारिये विसेषिके।

गुणानुवाद भूरि जासु सूर भाषि कोसके ॥

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं विहार ग्रहाय अर्घं ॥ २२ ॥

पृथ्वीनाथ नाम चौद मार्गणा बताइयो।

भावना सु द्वादशानुभूत अर्थ गाइयो ॥

पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं पृथ्वीनाथाय अर्घं ॥ २३ ॥

सु वात्सल्य रीतिजी प्रकाशियो त्रिलोकमें।

विकास सु नाम नित जासु ध्याइयो सु सर्ममें ॥

पुष्क० ॐ ह्रीं विकासजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा—पुष्करार्द्ध पर मेरुके, भारत तीत जिनेश।

पूर्णार्घ करि पूजियै, पूजत सुरनर अमरेश ॥ पूर्णार्घं ॥ ७५ ॥

अथ जयमाला ।

पद्धड़ी छंद ।

श्री मदन मदन जित कुमर काल, सुरभूति जिनेश्वर गुण विशाल ।
श्री पुष्करार्द्ध भारत अतीत, पर मेर नमौं कर धरि प्रतीत ॥
नीराग सु जिन नीराग धारं, प्रलवित लंवित बाहु सार ॥श्रीपु०
पृथ्वीपति नाम कह्यो सुरेश, चारित्र सु निधि नामा जिनेश ॥श्रीपु०
अपराजित नाम जिनेश जानि, सुबोध जिनेश्वर गुणनिधान ॥श्रीपु०
वैताल मोह वैतल हरन, बद्धेश जिनेश्वर भव्य सरण ॥ श्रीपु०
त्रिमुष्टक जिनको नामगाय, मुनिबोधक जिन जुग नमों पाय ॥श्री०
जय तीर्थस्वामि पद तीर्थकार, जय धर्माधीश सु धर्म धार ॥श्रीपु०
धरणेश जिनेश्वर त्रिजग ईश, जय प्रभव नाम भाष्यो गतीश ॥श्रीपु०
जयजय अनादि देवाधि देव, जय सर्व तीर्थ सुर करत सेव ॥श्रीपु०
जय निरुपम निरुपम रूपवान, कामरिकाय किय काम हान ॥श्रीपु०
जयजय सुविकासन तीर्थनाथ, नमैं कमलनयन जुगजोरि हाथ ।७६

दोहा ।

पुष्करार्द्ध पर मेरुको, भारत तीत सुजानि ।
जिन चौवीस नमौ सदा, तीर्थकर गुण खानि ॥७७॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धमेरु भारत तीत चौवीस जिनालयोभ्यो अर्घं ।

अथ वर्तमान पूजा।

सोरठा।

जल फल वसु द्रवि आनि, जगन्नाथ जिनवर भले।
पुष्करार्द्ध पर जानि, भारत गत जिनवर यजौ॥
ॐ ह्रीं जगन्नाथाय अर्घम्॥ १॥
जल फल वसु द्रवि आनि, नाथ प्रभास जिनेशजी।
पुष्करार्द्ध०॥ ॐ ह्रीं प्रभासनाथाय अर्घं॥२॥
जल फल वसुद्रवि आनि, सूर्यस्वामि जिनवर यजो।
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं सूर्यस्वामिने अर्घं॥ ३॥
जल फल वसुद्रवि आनि, श्री भरतेश महेशजी।
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं भरतेशाय अर्घं॥ ४॥
जल फल वसुद्रवि आनि, दीर्घानन जिनराज हैं।
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं दीर्घाननाय अर्घं॥ ५॥
जल फल वसुद्रवि आनि, श्री विख्यात सुजस प्रभू।
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं विख्यातजिनाय अर्घं॥
जल फल वसुद्रवि आनि, अवसानन जिनराज हैं।
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं अवसाननसाय अर्घं॥
जल फल वसुद्रवि आनि, जिन प्रवोध जिन नाम है।
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं जिनप्रवोधाय अर्घं॥ ८॥
जल फल वसु द्रवि आनि, नाथ तपोधन हैं भले।
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं तपोधनाय अर्घं॥ ९॥

जल फल वसुद्रवि आनि, पावकनाथ जिनेश हैं।
पुष्कं० ॥ ॐ ह्रीं पावकनाथाय अर्घ्यं ॥ १० ॥
जल फल वसुद्रवि आनि, त्रिपुरेश्वर जिननाथ हैं।
पुष्कं० ॥ ॐ ह्रीं त्रिपुरेशाय अर्घ्यं । ११ ॥
जल फल वसुद्रवि आनि, सौगत जिनवर नाम हैं।
पुष्कं० ॥ ॐ ह्रीं सौगतजिनाय अर्घ्यं ॥ १२ ॥
जल फल वसुद्रवि आनि, वासव नाम जिनेश हैं।
पुष्कं० ॥ ॐ ह्रीं वासवनाथाय अर्घ्यं ॥ १३ ॥
जल फल वसुद्रवि आनि, नाम मनोहर जिन कह्यो।
पुष्कं० ॥ ॐ ह्रीं मनोहराय अर्घ्यं । १४ ॥
जल फल वसुद्रवि आनि, श्री शुभ कर्म सु जिन भले।
पुष्कं० ॥ ॐ ह्रीं शुभ कर्म जिनाय अर्घ्यं ॥ १५ ॥
जल फल वसुद्रवि आनि, श्री अमलेन्द्र जिनेश्वरो।
पुष्कं० ॥ ॐ ह्रीं अमलेन्द्रजिनाय अर्घ्यं ॥ १६ ॥
जल फल वसुद्रवि आनि, नाम इष्ट सेवत प्रभू।
पुष्कं० ॥ ॐ ह्रीं इष्टसेविताय अर्घ्यं ॥ १७ ॥
जल फल वसुद्रवि आनि, धर्मवास जिनराज है।
पुष्कं० ॥ ॐ ह्रीं धर्मवासाय अर्घ्यं ॥ १८ ॥
जल फल वसु द्रवि आनि, प्रासादक जिनराज हैं।
पुष्कं० ॥ ॐ ह्रीं प्रासादकजिनाय अर्घ्यं ॥ १९ ॥
जल फल वसु द्रवि आनि, श्री मृगांक जिनराज हैं।
पुष्कं० ॥ ॐ ह्रीं मृगांकाय अर्घ्यं ॥ २० ॥

जल फल वसु द्रवि आनि, श्री अकलंक जिनेशजी ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं अकलंकाय अर्घं ॥२१ ॥
जल फल वसु द्रवि आनि, स्फाटिक प्रभ जिन जानिये ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं स्फाटिकप्रभाय अर्घं ॥ २२॥
जल फल वसु द्रवि आनि, नाम गजेन्द्र सु गाइयो ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं गजेन्द्राय अर्घं ॥ २३ ॥
जल फल वसु द्रवि आनि, ध्यान जिनेश्वर नाम है ।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं ध्यानजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा ।

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, भारतगत चौबीस ।
वर्तमान जिन पूजिये, पूर्णार्घ करि ईश ॥

अथ वर्तमान पूजा जयमाल

दोहा

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, भारतगत जिनराय ।
जिनकी अब जयमाल वर, वानी सब सुखदाय ॥

पद्धडी छन्द ।

जय जगन्नाथ जिनेश्वर स्वामी, श्री प्रभासनामा शिवगामी ।
सूर्यस्वामी रविकोट प्रभाधर, श्री भरतेश्वर नाम सुखाकर ॥
दीर्घानन जिन तिहु जगनायक, श्री विख्यातकीर्ति शिवदायक ।
अवसानन जिन जग उद्धारण, श्री प्रबोध जिन भविदधि तारण ॥
तपोनाथ विख्यात जगत जसु, पावकाख्य जिन दहत कर्म वसु ।
त्रिपुरेश्वर स्वामी जगनामी, सौगतनाथ सदा सुख धामी ॥

वासव शत वासव पूजित पद, मनोहरण पूरण सुमनोगत।
शुभ कर्मीश देह शुभ दाता, श्री अमलेन्द्र सकल गुण दाता॥
नाम इष्ट सेवित जगनामी, धर्मवास मन आपुन ज्ञानी।
श्रीप्रसाद शिवत्रिय सम किय सुख, श्रीमृगांक शशिकांत चरणमुख॥
जिन कलंक छत्रयय धारण, स्फाटिक सम जगको विस्तारण।
श्रीगजेन्द्र गजकर सम बाहु, ध्यान जिनेश्वर त्रिय जग नाहु॥४॥

घत्ता-छन्द।

वर्तमान चौबीस जिन, पुष्करार्द्ध पर मेरु।
भारत क्षेत्रनमैं चरण, कमल नैन तिन केर॥ ५॥

अथ भावी पूजा।

सुन्दरी छन्द।

क्षमा भारत रण गुणधीर है, श्री वसंतध्वज महावीर है।
पुष्करार्द्ध भारत भावि जिन, तुरीय मेरु यजो युग चरण तिन॥
जपत जिनवर नाम बखानियै, मार्दवादिक गुण पर जानियै।
पुष्करार्द्ध भारत भावि जिन, तुरीय मेरु यजो युग चरण तिन॥
॥ ॐ ह्रीं वसन्तध्वजाय अर्घं॥ १॥

जयति जिनवर नाम बखानियै, मार्दवादिक गुण पर जानियै।
पुष्करार्द्ध भावि जिन, तुरीयमेरु यजो युग चरण तिन॥
॥ ॐ ह्रीं जयत जिनवराय अर्घं॥ २॥

तीर्थंकर त्रिस्थंभ सु सार है, विघन सकल विनाशन हार है।
पु०क०॥ ॐ ह्रीं त्रिस्थंभनजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

परब्रह्म जिनेश्वर जानियै, परम पद प्राप्ति परमानियै।
पु०क०॥ ॐ ह्रीं परंब्रह्म जिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

अचालिप्त प्रभ जिनको नाम है, रोग सोग हरण शुभ धाम है।
पु०क०॥ ॐ ह्रीं अचालिप्तजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

श्री प्रवादिक नाम जिनेश हैं, वादिगज मद दलन मृगेश हैं।
पु०क०॥ ॐ ह्रीं प्रवादिकजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

भूमि आनंदन जिन नाम वर, त्यागि तन शिवसुख आनंद घर।
पु०क०॥ ॐ ह्रीं भूमिआनन्दजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

श्री त्रिनयन जिनेश्वर त्रिजगपति, तृतीयदृगवर ज्ञानधरण सुमति।
पु०क०॥ ॐ ह्रीं तृतीयनयनाय अर्घं ॥ ८ ॥

श्री विद्वांप जिनेश्वर जानियै, विदुष जनमन प्रिय परमानियै।
पु०क०॥ ॐ ह्रीं विद्वांपाय अर्घं ॥ ९ ॥

तीर्थंकर परमात्म प्रसंगवर, ब्रह्मचर्य महाव्रत धरन पर।
पु०क०॥ ॐ ह्रीं परमात्मप्रसंगाय अर्घं ॥ १० ॥

इन्द्र सुर नागेन्द्र सु पूज्य पद, भूमिहरण संघार शरीर मद।
पु०क०॥ ॐ ह्रीं भूमेन्द्राय अर्घं ॥ ११ ॥

चक्रि बल गोपाल सु सेविक्रम, नाम गोस्वामि जिनको सुगम।
पु०क०॥ ॐ ह्रीं गोस्वामिने अर्घं ॥ १२ ॥

पंचकल्याण पूजित चरण, करि कल्याण प्रवासित नाम जिन।
पु०क०॥ ॐ ह्रीं कल्याणप्रवासिताय अर्घं ॥ १३ ॥

सु मंडल जिननाम कह्यो प्रकट, भविनु धारण भव्यसागर निकट।

पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं सुमण्डलाय अर्घं ॥ १४ ॥

नाम वासव जिनवर सुखकारण, गर्भवास सु वसुधारा धरण।

पुष्करार्द्ध सु भारत भावि जिन, तुरीय मेरु यजों युग चरण तिन ॥

पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं महावासवजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

उदयदत्त जिनेश्वर नामवर, उदय कारण तीनो लोक धर।

पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं उदयदत्तजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

दिव्य जोतिष नाम सु जिन कह्यो, योतिषद्रन करि पूजन लह्यो।

पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं योतिषचन्द्राय अर्घं ॥ १७ ॥

योति घाति प्रबोध सु पाइयो, प्रबोधित जिन नाम सु गाइयो।

पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं प्रबोधिताय अर्घं ॥ १८ ॥

नाम प्रशमित जिनको जानिये, प्रशमभाव धरण परमाणिये।

पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं प्रशमजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

नाम अभयंकर जिनको परो, अभयकारण जगकारण परमेश्वरो।

पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं अभयंकराय अर्घं ॥ २० ॥

प्रमत्त जिनको नाम सुश्रुत लिखो, मुकतिरमण कटाक्ष सु जिन दिखो

पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं प्रमत्तजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

स्फार सार समाचरण करो, नाम दास्फारिक यातैं परो।

पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं दास्फारिकाय अर्घं ॥ २२ ॥

व्रत सु स्वामी जिनेश्वर नाम है, व्रतनिधीश महागुण धाम हैं।

पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं व्रतस्वामीजिनाय अर्घं ॥ २३ ॥

नाम जिन निधिनाथ सु गाइयो, धर्मनिधि स्वामी सु बताइयो।
पुष्कराद्धं भारत भावि जिन, तुरीय मेरु यजों भवि वरण तिन॥
पुष्प० ॥ ॐ ह्रीं निधिनाथाय अर्घं ॥ २४ ॥

अथ जयमाला।

दोहा—मदन दलन गुण धाम धर, पूरण परमानंद।
पुष्कराद्धं पर मेरुके, भारत भावि जिनन्द॥

पद्धड़ी छन्द।

जय जय वसंतध्वज नाम सार, जय जय जयंत जयवंत चारु।
जय त्रिस्थंभक त्रय रतन स्वामि, परब्रह्म परापति परमधाम॥
जय आवालिश जिन नाम गाय, जय परवादक परवाद हाय।
जय भूम्यानंद आनंदकार, जय त्रिनयन जग त्रिय किय उदार॥
जय जय विद्वांश महा सुमान, जय परमात्म पद धरण ध्यान।
भूमिन्द्र नाम त्रय जगत ईश, गोस्वामी महाव्रत धर महीश॥
कल्याण प्रवासित नाम जासु, हौं नमों चरण कर जोर तासु।
जय जय जगमंडल प्रगट नाम, जय महावास वसु गुणन धाम॥
जय दिव्य सु जोतिष जिन वरिष्ट, जय नाम प्रबोधित जगत इष्ट।
जय अभयंकर भय हरण जानि, जय अप्रमत्त सब गुणनुखानि॥
जय जय दारुफारिक नाम गाय, जय व्रतस्वामी जिन नमों पाय।
जय२ निधिनाथ सुमाधि सिद्धि, जय २ हिनिकर्म जिन प्रगट सिद्धि

घत्ता-सोरठा

यह जयमाल विशाल पुष्कराद्धं पर मेरुकी।
भारत भावी काल, जिन चौबीस नमों जिनै॥

ऐरावत भावि भूत वर्तमान जिन पूजा।

अडिल्ल छन्द।

पुष्करार्द्ध पर मेरु सु ऐरावत विषैं,
तीतानागत वर्तमान जिन ये अखैं।
सुरनर मुनिगण जपै नाम नित जासुकौं,
हम आह्वानन करैं त्रिविध कर तासकौ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पर मेरु ऐरावतक्षेत्र भाविभूत वर्तमान जिनागच्छागच्छ संवौषट्। ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, स्थापनं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं।

चाल—विमलनाथकी पूजाकी बासठं ठानके पाठमें।

लै रतन जटित हिम झारी,
भरि, क्षीरोदधि वर वारी।
भवि न्हाय धोय शुद्ध हुई करि,
जिन चरण कमल हियरै धरि।
पर पुष्करार्द्ध ऐरावत,
जिन भावी भूत अनागत।
जिन चरण यजो भवि प्राणी,
यातै हूजे केवल-ज्ञानी॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध ऐरावत भावीभूतवर्तमान जिनेभ्यो जलं।

मलयागिरि चन्दन गारो, जलसेती सरस सम्हारो।
हिम केशर मिश्रित करिकै, सो रतन कटोरी धरिकै॥

पर पुष्करार्द्ध० ॥ ॐ ह्रीं चन्दनं।

मुक्ताफल सरस लगावो, तासौं जिन पूज रचावो।
द्युति चन्द किरण सम धारी, तंदुल फुनि लै भरि थारी ॥

पर पुष्करार्द्ध० ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं।

प्रभु काम विनाशन हारे, जस तीन लोक विस्तारे।
तिन चरणनु आगे खासी, धरियै बहु फूल सुवासी ॥

पर पुष्करार्द्ध० ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं।

जिन दोष अठारह हारे, मय रोग क्षुधादिक सारे।
तिन पद आगै चरु सोहै, यातै अचिरजु अर को है ॥

पर पुष्करार्द्ध० ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं।

दीपककी जोत उजारी, जगमग अति तम क्षयकारी।
हिम थार धारि करू आरति, जोतिहु जग आरत पाति ॥

पर पुष्करार्द्ध० ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं दीपं।

कृष्णागर और कपूरं, लै लौंग सुचंदन चूरं।
जा खेवत पावक मांही, जातै कर्म सबै जरि जाही ॥

पर पुष्करार्द्ध० ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीं धूपं।

है फलकी जाति अपारा, कहा कहियै बहु विस्तारा।
यातै फल फासू नीके, ढिग धारि चरणन जिनजीके ॥

पर पुष्करार्द्ध० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं फलं।

जल चन्दन अक्षत पुष्पसु, चरु दीप धूप फल लै वसु।
द्रवि देह थार महि धारो, करि आरति सुगुण उचारो ॥

पर पुष्क० ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा ।

सोरठा ।

ऐरावत परमानि, कृतिन सु जिनको नाम है ।
भूत जिनेश्वर जान, चरण यजों वसु द्रव्य लै ॥

ॐ ह्रीं कृतिनजिनाय अर्घं ॥ १ ॥

ऐरावत परमानि, श्री विशिष्ट जिनवर भले ।
भूत जिनेश्वर जानि, चरण यजों वसु द्रव्यसों ॥

ॐ ह्रीं विशिष्टजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

ऐरावत परमानि, देवादित्य जिनेश हैं ।
भूत जिनेश्वर जानि, चरण यजों वसु द्रव्यसों ॥

ॐ ह्रीं देवादित्याय अर्घं ॥ ३ ॥

ऐरावत परमानि, फुनि उदिष्ट जिनवर कहे ।
भूत जिनेश्वर जांनि, चरण पजै वसु द्रव्य जानि ॥

ॐ ह्रीं उदिष्ट जिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

ऐरावत परमानि, अस्थानिक जिनराज हैं ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं अस्थानिकाय अर्घं ॥ ५ ॥

ऐरावत परमानि, प्रभाचंद्र जिनदेव है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं प्रभाचंद्राय अर्घं ॥ ६ ॥

ऐरावत परमानि, तीर्थ वेनु जिनवर भलै ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं वेनुजिनेश्वराय अर्घं ॥ ७ ॥

ऐरावत परमानि, श्री त्रिभानु जिनदेवजी ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं त्रिभानुजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥

ऐरावत परमानि, श्री वज्रांग जिनेश हैं ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं वज्रांगाय अर्घं ॥ ९ ॥

ऐरावत परमानि, अविरोचन जिन नाम है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं अविरोचनजिनाय अर्घं ॥ १० ॥

ऐरावत परमानि, श्री अपाय जिनवर भले ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं अपायजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥

ऐरावत परमानि, लोकोत्तर जिनराज है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं लोकोत्तरजिनाय अर्घं ॥ ॥ १२ ॥

ऐरावत परमानि, जलधि शिखर जिनवर भले ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं जलधिशिखराय अर्घं ॥ १३ ॥

ऐरावत परमानि, श्री विद्यानतन नाम है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं विद्यानतनजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

ऐरावत परमानि, श्री सुमेरु जिनराज है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं सुमेरुजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥

ऐरावत परमानि, भावित जिन पहचानियै ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं भाविताय अर्घं ॥ १६ ॥

ऐरावत परमानि, वत्सल श्री जिनराज है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं वत्सलजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

ऐरावत परमानि, नाम जिनालय जिन भले ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं जिनालयाय अर्घं ॥ १८ ॥

ऐरावत परमानि, तौखारिक जिन नाम है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं तौखारिकाय अर्घं ॥ १९ ॥

ऐरावत परमानि, भवनस्वामी जिनवर महा ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं भवनस्वामीजिनाय अर्घं ॥ २० ॥

ऐरावत परमानि, नाम सुकामुक जिन भले ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं सुकामुकजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥

ऐरावत परमानि, देव देवाधिप नाम है ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं देवाधिपदेवाय अर्घं ॥ २२ ॥

ऐरावत परमानि, नाम अकायक जानियै ॥ भूत० ॥

ॐ ह्रीं अकायकाय अर्घं ॥ २३ ॥

ऐरावत परमानि, विचित जिनवर अन्तमें।
भूत जिनेश्वर जानि, चरन यजौं वसु द्रव्य लैं ॥

ॐ ह्रीं विचितजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा।

भूत जिनेश्वर है सही, ऐरावत पर मेरु।
पुष्करार्द्ध पर दीपमें, पूजौं पद तिन केर ॥ पूर्णार्घं ॥

अथ जयमाला।

दोहा

सुर सुरेन्द्र पूजत चरण, मोह तिमिर किय नाश।
भव्य कमल प्रतिबोध कर, गुण गावै हम तास ॥

पद्धड़ी छंद।

श्री वेनु जिनेश्वर नाम जासु, पद नमत सुरासुर निकर तासु।
ऐरावत जिनवर वर्तमान, पर पुष्करार्द्ध वंदौं सुजान ॥

जयजय कृतनाथ सुकृति कृतार्थ, जय जय वशिष्ट जिनकरण स्वार्थ।
ऐरावत जिनवर बर्तमान, पर पुष्कराद्धं वंदौ सु जान॥
जय देवादित्य तमोपहरण, जय स्थानिक शिवथान करण। ऐ०॥
जय प्रभाचंद्र द्युतिचंद्रधार, जयजय त्रिभानु जग उदयकार। ऐ०॥
जय२ वज्रांग सुनाम गाय, अवरोधन वैर हरण सु भाय। ऐ०॥
जय जयसु अपापनि पापजानि, जय लोकोत्तर महिमाविधान। ऐ०
जय जलधि शिखिरि कलिमलि विमुक्त, जय द्योतन२ त्रिजग युक्त।
जय२ सुमेरु जग क्षोभकार, जय भवित जिनेश्वर दयाधार॥ऐ०॥
जय वत्सल भवि वत्सल सुजानि, जय नाम जिनालय सुगुणवान॥
जय२ तुषार जिन नाम सार, जय त्रिभुवन जन सुखकरणहार। ऐ०
जय मनस्वामि भवनेश जानि, जय २ सुकामिकृत काम हानि। ऐ०॥
देवाधिदेव जिन नमो पाय, जय जिन आकारिक नाम गाय। ऐ०॥
जय २ विवित जगविंद पूज्य, ब्रह्मादि नाम जिन है अदूज्य॥

घत्ता-सोरठा।

जय जयमाल रसाल, भावी तीत जिनेशकी।
ऐरावत दर हाल, पुष्कराद्धं पर मेरुकी॥

अथ वर्तमान पूजा।

चोपाई

शंकर जिन जग शंकर स्वामी, लै जलादि वसु द्रवि अभिरामी।
पुष्कर पर ऐरावत जानों, वर्तमान जिन पूजन ठानों।
ॐ ह्रीं शंकराय अर्घं ॥ १ ॥

अक्ष वास वसु कीन अक्षरन, लै जलादि वसु द्रव मन वच तन।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं अक्षरवाय अर्घं ॥ २ ॥

नगर स्वामि जिन सर्व व्याधि हर, लै जलादि वसु द्रव्य थाल भरि।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं नगरस्वामि जनाय अर्घं ॥ ३ ॥

नग्राधिप जिन नगन लसै, तन दर्शन ज्ञान चरण पूरण जिनै।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं नग्राधिपजिनाय अर्घं ॥ ४॥

पाखण्ड नष्ट जिन धारा, अष्ट कर्म जिन दये निकारा।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं नष्ट पाखण्डकाय अर्घं ॥ ५ ॥

सु प्रबोध जिन तिन जगनायक, षोडश स्वप्न मात दरसायक।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं सुप्रबोधजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

नाम तपोधन जिन गुण पूरे, द्वादश विधि तपकरण सु पूरे।
पुष्कर पर ऐरावत जानौं, वर्तमान जिन पूजन ठानौं ॥
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं तपोनिधजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥

पुष्पकेतु जिन नाम सुखकर, मार्यो जिन जग सूर कुसुम सुर।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं पुष्पकेतवे अर्घं ॥ ८ ॥

धर्मिक नाम धरम दश भाष्यौं, ध्यान लीन आतम रस चाख्यो।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं धार्मिकाय अर्घं ॥ ९ ॥

चन्द्रकेतु ऋषि मुख जिनराजे, नाम जपत जिन पातक भाजे।
पु०८०॥ ॐ ह्रीं चन्द्रकेतुजिनाय अर्घं ॥ १० ॥

महाजोति धारी धीरज धर, मनु रक्तादि जोति नामापर।
पु०८०॥ ॐ ह्रीं मनु रक्त जोतिषे अर्घं ॥ ११ ॥

वीतराग जिन नाम महा है, वीतराग पद पर्म लहा है।
पु०८०॥ ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घं ॥ १२ ॥

उद्योतन जिन उदयकरण जग, वसुविधि रिपुहरि धर शिव मग यग।
पु०८०॥ ॐ ह्रीं उद्योतनजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

भवितम सघन समन समीरं, तमोपेक्ष जिन नाम सु धीरं।
पु०८०॥ ॐ ह्रीं तमोपेक्षाय अर्घं ॥ १४ ॥

श्री मधुनाथ जिनेश्वर जगपति, जिनपद नमत सुरासुर सुरपति।
पु०८०॥ ॐ ह्रीं मधुनाथाय अर्घं ॥ १५ ॥

देव देव मरुदेव नाम भल, जिनपद यजत चक्र नरहरि बल।
पु०८०॥ ॐ ह्रीं मरुदेवाय अर्घं ॥ १६ ॥

दमम नाम शिवधाम काम हर, केवलज्ञान भानु सु उदित कर।
पु०८०॥ ॐ ह्रीं दममाय अर्घं ॥ १७ ॥

वृषभस्वामि वृषदायक भविजन, चरण भजे जिन सुरनर मुनिगण।
पु०८०॥ ॐ ह्रीं वृषभस्वामिने अर्घं ॥ १८ ॥

नाम शिलातन जिन मुनि गायो, शैलशिलासम तन जिनपायो।
पु०८०॥ॐ ह्रीं शिलातनजिनाय अर्घं ॥ १९ ॥

विश्वनाथ सुरूमा मंडित है, द्वादश विध तप करि शिवपुर लिय।
पुष्कर पर ऐरावत जानो, वर्तमान जिन पूजन ठानो ॥

पुष्प० ॥ ॐ ह्रीं माहेन्द्रनाथाय अर्घं ॥ २० ॥

नंद नाम आनंदकरण जग, मंडित गुण वरनै कवि कहं लग ।

पुष्प० ॥ नंदाय अर्घं ॥ २१ ॥

तनभामण्डल सहित लसत जिन, ब्रह्मव्रत वर नाम कह्यौ तिन ।

पुष्प० ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मव्रताय ॥२२॥

नाम तमांतक सार्थक जानौ, मोह महातम हरण प्रमाणौ ।

पुष्प० ॥ तमांतकाय अर्घं ॥२३॥

दोहा—सोरठा ।

वर्तमान जिन जानि, ऐरावत पर मेरुके ।
पुष्करार्द्ध परमानि, यजौ चरण वसुविध भले ॥८२॥

पूर्णार्घं ।

अथ जयमाला ।

दोहा

केवल रवि परकाश कर, मोह तिमिर हर जानि ।
ऐरावत पर मेरुके, वंदौ शिर धरि पांनि ॥८३॥

पद्धडी छन्द ।

जय शंकर शंकर जगमझार, जय अक्षयास प्रभु दया धार ।
जय नगन नगन तन धरण धीर, जय नगनाधिप पर हरण पीर ॥
पाखण्ड नष्ट जिन नाम सार, जय सु प्रबोधपन बोध धार ।
जय नाम तपोधन है जिनेश, जय पुष्पकेतु दायक सु देश ॥
जय धार्मिक धरम धारण महान, जय चन्द्रकेतु महिमा निधान ।
मनु रक्त सु जोतिष नाम पाय, जय वीतराग जिन सिद्ध दाय॥

उद्योतन उद्योतित त्रिलोक, नित देहु तपोधन चरन धोक।
मधुनाथ सु जग जिन किय सनाथ, मरुदेव नमौं युग जोरि हाथ॥
जय दम मद मन २ पंचकरण, जय सुपद स्वामी सब शोक हरण।
जय जयहि शिलातन नाम सार, जय विश्वनाथ गुण करि उदार॥
जय जय महेन्द्र जिन नमौं पाय, जय नंदानंद वरे सुभाय।
जय ब्रह्मवृत धृत ब्रह्मचर्य, पद नमैं नयन तिहु लोकवर्य ॥८४॥

घत्ता दोहा

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, ऐरावत गत जानि।
नमो चरण युग जोरिकर, जय जय जय भगवान् ॥८५॥

इति वर्तमान पूजा।

अथ अनागत जिन पूजा।

सुन्दरी छन्द।

जशोधर जशराजि सु जानियै, इन्द्र शत सेवित परमानियै।
सुपर पुष्कर ऐरावत विषैं, भवि जिन पूजौं जिन श्रुत लिखैं॥
ॐ ह्रीं जशोधराय अर्घं ॥ १ ॥

अभयघोष सु नाम प्रमाण है, अभय करण सु पग परधान है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं अभयघोषाय अर्घं ॥ २ ॥

सुकृत पूरण सुकृत जिन भले, सुकृत कृत्य सु हुई शिवकौं चले।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं सुकृताय अर्घं ॥ ३ ॥

नाम निर्वाणक जिन जानियै, पारगत शिव मारग मानियै।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं निर्वाणजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

जिन कृतवास सुवास है, व्रताकर गुण पूरण आस है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं व्रतवासाय अर्घं ॥ ५ ॥
नाम जिन अति राज बखानिये, कारज सारण सब जग जानिये।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं अतिराजाय अर्घं ॥ ६ ॥
अजित नाम जिनेश्वर जगपति, अजित वसुविधि रे पुहु शुभमति।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं अजितजिनाय अर्घं ॥ ७ ॥
नाम वर्जन जिन जानों सही, लही शिवपुर जिन शिवसुख मही।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं वर्जनजिनाय अर्घं ॥ ८ ॥
शरीरक जिननाम सु सार है, पंचविधि संसार निवार है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं शरीरकाय अर्घं ॥ ९ ॥
नाम जिन तपचंद्र सु जानिये, शुद्ध चेतन रूप प्रमानिये।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं तपश्चंद्राय अर्घं ॥ १० ॥
श्री महेश जिनेश महान है, महातम प्रभु कीरतिथान है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं श्री महेशाय अर्घं ॥ ११ ॥
नाम जिन सुग्रीव सु गाइयो, गर्वहर्ता जग जसु छाइयो।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं सुग्रीवाय अर्घं ॥ ॥ १२ ॥
दृढ़ प्रहार सु जिनको नाम है, कर्म काटन पूरण काम है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं दृढ़प्रहाराय अर्घं ॥ १३ ॥
अम्बरीक सु ठीक दयाल है, जगत जंतु करण प्रतिपाल है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं अम्बरीकाय अर्घं ॥ १४ ॥
नाम जिन दयतात विख्यात जग, कर्म वसु रिपु हनि लिय मोक्षमग।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं दयताताय अर्घं ॥ १५ ॥

तुंवरारूप जिनेश्वर जानियें, सुगुनगन पूरण परमानियें।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं तुंवरारूपजिनाय अर्घ्यं ॥ १६ ॥
सर्वशील सु नाम जिनेश्वरो सहस अठारह शील धरन परो।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं सर्वशीलाय अर्घ्यं ॥ १७ ॥
दयाकृत जिनवर जगमैं प्रगट, जिन चरण धारत भविजन स्वघट।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं दयाकृतजिनाय अर्घ्यं ॥ १८ ॥
जितेन्द्रिय जाते जिनकर नयन, वश कियो फुनि सबके राजमन।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं जितेन्द्राय अर्घ्यं ॥ १९ ॥
तपादित्य सु नाम बखानियै, सु तपकर सूरज सम जानियै।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं तपादित्याय अर्घ्यं ॥ २० ॥
नाम रत्नाकर जिन सार है, दर्शनादिक रतन भंडार है।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं रत्नाकरजिनाय अर्घ्यं ॥ २१ ॥
नाम श्री देवेश जिनेश है, देवपति पूजत सु गणेश हैं।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं देवेशजिनाय अर्घ्यं ॥ २२ ॥
श्री सुलक्षणदेव प्रमानियै, वसु सहस तन लक्षण जानियै।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं लक्षणजिनाय अर्घ्यं ॥ २३ ॥
सु प्रदेश दिनेश कारण प्रभू, धर्मधुर धौरेय महाविभू।
सुपर० ॥ ॐ ह्रीं प्रदेशाय अर्घ्यं ॥ २४ ॥

दोहा

पुष्करार्द्ध पर मेरुके, ऐरावत जिनराय।
पूरण अर्घ्य बनायकर, पूजों मन वच काय ॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पूरवमेरु ऐरावत भावी जिनेभ्यो अर्घ्यं।

अथ जयमाला।

सोरठा।

पुष्करार्द्ध पर मेरु, भावी जिनवर ये कहै।
क्षेत्रैरावत केर, तिन जयमाल बखानियें॥

छन्द चाल।

जय जय सु जशोधर स्वामी, जय अभयघोष जिननामी।
पर पुष्कर ऐरावत भावी, जिन चरण नमैं नम तावी॥
जय सुकृत सुकृतके करता, जय निर्वाणक दुख हरता।
वृत्तवासदेव जग नायक, जयवंते जग सुखदायक॥ पर पुष्क०॥
जय जय अतिराज जिनेश्वर, जय अजित जगत परमेश्वर॥पर०॥
जय वर्जुनाम शिवधामी, शारीरिक जय जिननामी॥ पर०॥
जय जय तपचंद्र जगत गुरु, जय नाम महेश जजत सुर॥पर०॥
जय २ सुग्रीव गुणधारी, जय दृढ़ प्रहार अघहारी॥ पर०॥
जय अंबर नाम सु भार्यो, जय दाया तात शिव पार्यो।पर०॥
जय तुंवरीक गुण पूरे, जय सर्व सोम विधि चूरे॥ पर०॥
जय २ कृत जिन नामा, जय जित इन्द्रिय गुणधामा॥पर०॥
जय तपसादित्य जगतपति, रत्नाकर देत मुकति गति॥पर०॥
देवेश नाम जग सारा, जय लक्षिन जग भर्तारा॥ पर०॥
जय जय प्रदेश जिन देवा, सुर नर पशु कृत पद सेवा पर०॥

घत्ता अडिल्ल—छन्द

यह जयमाल सुभाषी गायकैं,
पुष्कर पर ऐरावत पद शिर नायके।

जो भविजन मनवचनकाय जिन उर धरै,
नर सुरके सुख भोग बहुरि शिव तिय वरै ॥१२॥

गीता छन्द।

गर्जंति लड़ंति बाजीगण, सुरथ पायक घनें।
सुत दार बांधव सार बहु, परिवार आदिकको गनें॥
धनधान्य संपति भृत्य कृत नति, त्रय जगति जसु गाइयै।
जिनराज चरण सु पूजते भवि, सुरग मुकतिपद पाइये॥ १३॥

इति चतुर्थ मेरु पूजा संपूर्णम्।

अथ पुष्कर द्वीप पश्चिम मेरु पूजा!

सुन्दरी छन्द।

अपर पुष्कर पांडुक मेरु वन, पांडुक शिला चारों दिशन।
भरत ऐरावत सु विदेह युग, पर अपर दक्षिण उत्तर सुमग॥
तहां सु जिनवर न्हवन भयो भलै, तिन चरण पूजों वसु द्रव्य लै।
जल सु चंदन अक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फलादिक अर्घ धरू॥

ॐ ह्रीं अपर पुष्कर मंदिर मेरु पांडुकवन चतुः शिलोपरि पूरब अपर दक्षिण उत्तर जन्माभिषेक जिनेभ्यो अर्घं॥ १४।

कनकवर्ण सु पांडुक वन विषै, मेरु पंचम ऊपर श्रुत लिखे।
चतु जिनालय चहु दिशि राजही, यजे चरण सुजिन दुखभाजही॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचम मेरु पांडुकवन चतुर्दिशि चतुर्थैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं॥ १५॥

सौमनस वन सुवरनमय जहां, चहुं दिशि चैत्यालय चहुं तहां।
अमरपति पद पूजत आयके, हम यजे जिन अर्घ बनायके॥

ॐ ह्रीं पंचममेरु चतुश्चैत्यालय चतुरदिशि सौमनसवन जिनेभ्यो अर्घं ॥ १६ ॥

वन सुनंदन पांच मेरु पर, तहां जिनाले चहु दिशमें सु घर।
अकृतिम प्रतिमा जह सोहये, चरण पूजत हम तिनकौं नये॥

ॐ ह्रीं पंचम मेरु नन्दन वन चतुरदिशि चतुश्चैत्यालय जिनेभ्यो अर्घं ॥ १७ ॥

भद्रशाल कनकमय जानियै, मेरु पंचम भू परमानियै।
जहां जिनालय जिन पूजा करो, चहुं दिशि जिनपदही परै धरो॥

ॐ ह्रीं भद्रशाल वन चतुश्चैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ १८ ॥

अडिल छन्द।

मेरु सु पंचम नागदन्त चहु सोहये।
विदिशामैं ये परै सुजन मन मोहये॥
जिन मंदिर तिन ऊपर चारि लसै।
खरे जिन प्रतिमा पद पूज सकल पातिक हरे॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु गजदन्त चारिचैत्यालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ १९ ॥

मेरु पंचम दक्षिण निषिधिगिरि।
जानि कुल भूधर ताके शिखिर॥
कूट नव माथै मुनिराय जू।
यजौ जिनपद अर्घ बनाय जू॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचम मेरु सम्बन्धी निषधोपरि नवकूट-जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २०

निषिध नील विच जानौ सही।
भोग भू जिम उत्तम जिन कही ॥
तहं सु चारण मुनिपद पूजिये।
ले जलादिक हर्षित हूजिये ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचमेरु निषध नील विच उत्तम भोगभूमि तत्र चारणमुनिभ्यो अर्घं ॥ २१ ॥

निषिधाचल ऊपर द्रह जानियै।
तिगंछ द्रह नाम बखानियै ॥
तहां धृति देवी जिन ग्रह यजौ।
अर्घ वसुविधि करि जिनपद भजौ ॥

ॐ ह्रीं निषिधाचलोपरि मध्य तिगंछ द्रह तत्र धृतिदेवी गृह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २२ ॥

तिगंछ द्रहसैं युग सरिता सु वर।
कृष्ण कांता सीता नाम धर ॥
परापर सागर विच जो मिली।
पुलिन गत जिन ग्रह पूजो शुभ थली ॥

ॐ ह्रीं निषिधोपरि तिगंछद्रहसे निकसी सीता कृष्णकांतातट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २३ ॥

महा हिमवत सैल सुहावनौ, कूट वसुयुत जन मन भावनौ।
जहां जिनालय जिनपद पूजि भवि, मिलै सुकृति कमलदग कहै कवि।

ॐ ह्रीं महाहिमवत्सोपरि अष्टकूटजिनालयजिनेभ्यो अर्घं ।२४।

निषिध मह हिमवत बिच जो परी, भोगभूमिमध्यम सोहे खरी।
चारणार्धि मुनि विहरत भले, तिन चरण पूजत वसुविधि भले॥

ॐ ह्रीं महाहिमवत्निषिद्धयोमध्य हैमवतक्षेत्र मध्यमभोगभूमि तत्र चारणमुनिभ्यो अर्घं ॥ २५॥

महा हिम महा पद्मद्रहसु तै, निकसी जो रुकतीकाक कैवुतै।
नाम हरित सु रोहित जानियै, पुलिनगत जिन पूजन ठानियै॥

ॐ ह्रीं महाहिमोपरि महापद्मद्रह निगसह रत रोहलतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २६॥

महाहिम महापद्म द्रह विषैं, महावारिजगत श्री ही ग्रह लिखे।
तहां जिनालयजिनपद पूजियै, वसुविधि अर्घ चढाय सु हर्षित हूजियै

ॐ ह्रीं महाहिमवत महापद्म द्रह गत महापुण्डरीक मध्य ह्रो जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २७॥

कूट नवयुत नाम हिमाचलौं, अपर पुष्करमैं कुलगिरि भलौ।
तहां जिनालयजिन पूजा करौ, अर्घ करि वसुविधि सब अघ हरौ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चममेरु सम्बन्धी हिमवत नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २८॥

हिमाचल पद्मद्रह जानियै, मध्य वारिज श्री गृह मानियै।
तहां जिनालय जिनपद अरचियै, अर्घ करि मन वच तन परखियै॥

ॐ ह्रीं हिमवनपर्वतोपरि पद्मद्रह मध्य कमल बीच श्रीग्रह-जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ २९॥

हिम हिमाचल गुरुकुल लघु मध्य थल, भोगभूमि जघन्य सुजानि भल
तह सुचारण जिन मुनि चरणकी, पूज करहु सदा दुखहरणकी ॥

ॐ ह्री पुष्करार्द्ध पंचमेरु सम्बन्धी महाहिमवन बीच जघन्य भोगभूमिगत चारणमुनिभ्यो अर्घं ॥ ३० ॥

पद्मद्रह निर्गत सरिता सु त्रय, एक उत्तरगत दक्षिण दुतिय ।
नाम गंगा सिंधु सुरोहिता, पुलिनगत जिन पूज करौं मिता ॥

ॐ ह्रीं हिमवत पद्मद्रह निर्गत गंगा सिंधु रोहिता तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३१ ॥

मेरु उत्तर नील कुलाचलो, पुष्करार्द्ध अपर दिशमें भलो ।
कूट युत जिन मन्दिर जानिये, तहां जिनवर सु पूजा ठानियै ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध अपरमेरु सम्बन्धी नीलाचलोपरि नवकूट-जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३२ ॥

नील निषिध सु बीच बखानियै, भोगभू उत्तम परमानियै ।
तह सु जिन मुनि चारण युग चरण, पूजिये भविजन तारणतरण ॥

ॐ ह्रीं नीलनिषिध बीच उत्तम भोगभूमिगत चारणमुनिभ्यो अर्घं ॥ ३३ ॥

नीलगिरि केशर द्रह पर्यो, बीच वारिज निर्मल जल भर्यो ।
मध्य कीरतिदेवीके सु गृह, पूजिये वसुविधि चरण तह ॥

ॐ ह्रीं नीलाचल पर्वतोपरि केशरी द्रह मध्य कमल तिन मध्य कीरतदेवी गृह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं । ३४ ।

नारी सीतोदा सरिता युगम, निकस चली जिनको जल अगम ।
मिली सागर विच दोउ जायकै, तत जजौं जिन अर्घ बनायकै ॥

ॐ ह्रीं नीलाचलोपरि केशरी द्रह निर्गत नारी संतोदा नदी तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ३५ ॥

दीप पुष्कर पंचम मेरुगिरि, रुक्म नाम सु उत्तर दिशि शिखर।
कूट अष्ट विराजत जासु पुर, तहं जिनालय जिन पूजो सुघर।

ॐ ह्रीं रुक्म पर्वतोपरि अष्टकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं। ३६॥

रुक्म नीलाचल बिच भोगभू, तहं सु चारणमुनि फुनि जिन स्वयंभू।
विहरते तिन चरण यजौ भलै, जल फलादिक वसुविधि अर्घ लै॥

ॐ ह्रीं नील रुक्म बीच मध्यम भोगभूमि तत्र चारण-मुनिभ्यो अर्घं। ३७॥

रुक्म पर्वत नाम सु जिस उपरि, पुण्डरीक सु द्रह जिस नाम धरि।
तहं कमल बिच देवी बुद्धिगृह, यजौ जिनमंदिर जिनचरण मह॥

ॐ ह्रीं रुक्म पर्वतोपरि बुद्धदेवी गृह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं। ३८।

पुण्डरीक सु द्रहसे निकसकै, चली सागरको दो सु धासिकै।
स्वर्णकूला नरकांता सरित, तसपुलिनगत जिन पूजौ सुहत॥

ॐ ह्रीं पुण्डरीकद्रहसे निर्गत स्वर्णकूला नरकांता तट जिना-लयजिनेभ्यो अर्घं॥ ३९।

पुष्करार्द्ध पश्चिममेरु गिरि दिशि, सु उत्तर कुलभूधर शिखिरि।
कूट ग्यारह जिस ऊपर परे, तहां जिनालय जिन पूजन करे॥

ॐ ह्रीं शिखरपर्वतोपरि एकादश कूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं। ४०॥

शिखरि सैल महा द्रह सार है, पुंडरीक महा सुखकार है।
सुरी लक्ष्मी गृह जानियै, तहां जिनालय पूजन ठानियै॥

ॐ ह्रीं शिखरिपर्वतोपरि महापुण्डरीक द्रह बीच पुण्डरीक मध्य लक्ष्मी देवीगृह जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४१ ॥

पुण्डरीक महाद्रहसे निकसी, चली सरिता त्रय धरणी सु धसी।
रूप्यतट रक्ता रक्तोदका, जिन यजो तट तिन कर मादका ॥

ॐ ह्रीं शिखरिपर्वतोपरि महापुण्डरीक द्रहसे निकसी रूप्य-कुला रक्ता रक्तोदातट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४२ ॥

रुक्म शिखरि सु दोनौं बीच परी, भोगभूमि जघन्य लसै खरी।
तहां जिन मुनि चारण चरण युग, पूजते छुटै संसार रुग ॥

ॐ ह्रीं रुक्मशिखरि मध्य जघन्य भोगभूमि तत्र चारण-मुनिभ्यो अर्घं ॥ ४३ ॥

अडिल्ल छन्द ।

पुष्कर पश्चिम मेरु रजतगिरि जासकै।
दक्षिण दिशमें जानि भरतगत तासुकै ॥
शिर ऊपर नवकूट लसत अति है सही।
तहं जिनमंदिर पूजो जिनवर यों कही ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्ध पंचममेरु दक्षिण भरतगत विजयारध नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४४ ॥

तार हार विजयारध युग जहां श्रेणी है।
दक्षिण उत्तर जानि परमसुख दैनि है।
तहं जिन मंदिर जिन प्रतिमा पद पूजिये।
नगर दशोत्तर शत बिच सुरपति हूजिये ॥

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धे पंचममेरु सम्बन्धी दक्षिण भरत विजया-रधयुग श्रेणिगत दशोत्तरशतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥ ४५ ॥

तार द्वार विजयारध परवत दूसरो।
दक्षिण दिशमें जानि कुट नवयुत खरो॥
पुष्कर पर ऐरावत जहां जिनवर यजों।
वसु विधि अर्घ बनाय गाय गुणपद जजौं।

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिममेरु उत्तर ऐरावत विजयारध नवकूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ४६॥

तार द्वार विजयारध पर फुनि राजही।
श्रेणी युग जहं नगर दशोत्तर छाजही॥
तहां जिन मंदिर जिनप्रति पूजो भावसों।
वसुविध अर्घ बनाय गाय गुण चावसों।

ॐ ह्रीं पुष्कराद्धं पश्चिम मेरु विजयारध दशोत्तर शतनगर जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ४७॥

दोहा।

पुष्कराद्धं पर मेरुके, दक्षिण उत्तर जानि।
शैल नदी द्रह क्षेत्र बिच, पूजो इति परमाण॥ ४८॥

पूर्णार्घ।

अथ जयमाला।

छन्द गीता अडिल्ल।

जय केवल दिनकर वर मोह तिमिर हरं
भव्य कमल परकाशन भापन जगधरं॥
चिन्मय सुन्दर विनत पुरंदर पद सदा।
जै जै कृत सुकृत नमैं भवि सर्वदा॥

पद्धड़ी छन्द।

जै महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश शुकल पद पूज्य शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चरण नमों हिय धरों ध्यान ॥ गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसुशत तनु सहित एव। गि०
जय निराबाध वज्रास्तिकाय, निरभंग अंग शोभै सुभाय ॥ गिरि०
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत ॥ गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद ॥ गि०
जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सु लील ॥ गि०
जय सुगम मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नाशाग्र अक्ष ॥ गि०
दर्शन अनंत फुनि ज्ञानवंत, महसर्व्व वीर्य जिनकौ न अन्त ॥ गि०
वसु गुण रतननके हैं भंडार, जयवंते वरतो जग मंझार ॥ गि० ॥
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पदकमल तेह ॥

घत्ता—सोरठा

यह जयमाल विशाल, पुष्कर पंचम मेरुकी।
पूजा करहु त्रिकाल, मध्य सु सांझ सवे की ॥ ५० ॥

गीता- छन्द।

वसु द्रव्य कर जिनबिंब पूजो, मन वचन तन चावसों।
नर सुरनके सुख भोग करि, फिर मुकतिपुर घर जावसौं ॥
जाकै सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये।
ते होहु तुमको सदा, जयवंते सु जिन गुण गाइये ॥

इत्याशीर्वादः।

इति पुष्कर पंचमेरु कुलाचल भरतऐरावत विजयारध पूजा सपूर्णम्।

अथ पूर्व विदेह पूजा।

चाल पखाडीकी—सोरठा।

पुष्कर पंचम मेरु, पूर्व विदेह सु जानिये।
चरण यजौ तिन केर, षोडस क्षेत्र ये जिन भये ॥ ५१॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचममेरु पूर्वविदेह षोडशक्षेत्र षट्खंडमंडित तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि भोग सत्र जिन वीरसेन महाभद्र अत्रावतरावतर इत्यादि।

अथाष्टकं।

चाल पखाडीकी।

नीर सु है क्षीर समुद्रको ल्याय, या मन पाम पुनीत जो।
पूजो हो भवि युग जिनराय, भव आताप वितीत जो॥
पुष्कर है पंचम मेरु विदेह, पूरव दिशिमें जानियै।
वीर सु हेम महाभद्र जिन एह, चरणकमल उर आनियै॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचममेरु पूरव विदेह षोडशक्षेत्र वीर महाभद्रजिनेभ्यो जलं ॥ ५२ ॥

चंदन हेम मलयागिरि गारि, रतन कटोरीमें भरो।
चरण सु हे युग जिनवर सुखकार, दाह दुरित याते मिटै॥

पुष्कर० ॥ ५३ ॥ ॐ ह्रीं चन्दनं।

तंदुल हे प्रासुक नीर पखारी, सुवरणमय थारी भरौं।
पूज सुहे श्रीजिनवर ढिग धार, तुरते शिव-रमणी वरो॥

पुष्कर० ॥ ५३ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं।

कुसुम सुहे सुरतरुके सार, कनक रजतमय लीजिये।
भरि भरि हे अञ्जुलि करि मझार, चरन समर्चन कीजिये॥

पुष्कर० ॥ ५४ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं।

नेवज हेत जि विविध प्रकार, मोदक खाजे अति भले।
लै करि हे सुवरण थारी धारि, जिन मंदिर पूजन चले॥

पुष्कर० ॥ ५६ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं।

दीपक हे जगमग जोति उद्योत, रतन रकाबी धारिकै।
यातै हे मिथ्यातम क्षय होति, आरत चरण उतारिकै॥

पुष्कर० ॥ ५७ ॥ ॐ ह्रीं दीपं।

लीजै हे धूप दशांग सम्हारि, चरण निकट जिन खेईयै।
दीजै हो वसु कर्मनु जारि, परमातम पद वेईयै॥

पुष्कर० ॥ ५८ ॥ ॐ ह्रीं धूपं।

श्रीफल हे बदाम मगाय, दाख छुहारे लायची।
पिस्ता सेउ सदा फल ल्याय, लौंग सुपारी चीकनी॥

पुष्कर० ॥ ५९ ॥ ॐ ह्रीं फलं।

जल फल हे अर्घ संजोय सु, थाल मांहि धारि कर आरती।
गावों हे भविजन जिन गुणमाल, जनम जनम अघ टारती॥
पुष्कर है पंचम मेरु विदेह, पूरब दिशमैं जानिये।
वीर सु हे महाभद्र जिन येह, तिन पद पूजन ठानिये॥६०॥

अथ प्रत्येक पूजा।

अडिल्ल छन्द।

पुष्कर पंचम मेरु विदेह जहां परे।
पूरब दिशमें जानि सु षोडश है खरे॥
तहं जिनवर मुनिराज चरण गुण पूजिये।
अरघ बनाय गाय गुण हर्षित हूजिये॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचममेरु पूर्व विदेह पद्मादि षोडशक्षेत्र षट्खण्ड मंडल तत्र जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ६१॥

रूपाचल सु धवल अति षोडश जह परे।
कूट सु नवयुत नवार दशोत्तर शत खरे॥
तहं जिनमंदिर जिन प्रतिमा अकृतम सही।
तिन पद अर्घ बनाय जो जिनवर कही॥

ॐ ह्रीं षोडशक्षेत्र मध्यवर्ती विजयार्द्ध एकसौ चवलश १४४ कूट एक हजार सातसै साठनगर १७६० जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ६२॥

वसु वक्षार शिखिर नवयुत गिरिराजही।
तह जिनमंदिर जिन प्रतीक्षा जही॥
वसुविधि अर्घ बनाय सु मन वच कायकै।
पूजौ चरण त्रिकाल सु मन हरषायकै॥

ॐ ह्रीं वसु वक्षारगिरि द्वादश बहत्तरि ७२ कूट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं॥ ६३॥

द्वादश नदी विभंगा तिनमैं जानियै।
तह वासी सुर ग्रह जिनमंदिर मानियै॥

पूज नर सुर विद्याधर अहं आयकै;
भक्ति सहित गुण गाय सु मन हरषायकै ॥
ॐ ह्रीं षट्युग विभंगा नदीतट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं ॥६४॥

अथ जयमाला ।

अडिल्ल छन्द

जै केवल दिनकर वर मोह तिमिरहरं ।
भव्य कमल परकाशन भासन जग परं ॥
चिन्मय सुन्दर विनत पुरन्दर पद सदा ।
जै जै जै कृत सुकृत नमै भवि सर्वदा ॥

पद्धड़ी छंद ।

जय महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकल पद पूज्य शक्र ।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमौ पद कमल तेह ॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चरण नमो हिय धरो ध्यान ॥गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसुशत तनु सहित एव ॥गि०
जय निराबाध वज्रा स्थकाय, निरभंग अंग शोभे सुभाय ॥गि०
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत ॥गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद ॥गि०
जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जयप्राणिघात वर्जित सु लील ॥गि०
जय सुरग मुकतिपद दानदक्ष, शुभ ध्यानलीन नासाग्र अक्ष ॥गि०
दरशन अनंत गुण ज्ञानवंत, महशर्म्मवीर्य जिनको न अन्त ॥गि०
वसु गुण रतननुके है भंडार, जैवन्ते वरतो जग मंझार ।
गिर सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह ।

यह जयमाल विशाल वर, भाखी पंचम मेरु।
पुष्कर पूरब जानि जिन, नमौं चरण तिनकेर ॥

वसु द्रव्य करि जिनबिंब पूजौं, मन वचन तन चावसौं।
नर सुरनके सुख भोग करि, फिरि मुकतिपुर घर जावसौं ॥
जाकै सुफल करि तीर्थंकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये।
ते होहु तुमको सदा, जयवंते सु जिन गुण गाइये ॥

इत्याशीर्वादः।

अथ पुष्करार्द्ध पश्चिम मेरु पश्चिम विदेह पूजा

सोरठा।

पुष्कर पंचम मेरु, अपर विदेह सु जानियै।
षोडश गत जिन केर, आह्वानन अत्र ठानियै ॥ ६७ ॥

ॐ ह्रीं पुष्कर पंचम मेरु अपर विदेहगत देव जशोधर आदितवीय, अत्रावतरावतर तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

अथाष्टकं।

चाल—परम गुरु हो, जै जै नाथ परम गुरु हो, इस चालमें।

रोग त्रिखा अति दहै शरीर, नाशन कारण ल्यावौ नीर।
जगत गुरु हो, जै जै नाथ परम गुरु हो ॥

पुष्कर मेरु अपरगिरि जानि, अपर विदेह परम सुख थानि।
देव जशोधर अजित सु वीर्य, पूजै चरण महा वर धीर ॥जगत०॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचमेरु अपरविदेहगत देव जशोधर अजितवीर्यजिनेभ्यो जलं॥ ६८॥

भव आताप सहे बहुवार, नाशन चन्दन ल्यायो सार।
जगत० ॥ पुष्क० अपर मेरुगिरि ॥ ॐ ह्रीं चन्दनं ॥ ६९ ॥

कर्म वेदनी सो दुखदाय, नाशन अक्षत ल्यायौ ध्याय।
जगत० ॥ पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ॥ ७०॥

कुसुमवान भरमो दुख देत, ल्यायौ कुसुम सो नाशन हेत।
जगत० ॥ पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ॥ ७१ ॥

क्षुधा वेदनी मो दुखदाय, ल्यायौ चरु तिस नाशन भाय।
जगत० ॥ पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं। ॥ ७२ ॥

प्रबल मोहतम दृग रह्यौ छाय, नाशन दीपक ल्यायौ ध्याय।
जगत० ॥ पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं दीपं ॥ ७३ ॥

अष्ट करम रिपु मो दुख देय, नाशन धूप सुगंधी खेय।
जगत० ॥ पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं धूपं ॥ ७४ ॥

फल फासू उत्तम भरि थाल, ल्यायौ श्रीफल हेत अपार।
जगत० ॥ पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ ७५ ॥

जल फलादि लै अर्घ बनाय, 'कमलनयन' जिन पूज कराय।
जगत० ॥ पुष्कर० ॥ ७६ ॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध अपरमेरु अपरविदेहदेव जशोधरजिनेभ्यो अर्घं।

अथ षोडश क्षेत्र पूजा।

दोहा—सीतोदा तट उभय दिशि, दक्षिण उत्तर जानि।
तहं विदेह वसु वसु लसैं, पूजों तिन गुण खानि॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पश्चिमविदेह पद्मादि षडश क्षेत्र षट्खण्ड मण्डत तीर्थंकर चक्रवर्त्यादि भोग्य वर्तमानतीर्थंकरेभ्यो अर्घं।

तार हार वैताढ़गिरि, षोडश सार निहार।
वार आदि वसु धारि द्रवि, पूजों जिन सुखकार॥७३॥

ॐ ह्रीं षोडश क्षेत्र सम्बन्धी षोडश विजयारध कूट एकसै चवालीस १४४ नगर १७६० एक हजार सातसै साठि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

है वक्षारगिरि कूट, सु नव युत जोय।
तहां जिनमन्दिर जिन यजों, वसुविधि अर्घ सजोय॥

ॐ ह्रीं सु वक्षारगिरि नवकूट संयुक्त जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

है विभंग सरिता वरा, षट् षट् परमित जानि।
तहां तट जिनमन्दिर यजों, वसुविधि द्रव्य सु आनि॥

ॐ ह्रीं षट् षट् विभंगा नदी तट जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

अथ जयमाला।

अडिल्ल छन्द।

जै केवल दिनकर मोह तिमिर हरं
भव्य कमल परकाशन भासन जग धरं।
चिन्मय सुन्दर विनत पुरन्दर पद सदा,
जै जै कृत सुकृत नमैं भवि सर्वदा॥

पद्धड़ी छन्द।

जै महाघाति विधि विघन चक्र, कृत नाश सकल पद पूज शक्र।
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पद कमल तेह॥
जय चिदानंदमय सुधापान, किय चरण नमों हिय धरौ ध्यान॥गि०
सुरनर मुनिगण नित करत सेव, लक्षण वसुशत तनु सहित एव। गि०
जय निराबाध वज्रास्तिकाय, निरभंग अंग शोभै सुहाय॥गिरि०
जय सदा कोटि रवि द्युति धरंत, वसु प्रातिहार्य शोभा लसंत॥गि०
विश्वंभर हलधर वंदि पाद, नृपगण भविजन मन करत याद॥गि०
जय पुण्यक्षेत्र संचरनशील, जय प्राणिघात वर्जित सु लील॥गि०
जय सुगन मुकतिपद दान दक्ष, शुभ ध्यान लीन नाशाग्र अक्ष॥गि०
दरशन अनंत फुनि ज्ञानवंत, महशर्म वीर्य जिनको न अन्त॥गि०
वसु गुण रतननके हैं भंडार, जयवंते वातो जग मंझार॥गि०॥
गिरि सिद्धकूट द्रह चैत्य गेह, जिनबिंब नमो पदकमल तेह॥

घत्ता-सोरठा

यह जयमाल विशाल, पुष्कर अपर विदेहकी।
वंदौ पद तिहुकाल, पश्चिम पंचम मेरु की॥

गीता-छन्द।

वसु द्रव्य कर जिनबिंब पूजो, मन वचन तन चावसो।
नर सुरनके सुख भोग करि, फिर मुकतिपुर घर जावसो॥
जाके सुफल करि तीर्थकर हरि, प्रमुख पदवी पाइये।
ते होहु तुमको सदा, जयवंते सु जिन गुण गाइये॥

इत्याशीर्वादः।

इति पंचमेरु पश्चिम विदेह पूजा संपूर्णम्।

अथ भरत क्षेत्र अतीत अनागत वर्तमान जिन पूजा।

गीता छन्द

वर पुष्करार्द्ध मेरु पंचम, भरत क्षेत्र सुहावनो।
दक्षिण दिशा गत जानि भविजन, सुरनरन मन भावनो॥
अतीतनागत वर्तमान, यु तीनि चउवीसी भई।
तिन करों आह्वानन त्रिविध करि, सिद्ध पदवी जिन लई॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध पंचमेरु मंदिर भारतक्षेत्र तीत वर्तमान भविष्यति जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननं ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं।

ढाल—शील सुरंगी चूनरीकी।

नील भरी द्रह पद्मको, कंचन झारी बनाय हो।
प्रासुक परम पुनीत जो, श्री जिन चरण चढ़ाय हो॥
मेरी सीख सुनो भवि जिय भली॥
पुष्कर भारत यों लसै, अपर दिशामें जानि हो।
तीतानागत जिन यजो, पंचममेरु बखानि हो॥
मेरी सीख सुनौं भवि जिय भली॥

ॐ ह्रींपुष्करार्द्ध पंचममेरु सम्बन्धी भरत क्षेत्रगत तीतानागत वर्तमानजिनेभ्यो जलं॥ ८१॥

बावन चंदन ल्यायकै, केशर सरस मिलाय हो ।
रतन कटोरी धारिकैं, चरण पूजि जिनराय हो ॥
मेरी० पुष्कर० ॥ ८२ ॥ ॐ ह्रीं चन्दनं ।
मुक्ताफल तंदुल बनै, प्रासुक नीर पखारि हो ।
भाव सहित जिन पूजिये, तुरत वरैं शिवनारि हो ॥
मेरी० पुष्कर० ॥ ८३ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ।
कुसुम रजतमय हेमके, चरण निकट भवि धार हो ।
भरि भरि अंजुल लीजिये, कामबाण निरवार हो ॥
मेरी० पुष्कर० ॥ ८४ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ।
तुरत गो घृत आनिकै, बहु पकवान बनाय हो ।
श्री जिनवर पद पूजते, रोग क्षुधा मिटि जाय हो ॥
मेरी० पुष्कर० ॥ ८५ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ।
कंचन दीप सुहावनै, मणिमय बाती बाल हो ।
आरति करि जिन चरणकी, मोह महातम टारि हो ॥
मेरी० पुष्कर० ॥ ८६ ॥ ॐ ह्रीं दीपं ।
अगर सुगन्धी खेइये, धूप दहन बिच सार हो ।
परमातम पद तब मिलै, कर्म होहि जरि क्षार हो ॥
मेरी० पुष्कर० ॥ ८७ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ।
फल फासु उत्तम भले, भरि करि कंचन थाल हो ।
लै जिन चरण चढ़ाय, मुक्ति सफल दातार हो ॥
मेरी० पुष्कर० ॥ ८८ ॥ ॐ ह्रीं फलं ।
पूर्णार्घं ।

जल चंदन कुसुमावली, चरु वरु दीपक थाल हो।
धूप फलादिक अर्घ ले, पूजों जिन सुखकार हो॥
मेरी सीख सुनो भवि जिय भली।

पुष्कर भारत यों लसै, अपर दिशामें जानि हो।
तीतानागत जिन यजो, पंचम मेरु बखाणि हो॥
ॐ ह्रीं अर्घं।

अथ प्रत्येक पूजा।

सुन्दरी छन्द।

पद्मचन्द्र जिनेश्वर जानियै, पद्मपद ऋषि मुख परमानियै।
अपर पुष्कर भारत जिन यजों, जल फलादि लै द्रवि वसुविधि सजों॥
ॐ ह्रीं पद्मचंद्रजिनाय अर्घं॥ १॥

नाम रत्नागद जिन सार है, रतन जटिता भूषण धार है।
अपर०॥ ॐ ह्रीं रत्नागदजिनाय अर्घं॥ २॥

योगी योगीश्वर वंदित चरण, नाम जिन योगेश्वर सुखकरण।
अपर०॥ ॐ ह्रीं योगजिनाय अर्घं॥ ३॥

तीर्थ नग्नाधिप जिन नामवर, नग्न तन तप मंडित ज्ञानधर।
अपर०॥ ॐ ह्रीं नग्नाधिपतये अर्घं॥ ४॥

नष्ट कृत पाखण्ड सु नामवर, जानि पंचम तीर्थंकर सु नर।
अपर०॥ ॐ ह्रीं नष्टपाखण्डाय अर्घं॥ ५॥

सुप्रबोध जिनेश्वर जानियै, बोधकारण भवि परमाणिये।
अपर०॥ ॐ ह्रीं सुप्रबोधाय अर्घं॥ ६॥

श्री गुणाधिक नाम सु गाइयै, गुणनिधान महाजसु गाइयै ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं गुणाधिकाय अर्घं ॥ ७ ॥

नाम पारित्रिक जिन सार है, पारकरण उदधि संसार है ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं पारित्रकाय अर्घं ॥ ८ ॥

ब्रह्मनाथ जिनेश्वर जगपति, भविनको जिन दीन शिव गति ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मनाथाय अर्घं ॥ ९ ॥

श्री मुनीन्द्र जगत आनन्दकर, वन्दत पद जिन सुर असुर नर ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं मुनीन्द्रदेवाय अर्घं ॥ १० ॥

दीप्तकाय सु जिनको नाम है, दीप्तवंत महा द्युति धाम है ।

अपर० । ॐ ह्रीं दीप्तकाय अर्घं ॥ ११ ॥

राजऋषि जिनराज विराज ही, मुनिगण सबके शिरताज ही ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं राजऋषये अर्घं ॥ १२ ॥

जिन विसार वसु नाम बताइयो, धर्म शाखा युत जसु गाइयो ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं विशाखजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

नाम जासु अनादित जग प्रगट, खोलिदिय भवि अंतरघट सुपट ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं अनादिताय अर्घं ॥ १४ ॥

कोटि रवि द्युति तन धारण प्रभू, नाम रवि स्वामी जिनवर स्वभू ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं रविस्वामिने अर्घं ॥ १५ ॥

सोमदत्त सु नाम सुगुरु कह्यो, जगत आल्हादन जिनवर भज्यो ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सोमदत्तजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

नाम जय स्वामि जगसार है, भव्य जीव करण उद्धार है ।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं जयस्वामिने अर्घं ॥ १७ ॥

मोक्ष नाथ कियो जपत, मोक्ष वनिता मुखलोकन मुकत ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं मोक्षनाथाय अर्घं ॥ १८ ॥

अप्रमान जिनेश्वर नाम धर, कर्म भानि लियौ जिन मुकति वर।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं अप्रभानये अर्घं ॥ १९ ॥

नाम जिन धनुषाग सु जानिये, धनुर्धर सेवित परमानिये ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं धनुषागाय अर्घं ॥ २० ॥

भव्य रोमांचित किय ज्ञान करि, नमौं रोमांचित यातैं सु धारि।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं रोमांचिताय अर्घं ॥ २१ ॥

मुक्तिनाथ सु मुक्तिकरण महा, भव्य जीवनको शिवसुख लहा।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं मुक्तिनाथाय अर्घं ॥ २२ ॥

श्री जिनेश महेश सुरेश मुनि, पूजते सु गणेश धनेश फुनि ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं जिनेशाय अर्घं ॥ २३ ॥

जिन प्रसिद्ध सु ऋद्धि समृद्धि करि, वृद्धि बुद्धि स दातारवर ।
अपर पुष्कर भारत जिन यजो, जल फलादिक लै वसुविधि सजो ॥
ॐ ह्रीं प्रसिद्धाय अर्घं ॥ २४ ॥

पुष्कर अपर सु जानियै, भारत तीत जिनेश ।
जिन चरणांबुज पूजियै, पूर्णार्घ फावेश ॥ १० ॥

अथ जयमाला ।

सोरठा ।

पुष्कर भारत जानि, अपर दिशामैं जो परयौ ।
पंचम मेरु प्रमाणि, तीत जिनेश्वर पद नमौं ॥ ११ ॥

पद्धड़ी छन्द।

जय पद्मचन्द्र जिनराजदेव, फुनि रत्नांगद पद नमों एव।
पुष्कर भारत जिन नमो तीत, पंचम मन्दिर दिश अपरमीत।
जय योगिक जिन किय वन विहार, नग्नाधिप पंचाचरण धार॥पु०
पाखण्ड नष्ट जिन नाम सार, जय सुप्रबोध गुण है अपार॥पु०
जय २ हि गुणाधिक गुणनिधाम, जय २ चरित्र सुकाय नाम॥पु०
जय ब्रह्मनाथ जिन चित्सरूप, जिन नाम मुनीन्द्र सुगुण कूट॥पु०
जय दीप्तकाय तन दीप्तवंत, जय राजऋषीश्वर हेमवन्त।पु०
जय २ विशाल जिन नमो पाय, आनंदित आनंदकरण गाय।पु०
गुरु विश्वस्वामि जिन है महेश, जय सोमदत्त सब गुणन खान॥पु०
जय स्वामी जिनेश्वर गुण गंभीर, जय मोक्षनाथ पर हरण पीर॥पु०
जय अग्रमानि गिरिकर्म मानि, अनुखण्ड नमो जुगजोरि पानि॥पु०
जय २ रोमांचक नाम धार, जय मुक्तिनाथ भवि मुक्तिहार॥पु०
जय २ जिनेश जग है महेश, जय नाम प्रसिद्ध कह्या गणेश॥१२॥

घत्ता दोहा।

भाषी जहां जयमाल वर, तीत जिनेश्वर केर।
पुष्कर भारत अपर दिश, दक्षिण पंचम मेर १३॥

इति तीत जिन पूजा संपूर्णम्।

अथ वर्तमान पूजा

सरठा।

जल फल ल्याय पवित्र, श्री सर्वांग जिनेश्वरो।
पुष्कर भारत क्षेत्र, गत जिन अपर दिशा यजो॥
ॐ ह्रीं सर्वांगजिनाय अर्घं॥ १॥

जल फल ल्याय पवित्र, पद्माकर जिनवर भजो।
पुष्करार्द्ध भारत क्षेत्र, गत जिन अपर दिशा यजो॥
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं पद्माकरजिनाय अर्घं॥ २।

जल फल ल्याय पवित्र, चरण प्रभा करिके भजो।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं प्रभाकरजिनाय अर्घं॥ ३॥

जल फल ल्याय पवित्र, योगेश्वर जिनवर भजो।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं योगेश्वराय अर्घं॥ ४॥

जल फल ल्याय पवित्र, सूक्ष्मांग जिनपद भजो।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं सूक्ष्मांगाय अर्घं॥ ५॥

जल फल ल्याय पवित्र, श्री बलनाथ जिनेश्वरो।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं बलनाथाय अर्घं॥ ६॥

जल फल ल्याय पवित्र, बलातीत जिनपद भजो।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं बलातीताय अर्घं॥ ७॥

जल फल ल्याय पवित्र, कलंककाख्य जिनेश्वरो।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं कलंककाख्य अर्घं॥ ८॥

जल फल ल्याय पवित्र, परित्याग जिनवर भजो।
पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं परित्यागाय अर्घं॥ ९॥

जल फल ल्याय अपार, नाम निषेवक जिन भजो।
पु०६० ॥ ॐ ह्रीं निषेवकाय अर्घं ॥ १० ॥

जल फल ल्याय पवित्र, पापहार जिनवर भजो।
पु०६० ॥ ॐ ह्रीं पापहारिजिनेभ्यो अर्घ ॥ ११ ॥

जल फल ल्याय अपार, मुक्तचंद जिनवर भजो।
पु०६० ॥ ॐ ह्रीं मुक्तचंद्राय अर्घं ॥ १२ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, अप्रासिक जिनवर भजो।
पु०६० ॥ ॐ ह्रीं अप्रासिकजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, श्री जयचंद्र जिनेश्वरो।
पु०६० ॥ ॐ ह्रीं जयचंद्राय अर्घं ॥ १४ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, माला धार चरण भजो।
पु०६० ॥ ॐ ह्रीं मलधारणे अर्घं ॥ १५ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, संजत नाम जिनेश्वरो।
पु०६० ॥ ॐ ह्रीं संजतजिनाय अर्घं ॥ १६ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, मलयसिंधु जिनवर भजो।
पु०६० ॥ ॐ ह्रीं मलयसिंधुजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, अक्ष धराख्य जिनेश्वरो।
पु०६० ॥ ॐ ह्रीं अक्षधराख्याय अर्घं ॥ १८ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, जिन सुदेवधर नाम है।
पु०६० ॥ ॐ ह्रीं देवधराय अर्घं ॥ १९ ॥

जल फल ल्याय पवित्र, नाम देवगण जिन भजो।
पु०६० ॥ ॐ ह्रीं देवगणाय अर्घं ॥ २० ॥

जल फल ल्याय पवित्र, आगामिक जिन नाम है।
पु०क० ॥ ॐ ह्रीं आगामिकाय अर्घं ॥ २१ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, नाम विनीत जिनेश्वरो।
पु०क० ॥ ॐ ह्रीं विनीताय अर्घं ॥ २२ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, वीतराग जिन नाम है।
पु०क० ॥ ॐ ह्रीं वीतरागाय अर्घं ॥ २३ ॥
जल फल ल्याय पवित्र, रतानंद जिनवर भजो।
पु०क० ॥ ॐ ह्रीं रतानन्दजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥
श्री सर्वांग सु आदि दै, रतानंद परजंत।
चौबीसौं जिनवर यजो, पूर्णार्घ करि संत ॥ २६ ॥
इति पूर्णार्घं।

अथ जयमाला।

पद्धडी छन्द।

जय जन हितकर सर्वांग स्वामि, जय पद्माकर पद शरण स्वामि।
पुष्कर भारत दिशि अपर जानि, जिनवर पद वंदौं वर्तमान ॥
जय २ हि प्रभाकर नाम सार, जय योगेश्वर गुण है अपार। पु०
जय २ सूक्ष्मांग सु नाम काय, जय बलातीत जिन नमौं पाय। पु०
जिन नाम कलंवक है विराग, जिन नमौ परिग्रह परित्याग ॥ पु०
जय नाम निषेधक शास्त्र गाय, जय पापहारि जिन है समाय ॥ पु०
जय मुक्ति चंद्र शिवरमनिकंत, जय अप्रासिक बहु गुण धरंत। पु०
जय चन्द्रनाम सुख चन्द्र जोति, मालाधारी जिन कियो उद्योत ॥ पु०
जय २ हि सु संजत तीर्थंकार, जय मलयसिंधु गुण अति उदार ॥ पु०

जय अक्षरध्य जिनेश देव, बलनाथ दयाकर है सु एव ॥ पु० ॥
जय देव देवचर देव सेव, जयदेव सु गुण लहि सकल भेव। पु०
जय आगामिक करुणानिधान, जयनाम विनीत सु धरण ध्यान। पु०
जय वीतराग सु वीतीत राग, जय रत्नानंद पदकमल लाग ॥पु०

घत्ता-सोरठा

यह जयमाल सु गाय, पुष्कर भारत अपर की।
है जिनवर सुखदाय, जग जीवन भवि जनतुके।

इति वर्तमान पूजा।

अथ भावी जिन पूजा।

त्रोटक छन्द

प्रभावक नाम जिनेश्वर देव, सुरासुर वंदित चरण सु एव।
सु पुष्कर भारत पश्चिम जानि, यजों जिन भावी जलादिक आनि॥

ॐ ह्रीं प्रभावकजिनाय अर्घं ॥ १ ॥

स्वभाव जिनेश्वर नाम सु गाय, विभाव सुभाव सु दीय बताय।

सु पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं स्वभावाय अर्घं ॥ २ ॥

विभाव जिनेश्वर नाम सु एन, सुखा कर पाप विनाशन बेन।

सु पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं विभावाय अर्घं ॥ ३ ॥

सु नाम दिनेश्वर है जग सार, प्रभारवि कोटिक वारनहार।

सु पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं दिनकराय अर्घं ॥ ४ ॥

जिनो अघ तेजस नाम वखानि, भये शिवकर्म महारिपु हानि।

सु पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं अघतेजसाय अर्घं ॥ ५ ॥

जिनेश्वर श्री धनदत्त विख्यात, दियो धन निर्धनको जग तात।

सु पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं धनदत्तजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

सु पौरव नाम महा गुण धाम, पुराकृत कर्म विनाशक स्वामि।

सु पुष्कर० ॥ ॐ ह्रीं पौरवाय अर्घं ॥ ७ ॥

सु है जिनदत्त महा गुण राशि, सु ध्यान सु धेय सदा परकाशि।

सु पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं जिनदत्तजिनाय अर्घं ।८।

सु पारसनाथ मिथ्यातम हानि, सु धर्म प्रकाशि कियो जय ज्ञानि।

सु पुष्कर भारत पश्चिम जानि, यजौं जिन भावि जलादिक आनि।

सु पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाय अर्घं । ९ ॥

महामुनि सिंधु जिनेश्वर जानि, सदा शिव पंथ दिशा मन मानि।

सु पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं सिंधुजिनाय अर्घं ॥ १० ॥

जिनेश्वर अस्तिक नाम सु गाय, सु अस्तिक भाव दियौं जु बताय।

सु पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं अस्तिकजिनाय अर्घं ॥११।

भवानिक नाम जिनेश्वर देव, भवाब्धि सु तारिक जानि सु एव।

सु पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं भवानिकजिनाय अर्घं ॥१२॥

सुन्दरी छन्द।

नाम जिन नृपनाथ सु जानियै, तासो भावित शुभ मानियै।

अपर पुष्करार्द्ध भावित जिन यजौं, शुभ जलादिक लै वसुविध भजौं॥

ॐ ह्रीं नृपनाथाय अर्घं।

नाम नारायण जिन जानियै, निराधार तिन ही प्रमाणियें।

अपर० पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं नारायणाय अर्घं ॥ १४ ॥

महाशिव ग्रह कीनों वास जिन, नाम प्रसमोकष जिन जानि तिन।
अपर० पुष्क० ॥ ॐ ह्रीं प्रसमोकजिनाय अर्घं ॥१५॥
लोकत्रय भूमीश मुनीश ये, चरण सेवित सुर मुनि ईश ये।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं भूपतये अर्घं ॥ १६ ॥
नाम सुदृष्टिक जिन सार है, शुद्ध दर्शन धारनहार है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुदृष्टिजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥
तीर्थंकर भवभारक नाम है, भीति भवतारण सुखधाम है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं भववीरये अर्घं ॥ १८ ॥
तीर्थंकर सु नंदन गाइयो, नंदिताखिल गुणगण पाइयो।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं नन्दनाय अर्घं ॥ १९ ॥
नाम जिन गर्भारि सु जिन कह्यो, शुद्ध बुद्ध निरंजनपद लह्यो।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं गर्भारिजिनाय अर्घं ॥ २० ॥
सुवासव जिनको वरनाम है, वासुकारण सु शिवपुर ठाम है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुवासजिनाय अर्घं ॥ २१ ॥
नाम परवासक जिन जानिये, पारवासरकारण परमानिये।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं परवासजिनाय अर्घं ॥ २२ ॥
नाम जिन वनवास महा लसैं, विगत सर्व उपाधि सु वन वसे।
अपर ॥ ॐ ह्रीं वनवासाय अर्घं ॥ २३ ॥
भारतेश जिनेश महान है, कमल कोमल विग्रहवान हैं।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं भारतेशाय अर्घं ॥ २४ ॥

दोहा।

भारत पुष्कर अपर दिशि, भावी जिन चौबीस।
पूर्णार्घ करि पूजिय, नमों सु करि धरि शीश ॥६२॥
पूर्णार्घं।

अथ जयमाला।

चाल छन्द।

परमातम चरण मनाऊं, स्वाभाविक जिन गुण गाऊं।
पुष्कर भारत जिन जानौं, भावि दिशि अपर प्रमानौं ॥
जय २ विभात जिन स्वामी, जय जय दिनकर जग नामी ॥ पु०
अघ तेज चरण जुग वंदौ, धनदत्त प्रणामि आनंदौ ॥ पु० ॥
पौरव जिन गुणगणधारी, जिनदत्त परम सुखकारी ॥ पु० ॥
जय जय पारस प्रभ वीरा, जय जय मुनि सिद्ध गंभीरा । पु० ॥
जय अस्तिकाय जगनायक, जय भवानीक शिवदायक ॥ पु० ॥
जय जय नृपनाथ जिनेसुर, नारायण नाम महेसुर ॥ पु० ॥
जय प्रथमोकस जग नामी, जय जिन भूपति गुण धामी । पु० ॥
जय जय सु दृष्टि जिन स्वामी, भव भीरु महा शिव गामी ॥ पु०
जय जय सुनंद जगतारण, जय गर्भ सु गर्भ निवारण ॥ पु० ॥
जय जय सुवाम शिववासी, परवास वास जगनाशी ॥ पु० ॥
वनवासी वासी वनके, भूतेश हरन तन मनके ॥ पु० ॥ ६३॥

दोहा

ये चौबीस जिनेश्वर, पुष्कर भारत मांहि।
भावी पंचम मेरुके, नैन सदा बलि जांहि ॥ ६४ ॥

अथ ऐरावत क्षेत्र संबंधी चौवीस पूजा।

दोहा

उत्तर ऐरावत विषैं भूत भविष्यत जानि।
वर्तमान जिनवर यजौं, आह्वानन तिन ठानि॥
त्रितिय अर्द्ध विच दीपमें, संख्या मिति चउवीस।
चउविस फुनि चउवीस हैं, पूजौं जिन जगदीश॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध उत्तर मेरु ऐरावत तीतानागत वर्तमान जिनाअत्रावतरावतर संवौषट् इत्यादि

अथाष्टकं।

ढाल नारी चेतनकी।

पुष्कर अपर ऐरावत, तीतानागत जिन चरण यजौं।
पंचम मेर मंदिरगिरि राजै, तट जिन त्रय चौवीस भजौं॥
सुरसरी सुरीय सलिल पावन, रतन जटित भृंगार भरौं।
चन्दन मिश्रित अति वासित लै, श्री जिनवरपद पूज करौं। पु०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध अपरमेरु उत्तर ऐरावत भूत वर्तमान भविष्यत जिनेभ्यो जलं॥ ६५॥

शीतल सलिल सहित घिसि चन्दन, रतन कटोरी बिच धरिके।
केशरि सरस कपूर लायची, गंध विमिश्रित लै करकै॥पुष्कर०॥
अपर ऐरावत तीता नागत, जिन चरण यजौं।
पंचम मेरु मन्दिरगिरि राजै, तहं जिनत्रय चौवीस यजौं॥६६॥

ॐ ह्रीं० चन्दनं।

अनवीधे मुक्ताफल लै करि, कनक रकावी मांहि धरो ।
वासुमती सुखदाम कमोदक, तंदुल धवल सु थाल भरो ॥
पुष्क० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं अक्षतं ।

कुसुम मनोहर सुरतरुके लै, कनक रजतमय त्याय सही ।
जाहि जुही चम्पावति सेवित, जुही मालती महकी रही ॥
पुष्क० ॥ ६८ ॥ ॐ ह्रीं पुष्पं ।

घेवर बावर कनक थाल भरि, ताजे ताजे ले सुथरे ।
तन मन दृग नाशा सुखकारी, क्षुधा निवारी मोद भरे ॥
पुष्क० ॥ ६९ ॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं ।

दीप कनकमय गोघृत बाती, बालि सुहाती चतुरमुखी ।
आरत करि जिन चरणकमलकी, मिथ्यातम हर होहु सुखी ॥
पुष्कर० ॥ ७० ॥ ॐ ह्रीं दीपं ।

कृष्णागर कर्पूर लायची, चन्दन चूरन मेलि धरें ।
खेवत जिनपद चरण निकट भवि, कर्म काटि छिनमांहि जरें ॥
पुष्कर० ॥ ७१ ॥ ॐ ह्रीं धूपं ।

लौंग दाख बादाम सुपारी, श्रीफल झारी लै आवो ।
श्री जिन चरनकमलके आगे, धारि तुरत शिव फल पावो ॥
पुष्कर० ॥ ७२ ॥ ॐ ह्रीं फलं ॥ ७५ ॥

जल चन्दन आदिक वसु लै द्रवि, सुवरण थाली मांहि धारो ।
जिन चरणाम्बुज पूज करो भवि, तव निज सकल विघन टरो ॥
पुष्कर पर ऐरावत तीतागत, नागत जिन चरण यजो ।
पंचम मेरु मन्दिर गिरि राजे, तह जिन त्रय चौवीस भजो ॥

ॐ ह्रीं अर्घं ।

अथ प्रत्येक पूजा।

सुन्दरी छन्द।

नाम श्री उपशांत जिनेश हैं, शांत करता जगत महेश हैं।
अपर पुष्कर ऐरावत मझों, लै जलादि अतीत सु जिन पूजों ॥
ॐ ह्रीं उपशांतजिनाय अर्घं ॥ १ ॥

तीर्थंकर फागुन जिन जानिये, आदि संस्थानक परमानियैं।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं फागुनजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

नाम जिन पूर्शस बताइये, धर्म धारण पद जिन गाइये।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं पूर्शसजिनाय अर्घं ॥ ३ ॥

तीर्थ सौरिक नाम कह्यौ मुनी, कर्मवीर दलनवीरिय गुनी।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सौरिकजिनाय अर्घं ॥ ४ ॥

त्रिविध क्रम त्रिक्रमधर है महा, मोह मल्ल सु मलि शुम गुण लहा।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं त्रिविक्रमाय अर्घं ॥ ५ ॥

नाम गौरिक वैरि करम हनै, जिन तनै बहु गुण कविको भनै।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं गौरिकजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

जिनेश्वर नरसिंह बखानियैं, सिंहवत निर्भय परमानियै।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं नरसिंहकाय अर्घं ॥ ७ ॥

षट् सु हास्यादिक जिन परहरे, नाम श्री मृगवास लसै खरे।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं श्री मृगवासाय अर्घं ॥ ८ ॥

नाम सोमेश्वर जिनवर कह्यौ, सौम भावाश्रित चित जिन लह्यौ।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सोमेश्वराय अर्घं ॥ ९ ॥

सुधाकर जिनवर गुण धार हैं, धर्म अमृत वर्षत सार है।
अपर० ॐ ह्रीं सुधाकरजिनाय अर्घं ॥ १० ॥
पंच निद्रा विगत प्रमाद हर, नाम निर्मल जासु अपाय वर।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं अपायजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥
विबुध वंदित नाम विबोध जिन, सर्व बाधा रहित सु जातिन।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं अबोधजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥
नाम संधिक श्री जिन सार है, बोधदायक शिव करतार है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सन्धिजिनाय अर्घं ॥ १३ ॥
विघन पुंज विनाशन है महा, नाम मांधाता जिनको कहा।
अपर० ॥ मांधाताय अर्घं ॥ १४ ॥
अश्व तेज जिनेश्वर नाम है, तेजवंत महासुख धाम है।
अपर० ॐ ह्रीं अश्वतेजसे अर्घं ॥ १५ ॥
नाम विद्याधर जग सार है, वर्ण गन्ध स्पर्श निवार है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं विद्याधराय अर्घं ॥ १६ ॥
सुलोचन सु विमोचन पापमल, भव्यजन मन आनंदकरण भल।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुलोचनजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥
देव मौन सु नाम निचीत ये, जानि षट संहनन वितीतये।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं मौनदेवाय अर्घं ॥ १८ ॥
पुण्डरीक सु जिन सुखकार है पुण्डरीक चरण द्युति धार है।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं पुण्डरीकाय अर्घं ॥ १९ ॥
चित्रांग जिन नाम सु गाइयो, गुण विचित्रपद पाइयो।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं चित्रांगजिनाय अर्घं ॥ २० ॥

इन्द्रमणि जिन नाम सु गाइयो, इन्द्रमणिसम तन द्युति पाइयो।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं मणिन्द्राय अर्घं ॥ २१ ॥

सर्व काल महा जम जाल हन, सर्व कर्म कलंक सदा विगत।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सर्वकालाय अर्घं ॥ २२॥

नाम भूरीश्वर असमीश्वरे, असादिक मतिनाशक जिनवरे।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं भूरीश्वराय अर्घं ॥२३ ॥

तीर्थंकर पुण्यांग सु अन्तमें, हम सु दग युगपद तिनके नमैं।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं पुण्यांगाय अर्घं ॥ २४ ॥

अथ जयमाला।

दोहा

पुष्कर ऐरावत विषैं, जिन अतीत सुखदाय।

पूरण अर्घ बनाय करि, यजौ चरण गुण गाय ॥ ९४॥

ढाल-गाली एक सुनो तुम चतुर, सुजन श्रवण सुखदाई, इस चालमें।

जय जय उपशांत जिनेश्वरस्वामीके वंदों हो।

जय जय फाल्गुण गुण रतनागर मेटो भव भय फंदोजी।

जय जय जय पूर्वांग जिनेश्वर दुरवादी मद खण्डनजी।

जय जय सोरिक नाम तुम्हारो जगजन पाप विहंडनजी ॥

जय जय नरसिंह सिंहवत निर्भय विहरत एक विहारीजी।

जै मृगवास आस मवि पूरण महिमा अगम अपारीजी ॥

जय सोमेश्वर सौम्य भावश्रित, दुष्ट करमकृत नासीजी।
जय जिन नाम सुधाकर स्वामी नाम न भविभव त्रासीजी॥
जय अपामाल सकल विघातक सुजस सकल विस्तारीजी।
जय निबाध भवबाध सकल हनि शिवपुर कियो है विहाराजी॥
जय सन्धिक जिन तिहु जगनायक, मेटो भव दुख केराजी।
मन्धाता जिन नाम तुमारो, धारो हिरदे मांहीजी॥
जय जिन अश्वतेत तन दुति लख, कोटि भानु क्षिपि जाहीजी।
वर्ण गन्ध रस रहित सदा तन, जिन विद्याधर स्वामीजी॥
जय दुख मोचन तिहु जग रोचन, नाम सुलोचन जानोजी।
जय जय मौनदेव जिनस्वामी, तुम जस तिहु जग छायोजी॥
जय जय पुण्डरीक जिन देवा, सुर नर करत सु सेवाजी।
जय जय चित्र गनी तुम गुणको, कोउ न पार लहैवाजी॥
जय मनि इन्द्र सुरेन्द्र, धनेन्द्र नमैं तुम चरणाजी।
जय जय सर्वकाल जिन स्वामी, तुम गुण हिय चित धरणाजी॥
जय भूमीश्वर नाम जिनेश्वर, चहुगतिके दुख टारनजी।
जय पुण्यांग पुण्यांग नाम तुम, भवसागर उतारनजी॥९६॥

घत्ता दोहा।

यह जयमाल विशाल, वरणी जिन चौवीसकी।
क्षेत्र ऐरावत काल अतीत, सु अपर सुमेरुको॥ ९७॥

अथ वर्तमान जिन पूजा

दोहा।

वर्तमान जिन पूजिये, सु गांग गेय जिनराय।
पुष्कर अपर सुमेरुगिरि, ऐरावत सुखदाय॥

ॐ ह्रीं गांगोपाय अर्घं॥ १॥

वर्तमान जिन पूजिये, श्री नलवास सु भाय।
पुष्पं०॥ ॐ ह्रीं नलवासाय अर्घं॥ २॥

वर्तमान जिन पूजियै, भीम जिनेश्वर पाय।
पुष्पं०॥ ॐ ह्रीं भीमजिनाय अर्घं॥ ३॥

वर्तमान जिन पूजियै, नाम दयाधिक गाय।
पुष्पं०॥ ॐ ह्रीं दयाधिकाय अर्घं॥ ४॥

वर्तमान जिन पूजियै, श्री सुभद्र जिनराय।
पुष्पं०॥ ॐ ह्रीं सुभद्रजिनाय अर्घं॥ ५॥

वर्तमान जिन पूजियै, स्वामिनाम जिन गाय।
पुष्पं०॥ ॐ ह्रीं स्वामिजिनाय अर्घं॥ ६॥

वर्तमान जिन पूजियै, हनक सुगुण अधिकाय।
पुष्पं०॥ ॐ ह्रीं हनकजिनाय अर्घं॥ ७॥

वर्तमान जिन पूजियै, नंदिघोष युग पाय।
पुष्पं०॥ ॐ ह्रीं नन्दिघोषजिनाय अर्घं॥ ८॥

वर्तमान जिन पूजियै, रूपवीर्य गुण गाय।
पुष्पं०॥ ॐ ह्रीं रूपवीर्याय अर्घं॥ ९॥

वर्तमान जिन पूजिये, वज्र नाम सुखदाय।
पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं वज्रनामाय अर्घं ॥ १० ॥
वर्तमान जिन पूजिये, सन्तोष नाम सुखदाय।
पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं सन्तोषजिनाय अर्घं ॥ ११ ॥
वर्तमान जिन पूजिये, नाम सु धर्म बताय।
पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं सुधर्माय अर्घं ॥ १२ ॥
वर्तमान जिन पूजिये, जिनफनीश गुण पाय।
पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं फणीशाय अर्घं ॥ १३ ॥
वर्तमान जिन पूजिये, वीर चंद्र जिनराय।
पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं वीरचन्द्राय अर्घं ॥ १४ ॥
वर्तमान जिन पूजिये, स्वच्छ रूक्ष गुणदाय।
पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं स्वच्छमजिनाय अर्घं ॥ १५ ॥
वर्तमान जिन पूजिये, मेघानीक सुमाय।
पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं मेघनीकाय अर्घं ॥ १६ ॥
वर्तमान जिन पूजिये, कोप क्षय जिनराय।
पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं कोपक्षयाय अर्घं ॥ १७ ॥
वर्तमान जिन पूजिये, जिन अकाम सुखदाय।
पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं अकामजिनाय अर्घं ॥ १८ ॥
वर्तमान जिन पूजिये, सन्तोषित गुण पाय।
पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं संतोषिताय अर्घं ॥ १९ ॥
वर्तमान जिन पूजिये, सत्वसैन सुख माय।
पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं सत्वसेनाय अर्घं ॥ २० ॥
वर्तमान जिन पूजिये, दयानाथ सुखदाय।
पुष्पं० ॥ ॐ ह्रीं दयानाथाय अर्घं ॥ २१ ॥

वर्तमान जिन पूजिये, श्री क्षमांग जिनाय।
पुष्प०॥ ॐ ह्रीं क्षमांगाय अर्घं ॥२२॥

वर्तमान जिन पूजिये, कीर्तिनाथ जिन पाय।
पुष्प०॥ ॐ ह्रीं कीर्तिनाथाय अर्घं ॥२३॥

वर्तमान जिन पूजिये, श्री शुभ नाम सु भाय।
पुष्प०॥ ॐ ह्रीं शुभनामजिनाय अर्घं ॥२४॥

पुष्कर अपर सु मेरु, ऐरावत जिनपद यजों।
वर्तमान जिन केर, पूर्णार्घ बनवायके॥
ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध अपर ऐरावत वर्तमानजिनाय पूर्णार्घं ॥२२॥

दोहा—सब सुखकारन दुख हरन, तारणतरण जिहाज।
पुष्कर ऐरावत अपर, वंदों गत जिनराय॥

अथ जयमाला।

एक बात सुनी है हो प्रभु तेरो अकथ कथा, इस भावमें।
जय जय गांगेय सु हो कि, तुम पद नमन करों।
जय २ नवलनाम कहो कि, तुम गुन हिये धरों॥
जय भीम जिनेश्वर हो कि, सब सुखदायक हो।
जय नाम दयाधिक हो, कि त्रिभुवन नायक हो॥
जय २ सुभद्र जिन हो कि शरण गही तेरी।
जय स्वामिनाथ जिन हो, कि यो रखिये मेरी॥
जय हानिक जिनवर हो कि, गुण रत्नाकर हो।
जय नंदिघोष जिन हो कि, करुणासागर हो।

जय हानिक जिनवर हो, कि गुण रत्नाकर हो ॥
जय नंदघोष जिन हो, कि करुणा सागर हो।
जय रूप वीर्य जिन हो, कि रूप लसैं अति हो ॥
जय वज्रनाभ जिन हो, कि वज्र तन धारण सही।
जय २ सन्तोष कहो, कि तोषित भवि जियरे ॥
जय नाम सु धार्मिक हो, कि राखौ पद निवरे।
जय २ फणीन्द्र जिन हो, कि फणपति कृत सेवा ॥
जय वीर चंद्र जिन हो, कि तुम देवनि देवा ॥
जय सुक्ष जिनेश्वर हो, कि सुक्ष गुण धारण हो।
जय मेधानीकी हो, सु मेधादायक हो।
जय २ कोप क्षय हो, करम रिपु घायक हो ॥
जय २ अकाम जिन हो, वाम धन धाम तजो।
संतोषिक स्वामी हो, तोष करि मोख भजो ॥
सत्वसेन जिनेश्वर हो, सत्व करुणाकर हो।
जय २ नाम सु धार्मिक हो, धर्म दश भेद धरो ॥
जय सूक्ष्मसेन जिन हो, कुसुम सर वैरि खरे।
जय जयकीर्ति जिन हो, गणाधिप प्रश्न करे ॥
जय जय सुक्षमा कर हो, क्षमादिक भेद कह्यो।
जय नाम सुभाकर हो, कमल दग शरण लह्यो ॥

घत्ता-दोहा

यह जयमाल विशाल वर, ऐरावत जिन केर।
वर्तमान जिन जानियो, पुष्कर अपर सु मेर ॥ २५ ॥

अथ भावी जिन पूजा।

अद्योषिक नाम जिनेश्वर देव, सु आर्जव गुण धारक स्वयमेव।
अपर दिशि पुष्कर भारत जानि, जजौं जिन ऐरावत सुखदाय।

ॐ ह्रीं वृषभजिनाय अर्घं ॥ २ ॥

श्री विनयानंद सु आनंदकंद, सु दिति करि कोटि किये रवि मंद।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं विनयानंदाय अर्घं ॥ ३ ॥

सु मुनि भारत जिन नाम सुभाय, चिद्रूप रूप धारण गुरकाय।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं मुनिभारताय अर्घं ॥ ४ ॥

जगत आल्हादकारण जिनजानि, सु इंद्रक नाम सकल गुणखानि।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं इंद्रकजिनाय अर्घं ॥ ५ ॥

सु चंद्रकेतु जिन चंद्र समान, जिन सु द्युति लखि लाजत शशिमान।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं चंद्रकेतुजिनाय अर्घं ॥ ६ ॥

सु ध्वजादित्य जिनवर महाराज, प्रकाश धर्म किये आतम काज।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं ध्वजादित्याय अर्घं ॥ ७ ॥

वसुबोध सु जिनदायक वसु धार, करण मन वश करण अविकार।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं वसुबोधाय अर्घं ॥ ८ ॥

सु मार्ग मुक्ति उपदेशक जानि, मुक्तिगत यातै नाम बखानि।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं मुक्तिगताय अर्घं ॥ ९ ॥

अनंत रंग भेदक जिनराय, सु धर्मबोध गुरु गौतमगाय।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं धर्मबोधाय अर्घं ॥ १० ॥

देवांग नाम जिनराज गणीश, सुरासुर चरण धरत निज शीस।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं देवांगाय अर्घं ॥ ११ ॥

सुजिन मारीच धर्म तरु सींच, लसत केवल गत मुनिगण बीच।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं मारीचजिनाय अर्घं ॥ १२ ॥

सु जीवन जिनवर है जगसार, करण जगजीवन भवदधि पार।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं जीवनाय अर्घं ॥ १३ ॥

जशोधर नाम महा गुणराशि, कियो शिववास करम सब नाशि।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं जशोधरजिनाय अर्घं ॥ १४ ॥

सु गौतम जिनवर नाम बखानि, अमर गण सेवित चरण प्रमानि।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं गौतमाय अर्घं ॥ १५ ॥

सुजिन मुनि शुद्ध नाम जस भाय, स मुनिजन आदि बुद्धिदाय।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं मुनिशुद्धाय अर्घं ॥ १६ ॥

प्रबोधक नाम तीर्थ करतार, प्रबुद्ध शुद्ध चिद्रूप निहार।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं प्रबुद्धजिनाय अर्घं ॥ १७ ॥

सदानिक टेक जिनेश्वर देव, देवदेवाधिप कृत पद सेव।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सदानिकाय अर्घं ॥ १८ ॥

सदा चारित्रनाथ जिन सार, त्रयोदश विधिचारित्र सु धार।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं चारित्रनाथाय अर्घं ॥ १९ ॥

शतानन्द नाम महानन्दकार, भवि प्रतिबोध करण मनहार।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं शतानंदाय अर्घं ॥ २० ॥

सु नाम तीर्थ वेदार्थक जानि, वेद वेदांग प्ररूपक मानि।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं वेदार्थकाय अर्घं ॥ १२ ॥

सु जिनवर सुधानीक सम नाम, सुधासम वचन प्रकाशन स्वामि।

अपर० ॥ ॐ ह्रीं सुधानिकाय अर्घं ॥ २२ ॥

सु जोति मूर्ति जिन नाम सुगाय, सुज्ञानज्योति करि जग लखाय।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं जोतिमूर्तये अर्घं ॥२३॥
सु केवल सहित शुद्ध चिद्रूप, सु जिन निकलंक विमल गुण कूप।
अपर० ॥ ॐ ह्रीं निकलंकजिनाय अर्घं ॥ २४ ॥
पुष्कर अपर सु जानि, भावी जिनवर पद यजों।
ऐरावत शुभ थान, पूरण अर्घ बनायके ॥ २५ ॥
ॐ ह्रीं भावी अर्घं ॥ १० ॥

अथ जयमाला।

दोहा।

पुष्कर ऐरावत विषैं, ये जिन भावी काल।
तिन सबकी जयमाल, बरनौं सुगुण विशाल ॥ ५१ ॥
सुन भविजन है, जय जय जय जिन हो अदोषिक नाम सु गाइये ॥
जय २ जिन हो, वृषभदेव सु बखानिये।
जय २ जिन हो, विनत अमरपति थुति करै ॥
मुनि भारत हो, तुम जुग चरण हिये धरै।
जय जय जिन हो, इन्द्रकाय नामा प्रभू ॥
जय २ जिन हो, चन्द्रकेतु गुणधर स्वयभू।
जय जय जिन हो, ध्वजादित्य सुर सार हैं ॥
जय जय जिन हो, वसुबोध सुगुण अविकार हैं।
जय जय जिन हो, सु नामसुक्तिगत जानिये ॥
जय जय जिन हो, धर्मवाद्धि सु प्रमानिये।
जय जय जिन हो, श्री देवांग जिनेश हो ॥

जय २ जिन हो, कुमारिक विगत कलेश हैं।
जय २ जिन हो, सु जीवन जग आधार है॥
जय २ जिन हो, जशोधर गुण मण्डार है।
जय २ जिन हो, सु गौतम नाम विशेखिये॥
जय २ जिन हो, विशुद्ध मुनि पग पेखिये।
जय २ जिन हो, प्रबोध बोध कारण सही॥
जय २ जिन हो, शिवानंद आनंदक यही।
जय २ जिन हो, सु वादर्श्या तनवान है॥
जय जय जिन हो, सुधानीक सु महान हैं।
जय जय जिन हो, सु जोग तिमूर्ति जिनवर भले॥
जय २ जिन हो, जोतिं शुद्ध वसु रिपु दले।

घत्ता अडिल्ल।

जय जय वसु मदहर भवि, कुंज प्रफुल्लित भान हो।
सिद्ध वधू भरतार सुगुण हि निधान हो॥

करुणासागर मोह तिमिरहर हो तुम्हीं।
डूबत भवदधिमांहि बांह गहियै हमी॥
सार्द्ध द्वीप द्वय भरथैरावत जानिये।
क्षेत्र तीर्थंकर परम पवित्र वखानिये॥
तीतानागत वर्तमान जिन जहं भाये।
सप्तशतक विंशति, कुंज दगपति नये॥

भरतैरावत क्षेत्र सो, तीतानागत सार।
वर्तमान जिनवर इमें, होहु मुक्ति करतार॥

इत्याशीर्वादः।

इति सार्द्धद्वीपद्वय पूजा सम्पूर्णम्।

अथ मनुष्य क्षेत्र समान नरक समिंत कर ऋजु विमान मुक्तिशिला सिद्धालय पैतालीस लाख योजन तिनकी पूजा

गीता-छन्द।

इस मनुज लोक समान, सीमन्तक विमान सु ऋजु सही।
शिला मुक्ति प्रमाण, सिद्धालय सुगुरु गौतम कही॥
ये पंच थल पन, चारि लाख, प्रमाण जोजन जानियै।
हां करो आह्वानन सबनको, मन प्रतीत जु आनियै॥

ॐ ह्रीं मनुष्यक्षेत्र समान सीमंतक नरक ऋजु विमान मुक्तिशिला सिद्धालय अत्र स्थापनं करोमि।

ॐ ह्रीं अत्रावतरावतर संवौषट् ठः ठः सन्निधिकरणं वार अर्घ्यं।

प्रथम नरक सीमंतक प्रतर सु जानियै।
तीन शतक सु अठासी बिल परमानियै॥
दिशा सु विदिशा मांहि एक एक है तहीं।
तिन गति छेदन कारण जिन पूजो सही॥

ॐ ह्रीं प्रथम नरक प्रथम प्रतर सीमंतक इन्द्रक छेदनकाय अर्घं।

लवणोदधि कालोदधि उभय दिशा परी,
कुत्सित मानुष्य भोगभूमि तह है खरी।
संख्या वसु चत्वारि कही तिनकी मलै,
तिन गति छेदन कारण जिन पूजन चलै॥

ॐ ह्रीं लवणोदधि कालोदधि तट द्वय कुमानुष द्वीप तद्-स्थिछेदनकाय अर्घं॥ ५६॥

मानुषक्षेत्र विषैं ऊपर आकाशमें,
भान चन्द्रकी संख्या भाखी जासुमैं।
द्वात्रिंशति ऊपरि सत संख्या जानिये,
तिन गति छेदन काज यजन जिन ठानिये॥

ॐ ह्रीं मनुष्यक्षेत्र प्रमान ज्योतिषपटलके सूर्य चन्द्र ग्रह नक्षत्र तारकादय भ्रमणशील तद्गति छेदकाय जिनाय अर्घं॥ ५७॥

प्रथम स्वर्ग सौधर्म विमान सु ऋजु कह्यौ,
सार्द्ध द्वीप द्वय प्रमित क्षेत्र जाको लह्यौ।
तहां वासी सुर कल्पोद्भव सुख भुंजते,
तद्गति छेदन कारण जिन हम पूजते॥

ॐ ह्रीं सौधर्मस्वर्ग ऋजुविमान सार्द्धद्वयद्वीप प्रमान क्षेत्र तत्रवासी सुरसुरतद्गति छेदकाय जिनाय अर्घं॥ ५८॥

भूमि अष्टमी सिद्ध शिलाकी है खरी,
ईषत प्राग्भार संख्या जाकी परी।

मध्य अष्ट जोजनकी मोटो जो कही,
श्वेत वरण मकरगाकृति जिन पूजों तही ॥

ॐ ह्रीं इष्ट प्रागभार संज्ञा सिद्ध शिला अष्टमी भूमि सिद्ध-क्षेत्र दर्शस्पर्शजिनाय अर्घं ॥ ५९ ॥

समय समय प्रति सार सुरुचि दातार जो,
शिवनायक शिवकारण शिव कातार जो ।
अइसे गुणके धारक सिद्ध महेश हैं,
तिनपद हम पूजत नित नित अमरेश हैं ।

ॐ ह्रीं सम्यक् गुण युक्ताय सिद्ध धिपतये अर्घं ॥ ६० ॥

सद सद अथ सुदर्शन द्वीप समान है,
सकल पदार्थ चराचर लोकन भान हैं ।
अइसे गुणके धारक सिद्ध महेश हैं,
तिनके पद हम पूजत नुत अमरेश हैं ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन गुणयुक्ताय सिद्ध धिपतये अर्घं ॥ ६१ ॥

निर्मल वस्तु विलोकन खण्डित अति महा ।
साम्यभाव संयुक्त धर्ममय पद लहा ॥ अइसे० ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान गुणयुक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं । ६२ ॥

सकल वस्तु ज्ञायक सु पराक्रमवंत ये ।
लोक शिखिरके अग्र भाग निवसंत ये ॥ अइसे० ॥

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यगुणयुक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६३ ॥

असम सूक्ष्मता सुखसागर बिच मग्न ये ।
जन्म जरा मरणादिक भाव विलग्न ए ॥ अइसे० ॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुणयुक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६४ ॥

सर्व सिद्ध अवगाहन दान सुदक्ष हैं।
कट विकट विहण्डन चक्षु अलक्ष हैं ॥ अइसे० ॥

ॐ ह्रीं अवगाहनगुणयुक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६५ ॥

अगुरु अलघु मिथ संगति संगति सहित ये।
सकल निरंतर संगत कर जु सहित ये ॥ अइसे० ॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुणयुक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६६ ॥

भव भव बाधा रहित सदा ये जानिये।
अकल काल थिति भाजन गुण परमानिये ॥ अइसे० ॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणयुक्ताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६७ ॥

निद्यादिक कारण द्वारण गुण भाव ये।
पंच प्रकार अज्ञान भेद दुखदाव ये ॥
त्रिशति सागर उत्तम स्थिति भाषी जिकी।
अइसे कर्म रहित पूजा कीजै तिकी ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणीकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६८ ॥

दर्शन भाव विनाशन कारण है जहां।
होत अदर्शन अष्ट भेद करिकै तहां ॥ त्रिशति० ॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणीकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ६९ ॥

हिंसादिक कारणके भाव निकार सही।
वेद होत दुखकारी मुख्यपणे तही ॥ त्रिश० ॥

ॐ ह्रीं वेदनीकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ७० ॥

मिथ्यावादिक त्रिप्रति भेद सु जानिये।
इनहीके सु ममत्व हेत परमानिये ॥
बधे मोहिनी कर्म सदा या जीवके।
भाषी भविजन शास्त्र विषैं जग पीवके ॥

ॐ ह्रीं मोहनीकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ७१ ॥

शुद्ध भाव करि सुभग आयु थिति बधति है।
अशुद्ध आयु करि अशुभ आयु थिति सधति है ॥त्रिभु०॥

ॐ ह्रीं आयुकर्मरहिताय सिद्धपतये अर्घं ॥ ७२ ॥

कर्म सुभाशुभ कारण करियो बांधियो।
ताके भेद तिरानवै ताहि विराधियो ॥ त्रिभु० ॥

ॐ ह्रीं नामकर्मरहिताय अर्घं ॥ ७३ ॥

उत्तम गुण करि ऊँच गोत्र बांधे जिया।
नीचे गुण करि नीच गोत्र जानौ हिया ॥ त्रिभु० ॥

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ७४ ॥

दानादिक काज बिच विघ्न करे सदा।
ता करि अन्तराय पट्विधि होवे तदा ॥ त्रिभु० ॥

ॐ ह्रीं अंतरायकर्मरहिताय सिद्धाधिपतये अर्घं ॥ ७५ ॥

सकल करम रिपु नाशि सु शिवपद जिन लह्यौ।
भव बाधा हरि सकल रिद्धि प्रापित भयौ ॥ त्रिभु०॥

ॐ ह्रीं सर्वरिद्धि प्राप्तेभ्यो सिद्धेभ्यो अर्घं ॥ ७६ ॥

भूत भविष्यति वर्तमान त्रय कालके।
जलगत थलगत रहित सदा जग जालके ॥

ये अशरीरी सिद्ध जीव थिर थानके।
पूजौं पद तिन तीनलोक भगवानके॥

ॐ ह्रीं अतीतनागत वर्तमान अढ़ाई आकाशगत सिद्धेभ्यो अर्घं।

अथ मानुषोत्तर पूजा।

सोरठा।

मानुषोत्तर जान, भूधर परिखाकार है।
रच्यो बेढ़ि इम भांति, द्वयर्ध दीप परकार ज्यों॥

तहं जिनमंदिर चारि, बहु दिशमें राजै सही।
पूजों जल फल धारि, वसुविधि जिनप्रतिमा तही॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर पूर्वदिशि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर दक्षिण०, मानुषोत्तर पश्चिमोत्तर मानुषोत्तर उत्तरदिशिजिनेभ्यो अर्घं॥ ७७॥

गीता छन्द

इस भांति सिद्ध समूहकी करि, मन वचन तन पासना।
संसार बाधा रहित जिन करि, करी शिवसुख वासना॥

नो द्रव्य भाव सु कर्म वसुविधि, हैं सदा जिनके नहीं।
तिनकौं सु पूजन ध्यान करि, भवि होय प्रापति शिवमही॥

पूर्णार्घं।

अथ जयमाला ।

दोहा

दर्शन आदि अनंत गुण, धारक सिद्ध महान ।
कर्म अनंते नाश करि, मुक्ति महल थिति ठान ॥७२॥

पद्धड़ी छंद ।

जिन अजर अमर पद लह्यो जोर, जीतो खिल कर्म समूह घोर ।
शुभ केवल दर्शन पूर्व युक्त, शिव सिद्ध नमो वसु कर्म मुक्त ॥

ये त्रिभविगुण फुनि सगुण ज्ञान,
ये विमल विरुज भय रहित मान ॥ शुभ० ॥
ये विभव सुभव हत दुर्विभाव ।
विफली कृत दुर्जय कर्म भाव ॥ शुभ० ॥
ये विरस सुरस रत विरति जानि ।
ये विमति सुमति गत सुरंनि मानि ॥ शुभ० ॥
सु भये मुनिगण चित नित चमत्कार ।
ये भव्य जीव नुर्द्धनहार ॥ शुभ० ॥

नरदेव महेश्वर पूज्यपाद, परिहरित दृढ़ मद विगतवाद ॥शुभ०॥
अमितामित सुवरस पानकार, विरजोमल खेद विमुक्त सार ॥शुभ०॥
शुभरूप अरूप अगंध जानि, परमातमरस जिन कियो पान ॥शुभ०॥
त्रयलोक शिखर जिनवास कीन, वचनादिक भाव विकार हीन ।
शुभ प्रतिमा कृति आकार धार, तनुरात लीन मस्तक निहार ॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरसम्बन्धी जिनालयजिनेभ्यो नमः अर्घ्यं ।

इति मानुषोत्तर पूजा संपूर्णम् ।

अथ पुष्करार्द्ध द्वीप स्थित इक्ष्वाकार पूजा।

दोहा।

पुष्कर इक्ष्वाकारगिरि, दक्षिण उत्तर ठाम।
जुग जिन मंदिर जिन यजौं, आह्वानन करि ठाम॥

ॐ ह्रीं पुष्कर इक्ष्वाकार गिरि दक्षिण उत्तर श्रीजिनालयेभ्यो नमः अत्रावतरावतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं।

चाल—लावनीकी।

सलिल विमल शीतल अति उज्वल, सुरगंगाको ल्यावो जी।
प्रासुक परम पवित्र धार जिन, चरण समीप दिवावो जी॥
पुष्कर दक्षिण उत्तर गिरिवर, इक्ष्वाकार विराजै जी।
तहँ जिन मंदिर जिन प्रति पूजन, दुरित तुरित जित भाजै जी॥

ॐ ह्रीं पुष्कर इक्ष्वाकार दक्षिण उत्तर श्री जिनालयजिनेभ्यो नमः जलं।

बावन चन्दन दाह निकन्दन, कदली नंदन गारो जी।
कनक कटोरी धार नीर सम, जिनपद अरचन कारो जी॥
पुष्कर०॥ ॐ ह्रीं चन्दनं।

मुक्ताफल अनवींधे सीधे, गोल अमोल मंगावो जी।
तंदुल उज्वल चन्द्रकिरण सम, जिनपद पुंज चढ़ावो जी॥
पुष्कर०॥ ॐ ह्रीं अक्षतं।

सुमन मनोहर सुरतरुके लय, कनक रजतमय ल्यावो जी।
पारिजात मंदार आदि जिन, चरन समीप चढ़ावो जी॥
पुष्क०॥ ॐ ह्रीं पुष्पं।
घृत पूरित पकवान तुरतके, कंचन थाली धारो जी।
श्री जिन चरण चढ़ाय भविकजन, रोग क्षुधा निरवारो जी॥
पुष्कर०॥ ॐ ह्रीं नैवेद्यं।
मणिमय दीपक ल्याय कनकके, चउमुख बाती बारो जी।
तिन गुन गान तान बहु लै लै, आरति करि अर्घ टारो जी॥
पुष्कर०॥ ॐ ह्रीं दीपं।
अगर कपूर सुगन्ध दसों विधि, धूप दहन बिच बालोजी।
जिन युग चरन निकट शुचि माहि, कर्म काट सब जालोजी॥
पुष्कर०॥ ॐ ह्रीं धूपं।
फल फासू उत्तम अति सुंदर, बरन बरनके लीजे जी।
हिय हुलसत प्रिय लागत नैननु, जिनपद पूजन कीजे जी॥
पुष्कर०॥ ॐ ह्रीं फलं।
जल फलादि वसु द्रव्यथाल बिच, अर्घ समारि बनावो जी।
तन मन वचन हरष युत जिनपद, पूज परम पद पावो जी॥
पुष्कर०॥ ॐ ह्रीं अर्घं।

पुष्करार्द्ध विच दक्षिण उत्तर दिशि पर्यो,
इक्ष्वाकार अचल सु नाम जाको धर्यो।
षंड युगम करतार जानि जिन गेह तह,
इक दुहूं दिशि जिन पूजि लहौं शिवरमणी गृह॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्ध दक्षिणदिशि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।
ॐ ह्रीं इक्ष्वाकार उत्तरदिशि जिनालयजिनेभ्यो अर्घं।

समय समय पूरन भाव महान हैं।
तिन शिव सुखसागर विच लीन सु थान हैं॥
ऐसे सिद्ध समूह ध्यान मनमें धरैं।
'कमलनयन' शिवरमनी तुरतै सो वरैं॥ ८॥

कवित्त-छवथा।

सार्द्ध द्वय द्वीप मध्य पंच मेरु राजत हैं।
स्वर्णमई तीर्थ न्होन नीर युत शोभते॥
तिनहूपै चारिचारि बनबीच शोभे जिन।
मंदिर पुनीत सुर नर मन मोहते॥
तिनहीके नीचे गजदंत चारि चारि धरे।
जिन गेह वंदत नर पाप मल धोवते॥
त्रिशति मिति संख्या हू विराजे क्षेत्र नाथगिरि।
तिनके शिर ऊपर द्रह भरे नीर शोभते॥ १॥
पुनः सत्तर नदी सु जही क्षेत्र पंच त्रिशति है।
रूपाचल सप्त तिस कूट तिन विशेखिये॥
पचपन मेतो ममिति, संख्या फुनि राजधानी।
अष्टादश सहस्र और सात शत लेखिये॥
शत सत्तर ऊपर जहां, क्षीर नीर सु समुद्र।
है विदेह असी विद्यमान तीर्थ देखिये॥

साठ मिति संख्या है, विभंगा सरिता महान ।
असि वक्षारगिरि परवत परेखिये ॥
छयानवै दीप नर जलध गत है कुभोग ।
भूमि नाम धार, धर्महार यू गाइयौ ॥
लवणार्णव कालोदधि, प्रदाय नरलोक मध्य ।
पैंतालीस लाख परमान, गुरु बताइयौ ॥
इतनैं वर क्षेत्रगिरि सागर नदी सु दीप ।
बीच अढ़ईक जिन सजन, ग्रेह थाइयौ ॥
तई भव्यजीव पूज कारनको दक्ष ।
शिव 'कमलनैन' वारवार शिर नाइयौ ॥

ॐ ह्रीं पुष्कर दक्षिण वत्त इक्ष्वाकार जिनालयेभ्यो जिनेभ्यो अर्घं ।

दोहा

मंगल श्री अरहंत वर, मंगल सिद्ध महंत ।
तथा सूरि उवझाय वर, साधु सकल गुणवंत ॥ १ ॥
शारद गुरु गौतम चरण, सदा सु मंगलकार ।
संघ सकल मंगल करौ, दिनमें सौ सौ वार ॥ २ ॥

इत्याशीर्वादः ।

इति अढाई द्वीप पूजा संपूर्णम् ।

प्रशस्ति

श्री संवत्सर वेद रस, अंक चन्द्र पहचानि।
राज विक्रमादित्य नृप, गत वर्ष भवि जानि॥
कातिक सुदी शुभ पंचमी, कियो ग्रंथ आरम्भ।
चैत्र कृष्ण तेरसि तथा, पूरन भयो निदान॥
परमित संख्या श्लोककी, नुष्टुपजाति बखानि।
तीन सहस फुनि सातसै, सत्तरि ऊपरि मान॥
शहर इटावा जानिये, तासु परगने मांहि।
मैनपुरी एक ठाम है, पुरी महासुख ठांहि॥
ताको नृप चहूवान बर, वंश महा विख्यात।
नाम दलेल सु सिंघ जिस, राज करै बहुभांति॥
जाकै राज प्रजा सुखी, दुखी न कोऊ लोक।
अपने अपने घर विषै, करत सदा सुखभोग॥
जात बुंदेले जानियै, बसे महाधनवंत।
नंदराम आदिक बहुत, साधर्मी गुणवंत॥
तिनहीमें एक जानियै, नाम राय हरिचन्द।
वैद्यक कला परवीन अति, मनसुखराय सुनंत॥
तिनके सुत छुटे भरा, नाम छत्रपति सार।
तिन लघुभ्राता जानियै, कमलनैन निरधार॥
एक समैं निज छांडि पुर, गये प्रयाग मझार
मनमें इच्छा यह भई, कीजे देश विहार॥

तीरथराज प्रयागवर, तहं श्रावक बहु लोय।
अग्गरवाले जाति वर, वसै महाजन सोय॥
वीधिचन्द्र नामा भले, साधर्मी इक जानि।
तिन सुत हीरामल्लजी, कीरतिवंत महान॥
तिनके सुत हैं लालजो, परम धर्मकी खानि।
अधिक प्रीति हमसों करैं, पूरब योग प्रमाणि॥
एक समय बैठे हुते, लालजीत हम दोय।
उन विचार मनमें कियौ, या सुनि अचरज होय॥
सार्द्ध द्वीप द्वै पाठकी, भाषा सुगम सु ठार।
जो कीजै तो है भली, यही सीख उर धार॥
बीच मध्य इस देशमें, सुनी मित्र कहु नाहिं।
तब हमने उनसों कही, सुनो मित्र इम बात।
इह कारज दुर्द्धर महा, होय सके क्यों भ्रात॥
फिर उन हमसौं यों कही, जिन श्रुत आज्ञा लेहु।
जो शुभ आवै वचन वर, तो यह काज करेहु॥
तब चिट्ठी लिखि कै धरी, जिन आगे दी सार।
श्री जिनकी आज्ञा भई, करौ काज सुखकार॥
नमस्कार कर जिन चरण, मनमें आनंद पाय।
भाषा पाठ बनाइयौ, श्री जिन भक्ति सहाय॥
भूलचूक मात्रा वरण, हीन जानि बुध लोय॥
हांसी मत कीजो सही, शोधन कीजो सोय॥

इति पाठ बनावनकी कारण सम्पूर्णम्।

समाप्त।

अथ शान्तिपाठ, विसर्जन भाषा।

चौपाई १६ मात्रा

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुण व्रत संयमधारी।
लखन एकसौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं ॥१॥
पंचम चक्रवर्ति पद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्रनरेन्द्रपूज्य जिननायक, नमों शांतिहित शांतिविधायक ॥२॥
दिव्य विटप पहुपनकी बरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ॥३॥
शांतिजिनेश शांतिसुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिरनाई।
परम शांति दीजै हम सबको, पढ़ैं तिन्हैं, पुनि चार संघको ॥४॥

वसन्ततिलका

पूजैं जिन्हैं मुकुट हार किरीट लाके।
इन्द्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके॥
सो शांतिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ॥ ५ ॥

इन्द्रवज्रा।

संपूजकोंको प्रतिपालकोंको, यतीनको औ यतिनायकोंको।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेशको ले, कीजै सुखी हे जिन शांतिको दे ॥६॥

स्रग्धरा।

होवै सारी प्रजाको सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवै वर्षा समैपै तिलभर न रहै, व्याधियोंका अन्देशा ॥

होवै चोरी न जारी सुसमय वरतै, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको, जो सदा सौख्यकारी ॥७॥

दोहा।

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवल राज।
शांति करो सब जगतमें, वृषभादिक जिनराज ॥

मन्दक्रांता।

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगतिका।
सद्वृत्तोंका सुजस कहके, दोष ढांकूं सभीका ॥
बोलूं प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं।
तोलौं सेऊं चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊं ॥

आर्या।

तवपद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणोंमें।
तबलौं लीन रहो प्रभु, जबलौं पाया न मुक्तिपद मैंने ॥
अक्षरपद मात्रासे, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब करुणाकरि, पुनि छुड़ाऊं भवदुखसे ॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी।
मरणसमाधि सुदुर्लभ, कर्मोंका क्षय हो सुबोध सुखकारी ॥

(परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अथ विसर्जनपाठ भाषा।

दोहा

विनजाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुव प्रसादतैं परमगुरु, सो सब पूरन होय॥ १॥

पूजनविधि जान्यो नहीं, नहिं जान्यो आह्वान।
और विसर्जन हूं नहीं, क्षमा करो भगवान॥ २॥

मन्त्रहीन धनहीन हूं, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव॥ ३॥

आये जो जो देवगन, पूजे भक्ति प्रमान।
सो अब जावहु कृपाकर, अपने अपने थान॥ ४॥